ISSN 2229-547X VIDEHA
'विदेह' 245 म अंक 01 मार्च 2018 (वर्ष 11 मास 123 अंक 245)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक ३ टा लघुकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्षिमनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी
सुपुत्र श्री ,
पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,
पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।
पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नङेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c)2004-18. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन।
विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।
एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मीठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।
(c) 2004-18 सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ता लगमे छन्हि।
५ जुलाई २००४ कैँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA



सिद्धिरस्तु

कथा साहित्य, जगदीश प्रसाद मण्डल

डभियाएल गाम



डभियाएल गाम

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप

गाम अन्हार पड़ल छै

घरे-घर समाज कहि◌-कहि

अध-मरल गाम पड़ल छै

इतिहास मिथिला कहि-सुनि

पुर जनक धाम बनल छै

वक्र आठ गीत गबिते

ज्योतिरमान जगल छै

बनि◌-कनियाँ-पुतरा-पुतरी

मूक नाच नचैत रहै छै

राति◌-दिन एकबट बरहबट बनि

नाचि नाच नचैत रहै छै

घरे-घरे ज्योति दीप

गाम अन्हार पड़ल छइ।



ISBN : 978-81-936422-7-6

दाम : ₹ 251/-
सर्वाधिकार सुरक्षित © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

DABHIYAL GAM
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथाक सत्तैर

गलफूलू

परिवारक कन्यादानक आइ नमम दिन छी। पसारी-उसारीमे खाली कुमहैन पछुआएल छेली, काल्हिखन हुनको साड़ी पहिरा विदाइ दऽ देल गेलैन। ओना, पसारियो-पसारीक अपन-अपन लीलाधाम छइ। एक पसारी नाई भेल जे अहाँक डाली घर करैत अपन डाली सजबैत सबेर-सकाल घर-मुहाँ होइत तँ दोसर दिस पसारिक उसारी यज्ञक पछाइतो होइते अछि। शुभक लाल भाय दरबज्जापर बैसल काजक उसरनपर नजैर खिड़ौलैन तँ पसारीक पछाइत परसुका भाड़पर पहुँचलैन। भाड़पर पहुँचते मन नमसँ सम दिस बढ़लैन। बढ़िते जेना मन हल्लुक बुझि पड़लैन। हल्लुक ई जे भने एके सागे-भागे काजक सिमान टपि गेलौं। काजक सिमान टपैक माने भेल एक काजसँ निवृत्ति हएब। अपना ऐठाम कन्यादानक साल भरिक पछाइत दुनू पक्षसँ बेरा-बेरी भाड़ बनले रहैए, जइसँ बैंकक कर्जा जकाँ मूर लगिचाइयो जाइए तैयो सुइद चलिते रहै छै, तँए जहिना कन्यादानक हिसाबमे साल भरिक भारोक हिसाब अबिते अछि तहिना परिवारमे मृत्यु भेने सेहो सिर्फ तेरहे दिनक तेरहे-कर्मटा नइ ने छी, झमेलिया बिआहक ने बरियाती छी, नइ किछ तँ पहिने अण्डा भेल आकि बच्चा, तहू कहा-कही-ले झमेल ठाढ़ भाइये जाइए। मुदा से नइ, जहिना बिआहक पछाइत साल भरि भाड़ दौड़ैत रहैए तहिना मृत्युक

तेरहा-कर्मक पछाइत अधमासीसँ छाया शुरू भऽ मासे-मासे साल भरि ओहो दौड़ते अछि, जे बर्खी लग पहुँचा अपन रस्ता बिसरजन करैए। ओना, सोलहन्नी बिसरजन नइ करैए, अपन रूप बदैल मातृनवमी वा पितृ एकादशी, जेकरा पितृपक्ष सेहो कहल जाइए, तइ रूपमे चलिते रहैए। मुदा तेकर हिसाब बर्खीमे नइ होइए। बर्खी अपना चालिये साले-साल चलिते रहैए माने पहिल बर्खीकेँ सराधक समकक्ष सेहो मानले जाइए। मुदा से सभ नइ, परिवारक काज छी, तँए परिवारे धरिक...।

ओना, बेरुका चाह पीबैक बेर शुभक लाल भायकेँ भऽ गेल रहैन तँए मने-मन चाहक हिसाब सेहो जोड़ैत रहैथ। चाहक हिसाब मनमे अबिते शुभक लाल भाइक देहमे फुनफुनी जगलैन। फुनफुनी ई जे चाहै तँ सभ किछु सभ अछि, मुदा एक कप चाहो की बिना अपना केने होइए? जँ हेबो करत तँ कि ओ अपना नियमानुसार हएत? ओ तँ हएत कर्ताक कर्मानुसार। तँए निसचित कहब कठिन अछिए।

चाहक केतली आ लोटा नेने शुभक लाल भाय कल दिस, माने अँगनाक पछुआर आ माल-जालक खरिहाँनक आगूमे कल अछि, चलला। दरबज्जासँ आगू बढ़िते पत्नीपर नजैर पड़लैन। ओना, पत्नियोँक नजैर शुभक लाल भायपर पड़लैन। दुनूक अपन-अपन विचारक दुनियाँ। पत्नी ई बुझिते जे सभ दिन पति चाह बना पीबै छैथ, तँए टीका-टिप्पणीक कोनो प्रश्ने ने अछि, मुदा परिवेशो तँ परिवेश छी। टटका जे कन्यादानसँ उबरल छेली! तहूमे अपना हाथे कन्या सन सम्पैत जे दान केने छेली! तेकर उखमज की नइ रहतैन?

दू-तीन लग्गा फरिक्केसँ पत्नी टोक देलखिन»

"सभ दिनक छीछा-बीछा एके रंग रहल! अँगनामे एते लोक अछि, तेकरा कहबै से नइ?"

ओना, पत्नीक विचारक पुछरी पकैड़ शुभक लाल भाइक मनमे उठलैन जे कहिऐन- जखन सभ-दिना काज छी, तखन सभ दिन कहल जाए, ई केते उचित भेल? मुदा अपने चाहमे ओते बिलम हएत, तँए नहियेँ बाजब नीक बुझि केतली अखारै-धोइले आगू बढ़ि गेला।

केतली अखारि लोटामे पानि भरि अपन मुँह-आँखि-कान धोइत, पानि पीब चाह बनबए शुभक लाल भाय दरबज्जा दिस बढ़ला। ओना, पत्नीकेँ अखनो ओसारेपर बैसल देख कनडेर आँखि देलैन तँ बुझि पड़लैन जे मने-मन बिहुँसि रहल छैथ। बिहुँसैक कोनो तारतमे ने भेलैन जे किए बिहुँसि रहल छैथ। की चुल्हि लगल काज देख मन फुला रहलैन अछि? जे चुल्हि लग काज केनिहारे ने चुल्हियारि कहबैए। जखने पुरुख चुल्हियारि बनत तखने स्त्रीगणक ओते भार कमत। मुदा से विचार एतबे तक रहलैन, लगले दोसर विचार मनमे उपैक एलैन। उपैक ई एलैन जे जखन सभ-दिना काज अपन ऐछे, जे पत्नियोँ देखते आबि रहली, तखन जँ आगू बढ़ि बजली, तँ जरूर किछु दोसर कारण अछि। मुदा से बुझब केना? जहिना चुल्हिमे जारन आगि दिस खोंरनीसँ घुसकौल जाइए, तहिना शुभक लाल भाय विचारकेँ खोरैले खोंरनी चलौलैन»

"सोझे चाहे बनबैक भार लेलौं आकि केतलियो अखारैक?"

पवित्री जेना हारैत होथि तहिना मुँह बन रखलैन, मुदा सौनक करियाएल मेघ जकाँ नजरियो आ आँखियो स्नेहिल नीरसँ निराएल टप-टप करैत रहैन। भरिसक तही निराउमे पतिक बात हेरा गेलैन। अपन बातक जवाब पत्नी-मुहेँ सुनैले शुभक लाल भाय, ओना, चलिते रहैथ, मुदा डेग छोट जरूर भऽ गेल रहैन। आँखि सेहो उठा बेर-बेर पत्नीपर दैत रहैथ। जेना पत्नीक जवाबक प्रतीक्षा करैत होथि।

बेर-बेर पतिक आँखि अपना दिस अबैत देख पवित्री भौजीक

मनमे भेलैन जे भरिसक किछु चाहै छैथ। मुदा कहबैन की? मने-मन अख्यािसए लगली जे बाजल की छला। माने पति की बाजल छला। मनमे एबे ने केलैन जे चाहक केतली अखारि-धोइ अनैले बाजल छला। मनो केना रहितैन जखन शुभक लाल भाय बाजल छला तखन पवित्री भौजी अपन पवित्र यज्ञक बीच विचरण करैत ओइ जगहपर पहुँच गेल छेली, जेतए अपना हाथे अपन परिवारक कन्यादान करैत छेली। जैठाम अपनसँ आनोक कन्यादानकेँ धर्मकृत्ति-वृत्ति बुझि महिला फूलसँ फूलक माला बना हृदयमे लगबैक मनकामना रखै छैथ, तैठाम पवित्री भौजी नबे दिन पहिने जे कन्यादान केने छेली, ओ लगले केना मनसँ पड़ा जैतैन आ आन-आन विचारकेँ बास हुअ दइत। अपना हाथे कन्यादान केलौं, ऐ खुशीमे पवित्री भौजी दहलाइ-भँसियाइ छेली। कखनो हाथ निहारै छेली जे यएह हाथ छी जे कन्यादान केलक! तँ कखनो आँखि निहारै छेली जे यएह आँखि छी जे अपना आगूमे कन्यादान देखलक! आ यएह मुँह छी जे कन्यादानक मंत्र बाजल..!

शुभक लाल भाय अपन काजमे[1] बिलम नीक नहि बुझि दरबज्जा दिस बढ़ला।

दरबज्जाक मुहथैर लग अबिते पाछूसँ पवित्री भौजी कहलखिन»

"हमहूँ अबै छी, केतली-लोटा रखू।"

कहि झटकल अँगनाक ओसारपर सँ उठि दरबज्जाक ओसार दिस बढ़ली। ओना, शुभक लाल भाइक मनमे ठहैक गेलैन जे किछु कहए चाहै छैथ। बिना कारणे टिटही थोड़े लगैए। बिना किछ बजने-भुकने चुल्हि लग केतलियो आ लोटो रखलैन। तैबीच पवित्रियो भौजी पहुँच गेली। ओना, शुभक लाल भाइक मनमे ईहो ठहकलैन जे

[1] चाह बनबैमे

हिनकासँ उपकारे केतए हएत! केतए जारन अछि आ केतए गिलास? केतए चाह-पत्ती अछि आ केतए चीनीक डिब्बा से थोड़े देखल-बुझल छैन? ओ तँ अपने केने हएत। मुदा तैयो 'जत लवधं तत लवधं।' चुल्हिये पजारती..!

कन्यादानी हाथ पवित्री भौजीक बनि गेल छेलैन, बनबो केना ने करितैन। नारीक नारीत्वक तँ जहिना सन्तति जननक शुभ मुहुर्त अछि तहिना ने समाजो कन्यादानकेँ शुभ मानबे केने छैथ। तहूमे आइक परिवेशमे तँ कन्यादान छोट छीन यज्ञ नहियेँ रहल। ओ तँ समाजोक यज्ञ (पैघ यज्ञ)सँ नमहर बनल जाइए, यज्ञक पर्व आ यज्ञक पछाइत विचारो आ जिनगीक क्रियामे सेहो उन्नत होइते अछि, जे पवित्री भौजीमे सेहो आबि गेलैन।

चुल्हि पजारि पवित्री भौजी शुभक लाल भायकेँ पुछलकैन»

"केहेन चाह पीबैक मन होइए?"

पवित्री भौजीक विचार सुनि शुभक लाल भाय चौंक गेला। चाह तँ चाह छी! ओइमे नीक-बेजा की? लगले मनमे ठहकलैन चाह तँ जिनगीक भूख छी, जे सभकेँ लगबे करत, मुदा चाहो तँ चाह छी, केहेन चाह..?

मनमे विचार तेना घुरिया गेलैन जे केना पवित्री भौजी चाह बनौलैन से शुभक लाल भाय देखबे ने केलैन।

अखन धरि माने आइ धरि पवित्री भौजी शुभक लाल भाइक सोझमे कहियो चाह नइ पीने छेली, एकर माने ई नइ जे ओ चाह नइ पीबै छैथ। अखनो गाम-घरमे एहेन ऐछे जे माता-पितासँ चोरा कियो तमाकुलो खाइ छैथ आ सिगरेटो पीबै छैथ, तँ कियो देखाइयो कऽ खाइते-पिबते छैथ। मुदा एना किए? एना ऐ दुआरे जे बेवहारक पाछू जे शब्द अछि ओ केतौ-केतौ अपन चालि बदैल लइए जइसँ काजक

रूपमे बद-बदी आबि जाइ छै, जइसँ केतौ-केतौ बदलियो जाइए। मुदा से नइ आइ निधोख भऽ पवित्री भौजी चाह पिबए बैसली। निधोखक पाछू पवित्री भौजीक अपन जे विचार रहल होइन, मुदा एते तँ आँखिसँ देखबे करै छेली जे साठि बर्खसँ ऊपर उमेर भऽ गेल, कमसँ कम एते दिन तँ पतिक धाक मानलयैन। आइ तँ ओहन परिवेशे बनि गेल अछि जे सभ निधोखसँ चाह पीबैए। आकि मनमे ई विचार उठल रहैन जे नारीक पहिल रूप सन्तान जननक अछि, जे जीवनक पहिल संस्करण भेल, दोसर संस्करण तँ कन्यादाने आ बरदाने ने छी, जे पवित्री भौजी प्राप्त कऽ लेलैन। ओना, उमेरक हिसाबसँ बेसी उमेरमे केलैन मुदा से केलैन अपना कन्या नइ रहने...।

आमने-सामने शुभको लाल भाय आ पवित्रियो भौजी बैस कऽ चाह पीब रहल छैथ, मुदा कियो किछु बजैत नइ। अपना-अपना मनमे जे रहल होइन मुदा एक-दोसरक मुहेँ किछु सुनए चाहि रहल छला। ओना, दुनूक मन अपन-अपन विचारक सागरमे झिलहोरि खेलैत मुदा दुनू दू सागरमे। एकक सुखसागरमे तँ दोसरक मिश्रसागरमे। तेकर कारणो दुनूक दू छेलैन, पवित्री भौजीक कारण छेलैन जे जहिना कोनो रचनाकारक रचनाक पहिल संस्करण बिनु गवाहीक मामला भेल तहिना पवित्री भौजीक कन्यादानसँ पूर्वक छेलैन, मुदा जहिना ओही रचनाक जँ दोसर संस्करण निकैल जाइ छै तखन तँ रचनाकारकेँ एते बिसवास तँ भेटिये जाइए जे पहिल रचनाक जेते क्रम संख्या, माने छपाइक संख्या छल, ओते गवाही भऽ गेला, भलेँ ओगरवाह बनैन वा नइ। मुदा एहनो तँ ऐछे जे जँ रचनाकारकेँ गवाहीक जरूरते ने होइन? तैयो अपन मनक गवाह तँ मनमे बनले रहत किने जे ई काज भेल अछि। तहिना कन्यादानक पछाइत पवित्री भौजीक दोसर संस्करणक खुशी मनमे नचिते रहैन। नचैक पाछू ईहो विचार नचैत रहैन जे किछ छैथ तँ परिवारक सिरजन तँ पतिये ने छैथ, तँए हिनका मुहेँ सुनी..।

होइते एहिना छै जे मरजाद भोजक जे बर-बरी बनौनिहारि रहै छैथ ओ बर-बरी बँटैक बेरक टक लगौनहि रहै छैथ जे कखन खेनिहार खा कऽ हमरा दिस तकता। तेहने टकटकी पवित्री भौजीक रहैन। शुभक लाल भाइक मनमे बिआहक कोनो हलचल नइ रहैन, ओ परिवारक यज्ञ बुझि परिवारजनेक हाथे सम्पन्न भेल काज बुझैथ, तँए कनियोँ हलचल नइ रहैन। यएह छी यज्ञ-सूत्र। ओना, दुनू गोरे चाह पीब लेलैन मुदा बीचमे कोनो यज्ञक टीका-टिप्पणी नइ भेल। शुभक लाल भाय पवित्री भौजीकेँ रंग-रूपसँ आँकि नेने छला जे जेठुआ फुलाएल धार जकाँ मनमे कन्यादानक धारा बहि रहल छैन। मुदा कन्यादानक तँ लेखा-जोखा काइये लेब अछि, जे की नीक भेल आ की अधला। माने सूत्र-वत भेल कि सूत्र-भंग। तहूमे समए मोड़पर अछि, तँए केते नव सम्बन्ध जुड़त आ पुरान सम्बन्ध छुटत...। तैठाम तँ ओ दहला रहली अछि! केना कोनो काज समगम होइत चलत? तँए किछु गप करैक आकि कोनो विचार करैक कोनो गरे ने शुभक लाल भायकेँ अँटैन। मुदा संजोग नीक रहल। संजोग ई जे चाह पीला पछाइत पानक खगता होइते अछि, नइ तँ मनो आ मुहोँ बिल-बिलाइत बिलाइ जकाँ होइत रहत...।

शुभक लाल भाय बजला»

“जहिना मन-भरि चाह पीयेलौं तहिना जँ पानो खुऐबतौं..?”

बदलल पवित्री भौजी, हरिआएल जिनगी, पतिक विचारकेँ लपैक पकैड़ बजली»

“तेते पान उगैर गेल अछि जे मासो दिन खाएब तैयो ने सठत। नेने अबै छी।”

कहि उठि बढ़ली।

शुभक लाल भाय मने-मन तारतम करए लगला जे भरिसक

अखनो पत्नीक मन उधियाइते छैन, जँ से नइ, तखन किए धान-चाउर जकाँ पानोकेँ मास दिनक बात कहलैन? आइ नअ दिन भेल अछि, गोटे आधे नीक हएत नइ तँ सभटा सड़ि गेल हएत, तैठाम आगूओ मासक बात बजै छैथ..!

पानक डाली, चुनक डिब्बा आ खएर-सुपारी जे उगरल छेलैन से सभ किछु पवित्री भौजी आनि आगूमे रखलकैन। केराक पातमे मोड़ल पान जखन खोललली, तँ अदहासँ बेसी सड़ले देखली। छँटिया कऽ निम्मन पात निकालि एक भाग करैत, पान लगा पतिक हाथमे देलखिन।

मुँहमे जरदा लइते शुभक लाल भाइक मन फुरफुरेलैन। फुरफुराइते बजला»

“कन्यादानी की सभ भेटल से कहाँ देखए देलौं?”

‘कन्यादानी’ सुनिते पवित्री भौजीक मनमे गंगाक पहलेजा घाट नहि, हरिद्वारक घाट भेट गेलैन। भेटबो केना ने करितैन, एक तँ ओहिना यज्ञक चपचपी रहबे करैन आ तैपर सँ फलो आगूमे आबि गेने जेहेन होइ छै तेहने भऽ गेलैन। फुरफुरा कऽ उठि पवित्री भौजी अपन राखल-उसारल वस्तु-जात आनए विदा भऽ गेली...।

शुभक लाल भाय नमहर साँस छोड़लैन। भने कजभुतनी हटल!

ओना, परिवारमे सिरजन होइतो शुभक लाल भाय ऐ काजमे गलफूलू भऽ गेल छला। ओना, चाउरक भातो गलफूलू होइए आ दालि सेहो, मुदा से नइ, विचारक गलफूलू।

ओना, गलफूलू भात आकि दालिकेँ कोनाह सेहो कहल जाइ छै मुदा सेहो नइ, शुभक लाल भाय मनफूलू भऽ गेल छला जइसँ

काजक[2] सूत्रमे विचार फूल जकाँ कुम्हला गेल रहैन, मुदा परिवारक सिरजन काजमे जे कर्तव्य सिरजनक हेबा चाही तइमे केतौ शुभक लाल भाय कोनाह नइ भेला। सदिकाल समतल मन समतल बाट पकैड़ चलैक परियास करैत रहला...।

मनफूलू भेला पछाइतो शुभक लाल भाय ऐ बिसवासक संग यज्ञमे जुटल रहला जे जखने बिसबासू रस्ता पकैड़ काजकेँ आगू बढ़ाएब तखने ओइमे स्वत: बल आबए लगत आ हलसैत-कलशैत सम्पन्न हएत। तँए गलफूलू भेलो पछाइत शुभक लाल भाइक मनमे ओहन कुवाथ नइ पनपलैन। तेकर कारण बदलैत समाजिक परिवेशो छल।

भेल एना जे जइ दिन सम्बन्धक सूत्र बनल, तइ दिन काजक संचालनमे अखाद्य पदार्थ भोजनमे शामिल कऽ लेल गेल, जइसँ शुभक लाल भाइक मन भिन-भिनेने विचारमे भिन्नता आबि गेलैन। माने ई जे बिआहमे माछ भोजन हेबा चाही। अखनो शुभक लाल भाइक मन ऐ विचारपर कायम अछि जे मिथिलांचलमे पान-माछ आ मखानक प्रशंसा अदौसँ होइत रहल अछि, मुदा परिवारक जे समाजिक स्तरक भोज-भात होइ छल ओइमे माछ बर्जित किए छल? हँ, किछु दिनसँ एहेन वस्तुक प्रवेश भेल अछि। दोसर बात ई जे बेटीक प्रवेश परिवारमे होइते माए-बापक वायु गुंगुऐ लगै छैन, तेकर यएह ने कारण अछि जे ‘बेटी बिआह’ भारी भऽ गेल अछि। मुदा की भारी भेल अछि, केना ई हल्लुक हएत जे भ्रूण हत्यासँ लऽ कऽ दहेज हत्या धरि बन्न हएत?

तही बीच हलसैत-फुलसैत पवित्री भौजी, जहिना विद्वतजन सम्मानित भेल अपन वस्तु-जात नेने ठाढ़ होइत तहिना दुनू हाथे

[2] यज्ञक

पँजियौने पवित्री भौजी वस्तु-जात पतिक आगूमे रखैत मुँहपर मुँह रखि मरजादक बर-बरी जकाँ देखए लगली।

अखन धरि शुभक लाल भाय काजक समीक्षाक दौड़मे ओतए पहुँच गेल छला जे काज करै-करबैक परिवेश नीक ढंगसँ बनल। जे काजक सफलताक द्योतक छी...।

मुस्की दैत शुभक लाल भाय बजला»

“एते लऽ कऽ की करब?”

जहिना भरल घैलक पानिमे ऊपरसँ आरो पानि देने घैलमे नइ प्रवेश कऽ ऊपरे-ऊपर खसै लगैए तहिना पवित्री भौजीकेँ सेहो भेलैन...।

बजली»

“सहए तँ अपनो सोचै छी।”

◌

शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016

बिटगरहा

हमर जन्म मात्रिकमे भेल। जन्मक पछाइत जे शिक्षा-दीक्षा भेटैए तइमे मामा माएकेँ घरसँ विदाइ दिन खोंछि भरैत काल कहि देलखिन»

“पहिल जे भागीन हएत ओकरा अ-आसँ माने ओना-मासी[3]सँ बिटगरहा खाँत तक पढ़ा देबै, तखन जे मन फुरतै से अपन करत।”

यएह तँ भेल जिनगी, जँ भोजनसँ लऽ कऽ शिक्षा-दीक्षा धरिक भार हल्लुक होइत उतैर जाए तँ मनुख मनुख जकाँ किए ने रहत। ओना, माइक बिआह होइसँ पहिनहि, माने जहिया माइयक बिआहक गप-सप्प उठल तहिये, नानी आँगनमे अन्दोलन मचा जोर-जोरसँ नानाकेँ कहि देलखिन»

“बेटी बिआह छी, तँए सभ रस्ता झाड़ि-ओसा चलब बेसी नीक हएत।”

ओना, नानी अपन पेटक बात तँ नै खोललैन मुदा एकरारनामापर नानासँ ‘हँ’ कहा नेने छेली, नानीक सोझ-साझ बातमे नानाकेँ केतौ खोंच-खाँच नइ बुझि पड़लैन, बजला»

“एकरा के काटत।”

---

3 ओम नम: सिद्धम

ओना, बेटी जहिना माइक तहिना पितोक, मुदा जिनगी देखैक अपन-अपन नजैर होइ छइ। नानीक नजैरमे माए बेटी छेली, जे जिनगी भरि बेटीक रूपमे देखए चाहै छेली, जखन कि पिताक नजैर बेटी बिआह तकक भार उतरबपर मात्र रहैन। होइतो अहिना छै जे जेते लग रहत ओकरासँ ओते सिनेह रहत आ जे जेते दूर रहत ओकरासँ ओते दूरी बनिते अछि। तँए परिवारमे बेटीकेँ सासुर दिस बढ़ैत आ बेटा-पोताक लगक वंश होइत एकटा सीढी बनैए जे परिवारक संचालन सेहो करिते अछि।

ओना, नानी अँगनाक परदा तोड़ि माने एते-एते जोरसँ बजली जे नाना अकैछ कऽ विचार सुनैले तैयार भेल रहैथ। एकरारनामापर सहमत होइते नानी बजली»

“बेटीक पहिल सन्तान अपना ऐठाम हएत आ पछातिक पछाइत बुझल जाएत, तँए जखन सन्तानोत्पत्तिमे सात मास पूरि जाए तखन ओ अपना ओतए आबि जाएत आ जखन छह मासक बच्चा हेतइ, तखन फेर ओ सासुर बसत।”

माइक बिआहे होइ काल ई विचार भऽ गेल छल।

जखन हमर जन्म भेल तखन मामोकेँ आ माइयोकेँ जेना मन पड़लैन। माए बेटाक पढ़ब धरिक भार उतरल बुझलैन आ मामाकेँ बिटगरहा तक पढ़ाएब मन पड़लैन। जन्म भेला पछाइत जखन मामा आ माए एकठाम भेली तखन जहिना माइक मनक चुहचुही हरियाएल तहिना मामोक मन हरियेलैन। मामाक मन किए हरियेलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा बुझि पड़ल जे जेना संग चलैबला एकजन भेट गेलैन। माइक मन ऐ दुआरे चुहचुहाइत जे मातृत्व नैहरमे प्राप्त भेल।

ओना, दुनियाँ बड़ भारियो आ झमटगरो अछि, मुदा अपन जिनगी तँ अपन हाथक छी, तँए केतबो भारी अछि तँ अपना-ले

हल्लुके अछि किने। रंग-रंगक हवा-बिहाड़ि दुनियाँमे बहै छै मुदा केतौ-ने-केतौ तँ लोको ठाढ़े अछि। तही बीच मामोक जिनगी छैन्हे। अपन जिनगी अपन मनोनुकूल बनबैत चलि रहल छैथ।

जइ दिन बहिनक बिआह भेलैन माने हमरा माइक, तइ दिन तक ओ अपन परिवारक हिसाब-किताब नीक जकाँ बुझि गेल छला। बुझि गेल छला जे जहिना एक दिस अपन बेटा अछि आ दोसर दिस बहिनक बेटा, जे अपन बेटाकेँ व्रत रक्षक बुझि सेवा करैत अछि तँ दोसर दिस भागीनकेँ अबिसवासू बुझैए। भागिने किए बहिनोक संग तहिना अछि। मुदा तँए भागीनकेँ कुलपूज बुझि सिर नइ चढ़बैए, सेहो बात नहियेँ अछि। मुदा सभकेँ अपन-अपन ठौर छै, ठौरसँ चलला पछातिये ने ठौर भेटै छइ। ओना, मामाक मनमे ईहो प्रश्न बेर-बेर उठैत रहलैन जे एके बाप-माइक सन्तान बेटा-बेटी दुनू छी, मुदा दुनूक बेवहारमे एते अन्तर किए आबि गेल अछि?

ओना, मामा एक हरक जोतक गिरहस्त तहियो छला आ अखनो छैथ, मुदा तहिया आ अखनमे दूरी तँ बनियेँ गेल अछि। एक हरक गिरहस्तक माने भेल आठ बीघा खेती करैबला किसान। मुदा मामाकेँ अपन खतिऔनी दस बीघा जमीन छैन जइमे दस कट्ठा गाछी-कलम आ पाँच कट्ठाक अर-अगवास लगा घराड़ी, सबा बीघा खेत चारू जन आ पाँचम हरबाहकेँ बटाइ देने छथिन आ आठ बीघा अपने करै छैथ। जइ दिन मामा खेती करब शुरू केलैन तइ दिनमे कौलेज छोड़ि कऽ आएले छला। कौलेजे जीवनमे नोकरीकेँ अधला बुझए लगल छला। अधला कि नीक, प्रश्न से नइ प्रश्न एतबे जे किसानी संस्कारक गीत मनमे तेना संक्रमण करि गेलैन जे दोसरकेँ अखनो तक बास नइ हुअ देलकैन। ओ संस्कार गीत छी, उत्तम खेती। खेत उत्तम हुअए जइसँ ओकर जे उपजो हएत ओ उत्तम हएत, उत्तम अने-फल आ तीमने-तरकारी ने उत्तम शरीरो निरमौत। मुदा तेतबे किए,

खेतबला जे परिवार अछि ओइ परिवारक तँ वएह सम्पैत ने ओइ परिवारक जीवन-पोषक अछि। आकि कोनो शहर-बजारक रंग-टीप..!

आइक परिवेशमे कृषि बहुआयामी भऽ गेल अछि, खेतीक संग पशुपालन अछि, माछ पालन अछि। माछ पालैक आधासँ बेसी जमीनो ऐछे, जे चौर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखैर-बीरइ आ मरल धार-धूर सभमे अछि। मुदा से नइ, जइ दिन मामा कौलेज छोड़ि खेती करए लगला तइ दिनमे ने अपना बोरिंग रहैन आ ने पोखैर, मात्र पुश्तैनी इनार रहैन। खेतीक सेहो पुश्तैनी बेवहार रहबे करैन।

पुश्तैनी बेवहारक अर्थ अपन-अपन विचारे लोक बुझै छैथ। अधलोक परम्परा रहल अछि आ नीकोक परम्परा रहल अछि। ओ रहल अछि जे जेहेन समाज अपन समाजिक ढाँचा बना बास करै छल ओइ अनुकूल। ओना, मामा कौलेजेक जिनगीक बीच जहिया मनमे रोपलैन जे कृषिकेँ जीविका बनाएब, तहियेसँ अध्ययनक दिशामे मोड़ एलैन। मोड़ ई एलैन जे खेती-पथारी सम्बन्धित अध्ययन सेहो करए लगला। एते अध्ययन जरूर भऽ गेल छेलैन जे मन मानि गेलैन-'खेतीसँ जीवनक भरण-पोषण भऽ सकैए।' तेकर दोसर कारण ईहो मनमे रहबे करैन जे जखन पिताजी हमरा कौलेज तक ओही खेत आ खेतक उपजेसँ पढ़ौलैन, तखन अपन जे धिया-पुता हएत तेकरा किए ने पढ़ा सकै छी। ओना, जीवन-विज्ञानक दिशामे सेहो मामाक अध्ययन झुकि गेल छेलैन जइसँ अपन विकासक[4] दिशाक बोध सेहो आबए लगलैन। आठ बीघा एक हरक जोत ओइ किसानी जिनगीक परिचायक छी, जइ जिनगीमे किसान सोलहन्नी प्रकृतिपर निर्भर छला, बरखा भेल, खेती भेल, नइ भेल नइ भेल। बाढ़ि आएल दहा गेल,

[4] उन्नतैक

रौदी भेल जरि गेल! यएह तँ छल किसानी जिनगीक परिवार।

ओना, धार-धूरक इलाका रहने गामक-गाम उपटान आ बसान सेहो सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि। धारमे कटि गेने गामक उपटान भेल, अखनो होइए, आ जेतए जा कऽ बसलौं ओ बसान भेल मुदा सोझे केतौ बसि जाएब आ केतौ खेत-पथारक संग बसल छी, जे जीविकाक साधन सेहो छी, तैठाम जँ जीविका-साधन समाप्त भऽ जाएत, तखन केना जिनगी ठाढ़ रहत? ई आइये नइ सभ दिनसँ प्रश्न बनले आबि रहल अछि।

ओना, समेनुकूल सोच मामाक मनमे सेहो जगिये गेल रहैन जइसँ जहियेसँ खेती करए लगला तहियेसँ किछ-ने-किछ नब काज सतैत ठाढ़ करिते आबि रहल छैथ। जइसँ वएह पुश्तैनी दस बीघाक खेतमे एते अनो उपजा लइ छैथ, माने जैठाम खेतक उपजाक कोनो ठेकान नै छल तैठाम खर्चक ठेकान भऽ जाइ छेलैन। जइसँ बीस-पच्चीस गोरेक परिवार चलि जाइत रहैन। तैसंग दू पीढ़ीक परिवारमे अखनो ओहन सामंजस छैन्हे जे सभ सभसँ जेते सटलो छैन ओते हटलो छैन।

आइसँ तीस बर्ख पूर्ब, कौलेज छोड़ला पछाइत मामा पुश्तैनी सम्पैतपर काबिज भऽ दुनियाँक बीच अपन हिस्सा बुझि जिनगी शुरू केलैन।

ओना, माता-पिताक पछाइत भाए-बहिनिक परिवारक खाढ़ी अबैए। जइसँ दू-तीन तरहक मनुखक बीच सम्बन्धक सम्बन्ध अबैए। माने भाए-भाएक आ भाए-बहिनिक आ बहिन-बहिनिक बीच...।

ओना, अखन धरि यएह होइत आबि रहल अछि जे केतौ-केतौ भाए-भाएक बीच राम-लक्ष्मण सन सम्बन्ध अछि तँ केतौ कौरव-पाण्डव जकाँ। जइसँ एके समाजमे रामकेँ बनगमनक बीच कोल-

भीलक संग ऋषि-मुनीक सम्बन्ध बनै छैन तँ दोसर दिस महाभारतो मचिते रहैए। मुदा से नइ जहिना सौंसे राक्षसक लंकामे एकटा विभीषणेटा शेष छला, तहिना अपन गामो-समाजमे अछि। जखन गाम-समाजक लीला देखब तखन बुझि पड़त जे लंकामे कम-सँ-कम विभीषणकेँ अपन पत्नी आ धिया-पुता तँ संग दइमे रहैन। मुदा अपन समाज तहूसँ ऊपरका लंका अछि जैठाम अपन धरोवाली आ धियो-पुतो कण्ठ मोकैले तैयार रहैए। भाए-बहिनिक बीच बापक सम्पैतमे हक-हिस्साक जे प्रश्न अछि ओ बेवहारिक जिनगीसँ सटल सवाल अछि, केतौ भाए-बहिनिक ओहन परिवार अछि जैठाम भागिने परिवारक मुख्य कर्ता-धर्ता बनल अछि, तँ केतौ भाए-बहिनिक बीच उच्च कोटिक अबिसवास सेहो बनल अछि, तँए ईहो नइ कहल जा सकैए जे बेटा आ भागीनकेँ एक बुझिनिहार लोक नइ छैथ। एक वृत्ति[5] सभकेँ अछि, मुदा ओही वृत्तिमे आवृत्ति भेने वृत्तिक दुनू रूप पोनगैए। माने नीक-बेजाइक ओइ वृत्तिकेँ जे जेहेन बुझि चलनिहार से तेते ओइसँ आसक्त भऽ जाइ छैथ, जे भँसियेबो करै छैथ आ उबड़बो करै छैथ। पचास-पचपन बर्खक मामा, ओना नाना-नानी मरि गेल छैथ, अपन तीस बर्खक जिनगीमे उपैत करैत एते ऊपर आबि गेल छैथ जे समाजक बीच अपनो परिवारक महत रखने छैथ।

ओना, मामा पुरान परम्परानुसार जे खेतीक तरीका छल, पहिने सएह अपनौलैन, मुदा समेनुसार अपन परम्पराकेँ देख-देख विचार करैत क्रिया-रूप दैत आबि रहल छैथ, जइसँ अपन जिनगीक क्रियापर एते बिसवास बनि गेल छैन जे बिसवासू जिनगी जीब रहला अछि। मुदा तैयो ओ अपनाकेँ गामसँ हटल कहाँ बुझै छैथ। गाम तँ ओहन गाम छी, जे जँ अहाँ अपन खेतमे गाछी-कलम रोपै छी तँ आड़िक

[5] मनुखक वृत्ति

कातमे पतिआनी लगा रोपि दइ छिऐ, एतबो ने विचारै छिऐ जे ओ गाछ केते पसरतै आ आन खेतबलाक उपज प्रभावित करतै। तहिना उपरौंझो केनिहारक कमी थोड़े अछि। अहाँ आमक गाछ रोपब तँ ओ हरोथ बाँसे अपनामे रोपि देता।

मुदा जेतए जे हौउ, मामा जहिना गौंआँक संग सटल छैथ तहिना हटलो तँ छैथे। दुनू बेटाक बीच एक-एक कारोबार बढ़ा लेलैन। पचास-पचपन बर्खक मामाक देहमे ओहन ऊहि अखनो छैन्हे जे सतैत काजसँ सटल चलै छैथ। ओना, अपन खेतीक रकबा, जेतेमे खेती करै छला, कम कऽ केलैन मुदा जेते कम केलैन उपजा तेते बेसी बढ़ि गेल छैन। जिज्ञासु किसान जकाँ सतैत मनमे जिज्ञासा बनले रहै छैन जे माटिक जिनगी-ले पानिक खगता ऐछे आ रहबे करत। दू बीघा खेतकेँ जे अपने चरनुमा गहींर छल, ओकरा आरो गहींर कऽ ओइ माटिसँ पाँच कट्ठा ऊँचगर बाड़ी सेहो बना लेला, जइ पाछू जेठका पढ़ल-लिखल बेटा भरि दिन हेराएल रहै छैन। तहिना गाइयक पाछू छोटका। जहिना कारखानाकेँ अपन खान रहने आ अपन खनिज बनबैक ओजार रहने ढालनुमा दौड़ैत रहैए तहिना मामाक किसान परिवार सेहो दौड़ रहल छैन।

जन्म भेला पछाइत माइक संग सालमे एक बेर, दू बेर मात्रिक अबिते-जाइते छेलौं, मुदा जखन चारि बर्खक भेलौं तखन मामा अपना ऐठाम घेरैक जाल लगौलैन। जाल ई लगौलैन जे माइक संग अपनो ओतए गेलौं, फागुन मास रहै, धिया-पुताक संग खूब फगुओ-जोगिड़ा गेलौं आ टिकुलेसँ आमक गाछी मामाक संग सेहो जाए-अबए लगलौं। गाछक निच्चाँमे मामा छीलि-छालि कऽ चौरस बना मचान-खोपड़ी बनौलैन। पारखी मामा! तँए ने एकछाहा कलकतिया आमक आ ने एकछाहा सपेते आमक गाछी लगौने छला, सभ मेलक आमक गाछी लगौने छला। जइसँ दू-तीन मास आम खाथि। अनका जकाँ

नइ जे एके रंगक आम लगौने छी आ पनरहे-बीस दिनमे सठा लेब। आम सन फल जे आम जनक छी, कोनो कि सेव-अंगूर छी जे दुखताहेटा खाएत, तँए आमेजन जकाँ दू-तीन मास खेबो-पीबो ने करब।

आधा जेठ बीत गेल। ताबे अ-आसँ य-र-ल-व तक सीख सेहो लेलौं, अपनो मनमे हुअ लगल जे कनी आरो सीखी। ओना, अ-आ सीखबैसँ पहिने मामा सिखा देलैन जे अक्षर ब्रह्म छी, तँए एकरा गहि कऽ पकैड़ चली। मुदा जहिना ओ सीखबै काल बाजल छला तहिना हमहूँ सीता-राम सीता-राम जकाँ सीखियो लेलौं, मुदा माने अखनो तक ने बुझै छी।

चारि बर्खक भेला पछाइत हमर बोलियो नीक जकाँ[6] फुटि गेल छेलए आ अपने पएरे खूब दौड़ौ लगल रही। जहिना कोनो-कोनो शिक्षक अपन जिनगीक अनुकूल बच्चाकेँ बनबै दुआरे अधिक-सँ-अधिक समए अपना संगे रखि अपन जिनगीक बेवहारिक बोध सेहो दइ छैथ तहिना मामा हमरो दिअ लगला। य-र-ल-व तक आ पछाइत ककहारा शुरू हएत। मुदा अक्षर तँ बोध भेल छल मुदा अंकक तँ भेँटो ने भेल छल। कि मन फुरलैन मामाकेँ से तँ ओ जानैथ, मुदा एक-दूसँ गनबए लगला। जहिना अ-आ लिखबैसँ पहिने मुहजुआनी सीखौलैन तहिना एकाएक लिखबैसँ पहिने गनब सिखबए लगला। होइते अहिना छै जे लिखब आ पढ़ि कऽ बाजब दुनू दू भेल। जँ एकरा एक बुझि शुरू करब तँ कनी बेसी भाइये जाएत, मुदा जँ दुनूकेँ दू खण्ड कऽ दू बेरकेँ सीखब तँ ओ कनी बेसी हल्लुक हेबे करत, सएह मामो केलैन।

आम पकैपर आबि गेल, माने खूब डम्हा गेल, मुदा वोनाएल नइ छल। माएकेँ अपना ओतए, माने सासुर जाइक दिन भऽ गेलैन।

[6] (माने शुद्ध उच्चरण)

काल्हि ओ जेती। मामाक संग गाछीक मचानपर बैसल रही। आमक गाछक लद-लदी देख मन खूब खुशी रहए। मामा बजला»

"बौआ, काल्हि गाम जेबहक?"

हमरा कि कोनो दिन-बेरागन बुझल रहए जे बुझितिऐ कौल्हुके दिन जाइक अछि। ओना दिन माइयक रहैन, धिया-पुताक कोन दिन! बजलौं»

"नइ।"

तखन मामा खोललैन»

"माए काल्हि अपना गाम जेथुन।"

धिया-पुताक बुधि, बजलौं»

"ओ अपना गाम जाएत हम अपना गाममे रहब। आम सठा कऽ जाएब।"

जेना मामोक मन दहैल गेलैन तहिना बजला»

"ताबे ते तोरा बिटगरहा तक खाँतो आ बिटगरहा अक्षरो सीखा देबह।"

जहिना कौआ-मेना अपन लोल बच्चाक लोलमे मिला बोलक घोल पिअबैत तहिना हमरो मामा पिआबए लगला। पुछलयैन»

"मामा, बिटगरहा खाँत आ बिटगरहा अक्षर की भेल?"

मुस्की दैत मामा बजला»

"जहिना अंक एकहारासँ शुरू होइत दोहारा तेहारासँ दोहराइत-तेहराइत आगू बढ़ैए तहिना पौआ, कनमा जकाँ पाछूओ घुसकैए, तहिना शब्दोक अछि आ लोकोक अछि।"

पुछलयैन»

"लोकक की भेल?"

बजला»

"वएह बिटगरहा समाज भेल, जेहेन बाँस रोपब तेहने ओकर कोंपर हएत।"

◌

शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016

आब नइ आगि लगैए?

दस साल जहल कटला पछाइत सुरूज भाय गाम एला। ओना, बुझल रहए जे बरसपैत दिन भाय गाम औता, किएक तँ बुधे दिन केसक सजा पूरि जेतैन, जहलसँ निकैल गाम पहुँचैमे एक दिन लगबे करतैन। तँए बरस्पैत दिन एबे करता, मुदा पहुँचता कखन से निसचित नइ छल। ओना, चारि बजेमे भाँज लगेने छेलौं, तँ तखन नइ अबैक जानकारी भऽ गेल रहए। मुदा मन तँ छनगले रहए जे कखन भाय औता आ भेँट हेता। मुँहक लाली केहेन छैन से बिना एकठाम भेने थोड़े बुझब।

ओना, लालियो कि कोनो एके रंगक होइए। पोरोक पाकल फड़मे लाली सेहो होइए आ अन्हार रातिक गुलबिया चानमे सेहो होइए, तहिना पाकल फलमे सेहो होइए आ लाल रंग फुटा कऽ सेहो होइते अछि। ओना, लालो रंग तीन रंगक होइए, हल्लुक लाल, गाढ़ लाल आ आल लाल।

किरिण डुमैपर भऽ गेल। आधा सुरुज डुमि गेल छल आ आधा ऊपर उगल छल। अपन काज माने माल-जालक थैर-गोबर करैत, ओछरा दैत घूरोक जोगार करैक अछि। मनमे ईहो धड़फड़ी रहए जे अपन काज निबटल रहत तखन जे भाय औता तँ दुनू भाँइ चारियो घन्टा जे एकठाम बैसबो जे नइ

करब तँ एते दिनक बँकियौता गपो केना हएत। तँए धड़फड़ करैत काजमे लागल रही। घूर छोड़ियो सकै छेलौं, किए तँ माल-जालक जिनगीसँ ओकर कोनो सम्बन्ध नइ छइ। मुदा धन सोझे धनेटा नइ ने छी, ओकरा जोगा-जगा कऽ रखौ पड़ै छै किने। ओही जोगबै दुआरे घूरो जरूरी भऽ गेल अछि। तेते ने बड़का-बड़का टाँगबला मच्छर फड़ि गेल अछि जे ने भरि राति माल-जालकेँ चैनसँ रहए देत आ ने दूहए-गाड़ए देत।

किरिण डुमैत-डुमैत अपन सभ काज निबटा निचेन भेलौं तखन मनमे भेल जे आब सुरुज भाइक अबैक बेर भऽ गेल, भाँज लागत तखन जा कऽ भेँट करबैन तइसँ नीक ने हएत जे जखन अपन समए ओही काजे बना नेने छी तखन पहिनहि किए ने पहुँच जाइ। सएह केलौं, सुरुज भाय ऐठाम विदा भेलौं। हमरा पहुँचैसँ पहिनहि सुरुज भाय पहुँच गेल छला। मनमे भेल जे पुछिऐन जे कती काल एना भेल। जइसँ अपन जे भाँज लगौल छल, ओइसँ भँजिया जाएत। फेर भेल जे सुरुज भाय कियो आन छैथ, जे एते घुमा-फिरा कऽ गप करब। सुपुटे किए ने कहि देबैन जे भाय घूर-घुआँ करैमे कनी देरी भऽ गेल। मन मानि गेल मुदा लगले दोसर विचार मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ ई भेल जे अखन सुरुज भाय जहलसँ आएल छैथ आ अपने कहियो जहलक मुँह आँखि नइ देखलौं, तखन पुछबैन की?

किछ फुरबे ने करए जे की पुछिऐन। फेर लगले भेल जे जहिना सभ भेँट भेलापर बजैए जे 'नीके-ना छी किने', सएह कहबैन। फेर भेल जे से केना पुछबैन। कोनो कि सासुरसँ एला अछि आकि गाम-गामाइतसँ, जहलसँ आएल छैथ। कहू जे एहनो पुछब हएत! तेरहो करम करबैले तँ लोककेँ लोक जहल दिस ठेलैए तैठाम नीके-ना की! मुदा सेहो केना पुछबैन?

ओना, सुरुज भाय बहुत उमेरगर छैथ। जइ दिन हुनका अगिलग्गी केसमे फँसौल गेलैन, तइ दिनमे बच्चे रही। सुरुज भाइक संग एगारह गोरे मुद्दालह भेला आ हम सभ देखनिहारे बनल रहलौं। दसो संगी जे सुरुज भाइक संग अगिलगी केसमे फँसल छला, ओ सभ बेरा-बेरी, कियो दू मासक पछाइत तँ कियो चारि मास-छह मास बितैत-बितैत जहलसँ निकैल कऽ आबि गेला, खाली सुरुजे भायटा रहि गेल छला। होइतो अहिना छै, एके केसकेँ रंग-रंगक दफा लगा ठाढ़ कएल जाइए। तहिना भेल रहइ...।

हमरा पहुँचैसँ पहिनहि एगारहो गोरे गपो-सप्प करैत रहैथ, चाहो पीबैत रहैथ आ बीच-बीचमे ठहक्का मारि हँसबो करैथ।

लगमे पहुँचते दुनू हाथ जोड़ि आँखिक इशारामे सुरुज भायकेँ प्रणामो केलिऐन आ पँजरा दबि कऽ लगमे बैसबो केलौं। जेना कोनो उत्सव परिवारमे भेल रहैन तहिना पहुँचते एक गिलास पानि आ चाह आबि गेल। पानि पीब चाहो पिबए लगलौं आ आँखि दाबि कान उठा कऽ गपो सभ सुनए लगलौं। गप-सप्पक क्रमसँ निकैल सुरुज भाय बिच्चेमे पुछलैन»

"बौआ, आब नइ आगि लगैए?"

सुरुज भाइक बात सुनि अकबका गेलौं। मुदा पुछने तँ हमरे छला, तँए किछु-ने-किछु जवाब तँ अपने दिअ पड़त। तैबीच बाँकी गोरे जे ओतए बैसल छला, ओहो सभ अपन मुँह बन्न कऽ हमरे दिस अँखियेबो केलैन आ कनियेबो केलैन। बुझि पड़ल सभ हमरे बात सुनैले कनखड़ल छैथ। मुदा लगले रेडियो-अखबारक समाचार मनमे आबि गेल। कहलयैन»

"भाय, अहाँ जहलमे बन्न रहलौं तँए कि बुझै छिऐ जे आगिये मिझा गेल? गाम-गामक गहुमक पाकल चासमे आगि लगैए! गामक-

गाम आगिमे जरि जाइए आ अहाँ बुझै छिऐ जे आब आगिये ने लगैए?"

हमरा बातक अर्थ भरिसक सभकेँ सभ रंग लगलैन। तँए किनको मुँह कसाइन भेल बिजकलैन, तँ किनको बिसाइन भेल सिकुड़लैन। मुदा सुरुज भायकेँ केहेन लगलैन से तँ ओ जनता मुदा मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे मने-मन मुस्किया रहल छैथ। जखने कियो कोनो विचारे कोनो काज करैले अगुआइए तँ ओत्तैसँ आगि सेहो उठैए। जेकरा कियो अगिया, तँ कियो अगिलह, तँ कियो अगिलगौन सेहो कहिते छइ। मुदा भरिसक से सुरुज भाइक मनमे नइ रहैन। मनमे रहैन अगिलग्गी केस आ ओकर समए।

जखन भूमि आन्दोलन माने जमीनक लड़ाइ शुरू भेल तखन अगिलग्गी केस जोर पकड़लक। सेशन केसक दफा, जेकर साधारण कोटमे ओकर सुनबाइ नइ भेने, अगिलग्गी केसमे फँसनिहारकेँ ता-जमानत जहल जाइये पड़ैए। भलेँ घरक अगिलग्गी केस हौउ चाहे बनौउए किए ने हौउ। एहनो केसक कमी नहियेँ रहल अछि जे एक बोझ नारमे लोक आगि लगा गामक-गाम लोककेँ मोकदमामे फँसौलक। कहबियो छै 'इनू-इनू-इनू एके महक तीनू, केस ठाढ़ करैबला सँ लऽ कऽ केसक फैसला करैबला तक एक्के गाछक डारि तीनू।'

सुरुज भाय तेसर बेरक केसमे जहल गेल छला, ओना पहिलुको दुनू केसमे जहल गेल छला, मुदा ओ जहलक मद्दी नइ भेल छेलैन, ओ हजतिया हिसाबमे रहि गेल छेलैन। पहिल बेर जखन अगिलग्गी केसमे फँसौल गेला तँ हुनका संग दस-बारह गोरे गौओं संगी रहैन, मुदा जमानतपर जे हाजतसँ निकलला से फेर दोहरा कऽ जहल नइ गेला। ओना बारह-चौदह बर्ख कोट-कचहरीक चक्कर लगबए पड़ल रहैन। से

मनसँ हटि गेल छेलैन, होइते अहिना छै जे कोट-कचहरीक लड़ाइक फल जहले छी। जँ सजा पेब जहल चलि गेलौं तँ हारब भेल, जँ नइ गेलौं तँ जीतब भेल।

ओना, पहिल केसमे सुरुज भाय ओहन सजा नइ पौलैन जे जहल जाए पड़ितैन, मुदा एते तँ चेतावनी कोर्टसँ दैये देल गेल रहैन जे एबेर छोड़ल जा रहल अछि, दोसर बेर जहलक सजा हएत..! भाय! मारल लहाश उठबैमे जँ आना-कानी करब तखन ओइ लहाशक सदगति हएत आकि आरो मुइलोपर दुरगतिये हएत? यएह सदगति आ दुरगतिक विचार सुरुज भायकेँ अगिलगौन बना देने रहैन। मुदा से सभ सुरुज भाय-ले धैनसन। जखन जिनगी जीबैक अछि, तखन नीक-अधलाक विचार केनहि जँ जीब लेब सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। जखन मानव बनि जीबै छी, तखन उचित-अनुचितक विचार नइ मानब तखन ओ जिनगीए आ जीवने की भेल..!

ओना, हमर बात जे जेना सुनने होथि, माने सुरुज भाय छोड़ि बाँकी गोरे, मुदा सुरुज भाय गौरसँ सुनि गौर करए लगला, जे गाड़ामे सेहो उतरए लगल छेलैन जइसँ मुँहक चुहचुहीक रंग बदलए लगल छेलैन। तैबीच एकटा आरो भेल, भेल ई जे जे बाइली गोरे रहैथ ओ एका-एकी उठि-उठि ई कहि विदा भऽ गेला जे भोरमे फेर भेँट हएब। ओना, हुनका सभकेँ जहलक हवा-पानि बुझले रहैन तँए बेसी गपो-सप्प नहियेँ रहैन। रहैन एतबे जे दस बर्खक पछाइत गामक दरबज्जापर भेँट भेला अछि। जहलक गेटपर जा-जा सभकेँ सभ भेँटो करैन आ नीक-बेजाइक गपो-सप्प करिते आबि रहल छला। तैसंग हुनका सभकेँ ईहो भेल रहैन जे जखने स्टेशनपर टेनसँ सुरुज भाय उतरला, तखने एकटा गौआँ भेट गेलैन। भेटिते ओ गौआँ कहलकैन»

"सुरुज भैया, अहाँ ताबे सभसँ भेँट-घाँट करैत आउ, हम आगू

बढ़ि परिवारमे समाचार पहुँचा देब।”

ओना, सुरुज भायकेँ जेते चिन्हारए सभसँ भेँट-घाँट, कुशल-छेम करब नइ रहैन तइसँ बेसी देश-कोस[7] देखैपर रहैन, ओ तँ ओहिना नइ हएत, देखैत-सुनैत, बुझैत-गमैत जाएब तखने हएत। सएह केलैन, जइसँ गाम अबैत-अबैत अपन जे संगी रहैन, सभसँ भेँट भऽ गेलैन। ओना, हुनका सबहक–माने दसो-बारहो गोरेक–उठि कऽ जाएब नीके लागल। नीको केना ने लगैत। भाय! जे भारी-भरकम बात रहल ओ ने लोक लग बजलासँ भरियाएल रहैए, मुदा छोट-छीन बात जँ लोक लग बाजब तँ ओ बेदरे ने बुझता। सभ चाहैए जे हम सियान-चेष्टगर बनी आ हम अपने चालिये बेदरे बनि जाइ! तँए मने-मन खुशीए उपकैत रहए।

दरबज्जा खाली भेने हहरैत मन हरहरा गेल। ओना, सुरुज भाय बेर-बेर आँखि उठा-उठा हमरे दिस तकै छला जे की बजैए। मुदा हमरा तँ बजैक कोनो गर भेटबे ने करए जे किछु पुछितिऐन आकि कहितिऐन। तरे-तर मनकेँ दौड़बए लगलौं। मुदा लगले सिरे एकटा बात भेट गेल। भेटल ई जे पहिल केसमे जहल गेबे ने केला, बाहरसँ बाहरे रहि गेला, जखन कि ओहो अगिलिये-केस छल, आ दोसरमे दस बर्ख जहलमे रहला, से केना भेल?

मनमे उठिते विचार फुरफुराएल। बजलौं»

“भाय साहैब, अखनो धरि ई नइ बुझि पेलौं जे पहिलुक बेर किछु ने भेल आ दोसर बेर..?”

केना कहितिऐन जे जहल कटलौं। तहिना ईहो तँ नीक नहियेँ होएत जे कहितिऐन जे दस बर्ख जहलक वासी रहलौं, तँए मुँहसँ निकलैमे कनी देरी होइत रहए। मुदा से भेल नइ सुरुज भायकेँ जेना

[7] गाम-घर

धक्-दे मन पड़ि गेलैन तहिना बिच्चेमे धकियबैत बजला»

“बौआ, दुइये नइ ई तेसर केस छेलइ।”

‘दोसर-तेसर’ सुनि हमरो मन सुगबुगाएल। सुगबुगाइते कहलयैन»

“हमरा ते दुइए-टा बुझल अछि, तेसर कोन भेल?”

सुरुज भाय मुदा सम्हारि लेलैन। सम्हारैत बजला»

“पहिलुक जे दुनू केस छल ओ गवाही दुआरे खारिज भेल। मुदा तेसरमे गीताक सप्पत खा-खा गवाहियो आ मुद्दैयो तेहने सत् बात बाजल जे गीतो फुसियाहक फुसि भऽ गेल।”

ओना, हम ‘हूँ-हूँ’ भरैत रही मुदा सेरिया कऽ सभ बात नइ बुझैत रही। सुरुज भाय जेना आगामी लोक रहैथ तहिना हमर मनक बात बुझि गेला। बजैक क्रम रहबे करैन, आगू बजला»

“फुसियाहक फुसि आ झुठियाहक झूठक बेपार तेते ने दुनियाँमे पसैर गेल अछि केतेको बैंक डिरिआइए! तेठाम हमर-तोहर कोन बात?”

जहिना कोनो गीत गौनिहार मुहसँ गेबो करै छैथ, आँखिसँ रूपो तैयार करै छैथ आ हाथसँ इशारो करै छैथ, तहिना सुरुज भाय सेहो उपक्रम बनौलैन जे देखते हँसी लगि गेल, मुदा सुरुज भाय सन लोकक लगमे हँसियो केना ओहिना देब। पुछलयैन»

“भाय साहैब, फुसियाहक फुसि आ झुठियाहक झूठ की भेल?”

ओना, हम हँसिते हँसीमे कहलयैन मुदा सुरुज भाय कोन ऐनामे की देखलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा गम्भीर भऽ गेला। जे चेहराक रूपसँ बुझि पड़ल। बजला»

“बौआ, जेकरा न्याय करैक भार देल गेल अछि वएह बलुआह

अछि!”

हाइ रे बा! ई की सुरुज भाय कहि देलैन? पुछलयैन किछ आ जवाब देलैन किछ! मुदा से केना कहितिऐन जे भाय भँसियाएल जवाब भऽ गेल। मुदा गर भेटल। बजलौं»

“से की भाय?”

अहिना होइते छै जे जखन केकरो मनक बिखाएल विषयक बात पुछब तखन ओकरा अपन बीख भरल बेथा व्यक्त करै कालमे खुशी होइ छइ। सुरुजो भाय तहिना खुशी होइत बजला»

“बौआ, जहिना बलुआह महादेव–माने बाउल-माटिक बनल महादेव–पर जेम्हरेसँ एक लोटा जल देभुन कि ओम्हरेसँ ढहि जाइ छैथ तहिना।”

सुरुज भाइक जवाबक कोनो अरथे ने लगल, बजलौं»

“से की?”

गम्भीर होइत सुरुज भाय बजला»

“बाउलो माटिये छी आ मटियार सेहो माटिये छी, जेकर रूपो आ गुणो चिकने होइ छै तँए चिकनी माटिक आ बेसी दिन भेने माटिये पाथरो बनि जाइए आ पाथर बनला पछाइत तनुकसँ सक्कत माने कोमलसँ कठोर बनैत शीला बनि जाइए, तहिना विचारोक छइ।”

सुरुज भाइक बात सुनि मन गद-गद भऽ गेल। गदगदाइत बजलौं»

“भाय, अहाँ जहल गेलौं आ हमरा छोड़ि देलौं, कि सभ जहलमे छइ?”

सुरुज भाय बजला»

“बौआ, जहल जे बुझै छहक माने छहरदेवालीक बीच, तेतबे

थोड़े अछि।”

अखन तक तँ सएह बुझै छी, मुदा सुरुज भाय कि कहलैन से बुझबे ने केलौं। जहिना बाल-बोध बच्चा जखन कोनो एकटा शब्द सीखैए आ सबहक सोझा वएह बजैए, तहिना फेर बजलौं»

“भाय, से की?”

‘से की’ सुनि सुरुज भाय जेना हमरा राय-छित्ती होइत बुझलैन तहिना समटैत बजला»

“बौआ, जहियेसँ लोककेँ जानवरसँ हटि कनी बेसी बुधि भेल तहियेसँ कोढ़ि हुअ लगल, किएक तँ जानवर जकाँ अपन जोगार अपने करए से आगू बढ़ि गेल, तहियेसँ अब्बल देख-देख दाबए लगल आ ओकरासँ कमबा-कमबा उदर-पुरन करए लगल, अही बीच ओझरी लगि गेल अछि।”

सुरुज भाइक विचार सुनि जेना नमहर साँस छुटल, मन खाली भेल। बजलौं»

“अपने केने ने लोक फरिछौत। डॉक्टर रोगीकेँ रोगक इलाजक उपाय बतबै छै, आकि ओकर साती दवाइयो खाएत?”

सुरुज भाइक बात नीक नइ लगल। नीक ऐ दुआरे नइ लगल जे जे घास आकि लत्ती जकाँ माटिपर पसरल अछि जेकरा डाँड़मे एते दम नइ छै जे ठाढ़ हएत तेकरा बिना साँगह देने ठाढ़ केना करब?

हमर बात जेना सुरुज भाइक मनमे ठेकलैन। ठेकिते बजला»

“बौआ, राजा दुखी परजा दुखी, जोगीकेँ दुख दूना, कहे कबीर सुनह भाय सधना, एको घर ने सूना।”

◌

शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016

कटौज

पचतल्ला होटलक भण्डार घरमे चाउर-दालिक बीच फेर काटौज बढ़ि गेल। ओना, ई कटौज बजारेक गोदाम लग शुरू भेल। शुरू भेल जे जखन होटलक चाउर-दालिक पुरजा नेने ड्राइवर गोदामक गेट लग जा कऽ ट्रक लगा गोदामीकेँ होटलक आदेशक पुरजा हाथमे थमबैत बाजल»

“भाय, जेहने कुलक तूँ गोदामी छह तेहने हम ट्रक-ड्रइवर छी, तँए कहै छिअ जे ता-जिनगी भैयारी निमाहैत चलह।”

भाय मनुख तँ मनुख छी, जहिना भरि मन खटैए तहिना भरि मन खाइए आ तहिना ने एक-दोसरसँ भरि मन हबो-गब करए चहैए। रोपब ‘गब’ भेल आ हूबाक संग मनसूबा ‘हब’ भेल। ओना, काज पुरबैक भाँजमे माने ड्यूटीक समए पुरबैमे दुनू, तँए गनल कुटिया नापल झोर जकाँ दुनूक मन खनहन रहबे करइ। काजक जिनगीक तँ आगू-पाछू सिकड़ी जकाँ कड़ी लगले अछि, माने गोदामी लग जखन मटिया चाह-पान कऽ कऽ औत तखन ने गोदाममे काज शुरू हएत, तैबीच जँ गोदामी अपन ड्यूटी पुरबैले पहुँच गेल तँ ताबे गोदामक चौकीदारी करैत रहह। ओना, भिनसुरके समए, करीब सात बजैत रहइ, मुदा भिनसरो तँ केते रंगक अछि। कियो तीन बजे रातिकेँ रातियो कहै छैथ आ कियो तीन बजे भोरो। एक दिस तरगर राति भेल

तँ दोसर दिस बड़का भोर। मुदा जेतए जे हौउ, ने ओइ वेचारा ड्राइवरकेँ ट्रकक दुनियाँ छोड़ि दोसर दुनियासँ मलतब छै, आ ने ओइ वेचारा गोदामीकेँ दोसर दुनियासँ मतलब छइ। मुदा दुनू ऐ दुआरे खुशी अछि जे जे परमात्मा सृष्टिक रचना केलैन ओ सबहक अँटावेशो सेहो तँ करबे केलैन। तखन तँ जेकरा भागमे जेते छै, सएह ने लेत। बिसवास या तँ देख-सुनि कऽ वा किछु गवाहक गवाहीसँ सभ करिते अछि।

गोदामक आगूमे ट्रक लागल आ गोदामक बगलेक कोठरीमे गोदामीक डेरा, गोदामी ड्राइवरकेँ कहलक»

“भाय, दुनियाँमे के एहेन हएत जे भैयारी नइ चाहत, मुदा दुनूक एक-आत्माक बास हुअए तखन ने।”

डेरामे असगरे गोदामीक पत्नी बैसल टी.बी. देखैत। पाँचे मिनटक बात-चीत जहिना ड्राइवरक तहिना गोदामीक आत्माक तारकेँ तेना जोड़ि देलक जइसँ वीणा जकाँ स्वर निकलए लगल। तइ बिच्चेमे बेरागी जकाँ ड्राइवर वीणाक बीच अपन स्वर निकाललक»

“भाय, हमर-तोहर जिनगीकेँ कोनो ठेकान अछि, कखन अछि कखन चलि जाएत, तँए जेते काल आँखि तकै छी, तेतबे-टा दुनियाँ बुझह। तइमे जे जिनगी अछि तेहीमे ने आगू दिस तकैत चलबो अछि।”

ओना, ड्राइवरक बात गहींर रहितो उथराह अछि जे बात गोदामी बुझि गेल। मुदा दुआरपर आएल अभ्यागतकेँ अभ्यागती निमाहैले किछु बाजल नइ। ‘उथराह’ ई जे भेल जेते गोदामीक जिनगी समटल शान्त जगहमे छै, तेते रोडपर दिन-राति चलैबला ड्राइवरक थोड़े छइ। तखन एहेन बात किए बाजल..?

मुदा होशगर गोदामी मने-मन मानि गेल जे वेचारा ड्राइवर दुनू

गोरेक जान मिलबैत बाजल तँए जिनगीक लीला छूटि गेलइ!

तैबीच गोदामीक डेराबला कोठलीक मुँहपर दुनू गोरे पहुँच गेल। घरमे टी.बी. देखैत गोदामीक पत्नीकेँ देख ड्राइवर बाजल»

“भाय, तूँ ते रजो-महराजासँ ऊपर छह!”

‘महरानी’ सुनि गोदामीक पत्नी मुस्कियेली तँ मुदा मन रहैन टी.बी.क सिरियलमे, जइमे बाधा भेने मन थोड़े जरौ लगलैन। जरबो केना ने करितैन, जेरक-जेर गामक लोक दिल्ली-बम्बैक सड़कपर वौआ रहल अछि, तैठाम जे लोक गौंआँ-घरूआसँ चीन-पहचीन राखत, तखन सभटा कमा कऽ ओहीमे फूकि देत आ अपन बाल-बच्चाकेँ, जेकर भार कन्हापर छै, ओकरा बेरमे रोडपर टहलत..?

ओना, भीतरे-भीतर पत्नी जरैत रहथिन मुदा बेवहारो तँ बेवहार छी, केना नइ मुँह दाबियो कऽ एक लोटा पानि आ एक कप चाहोक आग्रह करती! तइले जँ पतिक आज्ञाक आशा तकती तखन तँ खूब लूरिगैर भेली!

गोदमी अपना डेरामे चाहो पीबैत आ खिड़की देने मुड़ी उठा-उठा गोदामो दिस देखैत। तीनटा मटिया अपन ड्यूटी करए अपना कार्यालयक गेटपर पहुँचल, तँ आगूमे ट्रककेँ ठाढ़ देखलक। काजक भोर देख तीनू मटिया एक-दोसरकेँ शुभकामना देलक। शुभकमनो केना ने दैत, एक तँ ट्रक छी, जैपर कमो लदाएत तँ दू साए बोरा लदेबे करत। तहूमे समैकेँ आगू बढ़ने एते तँ भेबे कएल जे एक दिस बोरा छोट भेल, माने पहिने अढ़ाइ मन अँटैबला सोनक बोरा होइ छल, अखनो ठाम-ठीम अछिए। जे अपनो एक सेरसँ ऊपरेक होइए। आब तँ तेहेन प्लाष्टिकक बोरा बनि गेल अछि, जे जेतबे वौस रहत तेतबे-टा ओकर साइज बनतै। अन्नक बोराक सीमा अछि, खुदरा गहिंकी आ थौक गहिंकी जँ थौक गहिंकीकेँ छोट वौसमे समान देब तँ ओ अनेरे

गनबैत-गनबैत हाथक आँगुरो दुखौत आ काज दैत गोनू झाक पनपिआइ जकाँ...। तँए पचास किलोबला बोरा उपयोगी भेल। तहूमे पहिलुका सोनक बोरा जकाँ ऊपर-निच्चाँ सिलहट थोड़े रहैए, आब तँ तेहेन कान बोरामे लगा देल गेल अछि जे चाहे एको हाथे नइ तँ दुनू हाथे कान पकैड़-पकैड़ फेकैत जाउ...।

रेलबे स्टेशनक पसिन्जर जकाँ मटियाकेँ देखते गोदामी गोदामक मुँह लग पहुँच कहलक»

“दू साए बोरा चाउर आ पचास बोरा दालि लोड करैक छह।”

जहिना कियो अपन जिनगीकेँ काटि-छाँटि चौबीस घन्टाक बना ओछाइन छोड़ैसँ पहिने चौबीसो घन्टाक आमद-खर्चक संग जिनगीकेँ बैसबैत ओछाइनसँ उठि अपन नित्य-क्रिया दिस बढ़ए चाहै छैथ, सएह भेल जिनगीकेँ थाहि कऽ चलब। तहिना मटिया सभ अपन थाहलक। जखने थाहल जिनगीक धारमे चलब तखने केतबो तेज धारक पानिक गति किए ने होए मुदा थाही तँ थहिया-थहिया थाहि-थाहि चलबे करत किने।

गोदामीक बात सुनि तीनू मटिया अपन चौबिसो घन्टाक जिनगी थाहिते तुष्ट भऽ गेल। एक बाजल»

“दू घन्टाक काज भेल।”

दोसर बाजल»

“हँ, सएह हएत!”

तीनू मटिया अपनामे गप-सप्प करिते छल कि ड्राइवर सेहो पहुँच गेल। एकटा मटिया पुछलकै»

“भाय, ई तोरे ट्रक छिअ?”

मटियाक बात सुनि ड्राइवर थकमका गेल। थकमका ई गेल जे

जँ ‘हँ’

कहबै तँ झूठ बाजब भेल, गाड़ी तँ होटल-मालिकक छिऐ, हम तँ ओकर नोकरी करै छी। फेर होइ जे जाबे हमरा जिम्मामे गाड़ी छै ताबे तक तँ हमरे ने भेल। जँ केतौ गाड़ी एक्सिडेन्ट हेतै तँ ओइ लागल हम मरब आकि गाड़ी-मालिक? अही विचारमे वेचारा ड्राइवर ओझराएल, तँए जवाब दइमे कनी देरी होइत रहइ। तैबीच दोसर मटिया बाजल»

“चुप किए छह! केकरो चोरा कऽ आनि गोदामक आगूमे लगा देलहक हेन?”

ओना, ड्राइवरो तँ ड्राइवर छी, जिनगीक ड्राइवर, गाड़ीक ड्राइवर, काजक ड्राइवर आदि सैयो रंगक अछिए। मुदा गोदामी तइ बिच्चेमे बाजल»

“भाय, गोदामे छिऐ, ऐ एरियाक चाहे सड़ल-पाकल रहौ आकि चोरी-छिनरपनक, सबहक ने गोदाम छी। तँए अनेरे तूँ सभ वकबास करै छह।”

गोदामीक विचारसँ ड्राइवरकेँ सह भेटलै, बाजल»

“भाय, अखन तोरा ऐठाम असगरे आएल छिअ, तूँ सभ पहुनाइ कहासँ करेबह तँ अनेरे चोर-बङोर बनबै छह।”

मटिया सभकेँ बुझि पड़लै जे वेचाराकेँ[8] दुख भऽ गेलइ। एकटा बाजल»

“भाय केते दिनसँ ड्राइवरी करै छह?”

जहिना एक जिनगीक बेथा-कथा दोसर जिनगीकेँ बेथित-कथित बनाइये दइए तहिना ट्रक-ड्राइवरकेँ सेहो बना देलक। ‘केते

[8] ट्रक ड्राइवरकेँ

दिन’ सुनि ड्राइवर थकमका गेल। थकमका ई गेल जे जँ कम दिन कहबै तँ कहत जे तूँ नव-सिखुआ छह तँए तोरा जिनगीक कोनो ठेकान नइ जे कखन छह कखन नइ छह। मुदा लगले फेर भेलै जे जँ बेसी दिन कहबै तँ कहत जे सभ गेल गंगा नहाइले आ तूँ रहि गेलह ट्रके चलबैत! माने ई जे जँ जिनगी एक-रसिया चालि पकैड़ कौल्हुक बरद जकाँ अपने थैर भरि घुमैत रहल तँ ओहू जिनगीकेँ तँ गतिशील नहियेँ कहल जा सकैए। ओहो तँ ठमकले भेल किने! तत्-मतमे ड्राइवर मने-मन गुन-धुन करए लगल जइसँ जवाब दइमे देरी होइते रहइ। तही बीच दोसर मटिया बाजल»

“भाय, एना धखाइ किए छह। ऐठाम कि कियो आन अछि सभ तँ अपने सभ छी।”

मटियाक बातकेँ आरो सम्हारैत गोदामी बाजल»

“से तँ छीहे। जहिना तूँ सभ चाउर-दालिक बोराकेँ घर-बहार सभ दिन करै छह, तहिना ने हमहूँ करै छी आ ईहो वेचारा ट्रकसँ अनबो करैए आ लैयो जाइए।”

गोदामीक बात सुनिते तेसर मटिया बाजल»

“एकरा के काटत! तीनू ते एके ने भेलौं। जखने एक भेलौं तखने ने खेनाइ-पीनाइ, बात-विचार सभ एके हएत।”

ड्राइवरकेँ सह भेटलै, बाजल»

“एकरा के काटत!”

ड्राइवरक बात सुनि पहिल मटिया बाजल»

“देखह भाय, तूँ हमरा सबहक पाहुन भेलह, मुदा छह तँ बजारसँ कनी हटि कऽ। ऐठाम देखते छहक जे ने अपन डेरा अछि आ ने चाह-पानक दोकान , जे खुएबो-पीएबो कैरतिअ आ गबो-सप्प

करितौं। करितौं की, मन तँ होइए जे तोरा भरि मन कनाडियन रस पीऐबतौं, मुदा मटिया-तोंटियाक जिनगीक मद्दीए की।”

दोसर मटिया सम्बन्धकेँ बढ़बैत बाजल»

“चाहे-पानकेँ सीमा-नाङैर छै, तीनू गोरेक काजो तँ सेरिआएले अछि, हमहूँ तीनू गोरे ट्रकपर काज करब। तोहूँ जहिना खाली गाड़ी अनलह तहिना भरि कऽ नेने जेबह आ गोदामी भायकेँ अढ़ाइ साए बोरा चाउर-दालिक बिकरी भाइये गेलैन।”

दोसर मटियाक बात सुनि पहिल मटिया बाजल»

“पाहुनक पहुनाइ आकि अपेक्षाक अपेक्षितारे चाहे-पानटा सँ थोड़बे होइए। दू-हाथ ताशे खेलह। बुझल छह किने अही ताशक खेलमे केते राजा-रजबार डुमि गेल आ केते दोबर भऽ गेल?”

घन्टा भरि ताश खेलेलाक पछाइत दोसरो होटलक गाड़ी पहुँचल। काजकेँ बढ़िआइत देख सभ अपन-अपन काज दिस बढ़ि गेल।”

चाउरक गोदाममे रंग-रंगक चाउरक छल्ली लागल, मुदा चाउर छोड़ि आन वौस नइ छल। अरबा-उसना, मोटका-महिक्का, सुगन्धित-बिनु-सुगन्धित इत्यादि अनेको चाउर, मुदा छी तँ सभटा चाउरे माने मनुखेक भोज्य पदार्थ।

दू साए चाउरक बोरा लोड होइते गोदामी दालिक गोदाम खोललक। किसिम-किसिमक दालि, मुदा रंग सबहक एक रंगाहे, जहिना चाउरक एक छहा रंग तहिना दालिक सेहो।

गाड़ीपर दालिक बोरा लोड होइते, दालि-चाउरक बीच कहा-कही शुरू भेल। कहा-कहीक कारण भेल अपन-अपन महत्तक अपन-अपन बड़प्पन। बोराक चाउर बाजल»

“हमरा परतापे तोहर जिनगी छौ तँए हम महँथवार बनि हाथीपर चढ़लौं आ तूँ महींसवार बनि महींसपर चढ़ैक कोशिश कर।”

चाउरक विचारकेँ कटैत दालि बाजल-

“केहेन-केहेन नाओंबला तँ डुमि-खपि अपन नाको कटौलक आ नामो घिनौलक आ तूँ बर नाओंबला महँथवार बनै छह! अपन टेटर सुझै छह जे एक किलोक जेते मोल हमर अछि तइमे तूँ तीनो किलोसँ ने पुरबह?”

ओना, दालिक बात चाउरकेँ छुलकै, मुदा छुनैटा सँ थोड़े होइ छइ। अपन-अपन गुणकेँ महत तँ होइते छइ। मुदा तँए कि गेंग रोपनिहारक बीआ उपैट गेल? जखन सुरुज-चानक ठेकान नइ अछि जे कहिया नमहर हएत आ कहिया छोट, तखन बात-विचार आ गप-सप्प ओइसँ अलग थोड़े अछि।

दालिक झमारसँ चाउरक मन झमान भऽ गेल। बाजल»

“देख! दुनियाँ भरिमे अपन जे सचार-विचार रहल अछि आ अखनो अछि, तइमे दुनू गोरे सहयोगी जकाँ छी। माने ई जे भात-दालिक भोज्य विचार जे अपना ऐठाम[9] अछि, ई सिस्टम केतौ ने अछि। तँए आँखि देखेमे से नइ छजतौ।”

चोटाएल साँप जकाँ दालि फुफकार छोड़लक»

“कहबे तँ केलियौ, जे हमर एक-किलोक मोल अछि, ओ तूँ चारियो किलोमे ने हेमे। तखन तोहीं बाज?”

दालिक बात चाउरक अभ्यंतरकेँ छुबि देलक। बाजल»

“तोरा जकाँ हम निरलज नइ ने छी, नीड़-जल छी, मुदा अपन बात नइ कहबौ ते तोहर मन रहतौ। बाज ते तोहीं, पुछही ते गाड़ीबला

[9] मिथिलामे

सँ जे दिनका राशन कीनै जाइ छहक तँ बेसी चाउरमे पाइ लगै छह आकि दालिमे?”

ओना, ड्राइवरो बोरे लग ठाढ़ भऽ गनैत रहए, मुदा मने-मन ने बोरा गनैत रहए, कान तँ खलिये रहइ जइमे दुनूक बात तँ जमा होइते रहइ। तहूमे गाड़ीबलाक नाओं सुनलक तखन आरो चकोना भेल। चकोना होइते मन किराना दोकानपर चलि गेलइ। मुदा वेचारा ड्राइवर अपने विचारमे ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे पाबैन-दिनक दोकनदारी आ अनदिना दोकनदारीमे दू रंग खर्च होइए। पाबैन-दिन देहरादुनबला चाउर कीनै छी तँ साठि रूपैये किलो दइए आ अनदिना जे मोटका उसना चाउर लइ छी तँ पनरह रूपैये दइए। चारि साए ग्राम चाउर लइ छी आ साए ग्राम दालि लइ छी। साए ग्राम दालिक दाम दस रूपैआ लगैए आ देहरादुनबला चाउरक दाम चौबीस रूपैआ लगैए आ अनदिना जे चाउर लइ छी तँ छह रूपैआ लगैए..!

हिसाबमे तेना वेचारा ड्राइवरक मन नंग-चंग हुअ लगलै जे पिनैक गेल। पिनैकते चाउरो आ दालियोक बोरा दिस दहिना हाथक आँगुर उठबैत बाजल»

“संच-मंच भऽ रस्ता चलै-चलह नइ जँ केतौ रस्तामे झगड़ा केलह आ हमर गाड़ी उनटल तँ कहि दइ छिअ!”

जहिना गमैया पनचैतीकेँ मानि तँ लइए मुदा कहा-कहा चलिते रहै छै, तहिना ड्राइवरक बात चाउरो आ दालियो मानि गेल मुदा कहा-कहा मेटाएल नै लधाएले रहलै।

होटल पहुँच भण्डार-घरमे दुनूकेँ पसिन्जर गाड़ीक डिब्बा जकाँ कसि कऽ रखि देलक। के केतए अछि तेकर कोनो ठेकान ने रहलै। सभपर सभ चढ़लो आ उतरलो, तँए केकर बात के सूनत, सभ अपने बेथे बेथाएल रहए। मुदा जखन भण्डार-घरसँ दुनूक एक-एक बोरा

भानस घर पहुँच सामना-सामनी भेल आ अपन आगूक धधकैत चुल्हि देखलक आकि दुनूक मन डरसँ पसीज गेलइ। दुनूक मनमे भेलै आब बलिक छागर जकाँ नहबैले लऽ जाएत! दालि दिस चाउर ताकए आ चाउर दिस दालि। तखने चाउर कहलकै»

“जहिना हम भाय-चाउर भेलियौ तहिना ने तोहू बहिन-दालि भेलेँ। जखन दुनूक पुरुखा बीच सभ दिन भाए-बहिनक सम्बन्ध रहल अछि, तखन आजुका सम्बन्ध तँ हमहीं-तोहीं ने निमाहब।”

चाउरक बात सुनि दालिक अभ्यंतर मन बाजल»

“भैया, हमर-तोहर सम्बन्ध कि कोनो आइये भेल, जहिना सभ दिन प्रेम-भावसँ रहलौं तहिना दिन बीत जाए, सएह ने मनक मनोरथ भेल।”

दालिक बात सुनि भरदुतिया-भाए जकाँ चाउर बाजल»

“समए छल बहिन, जखन श्रमक अनुकूल दुनू गोरेक महत बरबैर रहए। मुदा आइ कोसी कातक पड़ोसियाक बीचक कटान जकाँ दुनूमे दूरी बनि गेल अछि..!”

◌

शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016

बाल बोध

आने दिन जकाँ भोर भेल, सुर्जक लाली पसरल। राति भरिक अन्हारक संग पुरनिहार रात्री वायु बहैत माटिक नीड़ानन्द सुगन्ध सेहो ओहिना निकलैत, गाछ-बिरीछसँ अकास धरिमे चिड़ै-चुनमुनी ओहिना अपन-अपन बोलमे नीक-अधला बात सेहो बजैत, मुदा तैयो सुधनी काकीकेँ ओछाइनसँ उठैक साहस नइ होइ छैन। ओना, नीन टुटि गेल छैन मुदा आँखि बन्न छैन, कान तँ बन्न होइबला छी नइ, ओ तँ जागल सिपाही छी...।

चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ सूर्जक लाली धरि सुधनी काकीकेँ बुझि पड़ैन जे सभ जेना हमरे मुहोँ दुसि रहल अछि आ चालियो-कुचालि देख रहल अछि। कहू ई केहेन भेल जे नअ बर्खक बेटीकेँ ओहन पैघ संस्थागत विद्यालयमे पढ़ए पठेलौं जे अपन जिनगी-उठैक बात बुझत, तँ बुझि गेल उठल ज्ञानक किरिया!

चकित भेल सुधनी काकीक मनमे उठलैन- ई एना भेल किए? तीनियेँ बर्खक बेटी जखन रहए, तहिये ओकरा ओहन विद्यालयमे प्रवेश दिएलौं, जैठाम दोसर कोनो बाहरी विद्याक प्रवेश नइ। अपन भोजन, अपन रहैक बेवस्था, अपन विद्यालयक पहचान, अपन वस्त्र-जात आ अपन विचारक पढ़ै-लिखैक बेवस्था आदि सभ किछु तँ विद्यालयक अपन अछि, तैठाम एना किए भेल?

मुदा लगले अपन मन लटुआ कऽ अपनापर खसि पड़ैन जे लोक तँ यएह ने बुझत जे केकर बेटी छी। तइ काल हमरा छोड़ि दोसर माए दोखी हेतइ। सभ कहै छै माए गुण ‘घी’, ई कलंक केकरा सिर चढ़त। आँखि खोलि जखन चारू दिस तकैत तँ बुझि पड़ैन जे सभ किछ भगा रहल छैन। मुदा घरसँ आकि गामसँ भगा रहल छैन, तैठाम आबि सुधनी काकीक विचार अँटैक जाइन।

कौल्हुके समाचार छी। ओना, समाजमे एहेन काजकेँ लोक घटने कहै छैथ, मुदा ई घटना नइ भेल। घटना भेल ओ जेकर घटितक पूर्ति नइ होइत, मुदा प्रेम-प्रसंगमे कोनो लड़का आ कोनो लड़की समाजसँ डरि कऽ कतौ पड़ा जाइए, से केना घटना भेल।

भेल ई जे सुधनी काकीक नअ बर्खक बेटी- सोनी सतमे किलासक छात्रा, सतमे किलासक छात्र- किशलयक संग केतौ चलि गेल। ओना, दुनू पड़ाएल चारि बजे भोरमे, आने दिन जकाँ ट्यूशन पढ़ए विदा भेल आ तखने भोरुका गाड़ी पकैड़ लेलक। मुदा आन किए बुझत जे दुनू पड़ाएल जाइए। सभ दिन तँ देखबे करैए जे भोरुका गाड़ी पकैड़ हाट-बजारक काज सेहो करिते अछि। ट्यूशनसँ लऽ कऽ विद्यालय धरि संगे रहैए, तँए किए अनका नजैरपर पड़त। मुदा सुधनी काकीक नजैरमे ओतै काँट जकाँ गरि जाइन जे ट्यूशन पढ़ि कऽ आन दिन अबै छल, आइ किए ने आएल। मुदा लगले ओ काँट हाथेसँ निकैल जाइन। निकैल ई जानि जे एहेन आइये तँ नइ भेल, केता दिन तँ एहेन होइते आबि रहल अछि जे भोर जे सोनी निकलै छल ओ सात-आठ बजे राति धरि अबैत छल।

ओना, दस बजे करीबमे बुधियार काकाकेँ स्कूलोसँ फोन आएल छेलैन जे सोनी स्कूल नइ आएल अछि? तहिना ट्यूशनसँ सेहो फोन आएल छेलैन। मुदा तैपर जेते कान-बात देबा चाही से बुधियार

काका नइ देलैन।

ओना, सुधनी काकी बुधियार काकाकेँ बेर-बेर कहैत रहलखिन मुदा बुधियारो काका तँ भरि दिन बुधियारियेमे ने रहै छैथ। बिनु बिआहल बेटी मरे से कि बुधियार काकाकेँ नइ बुझल छैन, छैन्हे।

एक तँ सभ दिन बुधियार काका तरगरे उठिते छैथ मुदा आइ तँ आरो गामक टोह लइ खातिर सबेरे उठि गाममे टहलए लगला। भोरुका टहलबो नीक होइते छइ। जिराएल मन निड़ाएल रहिते छै, जेकरा मीड़बैमे सेहो सुविधा होइ छै आ एकान्त बुझि किए लोक अनेरे सोझा-सोझी रक्का-टोकी कऽ झगड़ा बेसाहत। तहूमे जँ बुधियार लोक बुड़िबकसँ रक्का-टोकी करैत अपन इज्जत उतारि लिअए तँ ओ कोन बुधियार लोकक बुधियारीक लक्षन भेल। ओ तँ सोझे भेल कि बुड़िबक संग चुम्मक लोहा जकाँ बुड़िबक बनब। तँए अधिकांश लोक यएह ने कहता जे हमरा बुझले ने अछि। भाय जखन अहाँ अपन सिलपट जकाँ चौकियाएल चौमास सन बनले छी तखन जे ओइमे नीक चीजक नीक बीआ बाउग हुअए आकि अधला चीजक अधला बीआ, गाछ तँ वएह जनमत जेकर जे गुण-धर्म छइ आ जेकर जेहेन गुण-धर्म छै ओ तँ ओहने फड़बो-फुलेबे करत।

..मनुखो तँ मनुख छी, देवी-देवताक रूप-रंगक भिक्षू। जेहेन मनमे गढ़ैक विचार हेतै तेहेन गढ़ि लेत आ तेहने रूपो-सोभाव दऽ देतइ। दऽ कि देतै जे छइहे, अपन बुझलो हरल-मरल विचार दाबि कऽ रखि लेत आ ओकरे सन जीअल-जान ठाढ़ कऽ देत। तहिना बुधियारो काका गामक टोह लैत अपन बीआ बाउग करैमे लागल छला।

ओना, गामक हवामे मन्द-मन्द ईहो वायु उठि गेल जे दुनूक बीच अपकर्म, अपकाज वा अपवृति भऽ रहल अछि। मुदा अनकर

घेघ निहारैसँ बेसी लोक अपना गाड़ामे घेघ नइ हुअए तइ परियासमे लागल। मुदा ई हवा छल काल्हिये तकक। जे काने-कान बीआ बाण छल मुदा गुपे-गुप गुपबाण बनल छल। भोरुका ट्यूशनक पछाइत ओइमे एक झोंकी जकाँ झोंक उठल। उठल ई जे सोनी आ किशलय दुनू गोरे आइ ट्यूशन पढ़ए नइ गेल! जासूसियो तँ जिज्ञासूए छी, अनेरे रंग-रंगक प्रश्न छात्रो आ शिक्षको सबहक बीच उठए लगल। एकटा छात्र बाजल»

“जखन दुनू घरसँ निकलल आ ट्यूशन तक नइ पहुँचल तखन अछि केतए?”

मुदा लगले शिक्षको जे कानमे तेल ढारि लैथ सएह ने नीक हेतैन, अपन मोटा अनके दिस ने फेकब नीक। तँए जवाब देलखिन»

“परिवारमे अनेको रंगक काज होइ छै, जँ केतौ कोनो जरूरी काजे गेल हुअए, तेकरा जँ अबलटक नजरिये देखी ओ नीक नइ।”

दोसर छात्र निर्णय करैत बाजल»

“जखन फुल फुलाएल तखन महको निकलबे करतै, तइले जे हम सभ औगुता कऽ किछ बाजि दिऐ से नीक नइ।”

एक तँ ट्यूशन पढ़ै-पढ़बैक दर्जनो छात्रक समए, अनेरे किए कियो बैलूनमे हवा भरि अकासमे उड़ौत। तँए हवाक पहिल झोंकीक गति मन्द तँ पड़ल मुदा बन्न नइ भेल।

फेर दोसर झोंकी स्कूलक किलासमे उठल, तहूमे बाल बोधक जमात, एकटा छात्र बाजल»

“दुनू दिल्लीक गाड़ी भोरे पकैड़ लेलक।”

शतरंजक गोटी जकाँ दोसर सह दैत बाजल»

“दिल्ली नइ बम्बैआ टेन पकैड़ लेलक!”

सोनी आ किशलयक भागबकेँ समाजक लोक मने-मन मानि लेलक जे दुनू उमेर आ ज्ञानक दोखक चलैत एना केलक। से भेल मने-मन। मुदा समाज तँ मने-मनक मोइन छी। जैठाम समाजक विघटनो होइए आ निर्माणो होइए, तैसंग मने-मनक दोसर कारण जे रूढ़ स्वरूप अछि ओ अछि, कोट-कचहरी जकाँ पैछला पचास बर्ख पूर्वक जे समाज छल ओइ अनुकूल जे चिन्तन प्रक्रिया छल तइ अनुकूल आइयो सोचब आ करब। ओना, मथनसँ मक्खन निकलै छै, तँए ओहो जरूरी। मुदा आइक जे समाजिक परिवेश बनि रहल अछि ओइ परिवेशमे केना प्रवेश कएल जाए..?

साँझ पड़ैत-पड़ैत काल्हिसँ बेटीक सम्बन्धमे सुनैत-सुनैत सुधनी काकीक कान बहीर भऽ गेलैन। ने भानस करैमे मन अँटलैन आ ने भूखे-पीयासक तृष्णा बुझि पड़लैन। मनमे तेना अपन बेटी नचैत रहैन जे किछु नीके ने लगैन। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ ओछाइनपर पहुँच पड़ली।

चौहद्दी बान्हि–माने गाम घुमि–बुधियार काका घरपर पहुँचला। सून-सान जकाँ घर-दुआर बुझि पड़ैन। परिवारक रूपक रंग देख बुधियार कक्काक मनमे एलैन- एना किए अनोन-बिसनोन जकाँ बुझि पड़ैए? तैबीच सुधनियोँ काकी आँगनसँ निकैल दरबज्जाक मुँह लग पहुँचली। दरबज्जाक मुँहक आगू मुँह नइ खुजलैन मुदा पति-पत्नीमे पहिने के बाजैथ, एहेन तँ प्रश्न नइ अछि। अपना खगते कियो बजैए। मन्हुआएल कहियौ कि मरहन्ना, परिवार देख जँ परिवारक अभिभावक मुँह नइ खोलैथ तँ धराउए कहिया-ले रखता। पुरुषक तँ पुरुषार्थे ने भेल जे जेते नमहर काज सोझमे आबए तइसँ अधिक पुरुषार्थसँ ओकर सामना करी। जँ से नइ तँ परिवार निच्चे-मुहेँ ढलैक जाएत! भिनसुरका सुर्जक बाल-कली जकाँ मुँहमे चुहचुही आनि बुधियार काका बजला-

“अनेरे ने मनकेँ एते दबने छी, अखन तक जे चुल्हो-कौल्ह ने झाड़लौं-बहारलौं-निपलौं हेन, तखन चाह कखन बनाएब?”

ओना, सुधनी काकीक मनमे रहैन जे बेटीक विषयमे किछु कहता, मुदा से भेल नहि। जइसँ सौनक मेघ जकाँ दुनू आँखि सुधनी काकीक करिया लगलैन। नोरक सिरखार सेहो जागए लगलैन। जे बुधियार काका बुझि गेला। कोनो जीवित घटनाकेँ मोड़ैले दोसर-तेसर घटनाकेँ आगूमे ठाढ़ कएले जाइए, यएह सोचि बुधियार काका बेटीक बातकेँ टारैत, खाइ-पीबैक बात उठौलैन। मुदा से सुधनी काकीकेँ मनमे नहि पचैत देख बजला»

“देखियौ, जँ आइ अपने बेटीक कोनो बातटा रहैत तँ ओ भेल परिवार स्तरक काज, मुदा गाममे जखन दू परिवारक, तहूमे दू जातिक बीचक बात छी, तैठाम जँ अहाँ चिन्तासँ मरिये जाएब, तँ ई मरब कोनो मरब भेल। ई तँ भेल बलउमकी।”

ओना, सुधनी काकीक मनमे ईहो जगि गेल रहैन जे पहिने चाहे बनाबी। जखने अपनो चुल्हि लग बैसब, तखने मनो बहला जाएत। चाह पीला पछाइत निचेनसँ दुनू परानी कोनो रस्तो निकालब। चाह बनबए सुधनी काकी गेली।

गोबर गाँठक करसीक आगि हुअए आकि बन्हन दइबला जौड़क जरैत आगि, दुनू भुमहूरे आगि कहबैए, तहिना गाममे काने-कान, मुहेँ-मुहेँ सोनी आ किशलयक समाचार अखबारक पहिल पेजक मुख समाचार जकाँ बनल अछिए। जइ अखबारकेँ देखू, तइमे पहिल समाचार तँ वएह अछि। तँए दुआरे-दुआर, अँगने-अँगने आ अँगने-दुआरे आकि दुआरे-अँगने अही समाचारक दौड़-बरहा चलि रहल अछि। मुदा टीका ढेरी टीपै-जोकर एकोटा ने! सभकेँ सभ दुसबे करैत मुदा समाज जखन समुद्र छी तखन ई नान्हिटा काज केना पचत, तइ

दिस कियो तकबे ने करैत आकि बुझबे ने करैत, से तँ ओ जानैथ मुदा समाजमे एहेन काज आइये भेल, सेहो बात नहियेँ अछि, तखन जे डकहर जकाँ बड़का लोल अलगा कऽ सोझे देखैत रहब सेहो तँ उचित नहियेँ अछि।

गाममे जे समस्या ठाढ़ भेल ओ केहेन समस्या अछि ऐपर तँ विचार करए पड़त। एहनो घटना तँ होइते अछि जे एके परिवारक लड़का-लड़की रहैए। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे दुनू एके जातिक बीचक रहैए, तेकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। तैसंग जातिक बीच सेहो अछि। तेतबे किए, एक धर्म माननिहारकेँ दोसर धर्म माननिहारक बीच सेहो होइते अछि। के विचार करत?

चाह पीबैत-पीबैत जेना सुधनी काकीकेँ जान-मे-जान एलैन तहिना बजली»

“जे बाप माए बेटा-बेटीकेँ जनम दइ छै, से तँ मुइला संग जाइते ने छै आ धिया-पुता-ले जँ जान गमाएब तखन तँ एको दिन जीब कठिन अछि। मुदा रहब तँ अही गामो-समाजमे आ अही परिवारोमे।”

आगूक बात सुधनी काकीक मुहेँमे रहैन कि बिच्चेमे बुधियार काका पान साए नम्बर देल पानक पीत फेकैत बजला»

“कोन रोग छै जेकर दवाइ नइ छै, अनेरे अहाँ मन खसौने छी। केकरो मन खसै छै कि उठै छै ओ अपना करमे, तइले अनेरे किए माथ भरिऔने छी।”

बुधियार कक्काक बात सुनिते सुधनी काकीक मन खने-खन खनहन हुअ लगलैन। बजली»

“आगू की हएत?”

भाय केतबो किछु हुअए मुदा घरवाली लग आ सासुरमे जँ पुरुखपना नइ रखलौं तखन पुरुखे केना भेलौं। जखन पाण्डु रोगसँ

ग्रसित, जे रोग जनन-शक्तिये कमजोर करैए, ओहन पाण्डवकेँ जखन युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल आ सहदेव सन बेटा भऽ सकैए तखन तँ अपने कहुना निरोग छी..!

बुधियार कक्काक मनमे बुधियारी लगलैन। बजला»

“अहाँ अँगना-घरमे रहै छी तँए दुनियाँ-दारीक गप-सप्प नइ बुझै छिऐ। जेते शास्त्र-पुराण अछि सभमे एहने-एहने घटना सबहक चर्च अछि, हम-अहाँ कोन माल-मे-माल छी जे...।”

आगू बजैले बुधियार कक्काक बात पेटेमे रहैन कि बिच्चेमे सुधनी काकी बाजए चाहली। बजैक कारण भेलैन जे पतिक मुहेँ जे शास्त्र-पुराण सुनलैन। शास्त्रे-पुराण ने कोनो अधला काजकेँ नीक बनबैए आ पापक प्रायश्चित करैक दम सेहो रखैए। छोट-छीन धारक बाढ़िकेँ के कहए जे कोसियो-गंगाक बन्हतोरा बाढ़िमे जखन चुटियो सन कोनो खढ़-पातक सहारा भेट गेने ओहन बाढ़िक डरे ने करैए तखन मनुख तँ सहजे मनुख छी, बेंगोसँ कठजीव...।

मने-मन विचारक धारमे सुधनी काकी वौआए लगली। जेते वौआइ छेली तेते डरो होनि आ मनो खुशी होइत रहैन। बजली»

“जखन संगी बनि हाथ पकड़लौं आ संग दइक शपथ अहाँ आगि छुबि कऽ खेने छी, तखन जँ आगिसँ डर करब तँ शपथ केना पूरित हएत?”

सुधनी काकीक विचार सुनि बुधियार काकाकेँ विचारक सिरसँ नइ जड़िसँ कोंपर देलकैन। कोंपराइते मन चहैक उठलैन। बजला»

“गाममे की की भेल अछि आ की की होइए, से अहाँ थोड़े बुझहै छिऐ। जँ बुझनौं हएब तँ कि मोने हएत, मौगी-मेहैरक ने बुधि छी केते काल कोन विचार मन रहत तेकर कोन ठेकान।”

‘थोड़े बुझै छिऐ’ आकि ‘बेसी बुझै छिऐ’ आकि ‘बुझबे ने करै

छिऐ’ से सुधनी काकीक मनमे फरिऐबे ने केलैन।

एक तँ पति-पत्नीक बीचक बात, दोसर कियो आन सुननिहारो नहियेँ, तँए सुधनी काकी किए चुप रहती। बजली-

“लोक की सब बजैए?”

पत्नीक बात बुधियार कक्काक अभ्यंतरकेँ जेना छुबि लेलकैन। छुबाइते बमकए लगला»

“गामक लोक कथी बाजत! पहिने अपन टेटर निहारि लिअ!”

‘अपन टेटर’ सुनि सुधनी काकीक टेटराएल जाइत मन थमलैन। थमिते बजली»

“की टेटर?”

बेथाक बराबरीक मुँह बुधियार काकाकेँ खुजि गेलैन। बाजए लगला»

“रहमाकेँ देखने रहिऐ, पाँचटा धिया-पुता भेला पछाइत अपने दोसर मौगी घर लऽ अनलक आ अपना बोहुकेँ छोड़ि देलक।”

सुधनी काकीकेँ जेना भक्क-दे भकइजोत भेलैन। बजली»

“ओइ पनचैतीमे तँ अहूँ रहिऐ किने?”

बुधियार काकाकेँ पत्नीक बोल अपन वाणीकेँ सह देलकैन। बजला»

“हम कि कोनो चोरा कऽ बजै छी, तीनटा बेटी रहै आ दूटा बेटा, जइमे एकटा बेटा-एकटा बेटी बापक हिस्सामे देलिऐ आ दूटा बेटी आ एकटा बेटा माइयक हिस्सामे। देखै छिऐ केहेन जीबठगर मौगी अछि जे पदमिनी भेल मलिकाइन बनल अछि। बेटा तेते कमाइ छै जे बापोक हिस्सा माइयेकेँ दइए।”

बुधियार कक्काक बात सुनि सुधनी काकीक मन दहललैन।

दहैलते बजली»

“हँ से तँ आँखिसँ देखै छी।”

अपन विचारमे दोसराक सहमत भेने जहिना विचारमे सकतपन अबैए तहिना बुधियारो काकाक विचार सकतेलैन। बजला»

“अखन अपने माथपर भार पड़ि गेल अछि, तँए पहिने चिन्तू भायकेँ भेँट करबैन, ओ जँ पाँच थापर मारबो करता आकि पाँचटा बातो कहता तँ सहि लेब। किछु छैथ तँ गामक मेह तँ हुनके मानै छिऐन। घुमि कऽ अबै छी तखन गामक खेरहा केहेन पाकल खेरही जकाँ चनकैए से सुनब।”

पतिक विचार सुनि सुधनी काकी जेना विभोर भऽ गेली तहिना बजली»

“की खेरहा-खेरही कहलिऐ?”

पत्नीक पिपाशु मन देख बुधियार कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते विचार उठलैन। जखन घरमे आगि लगि रहल अछि तखन पहिने घर शान्त करब जरूरी अछि। मुदा प्रश्न अछि अशान्त मन शान्त केना हएत? ओना, पोथी-पतराक विचार मनक विचारकेँ जरूर मथित करैत अछि मुदा मनमे जेते शान्ति आँखिसँ देखने होइए ओते कानसँ सुनने तँ नहियेँ होइए। मनक बिसवासे ने मनकेँ शान्ति दइ छइ। तइले समाज समुद्र जकाँ सोझामे ऐछे...।

मने-मन बुधियार काका सोचलैन जे गाममे कहिया-कहिया केतए की-की भेल ओते ने बुझल हएत आ जे बुझलो हएत तँ सभटा मनो नहियेँ हएत। मुदा हाल-सालमे जे सभ भेल हेन से तँ दुनू परानीकेँ देखलो अछि आ सुनलो तँ अछिए। तँए जँ दू-चारिटा एहेन उदाहरण जँ आगूमे देबैन जे कोन-कोन बेटी घर छोड़ि-छोड़ि गामसँ पड़ाएल, तखन अपने आँखि सोझ हेतैन। जखने देखती तखने मनमे हेतैन जे

ओहो माए-बाप तँ समाजमे जीबते छैथ। तखन हमहीं किए एते औगता कऽ मरैले तैयार छी। जिनगी कि बड़ सस्ता अछि जे जखन जे मन हएत तखन तेहने बना लेब...।

बुधियार काका पत्नीकेँ परबोधैत बजला»

“अनका जेकाँ हम सभ निरलज नइ ने छी, परिवारमे जे घटना भेल अछि, तेकर सोल्होअना दोखी माइये-बाप अछि, से मन कहाँ मानैए? समाजोक दोख केतौ-ने-केतौ जरूर हएत, मुदा अखन तँ ओ विद्यालय छोड़ि समाजमे पएर कहाँ रोपलक जे समाजकेँ दोख लगाएब। तखन बचल विद्यालय।”

बुधियार कक्काक धारा-प्रवाह वक्तव्य कथाक रहैन कि कथनीक से सुधनी काकी बुझबे ने केली। तँए डकहर जकाँ लोल अलगौने बुधियार काकाकेँ देखैत रहली।

पत्नीक डक-धियान जेना बुधियार काकाकेँ किछु इशारा केलकैन। खग जानए खगक भाषा। भरल पेट थोड़े जरल पेटक सुख देखत, ओ तँ खगले पेट देख सकैए जे बेटीक बिआह हौउ आकि पढ़ाइ-लिखाइ, पुरबैमे सभ परिवारकेँ एके रंग अनुभव होइए, ईहो केना मानल जाए। बुधियार काका बजला»

“गाममे कि देखै छी, एके गोरे सत-सतटा बिआह केने अछि, जइमे तीनटा-चारिटा फुसलौआ रहैए आ गोटे-आधे समाजक देलहा आ किछु किनलोहो रहिते अछि।”

बुधियार कक्काक मुँहक बात ‘फुसलौआ’ सुनिते सुधनी काकीक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइते बजली»

“ने अहाँ केतो पड़ाएल जाइ छी आ ने हम केतौ धारमे भँसियाएल जाइ छी जे कोनो औगताइ रहत। जाउ पहिने चिन्तू भैयाक भेँट करियौन, जे कहता से करब।”

पत्नीक सह पबिते बुधियार कक्काक छाती जेना दू इंच आरो बढ़ि गेलैन। बजला»

“अहाँ कोनो चिन्ता नइ करू, हम सभ[10] अपनामे विचारि लेब।”

सुधनी काकी»

“गामक मौगी सभ जे कुटिचाल करत से?”

बुधियार काका»

“घटनामे तँ दुनू अछि किने माने लड़को आ लड़कियो, आधाक भार तँ मौगियोक छै किने, अपन विचार समाजमे राखह।”

चाह पीब चिन्तू काका समाजक बीच होइत घटना चक्रक चक्कीमे अपन मनकेँ पीसैत रहैथ, कि बुधियार काका पहुँच टोकलकैन»

“भाय, गोड़ लगै छी।”

चिन्तू भाइक जाबे भक् खुजैन तइसँ पहिने बुधियार काका प्रणाम केने छला, तँए नइ सुनलैन। मुदा भक् खुजैत आगूमे बुधियार काकाकेँ ठाढ़ देख हाथोक इशारा दैत आ मुहोँसँ बजला»

“आबह, बैसह। हाल-चाल कहह।”

‘हाल-चाल’ सुनि बुधियार काका कनी मिड़मिड़ेला मुदा मनमे साहस बटोरि बजला»

“भाय, बच्चियाबला बात तँ बुझने हएब किने।”

“हँ! अखने किछ पहिने सुनलौं। सहए छगुन्तामे पड़ल छी!”

चिन्तू कक्काक बात सुनि बुधियार काका बजला»

[10] पुरुख-पात्र

“उपाय?”

चिन्तू काका बजला»

“उपाय, अखन किछ ने। घरसँ भागल तँ चाहे कलकत्ता जाएत नइ ते दिल्ली। बम्बै नइ जाएत, किएक तँ बम्बै भगैए बेजोर माने हीरोइन भगैए हीरो-ले आ हीरो भगैए हीरोइन-ले। लड़का लड़की-ले आ लड़की लड़का-ले, मुदा ऐठाम तँ जोड़ा लगल अछि। जँ अपन जिनगीक भार अपने उठा जीब लेत, तेकरे खगता ने सभकेँ छइ।”

◌

शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016

डभियाएल गाम

आने गाम जकाँ हमरो गाममे पंचायत चुनावक अवाज पहुँचल। लोकक मने उड़ि गेल जे जिला-पार्षद भेल, मुखिया भेल, पंचायत समिति भेल, सरपंच भेल, सरपंचक संग-संग मुखियोक पंच भेल, ओहीमे उपमुखिया आ उप-सरपंच सेहो भेल, तहूमे आरक्षण भेने तँ आरो घरे-घर पद-प्रतिष्ठा सेहो पहुँचत। जखन सभकेँ लड़ै आ पद पबैक अधिकार छै तखन किए ने एके परिवारक सभ बनत। एक गोरे मुखिया, दोसर सरपंच, तेसर पंचायत समिति, चारिम पंच आ जखन सभ अपने हाथ चलि औत तखन जे गाड़ीक-गाड़ीक चाउर-गहुम सरकार दइ छै, अन-पानि उपजबैक खगता की रहत।

दोसर दिस बान्ह-सड़कक कमीशन[11] नगदा-नगदी सेहो एबे करत, तखन किए ने एक धक्का देखिऐ। यएह धक्का मारि धकियबैक मन दर्जनक-दर्जन नेताकेँ एके बेरे ठाढ़ कऽ देलक। जइसँ बुझि पड़ए लगल जे राजनीतक जेना बिर्ड़ो गाममे उठि गेल। मुदा दूरभाग कहियौ आकि अपन भाग कहियौ मरलाही पंचायत जे अखन वीर्तमान अछि, ओइ क्षेत्रक (जमीनी) कियो अखन तक पंचायतिक जे पद-भार होइ छै, से पौने नै छला। तेकर अनेको कारणमे प्रमुख भेल पंचायत क्षेत्रकेँ

[11] पंचायत टैक्स

असथिर रहब। मरलाहीए गाम जकाँ सरलाही, जरलाही, हरलाही इत्यादि बीस गाम मिला एकटा पंचायत बनल, जइमे ऐ सभ गामकेँ बिना दगने सोनबैरसा पंचायतक नाओं पड़ि गेल।

ओना, जहिना ऐबेर गामे-गाम समाजक विकासक काज केनिहार उठि कऽ ठाढ़ भेल अछि तहिना देशक अजादीक समए सेहो गामक विकासक बात उठल छल। मुदा दुनूक दू परिस्थिति दू मन: स्थिति पैदा केलक। ओइ समए, माने आजादीक समए सबहक मनमे रहैन जे गाममे रहब अछि तँए गामक विकास ओते तँ जरूर भऽ जाए जे रहै-जोकर होइ। मुदा हुनका सबहक संगे आरो विषम स्थिति रहैन। गामक-गाम डभियाएल पड़ल अछि। किसानक देश भारत, जेकर अधार कृषि, जे सालक-साल बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ैत रहैए। मुदा बाढ़ि-रौदीक तँ अपन हिसाब छइ। बेसी बरखा भेल तँ बाढ़ि आएल उपज दहा गेल आ रौदी भेल तँ उपज जरि गेल। मुदा दुनूक अपन-अपन बान्हल समए छै, बाँकी तँ बिसवासू समए अछि। तइले किछु ने भेल। किसान आन्दोलनसँ पछिमी कोसी नहर बनैक योजना बनल। मुदा केते खेतकेँ नहैरसँ लाभ होइ छै आ केते उपजाउ खेत मारल गेल? खएर जे भेल से भेल मुदा चुनाव सनक महापर्वकेँ नीक जकाँ सफल करब मरलाही गामक लोकक मनमे जागले अछि। टोले-टोल, जातिये-जाति पंचायत चुनाव लड़ैक क्रममे आबिये गेल अछि। मुदा कोनो उम्मीदवारकेँ मुद्दा नइ भेट रहल छै, जे एक उम्मीदवार दोसरकेँ पछाड़ि केना जीतत। सभ एक रंगाहे एक चलिये...।

आजादीसँ पहिने हजारो बर्खक शासन देशक बाहरी लोकक रहल जइसँ जनतांत्रिक पद्धैतक विचार लोकक मनमे कहियो जगबे ने कएल। बाहरी शासक रहने देश गुलामीक जंजीरमे जकड़ल रहल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत पंचायतिक रूप-रेखा तैयार भेल, जे

गामक लोकक माध्यमसँ संचालित हएत। ओना, आजादीसँ पूर्ब गामक सीमांकन वित्तीय गामक[12] रूपमे छल, जमीनक मालगुजारियो आ देखो-भाल जमीन्दारक हाथमे छल।

देश आजाद होइते जमीन्दारोक जमीन्दारी आ रजो-रजवार ढहल। पंचायतक सीमांकान नव सिरासँ भेल। बीस गाम मिला कऽ सोनबैरसा पंचायत सेहो बनल। सभ गाम सभ रंगक अछि, कोनो गाम रकबो आ जनसंख्योक हिसाबसँ नम्हरो अछि आ कोनो छोटो अछि। मुदा जे अछि से अछि पंचायतमे एकटा मुखिया आ एकटा सरपंच तँ बनबे कएल।

किछु दिनक पछाइत किछु गाम कटि कऽ दोसर पंचायतमे गेल, फेर किछु गाम कटि तेसरमे गेल। अखन ओ बीसो गाम पाँच पंचायतमे विभाजित भऽ गेल अछि जइसँ जनसंख्यो आ रकबोक हिसाबसँ पंचायत छोट बनि गेल अछि, मुदा तैयो मरलाही गामक ने एकोटा मुखिया बनल आ ने सरपंच।

ओना, असगरो मरलाही गाम ओहन अछि जे जनसंख्या-हिसाबे पंचायतिक शर्त पूरा केने अछि। जइसँ पैछला सालक सीमांकनमे पंचायत बनियोँ गेल। अखन तक आने-आने गामक मुखियो आ आनो-आन पद आने-आने गामक लोकक हाथमे रहलैन। गाम-घरमे अखनो पंचायतिक शासनक माने लोक चीनी-गहुम-मटिया तेलक कोटा आ गमैया पनचैतीक अलाबा किछु ने बुझैत।

तीन हजार भोँटरक पंचायत मरलाही गाम, ओना धिया-पुता लगा पाँच हजारसँ ऊपरे जनसंख्या छइ। मुदा भोँट देबाक अधिकार अट्ठारह बर्खसँ ऊपर रहने, तीन हजार भोँटर अछि। कहैले दस-एगारह जातिक गाम अछि, मुदा छह-सात जाति ओहन अछि जे एक-घरासँ

[12] *Financial Village*

लऽ कऽ सत-घरा धरि अछि। आरक्षण भेने किछ-ने-किछ सब जातिक हिस्सेदारी पंचायतमे हेबे करत तँए सभ जातिक बीच पंचायतिक जिम्माक उनमुनी तँ आबिये गेल अछि। जे एको घर अछि ओहो कोनो पदक अधिकारी बनियेँ जाएत।

चारि जातिक संख्या कशम-कश अछि, माने पान साएसँ हजार भोँटरक। ओना, अखन तक समाज-संचालनक जे पद्धैत आबि रहल अछि ओ मैनजनी-पद्धैतक अनुकूल अछि। जे जमीन्दारी पद्धैतसँ जुड़ल अछि। मुदा ओ तरे-तर दिवरलग्गु-घुनलग्गु भऽ गेल अछि जेकरा जीब कठिन अछि। मुदा तैयो जाति-धर्म हाबी नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामे-गाम कि सौंसे राज्येमे चुनावक घोषणाक संग आचार-संहिता सेहो लगि गेल। नोमीनेशनक तारीख सेहो तँय भेल

अन्हराकेँ महींस बीएला पछाइत जहिना गामक लोक, माने दुहनिहार डाबा सोन्हबए लगैत तहिना पंचायत चुनावक चर्च सुनि गामक लोक सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ो केना ने होएत, जनतंत्र छिऐ किने, सभकेँ ने भार सम्हारैक अधिकार अछि। ओना, गामक जे अल्प-संख्यक छैथ हुनका सभकेँ जे आरक्षण भेटलैन तइसँ सभ जातिक, माने पाँचो-छबो जातिक लोक मने-मन संतुष्ट छला। सन्तुष्टक दुनू कारण- पहिल जे एक परिवारसँ उठल दू-चारि समलित परिवारक जे श्रेष्ठ-जन छैथ, हुनकापर सभ सहमत। तेकर बेवहारिक पक्ष ई जे अखन तक परिवार-विभाजनक पछाइतो ओ सिरजन अपन परिवार जकाँ सभकेँ बुझै छैथ। दोसर कारण ईहो जे जैठाम अधिक मतक महत हएत तैठामक महते केते। ऐठाम विपरीत विचार अछि। एक विचार अछि जे एक वैदिक साए अवैदिकसँ श्रेष्ठ, जे बेवहारिक ज्ञानक हिसाबे नीको अछि, जनतंत्रमे मतक विचार भेने अनाड़ी

विचारोक महत बढ़ि जाइए। जे हजार जनसंख्याक अछि, ओइमे खुटे-खुट माने दियादे-दियाद पंचायतिक मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो लेल ठाढ़ भऽ गेल। जइसँ अठारह-अठारहटा केन्डिडेट मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो-पदक लेल ठाढ़ भऽ गेला। ओना, मरलाही गामक आइ धरि ने कियो पंचायत चुनाव लड़ल छल आ ने गाममे राजनीतिक हवा बहल छेलइ। ओना, एम.एल.ए; एम.पी. चुनावमे सेहो आ पंचायत चुनावमे सेहो भोँट खसबैत जरूर आएल छल मुदा ओकर प्रभाव सीमित छेलइ। सीमित ई जे एम.एल.ए.-एम.पी. चुनाव जाति-धर्मक हिसाबसँ होइ छै तइमे वएह भेल राजनीति आ पंचायितक चुनावक अधार ई भेल जे बीस गामक पंचायत भेने विकास नइ होइए, तँए छोट भेने बेसी हएत, जे पंचायत तीन बेर कटान भेल, वएह अधार बनल रहल जे राजनीति बनल रहल।

ओना, गाममे तेते केन्डिडेट भऽ गेला जे जँ एक-एको छअ कोदारिक माटि उठा कोनो सड़कपर देथिन तँ ओ नीक सड़क बनि जाएत, मुदा से नइ दू दाँतक बच्छा जकाँ सभ हरछुटू, तँए ने ओकरा हर लागएब सिखबैक अछि। मुदा तेहेन ने जातिये-जाति आ खुटे-खुट लड़ाइ ठाढ़ भेल जे पहिने जाति-जातिक बीच फरिया लिअ। मुदा जे भेल से भेल, पैछला सेवाक[13] कोनो अधार कोनो केन्डिडेटकेँ नहि, तँए सभ मोगलक हींग वेपारी जकाँ जे चैतक करारीपर जहिना हींगक वेपार करैए तहिना सभ केन्डिडेट आगूक काज परचारक अधार बनौलक। मुदा एकटा गुण अछि, गुण ई जे सभ पहिल-पहिल जवाब-देहीक विचार रखि रहल छला, किनको पैछला खएल-पीअल अनुभव नहि जे केना कोटाक चाउर-गहुमक आमदनी अछि, आ केना इन्दिरा

[13] गामक लेले कएल गेल विकासक काज

आवासमे कमीशनक जोगार। केना रोडक कमीशन होइ छै आ केना तरे-तर स्कीम गोल होइए।

सत्तासँ अलग रहल सभ केन्डिडेट, तँए सत्ताकेँ जुआ बुझि किए पाशापर बैसता। मुदा एते तँ सभकेँ बुझले रहैन जे आब जाति-धर्मपर भोँट नइ होइ छै जँ से होइतै तँ एके-जातिमे चारि-चारिटा केन्डिडेट होइत, जाति केकरा भोँट देत? तहिना धर्मोक भऽ गेल अछि एके धर्मक पँच-पँचटा उम्मीदवार भऽ गेला, तइमे किनका नमहर धरमात्मा मानल जाए? समाज-ले तँ अखन तक कियो एकटा माछियो ने रोमलैन अछि! आन-आन गाममे केतौ साए रूपैये भोँट तँ केतौ हजार रूपैये भोँट खरीद-विकरी होइ छइ। ओना, मरलाही गाममे अखन तक खरीद-बिकरीबला हवो नै आएल छल, तँए जहिना राजनीतिक दृष्टिसँ तहिना खरीद-बिकरीक दृष्टिसँ मरलाही गाम डभियाएले रहल अछि। जाबे ओइमे ताम-कोर नइ हएत, ताबे उपजाउ केना बनत?

देशक स्वतंत्रताक समए गामक विकासक प्रति जे जन-जागरण छल ओ तँ नहि अछि मुदा एते तँ ऐछे जे नव-नव योजना गाम तकक हुअ लगल अछि, जइसँ आर्थिक समृद्धता एबे करत।

पनरह साए बीघाक रकबाबला गाम मरलाही। जहिना उपयोगी जातिक बस्ती, माने समाजक जे जरूरत-मन्द जाति जेना- बरही, नौआ इत्यादि– मरलाही गाम, तहिना चौरीसँ घराड़ी धरिक माटिक बनाबट सेहो। सातटा पोखैर अखनो गाममे ऐछे, जे माल-जाल गाममे नइ रहने आ चापाकल भेने नहाइयो-जोकर नइ रहल, तहिना पानिक उपजा नइ भेने ओहिना लिढ़ियाएल, केचिलियाएल पड़ल अछि। दर्जनो इनार जे कहियो बैशाख-जेठ मास पनिसल्लाक धरमशाला बनल रहै छल ओ आइ अपने ढहि-ढनमना गेल अछि। जे अपन उपयोगी पजेबोकेँ माटि तर गरल देख-देख कानि रहल अछि। माने

हजारक-हजार पजेबा माटिक तर दबल अछि। ओना, आठ साए बीघाक जे चौर-चाँचर अछि ओ, ओना, भरोसगर खेत नहियेँ अछि, चपगर जमीन रहने जँ अगते गोटे नमहर बरखा आबि बाढ़ि आएल तँ भरि छाती पानि लगि जाइए, ओना किछु जिबठगर किसान चौरियोमे बोरिंग गड़ा लेलैन अछि, जे सालक छह मास जे खेत सुखैए तइमे एक-दू बेर एहेन जजातिक खेती कऽ लइ छैथ जे बारहो मासक उपज तँ नहि मुदा छह मास तँ जरूर ओइ खेतकेँ उपजाइये लइ छैथ।

ओना, ने कोनो गाम सोल्होअना डभियाएल अछि आ ने सोल्होअना उपजाउ। थोड़-थाड़ जहिना डभियाएल अछि तहिना थोड़-बहुत उपजाउ सेहो तँ अछिए। जहिना आन गाम अछि तहिना ने मरलाही पंचायत कहियौ कि मरलाही गाम सेहो अछिए। आने गाम जकाँ मरलाहियो गामक लोक, गाममे स्कूल नइ रहने आनो गाम आ आनो ठाम जा-जा पढ़बे करै छैथ। भलेँ ओ नाम-मात्रे किए ने होइ। तहिना बर-बेमारी भेने आनो गामक डॉक्टर ऐठाम आ दरभंगो-पटनाक अस्पताल जा-जा लोक इलाज करैबते छैथ, भलेँ ओकर जेहेन परिणाम हौउ। विचारोक तँ दुनियाँ अछि। जँ कियो अपन बाल-बच्चाकेँ समुचित शिक्षा नइ दऽ पेलक वा नइ पेब रहल अछि तँए कि ओकर मनक विचार थोड़े दोखी हएत। जेकरा कपारमे[14] विद्या लिखल रहतै, ओ कहुना-ने-कहुना भाइये जेतइ, सभ काञ्चीनाथ किरणे नइ ने हएत जे घसन विद्या आ लपट जोड़सँ दुनूक उपारजन बुझत।

सात साए बीघा जमीन मरलाही गामक ओहन अछि जइमे एगारह साए परिवारक बासो अछि आ जीविका-ले खेतियो तँ अछिए। ओना, ईहो बात सेहो ऐछे जे आने गामबला जकाँ मरलाहियो गामक लोक नोकरी-चाकरी करए पंजाबसँ लऽ कऽ बंगलोर तकमे रहिते

[14] (भागमे)

छैथ। तैसंग सरकारियो नोकरी करिते छैथ। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छैन आ अपन-अपन विचार छैन, जे जेतए छैथ ओ ओतए खुश छैथ।

जहिना सभ गाममे सार्वजनिक काज[15] होइए तहिना मरलाहियो गाम-

मे होइते अछि। सालमे एकबेर दुर्गापूजा आ ब्रह्मस्थानमे नवाह-कीर्तन सेहो होइते अछि। ओना, ई दुनू काज सार्वजनिको होइए आ घरे-घर सेहो होइते अछि। तेतबे किए सालक अनेको पाबैन आ व्रत-उपास सेहो होइते अछि। तैसंग परिवार-परिवारमे मूड़न, बिआह आ श्राद्धो नइ होइए सेहो थोड़े नइ कहल जा सकैए, सेहो तँ होइते अछि। केतबो अपनामे भोज-भात-ले बारा-बारी आकि झगड़ा-झंझट होइए, तँए कि केकरो रान्हल भात सड़ि थोड़े जाइए।

प्रश्न अछि आजुक समेनुकूल विचारक संग समेनुकूल जिनगीक। जइ खेतपर गाम ठाढ़ भेल अछि ओइ खेतक दशा-दिशा की छइ? की गामक लोककेँ उदर-पूर्ति खेतीसँ होइ छै वा आन-आन उपाय करए पड़ै छइ? मनुख तँ भोजनेपर ठाढ़ अछि जे अन्नेसँ पूर्ति हएत आ अन्न औत खेतसँ। तँए दुनियाँक ऐनामे देखैक जरूरत अछि जे गामक जमीन केते उपैज सकैए आ तइले की सभ खगता अछि। जाबे से नइ हएत ताबे गामक खेतीक उन्नैत केना हएत, तहिना जाबे जिनगीक अनुकूल रहैक बेवस्था नइ हएत ताबे जिनगी चलि केना सकैए। कहैले एगारह साए परिवारक गाम छी, मुदा केते परिवारकेँ अपन घराड़ी छै आ रहै-जोकर घर..?

रोग-वियाधिक निराकरण अखनो झार-फूक आ ओझाइसँ होइए, की यएह विचार एकैसमी सदीक मनुखक होय? मुदा डाभियो

[15] सबहक सझिया काज

तँ डाभी छी किने जे एक दिस[16] जहिना खेतक जोत कोड़ नइ भेने स्वत: जनैम खेतकेँ डभियार बना दइए, तहिना दोसर दिस नव-नव ढंगसँ डाभी रोपि-रोपि डभियार सेहो ने बनौल जा रहल अछि, मुदा से बुझत के? पंचायत चुनाव परसू हएत मुदा गाममे जेना तना-तनी बढ़ि गेल अछि ओ चुनाव हुअ देत कि नइ हुअ देत, ई तँ परसूक पछाइत बुझब। मुदा एते तँ गामक लोक सुनियेँ रहला अछि जे जातिक बाधक जाति छी आ धर्मक बाधक धर्म। जँ से नइ तँ मानव जाति आ मानव धर्म की भेल, ई तँ मरलाही गामक लोको ने बुझता।

दस चरणमे पंचायत चुनाव हएत। पहिल चुनावसँ दसम चुनावक दूरी, सबा मास भऽ गेल। पहिल-दोसर चरणक चुनावकेँ प्रचार करैक कमे समए भेटल। ओना, कम समए ओकरो नइ भेटल किए तँ जखन एम.पी.क ओते नमहर क्षेत्रक प्रचार-प्रसार ओतबे दिनमे सम्भव अछि, तखन पंचायत-ले कम समए नइ भेल। जेना-जेना चुनावक चरण बढ़ैत गेल तेना-तेना प्रचार-प्रसारक समए बढ़ैत गेल। मरलाही पंचायतक चुनाव दसम चरणमे हएत तँए प्रचारक समए खूब भेटल।

परसू सोम छी, चुनावमे भाग लेबा-ले माने भोँट दइले सरकारी छुट्टी भेल। आइ पाँच बजे तक प्रचारक समए अछि। पाँच बजेक पछाइत लॉउ-स्पीकरक अवाज एकाएक थमि जाएत। रघुनाथ सेहो शनियेँ दिन आठ बजे रातिमे गाम आबि गेला।

गामसँ पाँच कोस हटि मोहनपुर हाइ स्कूलमे रघुनाथ शिक्षक छैथ। आठ बजे गाम पहुँचला पछाइत अपन पितियौत भाए- सुजीतकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुजीतोकेँ बुझल जे सभ शनिकेँ रघुनाथ भैया गाम अबै छैथ। अबिते सोर पाड़ि गामक हाल-चाल पुछिते छैथ।

[16] इतिहासक अनुसार

अबिते सुजीत रघुनाथकेँ गोड़ लगि बाजल»

“भैया, भोँट की हएत जे गाममे बड़का झंझट ठाढ़ भऽ जाएत।”

सुजीतक बात सुनि रघुनाथ तारतम करए लगला जे पंचायतिक गठन कल्याण-ले भेल अछि, तैठाम सुजीत बुझैए जे बड़का झंझट ठाढ़ हएत। ओना, सुजीत हाइये स्कूल तक पढ़ने, मुदा कौलेज तकक शिक्षा होइ आकि स्कूलक आकि नहियेँ होइ, मुदा सभकेँ तँ अपन-अपन बुधिक अनुकूल विचारो होइ छै आ देखैक अपन नजैर सेहो तँ होइते छइ। बजला-

“बौआ, की झंझट ठाढ़ हएत?”

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ल प्रश्न भेटने परीक्षा भवनमे मन खुशी होइ छै तहिना बुझले बात सुनि सुजीतक मन सेहो खुशी भेल। खुशी होइते सुजीत मने-मन विचार करए लगल जे भैयाक प्रश्न एकेटा ने छैन, मुदा हमरा तँ अनेको उत्तर बुझल अछि। मुदा अनेको बुझल बात मे ई तँ समस्या ऐछे जे अपन पसन्दक उत्तर जे रहत आ ओ जँ प्रश्नकर्ताकेँ ओते रूचिगर नइ लगैतन जेते उत्तरकर्ताकेँ लगैए, तखन।

मुदा संयोग नीक बैसल, तखने चाह नेने रघुनाथक दस बर्खक बेटी–रूकमिणी–पहुँचल। चाह देखते हाँइ-हाँइ सुजीत अपन मनक बात-विचारकेँ समटैत अकछाइत बाजल»

“भैया, कोनो कि एकेटा कारण अछि, अहाँ तँ गाममे नइ रहै छी तँ की बुझबै, मुदा सुनैत-सुनैत हमर कान बहीर भऽ गेल अछि, तँए कहलौं।”

सुजीतक सुढियाएल मन देख रघुनाथ बजला»

“अच्छा, गप-सप्प हेबे करत पहिने चाह पिबह।”

एक तँ ओहिना सुजीतक मन बजैले तनफनाइत तैपर भफाएल चाह देख मनो भफाएल। बाजल»

“पहिने अहाँ पीब तखन ने हम पीब।”

सुजीतक सुविचार देख रघुनाथक मन पघिल गेलैन। पघिल ई गेलैन जे जे विचार अखनो समाजमे जीवित अछि- माने पहिने अहाँ तखन हम- ओ मरि जाए, सेहो नीक नहि। मुदा काल्हिये भरि दिन समए अछि, एकबेर जँ सभ उम्मीदवारकेँ एकठाम बैसा एक विचारमे आनि समाजक उन्नतिक दिशा दिस बढ़ब नीक हएत। मुदा से सम्भव कहाँ अछि। जिनकेसँ भेँट करए जाएब वएह बजता जे झगड़ा करैबेर जहिना धरहरिया केकरो पकैड़ मारि खुआ दइए, सएह ने बुझत। आब देखौआसँ चोरौआ धरि सभ अपन-अपन मैनेज करैमे लागत, तइमे जँ हम किछु केकरो कहबै तँ सएह बुझत..।

रघुनाथक मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले भेलैन जे रोगसँ बँचैक दुनू उपाय अछि। बेमारी होइसँ पहिने संजम आ बेमारीक पछाइत नीक इलाज। तँए जेते चिन्तनीय समस्या बुझै छी, से नइ अछि। मुदा अही समाजक तँ अपनो छी किने तँए किछु दायित्व तँ बनिते अछि।

चाह पीब रघुनाथ बजला»

“बौआ, गाममे तँ हमहींटा हाइ-स्कूलक शिक्षक छी, तूँ कहै छह जे गाममे झंझट ठाढ़ हएत, तैबीच हम की करी?”

सुजीत बाजल»

“आब अखन किछ ने करू, मन हुअए तँ भोँट खसाएब नइ हुअए तँ नइ खसाएब, किए केकरोसँ अहूँ दुश्मनी करब।”

सुजीतक विचार सुनि रघुनाथक मन मानि गेलैन जे अखन सबहक मनक चढ़न्त बेर अछि तँए चुपे रहब नीक। बजला»

“से सएह?”

सुजीत»

“हँ ते और की।”

◌

शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016

एकबोलिया दादी

असलमे एकबोलिया दादीक नाओं सुबधी देवी छिऐन से सासुरक लोक किए बुझतैन, ओना नैहरोक तँ आब दीदी-दादी भेली तँए नवतुरियो किए बुझत, तहूमे तेहेन मोबाइल भऽ गेल अछि जे घरेमे बैसल दुनियाँक बाइसकोपो आ बाइसकोपक गीतो सुनैत रहू, मुँहमे पान-पराग आकि शिखर देने झुमैत रहू आ देशक आजादीक सुख-भोग भोगैत रहू। किए तँ देश उन्नतिक शिखरपर पहुँचै-पहुँचैपर ऐछे..!

ओना, सुबधी दादीक नाओं हेराइक दोसरो कारण अछि, ओ अछि- नारी जगतकेँ नैहरसँ सासुर प्रवेश करिते ‘भौजी’, ‘काकी’ इत्यादि समाजमे आ परिवारमे ‘पुतोहुजनी’, ‘कनियाँ’ इत्यादि उपनाम जुड़ि जाइए। ओना, ई दीगर भेल जे फगुआक खुमारीमे कियो ‘नवकी’, तँ कियो ‘नकठरकी’, तँ कियो ‘गुलबिया’ नाओं सेहो रखिते अछि।

अस्सी बर्खसँ किछु ऊपरेक एकबोलिया दादी छैथ। उज्जर धप-धप हाथ-हाथ भरिक केश, चाकर-चौरस-नमगर-छड़गर-गोर देह, आगूमे पड़िते बुझि पड़ैत जे ठीके लोक एकबोलिया दादी नाओं रखने छैन। जिनगीक अन्तिम परावपर पहुँचलो पछाइत एकबोलिया दादीक मनमे ‘झूठ नइ बाजब आ ‘केकरो अधला नइ करब’ ओहिना छैन

जेना कण्ठी बान्हि बबाजी बनि लोक संकल्प लइए जे माछ नइ खाएब।

ओना, विशाल दुनियाँक विशाल जिनगीमे दुनू संकल्प- ‘झूठ नइ बाजब’ आ ‘केकरो अधला नइ करबै’ सेहो विशाल रूपमे अवतरित भऽ जाइए, मुदा ऐठाम से नइ, ऐठाम परिवारिक आ समाजिक परिवेश भरि अछि- ‘झूठ नइ बाजब’ आ ‘केकरो अधला नइ करबै’, माने आन परिवार आ आनक, पुरुख प्रधान परिवारमे नारीक लेल एहेन परिस्थितिये ने बनैए, जेकर खगता हएत। मुदा से नइ दादीक बेकतीगत परिस्थिति भिन्न छैन। भिन्न ई छैन जे छब्बीस बर्खक अवस्थामे, जखन पान-सात बर्ख सासुर बास केलैन तहिये विधवा भऽ गेली। मुदा तैबीच सन्तान तँ दूटा भेलैन मुदा बँचलैन एकटा बेटा। ओना, जँ एकोटा बेटा बँचलैन तँ बेटा छैन। जँ एहेन बेटा एकोटा हुअए तँ कोन जरूरत छै रावण जकाँ एक लाखक। आज्ञाकारी बेटाक कारण छैन एक विचार आ एक चिन्ता।

छब्बीस बर्खक अवस्थामे सुबधी दादी जखन विधवा भेली तखन आन नारीसँ भिन्न परिस्थिति जिनगीक लेल बनलैन। भिन्न ई जे पुरुख प्रधान परिवारमे एक-दोसर परिवारक जे सम्बन्ध बनैए ओ पुरुखक अनुकूल बनैए मुदा नारीक प्रधानता भेने पुरुख परिवार आ नारी परिवारक बीच किछु अन्तर भाइये जाइए। जखन परिवारक भार छब्बीस बर्खक अवस्थामे दादीक ऊपर एलैन तखन पति तँ बिसरा गेलैन मुदा पिता मन रहलैन। ओना, साल भरि पहिनहि पितोक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। मुदा बच्चामे सिखौल-पढ़ौल विचारो आ काजो मनमे नचलैन। मनमे नचिते दादीक पेटक पट खुजलैन»

“झूठ नइ बाजी आ केकरो अधला नइ करिऐ!”

दादीक मुहसँ निकैलते मन माता-पितापर पहुँचलैन। देखार

रूपमे पिताक क्रिया-कलाप जरूर छेलैन, जिनगीक जे क्रिया-कर्म रहैन तइमे झूठ बजैक केतौ जगहे ने छेलैन जे झूठ बजैक आ केकरो अधला करैक प्रयोजनो होइतैन। समटल हाथक जिनगी, समटल विचारक धारमे बहैत रहैन। माए तँ सहजे आँगन-घरमे रहैवाली, आन परिवारक लेन-देनमे पति बीचमे छेलैन।

ओना, बेकतीक समूह परिवार आ परिवारक समूह समाज छी, तँए एक-दोसरमे सभ जुड़ले अछि। मुदा ओही जुड़ावमे बेकतीक विचारो आ काजोक जुड़ाव ऐछे आ ओइ जुड़ावक जे क्रिया अछि तइमे विचार विचरित होइत रहैए। ओना, दुनूक बीच माने क्रिया आ विचारक बीच अन्योनाश्रय सम्बन्ध अछि, जे दुनूक बीच चलैत रहैए। माने ई जे विचारक अनुकूल लोक अपन जिनगीक क्रिया बनबैए आ क्रियाक अनुकूल विचारो बनै छइ। ओना, क्रियाक रूप सेहो विराट अछि, आ विचारोक तहिना अछि। मुदा विराट दुनियाँमे मनुख एक अणु सदृश अछि। माने ई जे जइ दुनियाँमे करोड़ो-अरबो लोक अछि, अरबो-खरबो जीव-जन्तु अछि, जइमे देहधारी रहितो चलन्त अचलन्त सेहो अछिए। खएर जे अछि, बुधिधारी तँ कनी-मनी ऐछो मुदा विवेकधारी तँ नहियेँ अछि। तँए विवेकधारी होइक कारणे मनुखेकेँ ने विचार करए पड़त जे बर्खाक एक बून पानि केना दोसर-तेसर पानिक बूनक संग सटैत-मिलैत छोट-छीन धाराक धार धारण करैत, विशाल धार बनैत अपन धाराक धारे-धार विशाल समुद्रमे समाहित भऽ शान्तसँ रहैत, हँसबो करैए आ उफैन-उफैन सिरजनो करैए! माने पानिसँ हवा बनि वादल सिरैज, बरखा बनि पुन: बून-बून धरतीकेँ सिंचैत अपन रस्ता पकैड़ पुन: समुद्रमे समाहित होइत अपन चक्रवत जिनगीमे चलैत रहैए, तहिना ने मनुखोक जिनगी अछि।

मनुखक जिनगी भेल जे अपन जिनगीकेँ जीवित राखि अपन विवेकपूर्ण विचारकेँ सेहो जीवित राखि चली। ई दीगर भेल जे असंख्य

मनक असंख्य विचार सेहो उत्पति होइते अछि। जे देश-कोस, हवा-पानिक अनुकूल होइए। मुदा से नइ, कोनो परिस्थिति किए ने हौउ, ओइ बीच दू-रंगक विचारो आ काजो चलैए। एक मनक विचार होइए जे जखन एते शक्तिशाली मनुख बनि जन्म नेने छी तखन दोसरक ऊपर अपन जिनगीक भार लादि दिऐ, से कहाँ धरि नीक हएत। आ दोसर अछि ओ मनुख जे सुविधा-भोगी आकि आलसी आकि कोढ़ि अछि, जे आनक जिनगी काटि-बाँटि अपन जिनगी बनबैए।

सम्पन्न परिवारमे सुबधी दादीक जन्म भेल छेलैन। ओना, सम्पन्नताक कोनो सीमा नइ अछि, किए तँ एके समाजमे भीख-मंगासँ लऽ कऽ हवाइ जहाजक सवारीसँ चलनिहार सेहो ऐछे, तँए समाज सम्पन्न अछि से केते दूर धरि कहल जाए। से नइ, दस बीघा जमीनबला किसान परिवारमे सुबधी दादीक जन्म भेलैन। पिताक जे परिवार रहैन ओ दियादवाद लगा बीस घरक टोलमे। बीसो परिवारकेँ अपन-अपन खेती बाड़ीक जीविका रहैन।

भरि दिन सभ अपन-अपन घर-परिवारसँ लऽ कऽ पेट पूजाक पाछू बितबै छला। मुदा किरिण डुबिते सभ अपन-अपन परिवारिक क्रिया-कलाप उसारि एकठाम सम्मिलित होइ छला। चाकर-चौरस दरबज्जा, एकठाम होइते पहिने सभ अपन-अपन दिन भरिक क्रिया-कलाप आ नीक-बेजाइक गप-सप्प करै छला, पछाइत साहित्य-संगीतमे लगि जाइ छला, जे खाइ-बेर तक, माने रौतुका भोजन तक सभ अपन-अपन साजो बजबै छला आ अवाजो मिलबैत संगो-संग आ फुटो-फूट गीतो गबै छला।

सुबधी दादीक पिता मनोरथ दास जेहने कृषि कार्यमे ऊहिगर, तेहने साज सजबै-बजबैमे सूढ़िगर सेहो आ तेहने गेबोमे गतिगर। जिनगी की आ जिनगीक सच्चाइ की, ओ मनोरथ दासक जिनगीक

क्रियामे झलकै छेलैन, जे अपनो बुझै छला आ आनो देखै छेलैन। अपनो कामना रहैन जे जे माता-पिता ऐ धरतीपर अनलैन वएह ने मतिसँ प्रीति करैक जन्म सेहो देलैन। जाबे मतिमे प्रीति नइ हएत ताबे दुनियासँ प्रीति केना हएत? यएह विचार मनोरथ दास अपनो निमाहै छला आ समांगक संग दरबज्जापर नाचि-नाचि गेबो करै छला»

“झूठ बजने जिनगी झूठा बनि जाइए तँए झूठ नइ बाजी। तहिना आनक एक अनुचित केने हजारो-लाखो अधलामे बदैल जाइए, माने जहिना अहाँ केकरो अधला केलिऐ, तहिना आनो करत। जे करोड़ो-अरबोमे पसरल अछि। तँए केकरो अधला केने अपनो अधला हेबे करत।”

जहिना बच्चेमे हनुमान सूर्यकेँ भक्षि लेलैन तहिना सुबधी दादीक पाँच बर्खक बाल-मन पिताक विचारकेँ भक्षण कऽ नेने छेलैन। जे पतिक मृत्युक पछाइत जगलैन।

मन पड़लैन पिताक ओ विचार जे जे हरिदम बजैत-करैत रहै छेलखिन-

‘जिनगी जँ व्रतधारी नइ भेल तँ ओ जिनगी विचारधारी केना बनि सकैए आ जँ विचारधारी नइ बनि सकल तँ ओ मरुधारी भेल किने, ऐठाम तँ मरुधारीक संग जीनधारियो अछि। आ जँ मरुधारी धारकेँ बालुधारी नइ कहि जनधारी कहबै, तखन ओकरा पीलासँ आकि ओइमे नहेलासँ तृष्णा आकि सुफला जे भेटैत ओ केहेन भेटत?’

ओना, सुबधी दादीक दिशा-दशा देखेनिहार पति आ पिताक सेहो मृत्यु भाइये गेल रहैन। मात्र एकटा तीन बर्खक बेटाक संग अपन जिनगीकेँ अपन मनोकुल बना चलैक छेलैन। ओना, पिता आ परिजनोक बीच सुबधी दादीक मन ओही दिन व्रतधारी बनि गेलैन जइ दिन मन मानि एक मन दोसरसँ पुछलकैन»

"की भाय, पिता वचन छी, जे पलै-पोसैक आ फुलैत-फलैतक छी।"

जहिना समुद्र आकि धार आकि पोखैरक एक समान पानिमे दू या तीन गोरे जँ एकठाम भऽ अपन अनुभवक विचार करता, तँ एके रंग ने संवेदित होइत कथा-कथनी करता, तहिना दोसर मन टपैक सुबधी दादीकेँ कहलकैन»

"भाय, गाछ अपन फलकेँ केते काल अपना संग रखैए, ओतबे काल ने जेते काल ओ पकै नइए, मुदा तँए ईहो तँ नहिये कहल जा सकैए जे मोजर वा फूलसँ लऽ कऽ पकै तक संग नइ छल। जखने पकैए से चाहे आम हौउ आकि कटहर, लताम हौउ कि बड़हर खसबे करैए। मुदा तँए ओ अपन फलित-फुलित परिवार आकि परिजनकेँ थोड़े बिसैर जाइए?"

दुनू मनक विचारक बीच सुबधी दादी छब्बीस बर्खक अवस्थामे अपन जिनगीक मोटरी बान्हि अपना माथपर लऽ लेलैन।

ओना, सुबधी दादीक पिता सिर्फ संगीते-कलामे निपुण नइ छला, समाजिक परिवेशकेँ सेहो अपना नजरिये देखै छला। देखै छला, जे जेकरा हम सभ स्वर्ण-युग वा स्वर्णकाल वा सत्-जुग कहै छी, की ओ समए पशुवत जिनगीक करीब नइ छल? मुदा से सभ नइ, सुबधी दादी नाम-गाम लिखनाइक संग अपन रचित-बसित विचारकेँ सेहो कहुना-कहुना लिखब सीख नेने छेली।

सुबधी दादीकेँ मन पड़लैन जे दस बीघा खेत उपजा पिता पनरह गोरेक परिवारक भरण-पोषण करै छला, तैठाम अपना पाँच बीघा खेत अछि, जेकर सृजनकर्ता तँ अपने भेलौं, जे उपजाबी, जेते उपजाबी सभ अपने हएत। तैबीच मात्र एक बच्चाक संग अपने भेलौं।

पतिक मृत्युक पछाइते सुबधी दादीक मनमे बिसवास जगि

गेलैन जे गाम-समाजमे जहिना लोक जीबैए तहिना हमहूँ जीब लेब। किछु दिनक पछाइत बेटाकेँ स्कूलमे नाओं लिखाएब। जेते अपने बुझै छी तेते पढ़ाइयो देबइ। जखन अपन आँखि-पाँखि हेतै दुनियाँकेँ चीन्ह-परेख अपन जीबैक बसोबास बना लेत। अही व्रतक संग सुबधी दादी अपन जिनगी शुरू केलैन।

मुदा जिनगियो आ जिनगीक क्रिया सेहो एक रहितो एक रंग नहि रहि बेदरंग, भटरंग, कटरंग आदि बनियेँ जाइए। देखै छी जे खेतमे हर जोति ओकर सृजन शक्तिकेँ जगौल जाइए, तैठाम जरूरी अछि तँ ऐछे जे जमीनक ऊपरक जे परत छै ओकरा तैयार करब। मुदा ओ तँ सिरौरे-सिरौर जखन सघन रूपमे हर चलौल जाएत तखने हएत। तैठाम जँ हरक लागैन पकैड़ एक-एक हाथपर डाँरि खींच-खींच गबैत रहब जे 'बाभनक खेतक हरबाहि आ रारक माए-बापक श्राद्ध भगवाने भरोसे होइए' तइसँ काज चलत? काज चलत तखन जखन गाम-समाजक एक-एक क्रिया-कलापकेँ सोझड़बैत चलब। जँ से नइ तखन तँ 'गरीबी दूर करब' जहिना बजै तँ सभ छी मुदा गरीबी मेटाइए आकि मोटाइए सेहो तँ सबहक सोझहेमे अछि..!

अस्सी बर्खसँ ऊपरक आइ सुबधी दादी भऽ गेली मुदा जिनगी जीबैक आ जिनगीक विचार करैक अपन जे ढंग पिताक वचनकेँ पति मृत्युक पछाइत धेलैन ओ अखनो धेनहि छैथ। कहब असान अछि जे जखन बच्चा तीन-चारि सालक भऽ जाए ओकरा स्कूल पठा नीक शिक्षा दिऐ आ नीक इनसान बना धरतीपर ठाढ़ करी, जइसँ समाज उन्नैतशील हएत, मुदा समाजक एक सम्पन्न परिवार माने माता-पिता परिजन, आर्थिक दृष्टिये सेहो सम्पन्न छैथ आ दोसर दिस सुबधी दादी सन मसोमात[17] सेहो एक बेटाक संग समाजमे छैथ, ओ कहाँ धरि

[17] विधवा

अपन बेटाकेँ नीक स्कूलमे नीक शिक्षा दिया पौती जइसँ एकटा नीक इनसान ठाढ़ हएत? तहूमे जैठाम नीक शिक्षा नीक प्राइवेट संस्थामे भेट रहल अछि जइले नीक खर्चक खगता छै, ओ केते लोक पुरा पौत तहूमे सुबधी दादी सन परिवारक संतानकेँ? जखन कि समाजमे विधवाक वहिष्कृत ई मानि कएल जाइए जे जँ विधवाक मुँह देख यात्रा करब तँ अधला होएत! केहेन बेवहार ओइ वेचारी मसोमातक संग होइत आबि रहल अछि ई देखैले सभकेँ अपन-अपन समाज अछि। मनुख समाजमे जन्म लइए, बढ़ैत-फलैत-फुलैत जिनगी अन्त करैए, तैठाम तँ विचारणीय प्रश्न अछिए।

शिक्षाक नाओंपर सरकारी विद्यालय अछि, मुदा कोन रूपमे विद्यालय ठाढ़ अछि, ओइपर नजैर देने बिना समाज एको डेग आगू केना बढ़ि सकैए। कम-सँ-कम इनसान केकरा कहबै आ प्रतिवर्ष केते नीक इनसान बनि रहल अछि, सेहो तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। धरतीमे अन-फल-फूलक खेती आ राड़ी-डवहारी रोपि जँ धरतीकेँ परती बना मरूभूमि बनाएब ई कहाँ धरि उचित अछि?

सुबधी दादीक साठि बर्खक बेटा अखनो ई मानि चलैए जे माए खाली जनमदते नइ पलित-पोषित सेहो करैत एली अछि, ओना जहिना एकाएक आ दसे-एगारह एके रंग सभ सीखबो करैए आ पढ़बो करैए तहिना बेटा अखनो माइयक काजकेँ माने गाममे जे कोनो समस्या अबैत ओकरा अपना ढंगे दादी जेना समाधान करै छेली जे एक रस्ताक विचार सुबधी दादीक छेलैन, ओही रस्तासँ चलनिहार बेटा छेलैन। तँए विचारक क्षेत्र माइयक बुझि सुबधीए दादीपर थोपने छैन।

ओना, सुबधी दादीकेँ गामो आ आनो गामक लोक एक-बोलिया बुझि 'एकबोलिया दादी' सेहो कहै छैन। एकबोलिया तँ

एकबोलिया छी जे सौंसे दुनियाँमे खेलाइए, जे जेना पकड़ब से पकैड़ अंगेज लिअ। एकबोलिया भेल जिनगीक बाट पकैड़ चलैत बाजब। जखन समाजमे जन्म नेने छी तखने ने समाज सबहक सझिया भेल। सभ कि उपटौए नइ ने छी, उपटाउ भेल जे आन गामसँ आबि बसब। मुदा जखन सभ एक गाममे बसल छी तखन सबहक बास केना बनल रहत ईहो तँ मूल प्रश्न अछिए। रहल जे एकबोलिया ओहो भेल, जे नेपाली बहादुर जकाँ कन्हापर बन्दूक रखि चौकीदारी करैत रहत। मुदा नीक की आ बेजाए की, तेते ओकरा विवेक छैहे नइ तखन ओहन 'एकबोलिया'क फल केहेन हएत?

गाममे एकटा घटना भेल। ओना, गामक पनचैती मरदा-मरदी होइए तँए सुबधी दादी दसनामा पनचैतीमे तँ नइ जाइ छैथ मुदा अपन मनक विचारकेँ दाबियो कऽ नहियेँ रखै छैथ। जहिना समाज छी तहिना ने अपन विचार अपन काज देखबैक जगह सेहो छी। घटना भेल बारह-बर्खक लड़की एगारह बर्खक लड़काक संग गामसँ पड़ा गेल। दुनू एके स्कूलमे पढ़ैत। गुण रहल जे दुनू एके धर्मक माने हिन्दू धर्मक अछि, मुदा अछि दू जातिक। जँ दू धर्मक रहैत तखन तँ दुनियाँक बमबाजी होइत, मुदा से रच्छ रहल जे दुनू एके धर्मक रहल।

मुदा रच्छ की रहल जे दुनू जातिक बीच तेना तना-तनी बढल, जे मोंछक भिड़ानी भेल। मोंछ केहेन अछि से अपन गौंआँ बुझत मुदा एते तँ ऐछे जे केतौ मोंछ करियाएल हरियाएल कहबैए तँ केतौ खिचड़ी कहबैए तँ केतौ सोलहन्नी पाकल तँ केतौ सोलहन्नी सफाचट।

गामक धटनासँ जेना सौंसे गौआँ दलमलित छल, दलमलित ई जे केतौ मारि होइए तँ कोनो-ने-कोनो रूपमे गौओं प्रभावित होइते अछि। मुदा सुबधी दादीकेँ कोनो दलमली ने अपने छैन आ ने बेटे-पुतोहुकेँ। ओना, पुतोहुक मन खसलैन जरूर। खसबो केना ने

करितैन, गाममे तेहेन मारिक सूमा अछि जे केतेकें चुड़ी फुटत, सिनूर धुआएत! तँए एक नारी होइक नाते कनियाँ मनमे बेथा नै होनि सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। खसल मन देख पुतोहुकें सुबधी दादी कहलखिन»

“कनियाँ, ओना नारीक हृदय अहाँक अछि, मुदा से अछि अनाड़ीक। जखन पतिक गृह पत्नी घरवास-ले विदा होइ छैथ तखन हुनका पीठ ठोकि असीरवाद देले जाइए जे नारी बनि पुरुखपना हाँसिल करब, आकि सोझे आँखि झाड़ए लगै छी जे बेटी कष्टमे जाइए।”

सासुक बात सुनि पुतोहुक मन कनी खनखनेलैन। बजली»

“गाममे की हएत?”

पुतोहुक बातकें सुबधी दादी ऊपरे लोकि बजली»

“आब ओ जुग-जमाना रहल जे पतिक संग पत्नियोँ आगिमे जरै छेली। बदलैत परिवेशमे केना एहेन-एहेन समास्याक समाधान हएत ई तँ समाजेक दायित्व ने भेल।”

◌

शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016

मरियाएल मन

जिनगीक एक टपान टपि बीस बर्खक बिसवास राय दोसर जिनगी शुरू करैसँ पहिने अपन बाट बटियबैक विचार करए असगरे अपन कोठरीमे बैसला। मनमे उठलैन डॉक्टरक डिग्री लऽ दुनियाँक बीच ठाढ़ भेल छी…।

मुदा लगले बिसवास रायक विचार जेना धूल-कणसँ झँपाए लगलैन तहिना आगू किछु सुझबे ने करैन। दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि साफ आँखिसँ आगू देखैक कोशिश केलैन मुदा मीड़ला पछाइत धूल-कण रहित आँखि किछु देख नइ पेब रहल छलैन। एकाएक बिसवास रायक विकृत-मनमे उठलैन एना मन मरिया किए रहल अछि?

एम.बी.बी.एस. ग्रेजुएट राय एक सक्षम डॉक्टर, जे पढ़ल-बिनु-पढ़ल, बुझल-बिनु-बुझल रोगक इलाज करैक क्षमता अपने-आपमे रखैत। एकाएक बिसवास रायक मन अपन पुरवर्ती विचार आ विचारवानक विचारपर हुमरलैन। हुमैरते मन चकभौर लिअ लगलैन। चकभौर लैते जेना फेर मन मरियाए लगलैन..! बिसवासक मनमे पुन: उठलैन- एना किए बेर-बेर मन मरिया रहल अछि? मुदा डॉक्टरी-नजैरसँ चीतक चिन्ताक चिन्तन करैक प्रक्रिया विद्यार्थी जीवनमे पनैपिये गेल छेलैन, माने कोनो काजो आ आनो विषयक बात सोचै-विचारैक दिशा-बोधक कोंपर मनमे पोनैगिये गेल छेलैन, मुदा तेतबेसँ

काज चलैए। मानि लिअ अहाँ अल्लू उखाड़ब, काज बड़ भारी नइ, खुरपी नेने जाएब गाछे-गाछ पतिआनी लगल ऐछे, एक भागसँ पतिआनीमे हाथ लगा गाछे-गाछ उखाड़ैत जाएब, जड़िमे फड़ छै ओकरा तोड़ि-तोड़ि पथियामे रखैत जाएब, यएह भेल अल्लू उखाड़ब। मुदा से असान अछि? जाबे अहाँ अल्लू-खेतीक लूरि आ अल्लूक उपयोगी महत आ अल्लूक जिनगी नइ बुझि लेब ताबे केना हएत? हँ, एते सम्भव अछि जे अल्लूक जिनगी आ ओकर उपयोग बुझिऐ वा नइ बुझिऐ मुदा अपन जेठ-जनसँ रोपै-उखाड़ैक लूरि देखा-देखी सीखि नेने होइ। मुदा प्रश्न एतबेसँ तँ नइ फड़िआइए। ऐ संग ईहो तँ ऐछे जे अल्लूक जनम केना होइ छै, ओ वृद्धि करैत अपन चरम कोटिक अवस्थामे पहुँच अहाँकें सुस्वादु भोजनक संग सुपाच्य सुपोषण केना करैए? जाबे कोनो वस्तु आकि विचाराकें जड़िसँ छीप धरि नइ बुझि लेब, ताबे तँ यएह ने हएत जे कोनो वस्तुक इमारतक नीब नीक हएत तँ छज्जी अधला भऽ जाएत आ कोनोक छज्जी नीक हएत तँ नीब अधला हएत। तेतबे किए, ई तँ भेल अल्लूक जिनगी मुदा ऐ संग ईहो ने अछि जे केहेन खेतमे अल्लू उपजत आ केहेन हवा-पानि-रौद ओकरा चाहिऐ। जँ से नइ बुझल रहत तखन चौरी खेतमे[18] अल्लू रोपैक विचार मनमे नइ औत? एबे करत! किए तँ अल्लू खेतेमे उपजैए आ चौरियो खेत छीहे..।

बिसवास रायकें ने धुरियाएल दुनियाँमे किछ देख पड़ैन आ ने आगू तक किछु सोचिये पाबि रहल छला।

..देखियो केना पबितैथ बिसवास राय, अखन तक एकचलिया जिनगी जे रहलैन! एकचलिया भेल बच्चासँ एम.बी.बी.एस. तकक पढ़ाइ, खेनाइ-पीनाइ आ रहैक बेवस्था माता-पिताक आ अपन

[18] पनिगर खेत

जिनगी खाली पढ़ैक। रहबो केना ने करैत, चाहे बाल-वर्ग हुअ आकि मध्य-वर्ग आकि उच्च-वर्ग, साले-साले जे श्रेणी ऊपर चढ़ैत जाइए ओइमे की ई विचार नइ अछि जे साल भरिमे अहाँकें केते भार देल जाए! आकि ओइमे ई अछि जे सालक एगारह मास सिनेमा देखू, खेल देखू आ एक मास दिन-राति एकबट्ट कऽ पढ़ि लिअ आ परीक्षा पास कऽ जाउ? जँ किसान सालमे एक मास जगि खेती पाछू दिन-राति बेहाले भऽ जेता तँ की ओ सालो भरिक[19] खेती पुरा लेता आकि ओकर उपज घर लऽ अनता? मुदा अनका जे हौउ, बिसवास राय बच्चेसँ अपन नियमित जिनगी बना आबि रहल छल, जेकरे फल रहल जे नीक विद्यार्थीक श्रेणीमे स्कूल-सँ-कौलेज धरि रहला। मुदा पढ़ैमे नीक रहितो दुनियाँकें नीक बना जीब लेब, बाल-बोधक धूरा-माटिक खेल छी? अपना मने जे जेतेक दुनियाँ बुझौथ मुदा ओ अछि तँ एकेटा, चाहे जेहेन हुअए, तहीमे ने सभ छीहो आ रहबोक अछि…। बिसवास रायक मनमे प्रश्न उठैन तँ जरूर मुदा कड़ौआ लगल केराक गाछ जकाँ अपने खसि पड़ैत।

बेर-बेर बिसवास रायक मन उठैत आ खसैत रहैन। उठैक कारण रहैन एक पढ़ल-लिखल स्नातक धरिक जिनगीकें उठाएब आ खसैक कारण भऽ जाइन जे आगूक समतल-समरस बाट देखिये ने पड़ैन!

उभर-खाभर रस्तामे जहिना जानक संग-संग डेगो बँचा-बँचा उठबए पड़ैत तहिना जखन कोनो बात बिसवास रायक मनमे अबैन तँ ओकरा विचारि कऽ विचार बनबए चाहैथ, मुदा बाटमे ‘काका’कें ‘पित्ती’ शब्दक प्रयोग भेने विचारक काज गड़बड़ाए लगैन। जखने जिनगीक काज गड़बड़ाएत तखने विचारक केहनो घड़ी-घण्टा सिंह-

[19] माने, मौसमानुकूल

दरबाजापर लटका डोलाएब तइसँ किछ सीझत-पाकत थोड़े। सीझै-पकैले तँ काजुल मनुख बनि रमौ-श्रेणीक विचार मनमे आनि भगवान जकाँ ब्रह्मचर्य आश्रममे शिवजीक देल जनकजीक धनुषकेँ तोड़ैक शक्ति राम सन ब्रह्मचारी ताकए पड़ैत। ई तँ नइ जे छी नाटककार आकि व्याकरणाचार्य मुदा पाठे अशुद्ध अछि!

केम्हरो बिसवास राय आँखि उठा तकैथ तँ कृष्णक दुर्वासा ऋषिसँ भेँटे ने होइन। भेँटो हएब असान अछि जँ से रहैत तखन ई तँ सभ बुझै छिऐ जे नशा-पान अधला छी, मुदा ओइ अधलामे की नीक अछि जे लोक जहल जाइले तैयार अछि, मारि खाइले तैयार अछि मुदा ओकर मन कोन पहाड़क तर पड़ि गेल छै जे निकैल कऽ ओकरा अधला बुझि थूक फेक देत? से किए ने भऽ पबैए? जिनगीक कोनो काज होइ ओ विचारक रस्ते प्रवेश करैए, मुदा विचारोक तँ चौबट्टी छै जेतए रंग-रंगक बाट एकठाम होइए, तैठामसँ जिनगीक टपान अछि..। ओही टपानक बीच[20] बिसवास राय वौआ रहला अछि।

जहिना आनो-आन वृत्तिसँ जुड़ल आ शिक्षो-वृत्तिसँ जुड़ल किए ने हुअए मुदा बीस-बर्खक उमेरोक तँ अपन धाही छइहे। जखने ओ धाही जागत कि भलेँ पहाड़क ऊपरके भागपर किए ने भिनसुरका रौद जकाँ पसरौ मुदा छी तँ धाहीए। जिनगीक बोनमे वौआइत बिसवास रायक मनमे संगीक जरूरत बुझि पड़लैन, संग पूरनिहारक खगता सभकेँ होइ छइ। चाहे ओ विचारक क्षेत्र हुअए आकि काजक। जखने दू विचारक मिलान हएत तखने दूटा काजोक हएत। पत्नी दिस बिसवास रायक मन भागिते जहिना सासुरसँ नैहर भागल जाइत कनियाँ जकाँ आगूसँ अनगौआँ आ पाछूसँ गौआँ रबारैत तहिना भेलैन। भेलैन ई जे भाय, हम तँ एम.बी.बी.एस. डॉक्टर छी, देहक

[20] माने विद्यार्थी-जीवनसँ परिवारिक जिनगी

रोगक इलाज करैबला, मुदा जे मनरोगी हएत ओकर इलाज हमरा बुते पुरौल हएत? देखै छी जे इन्जीनियर साहैबकेँ पत्नी छैन, दुनूमे सदिकाल झगड़े होइ छैन। झगड़ो केना ने हएत जखन इन्जीनियर साहैबक मन इन्जिनक पार्ट-पुर्जा खोलैत रहै छैन तखन पत्नी पंचम स्वरमे घुनघुनाए लगै छैन। कहू, ई अहींकेँ नीक लागत? एहेन संगी लऽ कऽ लोक की करत जे विचारी नइ बनि विचारोक समैमे राक्षस जकाँ नाच करत..!

बिसवास रायक मन फेर चकभौर लेलकैन। चकभौर ई जे अनेरे जे पत्नी पाछू मनकेँ वौआबै छी ओ बेकार। जखन बिआह नइ भेल अछि तखन अनेरे ने संगी बुझै छी। अखन ओ थोड़े विचारी बनि आगूमे विचार देती। तहूमे जखन अपने डॉक्टर छी, डॉक्टरी नजैरसँ दुनियाँ देखै छी, तैठाम जँ ओ सुच्चा किसान परिवारसँ आबि जाएत, तखन तँ दू जिनगीक बीचक ने बात भऽ जाएत। मुदा तही काल विचारणी आबि बिसवास रायकेँ पुछलकैन»

“बौआ, चाहो-ताहो पीबैक मन होइ छह?”

केना ने माए खोज-पुछाड़ि करैन, जे बच्चाकेँ छाती लगा अहार दऽ जीवन दैत ओ बेर-कुबेरक विचार नइ करती।

विचारक दुनियाँमे वौआइत बिसवास रायक मनकेँ जेना अमृत पानक अमृत विचार बुझि पड़लैन। चाह सुनि हलैस बिसवास राय माएकेँ कहलखिन»

“माए, ओना जँ चाह पीआ देमे तँ आरो मन हल्लुक हएत, मुदा किछु विचार पुछैक अछि।”

बेटाक बात सुनि विचारणीक मन विचारमे विचरण करए लगलैन। बिच्चेमे विचड़ैत बजली»

“बौआ, अखन तोरा कथीक भार पड़लह जे विचार पुछबह?”

कहि उत्तरक आशा छोड़ैत विचारणी चाह बनबए गेली। बिसवास रायक मनमे जेना बिसवास जगलैन। बिसवासो केना ने जगैत, जैठाम माता-पिता अपन परिवारक परवरिस केनिहार छैथ, तैठाम बेटा-बेटीक ऊपर एहेन भारे किए पड़त जे विचारैक खगता हेतइ। बड़-बेसी जँ हेबो करतै तँ बुझैक

खगता हेतइ। माता सिरिफ देहेक जनमदात्री नै छैथ, ओ बुधि आ विवेकक सेहो जनमदात्री छैथ। तैसंग एक जिनगीक ओहन बटोही सेहो छैथ जे चालीस-पैंतालीस बर्खसँ दुनियाँक संग जीबैत आएल छैथ।

दू गिलासमे चाह नेने विचारणी बेटा लग पहुँच दहिना हाथक चाह बिसवासकेँ पकड़ा अपने वामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लैत बेटा आगूमे, चौकीपर बैस पिबए लगली। चाहो पीबैत आ आँखि उठा-उठा ईहो देखैत जे बेटा की पुछए चाहैए। मुदा माइक आगू जेना बिसवास रायक मन डोलए लगलैन। जे माए बुझि गेली। मुदा अपनो आगूमे एकटा नमहर प्रश्न तँ आबिये गेलैन। प्रश्न ई जे अखन हम पढ़ल-लिखल बेटाक माए छी, तैठाम बेटा-धर्म केना निमाहब? ओ डॉक्टर छी, दुनियाँ देखै-सुनै आ बुझैक ओकर अपन खाढ़ी छै, हमर दोसर खाढ़ी अछि, तखन दुनूक समावेश केना हएत?

मुदा लगले विचारणीक मनमे उठलैन, भलेँ बेटाक जिनगीक रूप विचारानुकूल बदलत, मुदा ऐठाम एक जिनगीक टपान[21] आ दोसरमे प्रवेश करैक बीचक ने अछि, जैठाम खाधियो भऽ सकै छै, समतलो भऽ सकै छै आ ऊपरो-निच्चाँ भऽ सकै छै, तैठाम तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। विचारणीय प्रश्नकेँ मनमे अबिते विचारणीक विचार बिसवासक मनकेँ लपैक कऽ पकड़ैत बाजल»

[21] विद्यार्थी जिनगीक समापन

“बौआ, एते दिन तोहर सेवा हम केलियह, आब तोहर बेर औतह। मुदा जे जिनगी जीबैत एलौं, ओइमे स्थायित्त्व केना बनल रहत से विचार पहिने विचारए पड़तह।”

माइक विचार सुनि बिसवास रायक मन आरो मरिया गेल...।

बेटाक मरियाइत मन देख विचारणी बजली»

“बौआ, जिनगी ओहन खेलक गेन छी जे पृथ्वी जकाँ गोल होइए जेकरा ओही गोलीमे गोल करैक अछि।”

जहिना कोनो पोखैर आकि धार-धूर आकि सागर-गंगा सागर किए ने होइ मुदा जँ पएर रोपैक जगह भेट जाइ छै तँ की ओकर मन थोड़े कबुल कऽ लेत जे डुबि जाएब। ओना, एहेन विचार बिसवास रायक मनमे सेहो उठलैन मुदा प्रश्न अछि पोखैर हौउ कि धार आकि सागर, माटिपर सँ डेग उठा पानिमे राखब! अखन तँ अनेको बाटबला दुनियाँमे ने अछि। अहीमे ने सभ किछु फुटो-फुट अछि आ संगो-संग तँ अछिए। अही बीच ने संगियों भेटै छइ। चाहे ओ जेहेन हुअए...।

एकाएक बिसवास रायक मन ठमकलैन। ठमकल मनमे उठलैन, अखन माइक सोझमे बैसल छी, तँए जँ कोनो बात-विचारकेँ मनेमे रखि लेब, ओ चोरियो भऽ सकैए। ओना, ई जरूरी नइ अछि मुदा कहियो काल नइ होइ छै सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...।

बिसवास राय बजला»

“माए, पढ़ाइ-लिखाइ तँ समाप्त भऽ गेल मुदा आब..?”

जहिना बच्चाक पिआसल मन माए ओकर मुँहक रोहानी देख बुझि ओकरा आगूमे या तँ पानि या अपन छाती लगा दइ छैथ, तहिना विचारणी लगबैत बजली»

“बौआ, तूँ कहुना भेलह तँ पढ़ल-लिखल डॉक्टर भेलह, हम

सभ दिन अँगना-घरक काज सम्हारैत दुआर-दरबज्जा होइत खेती-पथारी सम्हारलौं, से तँ तोहर ऐगला जिनगी नइ हेतह, जहिना तोरा मनमे अग-दिगी छह तहिना ने हमरो मनमे अछि!"

माइक विचार सुनि बिसवास रायक बिसवास जगल मन फुलाए लगलैन। बजला»

"माए, अपन विषय जकाँ खाली किताबेटा नइ पढ़लौं, काज करैक लूरि, रोगक इलाज करैक ढंग सीखने छी।"

बेटाक बिसवास भरल बात सुनि विचारणीक मन मोम जकाँ पीघलए लगलैन। बजली»

"बौआ, सबहक अपन-अपन जिनगी होइ छै, जहिना हमरो अछि तहिना तोरो हेतह जे अपना-अपना ढंगे लोक करैए। मुदा..?"

बिसवास राय बजला»

"मुदा की?"

विचारणी बजली»

"बौआ, तोहर जिनगी की रहलह से तोरा छोड़ि आन थोड़े बुझत, माए होइक नाते जे भार छल से निमाहलिअ। आब तूँ जवान भेलह, बिआह-दान हेतह, कुटुम-परिवार समाज बढ़तह। तैबीच अपनो केना बढ़ैत चलबह, ओ तँ अपने ने विचारबहक।"

माइक बात सुनि बेटाक मन बोझिल नइ भेल। मनमे उठलै, एक भेल- 'ओझिल' आ दोसर भेल- 'बोझिल' आ तेसर भेल- 'सोझिल', मुदा..?

बिसवास रायक मन जेना फेर ठमैक गेल। होइतो अहिना छै जे अन्हार समए हुअए आकि अनभुआर रस्ता, बेर-बेर लोक ओतए ठमकबे करैए। बेटाक ठमकैत मनकेँ बुझि माए मुस्की भरैत बजली»

"बौआ, अपने ठेकानि कऽ अपने परेखबह किने?"

माइक बातकेँ बिसवास राय विचारए लगला जे जे अनठेकान अछि, बेठेकान अछि तेकरा तँ जाबे अपने अपनाकेँ नइ ठेकानि ठेकानब ताबे ठेकान केना पएब..?

बिसवास रायक मन फेर ठमकलैन। मुदा जहिना किसान खेतमे ठमकल जजात देख मने-मन ठेकनबए लगैत जे कथीक अभावे ठमकल अछि। ओकरा ठेकानि कऽ जहिना परिवेश बढ़बैक कोशिश करैत तहिना बिसवास राय मने-मन ठेकनबए लगला। जइसँ अक-बक बन्न रहैन। मुदा विचारणी से नइ बुझली। बुझली ई जे भरिसक कोनो नमहर चिन्ता बिसवासक चेतनाकेँ चहका रहल अछि। मुस्कुराइत विचारणी बिसवासक मुँह दिस ई सोचि तकैत रहली जे अवोध बच्चा माइक मुस्कीसँ मुस्कुराएत। मुदा बिसवासक मुँह दबल जे छल ओ दबले छल!

दबल मुँह देख मुस्कियाइत-विचारणी आरो मुस्की भरैत बजली»

"बौआ! जखने अपने ठेकनगर मनुखक रस्ता पकैड़ चलबह, तखने एका-एकी जिनगीक ठेकान पबैत जेहब, तइले अनेरे मनकेँ एना दाबि किए मारै छह।"

बिसवास भरल माइक बोल सुनि बिसवास रायक मनमे सेहो बिसवास जगलैन। बिसवास जगिते मनमे उठलैन- जिनगी तँ कियो अपने बना ठाढ़ करैए। कुम्हार जकाँ बनौल शकल-सूरत माइक ओदरसँ अबै छै, जइमे सभ किछ छै, हाथ-पएरसँ लऽ कऽ बुधि-विवेक धरि।

◌

शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016

त्राहि-कृष्ण

परदेशमे रहै छी। परदेशक माने भेल जैठाम अपन बोली-चाली, खान-पान आ काज-उदेम पर हुअए आ अपन देश भेल जैठाम सभ किछु माने बोली-चाली, खान-पान आ काज-उदेम अप्पन हुअए। ओना, परदेश जाइक कारण भेल पढ़ि-लिखि कऽ बी.ए. पास करब।

..कहब जे पढ़ब-लिखब मनुखक उच्चकोटिक गुण अर्जन करब भेल, तँए एकरा कोन मतलब छै अपन देश आकि परदेश आकि दुरदेशसँ? मुदा जइ गाममे जन्म भेल ओइ गामक लोको जँ रहए देत तखन ने। से थोड़े होइए, जखने पढ़ि-लिखि कऽ खेती-पथारी करब कि माले-जाल पोसि जीवन-यापन करए चाहब, आकि कोनो वणिजे-वेपार करब तँ की गामक लोक किचाड़ब छोड़ि देत? ओ तँ किचाड़बे करत किने जे 'पढ़े फारसी बेचै तेल देखियौ भाय कर्मक खेल!' कहबो केना ने करत, जे काज बिनु पढ़लो-लिखल लोक करैए सएह जँ पढ़ियो-लिखि कऽ लोक करत तखन तँ किचाड़ब उचिते भेल किने। ई दीगर भेल जे पढ़ि-लिखि कऽ लोक ओइ काजकेँ जड़ि-छीप बुझि अपन जिनगीमे अपनबैए जइमे अपन जिनगी चलैत देखैए, मुदा से सभ थोड़े बुझैए। देखो-देखीसँ तँ लोक ओही काजकेँ अपना अपन जिनगी चलैबते अछि, ओ किए ने बाजत।

बी.ए. कऽ छबे मासक पछाइतसँ कलकत्ताक एकटा पटुआ

फेक्टरीमे काज करै छी जेकरा आइ पनरह बर्ख भऽ गेल। परिवारो संगे रखै छी। जाबे माए-बाप जीबै छला ताबे असगरे रहै छेलौं आ जखन दुनू मरि गेला तेकर पछाइतसँ परिवार संगे राखए लगलौं। जेकरो आइ दस बर्खसँ बेसीए भेल हएत। ओना, जाबे परिवार गाममे रहै छल ताबे सालमे दू-बेर-तीन-बेर गाम अबै छेलौं, मुदा जहियासँ परिवार संगे रहए लगल तहियासँ गाम नइ आबि होइए। तेकर कारणो अछि, कारण अछि, जखन अपने छुट्टी होइए तखन चाहे तँ धिया-पुताक परीक्षा रहल आ नइ तँ घरेवाली बेमार रहली। आ जखन ओ दुनू नइ रहल तखन कारखानाक काजमे तेजी रहल, जइसँ छुट्टीए ने भेटैए। ओना, बहुत दिनसँ, माने आइ नअ बर्खसँ, मनमे उठैत रहल जे खुदरा-खानि पाबैन, माने जइ समैमे एकेटा पाबैन पड़ैत हुअए तइमे गाम नइ जाएब आ जइ समए अधिक पाबैन पड़त तइ समए गाम जाएब जे अधिक-सँ-अधिक पाबैनक पाबन पबनौट पाएब। तइ हिसाबे सालक दुइए-टा समए पकड़ाइए, एकटा आसीनक दुर्गापूजा जे रमन्तक पूजासँ भगवतीक विदाइ धरिक अछि, तैसंग पूर्णिमाक कोजगरो अछि। आ दोसर कातिकमे दिवालीसँ छठि धरिक अछि। मुदा दुर्गापूजा-समैमे तँ देश भरिक लोक कलकत्ताक दुर्गापूजा देखए एतै अबैए आ हम कलकत्तामे सालो भरि रहि दुर्गापूजामे गाम चलि जाइ, से नीक नइ बुझि पड़ैए। तँए कातिकेमे दिवालीसँ छठि धरि मनबैले गाम अबैक विचार मनमे पक्का केलौं।

ओना, कल-कारखानामे दिवालीमे उपहारो आ वोनसो भेटै छै, मुदा तइ सभकेँ मनसँ हटबैत पक्का-पक्की विचार मनमे रोपि लेलौं जे ऐबेर गाम जाएब।

दस दिन पहिनेसँ गाम अबैक तैयारी करए लगलौं। धिया-पुता आ पत्नीक संग गाम जाएब तँए आरक्षित टिकट सेहो बनबा लेलौं। पाबैनक समए छी, तहूमे मिथिलाक छठि, जे बंगालमे नइ होइए, तँए

कलकत्तामे अधिकतर रहनिहार गाम जेबे करै छैथ, जइसँ गाड़ीमे बेसी भीड़-भड़क्का भाइये जाइए। तँए आरक्षिते टिकट बनाएब जरूरी भेल।

दिवालीसँ तीन दिन पहिने गाड़ी पकैड़ गाम विदा भेलौं। ओना, मनमे होइते रहए जे वोनस तँ पछाइतो लऽ सकै छी मुदा दिवालीक उपहार छूटि गेल..!

बारहे घन्टाक ट्रेनक रस्ता, तहूमे एक्सप्रेश ट्रेन, समैपर दरभंगा पहुँच गेलौं। आब गाड़ी बदलए पड़त। एते दूर बड़ी लाइनक बड़की गाड़ीमे एलौं, आब छोटी लाइनक छोटकी गाड़ीसँ जाएब। तहूमे आरक्षित जगह नहियेँ अछि। पनरह बर्ख पहिलुका मन पड़ल जे दरभंगासँ चलैवाली गाड़ी तीमन-तरकारीवाली वेपारीसँ तेना भरल रहैए जे डिब्बामे प्रवेशो करब कठिन रहैए, तहूमे तेते ने जेबी टोबनिहारक जमघट रहैए जे सही-सलामत गाड़ीमे बैस कऽ चलबो तँ कठिन अछिए।

मुसाफिर-खानामे दुनू परानी अपनो आ दुनू बच्चो, जाजीम ओछा बैसलौं। ओना, मुसाफिर-खानासँ नीक प्लेट-फार्मे बुझि पड़ल। मुदा मनमे भेल जे जखन दरभंगा आबिये गेलौं, तखन किए ने हराही पोखैरो आ रेडियोओ स्टेशन कनी देखिये ली।

दुनू बच्चो आ पत्नियोंकेँ मुसाफिरे-खानामे छोड़ि अपने एक लपकन टहैल आएब। प्लेटफार्मपर सँ जाइ-अबैमे कनी रूकावट तँ भाइये जाइ छइ। मुदा छी तँ दरभंगाक मुसाफिर-खाना, ठेहुन भरिसँ केतौ कम ने चिनियाँ-बदामक खोंइचा आ ने चप-मुरही खेलहा कागज-प्लाष्टिकसँ खाली। मुदा दोसर उपाइये की..! ओना, दुनू धियो-पुता आ पत्नियोँ नाकर-नुकर जगह देख करैत रहैथ मुदा चारि घन्टा समयो ने बितबैक अछि। बजैकाल तँ लोक ओहिना बाजि दइए जे गाड़ी-सवारी बढ़ने समैक बँचत होइए, मुदा जैठाम बड़ी लाइनक संग

छोटियो लाइन सफर करैक अछि तैठाम जँ गाड़ियोक मिलानी रहत तखन ने, जैठाम गाड़ीक मिलानी नइ रहत तैठाम तँ उचिते ने समैसँ दोबर-तेबर समए खटिएबे करत।

तीनू गोरेकेँ बैसा बीचमे दुनू बैग रखि बजलौं॰

"बौआ, तीनू गोरे तीनू-कात तकैत रहब, ई दरभंगा छी, खलिये मुँह तकैत रहि जाएब!"

कहि विदा भेलौं। पोखैरक कोण सीके जखन एलौं कि चाहक दोकान मन पड़ल। दोकान मन पड़िते भेल जे किए ने चाहो पीब ली आ अपन पहिलुका चीन्हल-जानल लोकसँ कुशलो-क्षेम कऽ ली। सएह केलौं।

पनरह बर्खक पछाइतो बुधन मण्डलक ओहने दोकान जेहेन पनरह बर्ख पूर्व छल। दोकानक ओलतियेमे पहुँचलौं कि हमरो नजैर बुधन मण्डलपर आ बुधनो मण्डलक नजैर हमरापर पड़लै। ओ धक-मका गेल। धकमका ई गेल जे चिन्हल चेहरा बुझि पड़लै। मुदा छीहो दरभंगाक चाहक दोकानदार, हमरा सन-सन केतेको लोक सभ दिन भेँट होइ छइ। ओना, घरक ठेकान आ दोकानक ठेकानसँ ठेकनबैमे हमरा बाधा नइ भेल, मुदा बुधनक मुँहक ऐगला दुनू दाँत टुटने चेहरा तँ कनी बदैले गेल रहइ। ओना, मनमे ई किए होइत जे गाम-समाजक दरबज्जा छी, जैठाम पहुँचला पछाइत घरवारीक दायित्व बनि जाइत अछि जे दुआरपर आएलकेँ आगू भऽ आदर करिऐन। ई तँ चाहक दोकान छी, चाह पीबू, पाइ दियौ, जाउ। ओना, जेतेक कालमे चाह पीब तेतेक काल दोकानपर बैसबोक अधिकार अछिए।

जहिना हमर नजैर बुधन मण्डलपर गड़ल तहिना बुधनक सेहो। मुदा किछु छी तँ दोकानदारे ने छी, चालू-पुरजा तँ अछिए। बाजल॰

"आउ-आउ, ब्रेंच खाली छै, चाहेटा पीब कि किछु खेबो

करब?"

ओना, मनमे ईहो हुअए जे एते जे बुधन आग्रह करैए, से भरिसक चीन्ह गेल। मुदा ई तँ बुझबे ने केलिऐ जे बुधन अपन दोकानदारी छोड़ि दोसर एको शब्द नइ बाजल। तैबीच एकटा जरूर भेल जे दिल्ली जकाँ पएर आकि मुँह-कान धोइले पानि नइ देल जाइत, देल जाइत अछि पीबैले। से बुधनक मनमे नइ आएल, चाहक संग पानि मंगनी बँटिते अछि। पानि देलक।

कहलिऐ॰

"चाहेटा पीब।"

पानि पीब चाह पिबए लगलौं कि तखने बुधन टोकलक॰

"बहुत दिनक पछाइत देखै छी।"

बहुत दिन सुनिते बजलौं॰

"अखन की दर चाह चलबै छह?"

कहलक॰

"पाँच रूपैये।"

कहलिऐ॰

"अहीसँ हिसाब जोड़ि लहक जे जखन एक रूपैये चाह बेचै छेलह, तहियेक भेँट छी।"

संजोग नीक रहल, एका-एकी गहिंकी झड़ि गेल। खाली दोकान देख बुधन सेहो लगमे आबि बैसल। होइतो अहिना छै, किएक तँ लोके लग ने बैसबो करत आ बसबो करत। बुधन मण्डल बाजल॰

"अखन केतए रहै छी, घरवाली मनगर रखने छी किने?"

धनियाक चटनी जकाँ बुधनक विचार चटगर लागल। ओंगरी चाटि-चाटि जहिना खेनिहार घरवारीकेँ देखबैत जे वौस अहाँ आगूमे

देलौं से हम पेटेटामे नइ मनोकेँ चटिया चाट चटा रहल छी, तहिना कहलिऐ॰

"सभ किछु ठीकठाक अछि। कलकत्तामे रहै छी।"

'कलकत्ता' सुनिते विह्वल होइत बुधन बाजल॰

"तब ते बौआ, अहाँ राजधानियेमे रहै छी!"

बुधनक बात नीक जकाँ नइ बुझलौं। 'राजधानी' केकरा कहलक। फेर मनमे आएल जे विक्टोरिया समैक तँ ने बात कहलक। गुनधुनाइत मनमे उठल- की राजधानी?

जहिना धारा-प्रवाह पार्लियामेन्टमे बजैत लोक कखनो रूपेकेँ रूपैआ बना दइए आ कखनो रूपैआकेँ रूपे बना दइए तहिना बुधन बाजल॰

"बौआ, रूपेक तँ खेल अछि दुनियाँमे। अहीपर ने रजधानी राजधानी बनैए।"

बुधनक बात सुनि आरो मन घुरिया-फिरिया लगल। मनमे ईहो भेल जे जेतेकाल चाह पीबै छी तेतने काल ने दुनू गोरे एकठाम छी, एना जे मनकेँ वौआएब से नीक नहि। कहलिऐ॰

"की रूपेक?"

हमर बात जेना बुधनकेँ नीक लगलै, बाजल॰

"बौआ, गरीबक तँ राजधानी कलकत्ता छीहे। कम-सँ-कम पाइमे लोक ओतए बास कऽ सकैए, तँए कहलौं।"

बुधनक एकेटा बात मनकेँ सोलहन्नी हल्लुक बना देलक। पुछलिऐ॰

"भाय परिवारमे के सभ छह?"

जेना बुधनक मनक टोइयेपर उत्तर राखल छेलै तहिना टोहिया

कऽ बाजल»

“बौआ, गरीब लोकक जिनगी कोनो जिनगी छी जे परिवारक सेखी रहत। जहिना सर-समाजमे देखै छिऐ जे दियाद जकाँ बेटा बापोकेँ बुझैए, तखन मिलानसँ रहत केना। तही समाजमे ने हमहूँ छी। दुनू बेटा अपन-अपन बौहु लऽ लऽ भीन भऽ गेल, तैबीच घरोवाली मरिये गेली, खाली मुदा दोकान तँ बँचल रहल।”

बिच्चेमे बजा गेल»

“तखन तँ जिनगी अपन हाथेमे रहि गेलह।”

हाथमे पाइ रहने जहिना मौगियाहोकेँ मन तिरपित रहैत, तहिना ने चिड़ै जकाँ परिवारो बनबैक लूरि रहने लोकोक मन तिरपित होइते छइ। तिरपित होइत बुधन बाजल»

“बौआ, कहुना भेलह तँ छोट भाए तुल भेलह, तोरा लग झूठ केना बाजब।”

कहि बुधन थकथका गेल। थकथकाइत बुधनकेँ देख टोकारा दैत कहलिऐ»

“भाय, तखन तँ तूँ जे एते करैत ठाढ़ छह, से तोरे धन्यवाद दी।”

एक तँ बुधन दुनू परानी चाहेक दोकानक बीच तइमे बुधनक बधाइ सुनि पत्नी बधैया तालमे नजैर मिलौली। जे बुधन देख गेल। तीनू गोरेक जिनगीक नजैर मिलानी होइते बुधन बधैत तालमे बाजल»

“बौआ, बेटो आ पुतोहुओकेँ कहि देलिऐ जे अपन जिनगी सम्हार। जँ बहुए लऽ लऽ नचमेँ तँ नाच! हमहूँ बिआह कऽ कऽ देखा देलिऐ।”

गपे-सप्पमे केना समए बीत गेल, से बुझबे ने केलौं। घड़ी देखलौं तँ निरमलीवाली गाड़ीक समए भऽ गेल। उठि कऽ ठाढ़ भेलौं तँ

मन पड़ल जे हराही पोखैर आ रेड़ियो स्टेशन तँ छूटि गेल। पहिनहि जकाँ हराहीक दशा अछि आकि किछ नीको भेल? तहिना रेड़ियोओ स्टेशनमे ओहिना अपन भाषा छोड़ि आने भाषाक रामायण चलैए आकि अपनोकेँ अपनौलक?

उठला पछाइत जँ हराही दिस आगू बढ़ितौं तँ गाड़ीए छूटि जाइत तँए बुधनेक चाह पीब घूरि कऽ मुसाफिर-खाना पहुँचलौं। तहीकाल दिल्ली-दरभंगाक गाड़ी सेहो पहुँचल। जहिना चढ़निहार तहिना उतरनिहारक भीड़ लगि गेल। मुदा रस्तासँ हटि कऽ जामीज बिछौने रही तँए रेड़ामे नइ पड़लौं। मनमे रहबे करए जे निरमली-दरभंगा छोटी लाइन छी, गाड़ियो छोटकीए छी। अहीठामसँ गाड़ीक इन्जिनो घुमत आ गार्डो-ड्राइवर बदलत, तँए समए लगबे करतै। मुदा बिच्चेमे गेटपर हल्ला भेल। हल्ला भेल जे एक गोरेकेँ ऊपरका जेबीमे दस हजार रूपैआ आ नोकरीक परिचय पत्र रहै, से कियो निकालि लेलकै। आब की पनरह साल पहिलुका दरभंगा छी, जे दसटा गनल पौकेटमार छल, जेकरा लोको चिन्है छेलै आ रेल-पुलिस सेहो चिन्है छेलै, तँए प्लेटफार्मपर देखते दुनू सर्तक भऽ जाइ छल। आब से समए बदैल गेल। तँए बुझब आ चेतब तँ कठिन भाइये गेल अछि। मुदा जेकर पॉकेट मराएल रहै से होशियार, होशियारीसँ बाजल»

“भाय, रूपैआ लेलह तँ लेलह मुदा परिचय-पत्र घुमा दएह, नइ तँ महिना दिन परेशान हुअ पड़त।”

पॉकेटमारो अपन जान जानि कऽ टौहकीमे केना फँसा लेत। परिचय पत्र देत आ रूपैआ लेत, से सम्भव अछि। दुनू दिसक माने पुलिसक संग यात्रियोक घूसा-चमेटा के बाँटि लेतइ। हँ, ई सम्भव अछि जे जइ ऑफिसमे काज करैए, तइ ऑफिसक खिड़की देने साँझू पहर फेक औत। किए ओइ वेचाराकेँ परेशानी बढ़तै आ किए अपने

बढ़तै। ओकरो जान बँचतै आ एकरो कमाइ हेतइ।

भीड़ छँटल, गाड़ीमे जा बैसलौं। मुदा गाड़ीक कोठरी खाली जकाँ बुझि पड़ल। खाली डिब्बा देख बगलमे बैसल यात्रीकेँ पुछलिऐ»

“गाड़ीमे भीर कम बुझि पड़ैए?”

यात्री बाजल»

“अनेको रंगक सवारी बढ़ने गाड़ीक भीड़ कमि गेल। ट्रेनक यएह दशा छै जे दिनमे दुइए बेर चलैए। आब लोककेँ एते पलखैत छै जे चरि-चरि घन्टा बैसल रहत।”

अपन भोगल समए छल, की बैजतौं मुड़ी डोला बात मानि लेलौं। गाड़ी खुजल मुदा गाड़ीक रफ्तार तेज बुझि पड़ल। तेकर कारणो भेल जे कोयलाबला इंजन बदैल कऽ डीजलबला भऽ गेल अछि। मुदा डीजलबला इंजन भेनौं की हएत, स्टेशनक बीच दू-चारि बेर सिकैड़ खींच रोकल जाइते छइ। रोकलो केना ने जाए, स्टेशनसँ उतैर दस-बारह किलोमीटर पएरे चलबक तँ सुविधा भऽ जेतइ। खाएर जे भेल से भेल, तीन बजे तरगर राति कहियौ आकि तीन बजे बड़का भोर, अपना टीशनपर पहुँचलौं। ओना, स्टेशनमे बिजली लगि गेल अछि मुदा इजोतक पता नइ, प्लेटफार्मक पाछू, कतवाहिमे दसटा मघैया डेरा खसौने, बाँकी स्टेशन सून-मसान।

कोस भरि गाम अछि, एक तँ कातिकक कृष्णपक्ष तिरियोदशीक अन्हार, तैपर शीत-ओस तेना कऽ झँपने जे हाथोकेँ हाथ नइ देख पबैत। जहिना हाथकेँ हाथ नइ देख पबैत तहिना पएरोकेँ पएर नइ देख पबैत! जखन अपने देह अपने ने देख पड़ैत तखन धरतीपर पएर रोपि डेग उठाएब धिया-पुताक खेल नइ ने छी।

ओना, तिरियोदशीक रातिक भोर भेने मेघोमे लाली पसरए लगल आ

हँसुआ जकाँ चान सेहो उगि गेल। मुदा तैयो तँ अन्हार पसरले रहइ। पत्नी बजली»

“अनभुआर रस्ता अछि तँए कनी नीक जकाँ फरीच हुअ दिऔ, तखन रस्ता काटब।”

अपनो मन मानि गेल, ताबे टीशनक बगलक चाहो दोकान खुजि गेल, लोकक आवाजाही सेहो शुरू भेल। प्लेटफार्मेपर भोरुक काज शुरू केलौं। माने मुँह-कानमे पानि लेलौं।

सुर्ज नइ उगल छल, मुदा साफ भऽ गेल छेलै, भिनसुरका गाड़ी पकड़ए आनो-आनो गामक लोक आबए लगल, मन भेल जे सवारी कऽ लइ छी, मुदा फेर पैछला दस साल-पहिनेक रस्ता मन पड़ल। केतौ रोडक पजेबा उखड़ल तँ केतौ रस्तेपर खेत पटबैबला पट बनल। एहेन रस्ताक राही-ले तँ पएरे चलब नीक। भाय, जिनगियो तँ सएह ने छी जे जहिना एक दिस राज-जोग तँ दोसर दिस वन-जोगक सुआद एके रंग बुझि पड़ैत। पएरे गाम विदा भेलौं।

दू सालक रौदियाह समए। ओना, उन्नैस साए सरसैठक रौदी जकाँ समए नइ छल, मुदा जिनगीक हिसाबसँ एके दुखमे सेहो कमी-बेसी भाइये जाइए, तँए रौदी तँ छोट छल मुदा लोकक मन सरसैठियेक रौदीक जकाँ रौदिया जरूर भऽ गेल अछि। कातिक मास रहितो माने जइ मासमे ओस-कण दुबिक टोइयापर चमकैत, स्नान कएल जकाँ सूर्जक ताप रहैत, पानि पीअल पथिक जकाँ धरतीक मन प्रफुल्लित रहैत, धानक शीशपर ओसक टीका चढ़ल रहैत, जइसँ कैतकी जेठुआ जकाँ पथराएल माटि, सुखाएल सरोवर, उजरल घर जकाँ गामक-गाम खेत-पथार देख कऽ मन लहैस गेल। मनमे उठल- एहेन समैमे गामक दिवालीसँ छठि धरिक पाबैन केहेन हएत? जखन गामक पाबैनियेँ मरण-मुँह रहत तखन अपन पाबैन केहेन हएत? मन

खसि पड़ल।

गाम पहुँचलौं। आइ अन्हारक चतुरदशी छी, काल्हि दिवाली हएत। पनरह कातिककेँ अमवसिया। अपन घर तँ ढहिये-ढनमना गेल छल, मुदा छप्पर ऊपरमे ठाढ़ छल। कुत्ता, बिलाइक धरमशाला जकाँ अँगना-घर भऽ गेल छल। मुदा जेना भदवरिया खढ़-पात अँगना-घरकेँ छाड़ने रहैए तेना नइ छल। ओना, रहैक जोगार कलकत्तेसँ केने आएल छी। दस फीटक प्लास्टिकबला टेन्ट, दूटा बचकानी आ दूटा सियानी कुरसी सेहो नेने आएल छी। कोनो कि गाममे रहैले आएल रही जे ठठगर घर आ बटगर जिनगीक जरूरत पड़त। ओना, समाज-ले दू किलो दार्जिलिंगक चाह पत्ती सेहो अनने रही। भाय, किछु तँ गाम छी किने, शहर-बजार थोड़े छी। एतए जँ मघैयो डोम आकि नटो-बखो आबि डेरा खसबैए, तेकरो देखैले गामक दसटा धिया-पुता पहुँचिये जाइए, तैठाम तँ हम गामेक दस बर्ख पहिलुका लोक छी। बीचमे जे जनमल हएत से भलेँ नइ चिन्हए, मुदा पहिलुका लोक नइ चिनहत से बात तँ नइए।

ओना, दियादियोक परिवार कम नइ अछि, झमटगर अछि। जइसँ केते विधो-बेवहार टुटि गेल। सालमे दस-बीस गोट बुढ़-पुरान मरबे करै छैथ। नवतुरिया सभ दिन अशौचैक केश-कट्टी करौने रहत से नीक थोड़े लगतै, तँए सराधक भोज तँ खेबे करत, मुरदा जाइर नहेबे करत, मुदा केश नइ कटाएत। जखन केश नइ कटाएत तखन नहेक कोन दोख छइ।

बारह बजेक पछाइत छीतन भाइक पत्नीकेँ प्रसव पीड़ा शुरू भेलैन। शुरूक डेढ़ दू घन्टा तँ कोनो हलचली परिवारमे नइ उठलैन, पलहैन आबि प्रसवक पीड़ाकेँ टटोइल रहल छेली, अखन तक कोनो अशुभ नइ बुझि पाबि रहल छेलैन। भाय शुभेमे शुभो होइए आ

अशुभो होइते-ए। सही-सलामत प्रसव पीड़ाक पछाइत शीशु-जन्म होइए, ई शुभ भेल, आ कोनो कुसंजोग भेने जखन वएह डॉक्टर-वैद, ओझा-गुनीक भाँजमे पड़ि जाइए तखन अशुभक संभावना सेहो जनमए लगैए।

संजोग नीक रहल, एक-पहर समए लगला पछाइत बालक शिशुक जन्म भेल। ओना, छीतन भाय तीन मास जेठ छैथ, लगेक दियादी माने सहोदरे पितिऔत सेहो छैथ। घराड़ी दुआरे पहिलुका घराड़ीपर सँ हटि दोसरठाम घर लऽ जा बसल छैथ। जहिना लगेक दियाद छैथ तहिना लगेक साढ़ू सेहो छैथ। दुनू गोरेक बिआह एके गामक एके परिवारमे जहिना गामक दियादीमे अछि तहिना अछि। मुदा जहिना छीतन भाय तीन मास भैयारीमे जेठ छैथ तहिना अपन पत्नी छीतन भाइक पत्नीसँ दू मासक जेठ छैथ। ओना, दुनू दिससँ जहिना घाटा छीतन भायकेँ छैन तहिना दुनू दिससँ नफगर छीहे, मुदा छी तँ एके परिवारमे, तँए घाटा-नफ्फा बरबैर बुझै छी।

जखन पत्नीक कानमे बहिनक प्रसव-समाचार पहुँचलैन तखने दुनू बच्चाक भार सुमझा बहिन लग चलि गेली। जे दू घन्टाक पछाइत आपस आबि बहिन-बेटाक जन्मक समाचार कानमे देली। तैबीच गामक चुहचुही दिस देखए लगलौं। अदहासँ बेसी गाछ-बिरीछ सुखियो गेल आ सुखियो रहल अछि! केतेक पतझाड़क अवस्थामे तँ केतेक निपुआंग सुखि गेल। जे आसीन-कातिक शारदीय मास कहबैए, से जेठुआ खढ़ मास जकाँ लगि रहल अछि। एक तँ उम्मसक समए, दोसर हवो एना गरमा गेल जेना साल भरिसँ पानि नइ पीने हुअए।

चारि बजि गेल। मनमे भेल जे एक चक्कर गाम घुमि ली। मुदा लगले मनकेँ मन मनाही केलक जे जखन दियादी परिवारमे बच्चा-

जन्मक अशौच पसैर गेल अछि तखन बिना शुद्ध भेने गाम घुमब नीक नइ। तहूमे जखने गाम दिस विदा हएब तखने बाध-सँ-वोन धरि आ चास-सँ-बास धरि समाज भेटबे करता, तैठाम अशौचक अवस्थामे नीक नइ हएत। अखन तँ एतबे नीक हएत जे छीतन भाय ऐठाम पहुँच खाली जीगेसे नइ किछु काल ओगरवाहि कऽ दिऐन जे परिवारक लोककेँ कनी मदैत भेटैन।

गाममे आइ दिवाली छी, मुदा अपना दियादी-परिवार छोड़ि कऽ छुटैक कारण दियादीक अशौच अछि। भिनसुरका आठ बजेक समए। चाह पीब, पान खाइते नजैर गाम दिस टहैल गेल। दिवालीक दिन छी केते गोरे कोठेपर दीप सजौत, केते गोरे फुसि घरक दुआरे धरतीपर। कियो इनार-चापाकल-पोखैरक घाटपर दीप जरौत तँ किये, घैल-घैलचीक बासपर। मुदा अपने केतए जराएब, प्लास्टिक टेन्टपर? जँ कहीं ऊपरेमे, छज्जीएपर, आकि निच्चे कील लग दीपक आगि पकैड़ लेत, तखन तँ नीचाँ-ऊपर दुनू चलि जाएत! भने बैटरीबला लाइट अनने छी, पाँचोकेँ पाँचो कोणपर लेस देबइ। दीपेटा तँ नइ, लक्ष्मी-पूजा सेहो तँ छी ने? से? हँ, दुनू लक्ष्मीक पूजा माने लक्ष्यक पूजा छी, मन-लक्ष्मी सेहो धन-लक्ष्मी सेहो..।

..अपना ऐछे कथी जे धन-लक्ष्मी पूजा करब? तखन तँ मन-लक्ष्मीक बुझल जाएत। जहिना दिनक लगले अस्त भेला पछाइत घर-दुआर, पोखैर-इनार लोक दीप सजबए लगैए तहिना ने दोसर पहर रातिमे कालीक पूजा सेहो करबे करत। से? जखने साँझक लक्ष्मी दिवा रातिक दीपक बाती बनि जरत तखने दिवालीक दीप प्रज्ज्वलित रहत।

अशौचक दुआरे जइ उदेससँ कलकत्ता छोड़ि एलौं, से पूर भेल की नइ भेल, मुदा समाजक दीप तँ अखनो वएह कहैए जे अखनो हम त्राहि-कृष्ण करै छी। जँ से नइ छी, तखन समाजिक सरोकार केहेन

अछि आ कोन दिस भागल जा रहल अछि? की ओइ भगबैमे हमहूँ छी की नइ?

मन मानि गेल जे जइ विचारसँ गाम आएल छी से जँ सोलहन्नी नइ तँ चौअन्नियोँ-अठन्नी पूर भेबे कएल। दिवालीसँ छठि धरि देखैले आएल छेलौं। आइ नवम दिनो छी, बेरुका गाड़ी पकैड़ लेब।

◌

शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

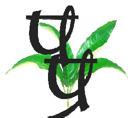
₹ 251

ISBN : 978-81-936422-7-6



गुलेती दास

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै
घरे-घर समाज कहि◌-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै
इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै
बनि◌-कनियाँ-पुतरा-पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै
राति◌-दिन एकबट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छइ।

कथाक सत्तैर

ISBN : 978-81-936422-8-3

दाम : ₹ 251/-
सर्वाधिकार सुरक्षित © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
दोसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

GULETEE DAS
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉंपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कनहा भँट्टा

समए रौदियाह भेने जिनगियो आ जिनगीक किरियो-कलाप रौदियाइते अछि, आ से खाली रौदिए-टा मे नइ बाढ़ियो-दाहीमे होइए। ओना, दुनूक बीच विपरीत सम्बन्ध अछि, अकास-पतालक अन्तर अछि। मुदा जिनगीक बीच आबि दुनू एक भऽ जाइए। माने ई जे जहिना गाछो-बिरीछ आ मालो-जाल, हाल बेहाल भेने दम खींचैयो लगैए आ तोड़बो करैए तहिना बाढ़ियो-दाहीमे होइए। ओना, कहैले तँ कहले जाएत जे एकटा 'पानिक अभावमे मरल' आ 'दोसर पानि पिबैत मरल।' मुदा से जे हौउ, जिनगी तँ निच्चाँ मुहेँ खसबे करैए।

जखन समैये रौदियाह भेल तखन जिनगीक किरिया-कलापसँ लऽ कऽ जीवन-यापन धरि रौदिएबे करत, मकमकेबे करत। अनो-पानि आ तीमनो-तरकारीमे मकमकी एबे करत। रौदी भेल खेतक उपज गेल! उपज गेल, वस्तुक अभाव भेल! आ वस्तुक अभाव भेने जीवन आ जिनगी गेल..!

ओना, जइ हिसाबे तीमन-तरकारीमे मकमकी आएल तइ हिसाबे अन्नमे नइ आएल। मुदा नहियेँ आएल सेहो केना कहल जाएत। हँ, ई जरूर भेल जे जैठाम तीमन-तरकारीक भावमे चारि बर, पाँच बरकेँ के कहए जे अठ-अठ-दस-दस बर बढ़ल, तैठाम अन्नक भावमे डेढ़िया-दोबर बढ़बे कएल अछि। जे भाँटा पाँच रूपैये किलो

पनरह दिन पहिने छल, ओ रसे-रसे बढ़ैत तीस रूपैये किलो भऽ गेल आ जे टमाटर दस रूपैये किलो छल ओ साठि रूपैये भऽ गेल। अन-पानिमे से नइ भेल, जे बीस रूपैये किलो छल ओ पचीस रूपैये भेल आ जे साठि रूपैये छल ओ सत्तैर रूपैये भेल। ओना, खाली खाइ-पिबैक नइ आनो-आनो वौसमे चढ़ा-ऊतरी भेबे कएल। रौदी भेने किछु चीज सस्तो भेल आ किछु कूदि कऽ अकासो छूलक।

तीमनो-तरकारी एके रंग नइ कुदल, जेना हरियर तरकारी कुदल तेना अल्लू नइ कुदल। मुदा ऐठाम तँ ईहो बात ऐछे जे अल्लूकेँ कोबी-भाँटा, टमाटर-साग जकाँ हरियर मानल जाए की नइ? ओ तँ ने फूल छी, ने पात आ ने ऊपरका फड़े छी। ओ तँ छी कन्द-मूल चाहे गाँठ। कन्द-मूल आकि गाँठ रहितो अल्लूमे एकटा बात तँ ऐछे जे आनसँ नमहर[1] जिनगियो छै आ आन जकाँ गलनमो-सड़नमो नहियेँ अछि। ओना, सड़नमा ओहो अछि मुदा हरियरसँ कम अछि। आनक अपेक्षा बेसी खगतो पुरबैए। माने ई जे आन तरकारीक अपेक्षा अल्लू बेसी बकतियारो होइए। खएर जे होइए.., मुदा जखन हरियर गाछक हरियर फड़, पाँतेसँ बिछ-बिछ उखाड़ि तरकारी बनैए तखन तँ ओहो कनी-मनी गलिते अछि आ हरियर गाछक हरियर फड़ो भेबे कएल, तँए अल्लूक सौंसे जिनगीकेँ भलेँ हरियर तरकारी नइ मानल जाए, मुदा थोड़बो दिन तँ मानले जा सकैए।

ओना, अल्लूकेँ कन्द-मूल कहल जाए आकि गाँठ, ईहो तँ झमेल ऐछे। अल्हुआकेँ शकरकन्द कहल जाइए, जे एकटा गाछमे अल्लुए जकाँ घोंदा फड़ैए, भलेँ एकटा गोल आ एकटा नाम किए ने हुअए। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे जहिना अल्लूमे पातर खोंइचा होइए तहिना अल्हुओमे अछि। ओना, नामोक दृष्टिसँ दुनू भैयारीए बुझि

[1] अधिक दिन रहैबला

पड़ैए। तेतबे किए, दुनूमे सँ केकरो टमाटर जकाँ आकि भाँटा जकाँ बीआ सेहो ने होइ छइ। जखन एकटा गुण आकि एकटा काज मिलने दोस्तियारे सम्भव अछि, तखन तँ अल्लू अल्हुआक भैयारीमे सेहो ऐछे। मुदा केशौरो तँ मिश्रीए-कन्द छी, जेकरा अल्लू जकाँ ने कन्दे रोपल जाइए आ ने उला-पका खाएले जाइए। ओकर फूलमे छीमीदार फड़ होइ छइ, तइमे बीआ होइ छइ, ओही बीआसँ कन्द भेल..।

मुदा ऐठाम कन्दो-कन्दमे फन्दे-फन्द अछि। रहल जे अल्लूकेँ 'गाँठ' मानल जाए की नइ?

मुदा गाँठोक तँ लीला अपार ऐछे, किछु माटि तरक गाँठ भेल तँ किछु माटिक ऊपरको। जेना, गाँठ-कोबी माटिक ऊपर होइए, किछु गाँठ एहनो तँ ऐछे जे माटिक तरोमे एकेटा होइए जे जड़ि धने रहैए। मुदा गीरह-गाँठ कहैबला हरदी-आदीक तँ से नइ अछि। भलेँ अल्हुआ-अल्लू जकाँ फुट-फुट घोंदानुमा नहि, हत्थे जकाँ किए ने हौउ। मुदा जे हौउ, अल्लूक तँ मिठाइयो, तरकारियो, अँचारो बनैए आ अल्हुआ जकाँ उसैन सेहो खाएल जाइए। जे अन्नक काजक पुरती सेहो करिते अछि। खएर जे से...।

पिताजी दू भाँइ। दुनू भैयारीक बीच अखन एगारह गोरेक परिवार अछि। नीक समए हौउ कि अधला, नमहर परिवारक खगता बेसी होइते अछि। गामक ओहन परिवारमे छी, जइमे नीक जकाँ माने सुपोषित भोजने ने भेटैए मुदा जैठाम भोजनोमे कोताही हएत तैठाम घर-दुआर आकि पढ़ाइ-लिखाइ वा ऐसँ ऊपरक जे खगता अछि ओ तँ कल्पनाश्रित छोड़ि पूर्तिये केते कऽ सकै छी। ओना, एगारह गोरेक परिवारमे खाइयो-पिबैक एक विचार नहियेँ अछि, मुदा समैक धक्का तँ विचारकेँ तोड़ि-मरोरि एकबट करिते अछि। ओना, समए बदलने फेर विचार-भिन्नता जनमैक परिस्थिति बनियेँ जाइए। बनियेँ ने जाइए

बनितो अछि आ नहियों बनैए।

भोजनकेँ जीवनक मुख्य खगता बुझि परिवारक सभ कियो एकठाम बैस विचार केलौं जे जिनगी-ले सुपोषण जरूरी अछि, तँए चारि साए ग्राम हरियर तरकारी जरूरी अछि। माने, जहिना अन्नक उचित मात्रा जरूरी अछि तहिना हरियर साग-सब्जी सेहो जरूरी अछि। दस बर्खसँ कम उम्रक परिवारमे कियो ऐछे ने जइसँ घटी-बढ़ी हएत। ओना, एक विचार भेलो पछाइत करिया काका अपना जिद्दपर ठाढ़े रहि गेला। हुनकर जिद्द छैन जे भात हुअ कि रोटी अढ़ाइ साए ग्राम अल्लूक चोखा हेबे करए...।

करिया काकाकेँ अल्लूसँ कोन प्रेमक प्रगाढ़ता छैन से तँ ओ जानैथ, मुदा अन्नक पछाइत अल्लू छोड़ि दोसरकेँ ओते मोजर नइ दइ छथिन जेते अल्लूकेँ। फलो सोझहेमे छैन जे मोटैनी बेमारी पकैड़ नेने छैन, मुदा तैयो सूर्यवंशी जकाँ प्राण जाए मुदा विचार नइ जाए..।

ओना, परिवारमे करिया काकाकेँ छोड़ि दसो गोरे ऐ विचारकेँ राजी-खुशीसँ मानि अमल करै छी जे चारि साए ग्राम हरियर साग-सब्जी प्रतिदिन प्रति बेकती परिवारमे हेबक्के चाही, से ऐछो। जहिना कहल गेल अछि जे 'कनही गाइक भीने बथान' सेहो ऐछे। खाइक मामलामे करिया काका दसो गोरेसँ भिन्न छैथ। आ से घरेटा मे नहि, गामोमे निमाहिते छैथ। समाजमे भोज-काज भेने भोजनक खुशी लोककेँ होइते छइ, मुदा से करिया काकाकेँ नइ होइ छैन। किएक तँ भोज-काजमे अल्लूक चोखा नइ भेने केतौ खाइयो-ले नहियेँ जाइ छैथ। आ जँ कहियो केतौ जाइतो छैथ तँ अल्लूक चोखा दुआरे अजश दाइए दइ छथिन। ओना, समाजक भोज-काजमे जश-अजशक आनो-आन कारण अछि, मुदा करिया कक्काक अजशक कारण अल्लूए-चोखा रहैत अछि।

ओना, समाजिको भोजमे आ परिवारोमे आन सब्जीक अपेक्षा अल्लूक महत बेसी ऐछे। तेकर कारणो अछि जे चोखा, तरूआ, भुजुआ, भुजिया, अचार सहित आनो विन्यास अल्लूक जेते बनैए तेते दोसरकेँ नहियेँ बनैए। भोज तँ ओहन भोजन छी जइमे बेसी-सँ-बेसी विन्यास बनैए। बनबो केना ने करत, भोज तँ आवश्यक भोजनसँ आगू बढ़ि विशेष भोजन छीहे, तैठाम जँ विशेष विन्यास नइ बनइ, तखन ओ विशेषे केना भेल? आ जखन आनसँ बेसी विशेषता नइ रहत तखन ओ विशेषाधिकार प्राप्ते केना कऽ सकैए?

रौदियाह समए भेने अपन कोन चर्च जे गामेसँ हरियर तरकारी अलोपित भऽ गेल अछि। सबहक बाड़ी-झाड़ी ओहिना बिनु उपजाक मर्र-मर्र करैए। मुदा भोजन-ले तँ तरकारीक जरूरत ऐछे। जखन अपन चास-बासमे हरियर तरकारी नइ अछि तखन तँ हाटे-बजार दिस ने जाए पड़त।

ओना, गामक चौबगली आन सभ गाममे हाट अछि जे सपताहमे दू-दू दिन लगैए। बजार जकाँ भरि-दिना नहि, खाली बेरुका उखड़ाहा भरि मात्र लगैए। जे करीब-करीब चारि घन्टा रहैए। गमैया हाट छी तँए गामे-घरक हटवारो रहल। ओहीमे किछ किनवारो आ किछु बेचवारो रहल। तैसंग किछु एहनो कीनवार-बेचवार होइए जे बेचबो करैए आ कीनबो करैए, मुदा से कम रहैए। अधिक बेचवार ओहन रहैए जे अपन खेत-पथारसँ उपजल वौस हाटपर आबि बेचैए।

गामसँ बेसी दूर तँ नइ मुदा चौवगली गमैया-हाटसँ कनीए आगू झंझारपुर हाट अछि। बगलेमे बजारो छइ। ओना, गामक चौबगली-गमैया हाटसँ झंझारपुर-हाट नव अछि। माने आन हाटक अपेक्षा झंझारपुर हाट पछाइत लागब शुरू भेल, मुदा अनुकूलता पौने सभ हाटसँ बेसी जगजियार तँ ऐछे। अनुकूलतोक अनेक कारण अछि।

जइमे प्रमुख अछि- प्रतिक्रिया स्वरूप हाट लागब। माने, झंझारपुर-हाट महरैल हाटक प्रतिक्रियामे लागब शुरू भेल। जे एक जातिक अधिकारक हाट छल। समाजमे दबंगता छेलैहे। हाटक वेपारियो आ खरीदवालोक संग ज्यादती भरपुर करै छल। संजोग भेल किछु वेपारियो आ खरीदवालोमे आक्रोश बढ़ल, सरकारी कार्यालयसँ हटल रहबे करए। माने, थाना-ब्लौक सँ दूर छेलै महरैलक-हाट, तँए जेहेन निगरानी सरकारक हेबा चाही से नहियेँ रहइ।

झंझारपुर बजारक लाट सेहो रहबे करइ, जइसँ बजरूआ वेपारी सेहो आक्रोशितक संग भेल। झंझारपुर-हाट लागब शुरू भेल। महरैल-हाट रसे-रसे घटए लगल आ अखन ओ गमैया हाट बनि ठाढ़ अछि, जइमे गामेक बेचवालो आ लेवालोमे समटा गेल अछि। ओना, महरैलक बरदहट्टा सेहो टुटल, मुदा अनुकूलता नइ रहने झंझारपुरोमे नइ लगि सकल। तेकर कारण भेल अछि जे इलाकामे गाए-बरदक उपटान जकाँ सेहो भाइये गेल अछि।

झंझारपुर हाटकेँ तेजीसँ उठैक कारण सरकारीकरण सेहो भेल, आ लगमे बजारो आ सरकारियो कार्यालय रहने सभ रंगक लेवालो आ बेचवालोक समावेश भाइये गेल अछि। तैसंग चौबगली दूर-दूर तक सड़क आ सवारीक सुविधा भेने अन्तर्राज्यीय वेपारी सेहो पहुँचए लगल, जइसँ हाटक चुहचुही दिनानुदिन बढ़िते गेल अछि।

दियादीमे तँ नइ मुदा भैयाक संगी भेने लाल भाइक परिवारसँ विशेष सम्बन्ध ऐछे। लाल भाय नोकरी करै छैथ। ओना, गामेसँ जाइ-अबै छैथ, मुदा कर्तव्यनिष्ट लोक रहने आठ घन्टा ड्यूटी पुरबैमे अपने भरि दिन लगि जाइ छैन। जइसँ हाट-बजारक काज पत्नीए, माने लाले भौजी करै छथिन।

अपने साइकिल रखने छी, जइसँ झंझारपुर जाइ छी, पाँचे

किलोमीटरपर झंझारपुर-हाट अछि, टेम्पूक सुविधा गामसँ सेहो छइहे तँए स्त्रीगणो सभ हाट-बजार करिते छैथ।

मुख्य सड़कसँ उतैर जखने हाटक बाट धेलौं कि लाल भौजीकेँ टेम्पूपर सँ उतरैत देखलयैन। मनमे भेल जे टोकयैन, परिवारिक सम्बन्ध ऐछे। मुदा फेर भेल जखन भौजियोक नजैर पड़बे केलैन आ किछ ने बजली तखन जँ अपन-अपन काज अपने सम्हारि चली, यएह ने भेल अपना भरोसे चलब। ओना अनभुआर जगहपर आकि गामसँ बाहर जँ गौआँ-घरूआ भेट जाए तँ मनसूबा बढ़बै करै छइ, हमरो बढ़ल। लाल भौजीकेँ बढ़लैन कि नइ बढ़लैन से तँ ओ जनती, मुदा अपना बुझि पड़ल जे मन चुहचुहा जरूर गेलैन।

थोड़ेक आगू बढ़ि परतीपर साइकिल लगबए बढ़लौं। हाटक मुहेँपर लाल भौजी जेना ठमैक गेली। जनु हमर बाट ताकए लगली कि की से तँ ओ जानैथ मुदा जेते कालमे साइकिल लगेलौं तेते काल तक ओ ठाढ़ रहली। ओना, पुराने साइकिल अछि, ताला बिनु लगेनौं काज चलैबला अछि, मुदा से नइ तलो ऐछे। ताला जखन लगबए लगलौं तखन एक नजैर तालापर देलिऐ आ दोसर लाल भौजीपर। तालापर नजैर पड़िते एकटा गौआँ मन पड़ल। केते लक्कर-झक्करसँ वेचाराकेँ महिना दिन पहिने बिआहमे साइकिल देने रहइ। आठम दिनका हाटमे एतै केदैन चोरा लेलकै! वेचारा घुमि कऽ गाम गेल, तखन आबि कऽ दरबज्जापर बैस गेल। कनी कालमे जखन एलौं तँ पुछलिऐ»

“किए बैसल छह?”

असथिरेसँ पुछने रहिऐ। ले-बलैया! ओ तँ कानए लगल! मने-मन सोची जे की भेलैए! परिवारक तँ ने कियो किछु कहलकैए? हुचकैत बाजल»

“झंझारपुर-हाट गेल छेलौं से साइकिले चोरा लेलक!”

मन असथिर भेल जे अपन परिवारक नइ अन्तुका बात छी। कहलिऐ»

“केना चोरेलकह। ताला नै लगेने छेलह?”

डाँड़मे बान्हल कुन्जी खोलि कऽ देखबैत बाजल»

“देखै छिऐ, कुन्जी संगेमे अछि। खूब कटकटा कऽ लगा देने छेलिऐ।”

कहलिऐ»

“बुझल नइ छेलह जे सभ हाटमे दस-बीसटा साइकिल झंझारपुरमे चोरि भाइये जाइ छइ, तखन सचेत भऽ कऽ ने कोनो चिन्हारक दोकान लग साइकिल लगैबतह। ऐठाम किए छह। गामपर जा।”

ओ बाजल»

“अहाँ कनी संगे चलू, घरवालीकेँ बुझा-सुझा देबै, नइ तँ ओ घरेसँ भगा देत।”

बड़ आश्चर्य भेल जे महिने दिन पहिने बिआह भेलै, तखन एहेन शिकाइत पत्नीक किए करैए! जिज्ञासा बढ़ल। पुछलिऐ»

“अखन तँ महिनो दिन बिआह केना नइ भेलह हेन तखन एहेन बात किए बजै छह?”

जेना मनक हूबा जगलै। बाजल»

“रूपैआकेँ लोक उनटा-पुनटा चिन्हैए मुदा लोककेँ लोक तँ लोलेक बोलसँ ने चिन्हैए।”

की करितौं, कोनो कोट-कचहरीक लफड़ा थोड़े छी जे बेसी समए लगैत। भेल तँ घरपर जा सभकेँ कहि देबै जे ‘चोर-ले ताला की आ बेइमान-ले केबाला की।’ सएह केलौं।

साइकिल लगा जखने घुमलौं की लाल भौजी सेहो डेग बढ़ेली। आगूए-आगू तरकारी दोकानपर पहुँचली। अपनो तँ वएह काज रहए। जा हम पहुँची ता भौजी दोकानक आगूमे बैस तरकारी सभपर नजैर दौड़बैत रहैथ। पहुँचते दोकानदारकेँ पुछलिऐ»

"भँट्टा की दर?"

निच्चाँ-सँ-ऊपर लाल भौजी नजैर केलैन। दोकानदार बाजल»

"तीस रूपैये किलो।"

दामक हिसाबे दोकानक वस्तुक चुहचुही नइ बुझि पड़ल। ओना हाटेक चुहचुही रौदियाएल बुझाइत रहइ। एकटा नमरी जेबीमे रहए। घरपर तँ बुझि पड़ल रहए जे परिवारक हिसाबे दू दिनक तरकारी हएत, मुदा से भेल नइ। मने-मन हिसाब बैसेलौं तँ नब्बे रूपैआमे तीन किलो भँट्टा हएत, दस रूपैआमे चाहो-पान भाइये जाएत। दू-चारि जँ संगमे नइ राखब तँ पुरान साइकिल अछि जँ केतौ पनचर हएत कि भाल्टुए फटि जाएत, तखन तँ पएरे ने जाए पड़त..!

तीन किलो भँट्टा कीनि झोरामे लऽ लेलौं। नमरी देलिऐ, दस रूपैआ घुमा देलक।

जहिना स्टेशनमे ऐगला यात्रीकेँ टिकट होइते दोसर यात्री अपन टिकटक आदेश दइए तहिना दोकानपर पाइ सम्हारिते रही कि लाल भौजी कनहा भँट्टाक ढेरी देखबैत पुछलखिन»

"ओइ ढेरीक की दर रखने छी?"

असथिर चिते तरकारी दोकानदार बाजल»

"कोनो कि भाव छीपल अछि। नीकक अदहा कनहा होइए।"

लाल भौजी मने-मन हिसाब जोड़ली। हुनको नमरीए रहैन। पनरह रूपैयेक हिसाबसँ छह किलो, दोकानदारकेँ कहलखिन जोखू।

ओना लाल भौजीक नजैर जेतए रहल हौनु मुदा हमरा हँसी लगि गेल। हँसी ई लगल जे जखन भँट्टा सड़ले छै तखन अनेरे किए कीनि रहली अछि? मुदा लाल भौजीक मुँहमे मलिनता नइ रहैन। ओ भँट्टाकेँ देख हिया कऽ हियाइस नेने छेली जे दस प्रतिशतसँ पच्चीस प्रतिशत नोकसान अछि, बाँकी पचहत्तैर प्रतिशतसँ ऊपरे नीक अछि। कहुना-कहुना तँ चारि किलोसँ ऊपरे हएत। पाँचो किलो भऽ सकैए। जखन रौदियाह समए अछि, महगी पकड़ने अछि। तैठाम जँ जान बँचा नइ चलब तँ दोख केकर हेतइ।

नब्बे रूपैआमे छह किलो भँट्टा लाल भौजी लेली। दस रूपैआ हुनको दोकानदार घुमा देलकैन। ओहो मने-मन टेम्पू-भाड़ा बैसा लेली। दुनू गोरे दोकानपर सँ विदा भेलौं। भाय, हाट-बजार छिऐ, सभसँ सभ पुछ-आछ करिते अछि। मनमे 'कनहा भँट्टा' घुरियाइते रहए। कहलयैन»

"भौजी, जुआनीक सनकी हाटो-बजारमे चढ़ले रहैए?"

ओना हम 'कनहा भँट्टा-दे' ठिकिया कऽ बाजल रही मुदा से लाल भौजीक नजैरपर नइ चढ़लैन। हुनका मनमे दोसरे-तेसरे बात नचलैन। बजली»

"से की?"

कहलयैन»

"पाइ कुट-कुट कटै छेलए जे सभटा सड़लाहा भँट्टा कीनि लेलौं?"

ओना हम भौजीए-क पक्षक बात बाजल रही मुदा भौजीक मनमे से नइ भेलैन। विपक्षेक बात बुझि पड़लैन। जखन कि प्रश्न तँ कनहा भँट्टा सम्बन्धित अछि। नीक-अधलाक बीच पक्ष-विपक्ष हएत। जे बात भौजीक मनमे नचलैन। नचिते मुस्कियेली, मुदा मुँह बन्ने

रहलैन। मुस्की देख अपन मन खसए लगल। खसए ई लगल जे हमर विचारकेँ भौजी कोन रूपे बुझली?

लाल भाय पंचायत सेवकक नोकरी करै छैथ। मैट्रिक पास छैथ। लाल भौजी पढ़ल-लिखल नइ छैथ, मुदा गृहिणीक सभ लूरिक बोध रहने परिवारमे कहियो कोनो काजक आकि विचारक टकराहट दुनू परानीक बीच नइ होइ छैन। लालो भाय गाममे रहितो, परिवारसँ मुक्ते छैथ। सोझ-मतिया चाइलिक लोक रहने जहिना मासक दरमाहा उठबै छैथ तहिना सभ रूपैआ नेने आबि दुनू परानी परिवारक महिनो दिनक हिसाब बैसा खले-खल रूपैआकेँ बाँटि काज करै छैथ।

खसैत मने बजलौं»

"भौजी हमर बात अहाँ कोन रूपे लेलिऐ?"

ओना भौजीक मन खुशीमे दहलाइत रहैन। होइतो अहिना छै जे एके प्रश्नक उत्तर मन-मनक विचारक अनुकूल शब्दमे होइते छइ। शब्दो तँ शब्द छी, एके शब्द केतौ मारक होइए आ केतौ तारक सेहो होइए। ओना बजैक क्रममे भौजी बजली»

"कोनो अहाँ अधला बात कहलौं जे अधला लगैत?"

अपनो गर भेटल। कहलयैन»

"तखन चुपे-चाप किए रहि गेलौं, हँ-हूँ किछ किए ने कहलौं?"

हमर बात भौजीकेँ अधला नइ लगलैन। मुस्कियाइत बजली»

"अहाँ कौलेजमे पढ़ै छी की खेल करै छी?"

मनमे भेल जे एना किए भौजी बजली! ऐमे कोन पढ़ै आ खेलैक बात अछि? पुछलयैन»

"ऐमे की खेल अछि?"

मुस्की भरैत भौजी बजली»

"यएह दुनियाँक खेल छी। दुनियाँमे ने किछ अधला अछि आ ने नीक। देखै-करैक नजैर आ लूरि चाही।"

लाल भौजीक बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं। मुदा छी तँ झंझारपुर-हाटक रस्तापर ठाढ़। तहूमे रौदियाह समैक रौद सेहो अछि। मुँह फोरि बजलौं»

"भौजी अहाँक चिक्कारी हम नइ बुझै छी। मुँह खोलि बाजू।"

बजली»

"कौलेजमे पढ़ै छी आ एतबो ने बुझै छिऐ जे सभ किछुमे परिस्थिति-बस पील फड़ैए। चीजक कोन बात जे लोकक देहोमे फड़ै छइ। मुदा जेकरो देहमे फड़ै छै ओहो पीलुआ छाँटि जीबए चाहैए की नइ?"

बिच्चेमे बजा गेल»

"हँ से तँ चाहिते अछि आ जीबो करैए!"

भौजी बजली»

"जेना वौसमे महगी आबि गेल अछि तेना नोकरीबलाकेँ दरमाहा थोड़े बढ़ि जाएत। मुदा परिवारक खर्च तँ हेबे करत।"

कहलयैन»

"हँ से तँ हेबे करत।"

बजली»

"तखन तँ हमरा सन लोककेँ दुइए-टा उपाय ने अछि जे चाहे दू-कौर कम खाउ चाहे दब समानक उपयोग करू।"

कहलयैन»

"हँ से तँ करै पड़त।"

भौजी बजली»

“नबे रूपैआमे अहाँकेँ तीन किलो भँट्टा भेल आ हमरा कहुना चारि किलोसँ ऊपरे, सड़लाहा छाँटि कऽ, हएत। अहीं कहू जे की नीक भेल?”

भौजीक बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं।

◌

शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016

जिगेसा

गोटे साल जहिना धनक धनमण्डल होइए, माने धानो-गहुमक उपज नीक भेल, तीमनो-तरकारीक नीक आ आमो-जामुन खूब फड़ल जइसँ सालो भरि अगहने-अगहनक लरती-चरती बुझि पड़ैए, तहिना ऐ बेर बिआह-दानक सेहो भेल। माघेमे जे सरस्वती पूजाक परातसँ लगनक दिन शुरू भेल ओ फागुन पकड़ैत चैत छोड़ैत बैशाख पकड़ैत जेठ होइत अखाढ़ोमे धुमसाही दिन-राति चलिते रहल, जेना बरहमसिया लगनक दिन भऽ गेल। माने ई जे मौसमक हिसाबसँ जाड़ो-गरमियो आ बरसातो पकैड़ लेलक। बरहमसिया लगन भेने बिआहो-दान तेना जोर पकड़लक जे सबहक मनकेँ बेटे-बेटीक बिआह घेर लेलक। जेहने मन रहत तेहने ने काजो पकैड़ करब..? सएह भेल।

लगनक जोर एहेन भेल जे गामे-गाम बिआहे-बिआह पसैर गेल। पसरल ई जे जँ कोनो समाजमे दसटा बिआह होइए तँ ओइमे परिवारक समांगसँ लऽ कऽ दियाद-वाद, टोल-पड़ोस, हित-अपेछित आ कुटुम-परिवारक लेनी-देनीसँ लऽ कऽ करनी-धरनी धरि लगिए जाइए। ओना, किछु गोरेक मनमे ईहो शंका उठैत जे भरिसक आब बिआह-दान हेबे ने करत तँए जे जेतए अछि ओकरा अही लगनमे सम्हारि लिअ चाहैए। केकरो-केकरो मनमे ईहो शंका होइत जे

भरिसक कनीए ओरा जाएत..! तहिना, कनियाँ पक्षकेँ होइत जे भरिसक बरे सठि जाएत, से नइ तँ अही साल सम्हारि ली जइसँ आगू बिआहक झमेले समाप्त भऽ जाएत।

माघक शुरूएसँ जे बजारक आ बाजा-गाजाक संग बरियाती-पुरनिहारक चलती आएल से सालो भरि लधले रहि गेल। जहिना बजार खूब चढ़ल तहिना बजो-गाजाबला आ बरियातियो पुरनिहारक चढ़बे कएल। चढबो केना ने करैत, नव जुग एने देश-दुनियाँक लोक गामे-गाम पसरल ऐछे। सभ रंगक- बोली, सभ रंगक भोजन आ सभ रंगक वस्त्रो पकैड़िए लेलक।

परसू जीतू काका बेटी बिआहक बरियाती विदा कऽ निचेन भेला। ओना हमहूँ ओही बिआहक प्रक्रियामे पनरह दिनसँ व्यस्त रहलौं। चारिम दिनक भरि रौतुका आ परसू-दिनका दौड़-बरहा तेते देहकेँ थका कऽ दुखा देलक जे परसू साँझमे जे ओछाइन धेलौं से खाइए-पिबैटा-ले उठलौं, बाँकी ओछाइने धेने रहलौं...।

मुदा एकाएक अखने मनमे भेल, जखन हम जीतू कक्काक सहयोगी छेलिऐन तखन जब एते थकान भेल तँ जीतू काका आ फुलटुसी काकीकेँ केते भेल हेतैन! तँए भेल जिगेसा करब उचित अछि। एहेन तँ नइ जे परिवारमे केकरो डाँड़ टुटल रहै आ केकरो फोंसरियो घाउए होइ, आ ओ डाँड़ टुटलाहाक आगू ई बहाना बनाएत जे हमरो तँ रोगे धेने अछि, तखन तँ जेहने डाँड़टुटु भेल तेहने फोंसरिहा? तब तँ अपन-अपन ताक-हेर अपने-अपने करू..! मुदा, एकरा कहाँ धरि उचित ठहरौल जा सकैए? उठि कऽ विदा भेलौं जीतू कक्काक जिगेसा करए...।

जहिना नहेला पछाइत शिव-भक्त ‘जय शिव जय शिव’ करैत पोखैरक घाटसँ शिव मन्दिर तक पहुँच अपन नचारी-विचारी करैए

तहिना दरबज्जासँ निकैलते मनमे उठल»

“हाय रे दुनियाँ आ हाय रे समाज! सात कट्ठा जमीन छअ लाखमे बेच जीतू काका कन्यादान केलैन अछि!”

लगले मन घुसैक कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू ई बढ़ल जे एक तँ शरीरक व्याधिसँ बेथित हेता जीतू काका, तैपर धनक बेथा सेहो हेबे करतैन!

दरबज्जेपर जीतूओ काका आ फुलटुसियो काकी चाह पिबैत गप-सप्प करैत रहैथ। लगमे पहुँचलौं। देखते फुलटुसी काकी बजली»

“केटलीमे अहाँ-जोकर चाह ऐछे, छानि कऽ नेने अबै छी।”

कहि हाँइ-हाँइ फुलटुसी काकी अपन गिलासक चाह पिलैन। चाह पीब उठि चाह आनए आँगन गेली। जीतू कक्काक लगमे बैस हियासए लगलौं जे कक्काक मन केहेन छैन? मुदा चेहराक चुहचुहीसँ मिसियो भरि रोगक रेख नइ बुझि पड़ि रहल अछि! बजलौं»

“काका, कन्या-दानसँ ते निचेन भऽ गेलौं?”

ओना, कन्या-दानसँ निचेन लोक साल भरिक पछाइत होइए, किएक तँ सालो भरि पावैनियेँ-पावैन सेहो आ बिआहक प्रक्रियाक संग समैया भाड़ो-दौड़ दौड़ैबते रहैए, मुदा एहनो तँ ऐछे जे बर-कन्याक बीच सिनूरदान भेला पछाइत जँ कोनो विशेष घटना घटि गेल, तखन सालो भरिक भाड़क दौड़ सेहो अँटैक कऽ मरि जाइए। मुदा वैवाहिक बन्धन बरकरार रहैए। ओना, जीतू काकाकेँ काल्हि भतखइ-भाड़ सेहो पठबैक छैन, जइमे चाउर-दालिक संग आरो-आरो भोजन-विन्यासक वस्तु पठबैक तँ छैन्हे।

चुल्हि लग पहुँचैसँ पहिनहि फुलटुसी काकीक मनमे उठि गेलैन जे चाहक कोन धड़फड़ी अछि, फेर कनी चुल्हिपर चढ़ा गरमा लेब। एतबे ने जे चाह-पत्तीक संग रहने चाहमे टेनीन पनपए लगैए, ओकरा

छानि कऽ कात कऽ देबै आ केटली अखाइर कऽ ठण्ढे चाह रखि देब, पछाइत आगिपर चढ़ा धीपा लेब। चोट्टे अदहे रस्तासँ घुमि फुलटुसी काकी आबि बजली»

"बौआ, बहुतरबा मिठाइ सभ उगैड़ गेल अछि। चाह पछाइत पीब, पहिने चारिटा मिठाइ खा लेब?"

जइ मने घरपर सँ विदा भेल रही जे जे काज पछुआएल हेतैन, ओइ पुरबैमे दुनू परानी काका चिन्तित हेता, से ऐठाम तँ खुशीसँ मिठाइ खुअबैक विचार काकी कऽ रहली अछि! केना शुभ समए अशुभ बात बजितौं, तँए मनकेँ सुभाषित करैत बजलौं»

"काकी, चाहे कि मिठाइये केतौ पड़ाएल जाइए जे एना अहाँ अपसियाँत छी!"

मुदा काकियोक मन जेना फरहरे रहैन तहिना बजली»

"बौआ, काजक बढ़ोतरी भेने जे काजक उमकी चढ़ल से चढ़ले अछि। तँए अपसियाँत कहाँ छी, अपसियाँत नै छी।"

हमरा दुनू गोरेक कठ विवाद जीतू काकाकेँ नीक नइ लगलैन। जनु मनमे कोनो एहेन नव जिज्ञासा, नव विचार रूपमे अंकुर रहल छेलैन। खिसिया कऽ तँ नहि, मुदा जोरसँ काकीकेँ कहलखिन»

"जे मन फुरैए से करू। एना घूर-बहूर किए करै छी!"

ओना, तामस उठला पछाइत सेहो लोक जोर-जोरसँ बजैए आ बिनु तामसक तमस उठने सेहो जोरसँ बजाइते छइ। जेकरा खिसिया कऽ तमसाएब बुझै छी, ओहो अधला नइ भेल, खिस्सा पिहानी बना मनक कलिमाकेँ सेहो घुअल जाइए मुदा बोलीक उग्रता ओकर रूपकेँ प्रभावित करै छइ। फुलटुसी काकीक मनमे जे खुशीक हिलकोर उठैत रहैन तेकर कारण रहैन जे बिआहक पछाइत खेबा-पिबाक वस्तु-जात तेते उगैड़ गेल छैन जे मास दिन सिलौटो-लोढ़ी नइ पकड़ए पड़तैन,

तैपर काजक रमकी सेहो चढ़ले छैन।

जीतू कक्काक बात सुनि काकी ने चाह आनए आगू बढ़ली आ ने मिठाइ आनए, जेना मने शान्त भऽ गेलैन। ओहो तीन-कोनियाँ जकाँ जगह पकैड़ बैस गेली।

चाह पीब पान खा जीतू काका बजला»

"बौआ, तोरा ते ने शरीरमे कोनो गड़बड़ भेलह, खटनीसँ?"

बिनु मुँह खोलने मुड़ी डोलबैत इशारा केलिऐन»

"नइ।"

शान्त वातावरणमे इशारोसँ बहुत बात होइ छइ, जइसँ बोल प्रदूषनक सम्भावना सेहो नहियेँ रहै छइ। बोल प्रदूषन भेल- 'रक्का-टोकी।' मनमे उठैत रहए जे काका अपने पारखी लोक छैथिये, की नीक आ की अधला काजक[2] बीच भेल, ओ तँ अपनेमे ने विचारि लेब।

ओना तीनियेँ गोरे- माने जीतू काका, फुलटुसी काकी आ हम रही मुदा तीन गोरे रही कि तेरह गोरे, गप-सप्प करै काल धारक प्रवाह जकाँ विचारोक प्रवाह तँ होइते अछि, तैठाम जँ विचारक प्रवाह बाम-बूच हएत तखन तँ बात-चीतमे रक्का-टोकी बढ़त! तँए तीनू गोरेक विचारक प्रवाह एक सिरा वा एक भट्ठा हएब जरूरी अछि। तहूमे काकीकेँ काका तेना चोहैट लेलखिन जे मन चोटाइए गेल हेतैन। तँए एक रस बना गप-सप्प करब जरूरी बुझि दुनू गोरेक बीच-बँचावक सीमा दैत बजलौं»

"काकी, चाह-ताह अखन छोड़ू, खाली एक गिलास पानि पिआ दिअ आ पान खुआ दिअ।"

[2] बिआह-कार्य

मुहसँ निकैलते जेना काकोक मनमे आ काकियोक मनमे हरिअरी उठलैन। मुदा काकीक मनमे अखनो काजक रमकी रमिते रहैन। बजली»

"बौआ, चारि-पाँचटा बोतल ठंढाक उगरल अछि। वएह नेने अबै छी।"

जहिना ओंघीक आगमन होइते आँखियो झल-फलाए लगैए आ हाफियो हुअ लगैए तहिना कक्काक मनमे सेहो विचारक उठैत रहैन। तैयो मुहकेँ तँ दबने रहला मुदा नजैर चढ़ने आँखिक रूप बदलए लगलैन। गुण रहल जे किछु बजैसँ पहिनहि काकी लोटामे पानियोँ, गिलासो आ ठंढाक एकटा बोतलो नेने आबि बजली»

"जे मन हुअए से करू।"

एक गिलास पानि पीब बजलौं»

"काका, पान अपने लगा लेब।"

अपन बनौल भोजनो-चाहो आ पानो नीक लगैक कारण होइए जे जइ वस्तुसँ जेते सिनेह रहल ओइ वस्तुकेँ ओइ रूपमे प्रयोग करब। भाय, मिरचाइ नइ खाइ छी तँ तीमनमे नइ देबइ। कड़क-चाह पिबै छी तँ चाहपत्ती बेसी देबइ। जँ तीतगर पान नीक लगैए तँ खएर बेसी देबइ आ जँ मिठगर खाइक इच्छा रहल तँ खएर-चुनक मिलानीमे चुन कनी बेसिया देबइ।

ओना जीतू काका सेहो गप-सप्प करैक क्रममे रहैथ आ अपनो तँ ओही जिज्ञासामे आएले छी, कहलयैन»

"काका, अपना सभ सन परिवारमे बेटीक बिआह भारी पड़ि रहल अछि!"

ओना, काका मुड़ी डोला स्वीकारि लेलैन मुदा मुहसँ किछु ने

बजला। नइ बजैक अनेको कारण मनमे नचैत हेतैन। मुदा, जहिना छालही आकि गाव-मक्खनकेँ माटिक वरतनमे रेहीसँ रहि वा मोहला पछाइत जखन ओ पानिपर अलगए लगैए, जइसँ साफ देखैमे आबए लगै छै जे घी[3] बनै-जोकर भऽ गेल, तहिना जीतू कक्काक मन जखन फरिछाइत साफ भेलैन, तखन मुस्कियाए लगला। मुस्कियाइत नजैर-मे-नजैर मिला बजला»

"बौआ, बजलह तँ बड़बेस बात, मुदा ऐ पाछू बहुत रास नीक-

बेजाए कारणो अछि, तँए धाँइ-दे हँ-नै बाजि देब औगताएल विचार भऽ जाएत।"

ओना, सभ दिनसँ जीतू काकाकेँ सभ तरहेँ श्रेष्ठ बुझैत आबि रहल छी मुदा अखन तँ सद्य: कन्यादान सन यज्ञ निर्विघ्न निवारण केलैन अछि। तँए किछु विशेष अनुभव तँ हेबे करतैन। होइते अहिना छै जे जखन कोनो रोगी डॉक्टर ऐठाम पहुँचल आ क्षणे-क्षण पानि मांगए लगल तखने डॉक्टर परेख लइ छैथ जे तृषित पानिक रोग अछि नइ कि तिरपित पानिक रोग।

जीतू काकाकेँ सभ तरहेँ श्रेष्ठ बुझैक सेहो कारण अछि। ओना, एको काज आकि विचारमे लोक श्रेष्ठ होइ छैथ, जे भेल कोनो काजमे श्रेष्ठता प्राप्त करब। मुदा ऐसँ आगू अछि एक-सँ-अधिक काजमे श्रेष्ठता प्राप्त करब, आ ओहूसँ आगू अछि जिनगीक श्रेष्ठता प्राप्त करब। तइमे जीतू काका श्रेष्ठ जिनगी बना जीब रहला अछि।

बजलौं»

"काका, ओना जेते ऐ बिआहमे बरदेलौं तेते अपन काज

[3] शुद्‌ध विचार

पछुआइए गेल, मुदा अपनासँ आगू समाजक काज बुझै छी, तँए ओइले कोनो मलिनता नइ अछि। पनरह दिनक कएल काज अछि तँए ओ तँ आब समापने दिस ने उतरत।”

जेना हमर बात जीतू काकाकेँ नीक लगलैन। बजला»

“तत्काल कौल्हुका भाड़ पठाएब अछि। ओना बिआहेक भाँजक काजमे एकरो भाँजपर चढ़ा नेने छी, तँए कोनो चिन्ता मनमे नहियेँ अछि। ओना, ऐ भाड़क आब कोनो महत थोड़े रहल।”

कहि मुँह बिजका लेलैन। जँ कक्काक विचार अपनो बुझैत रहितौं तखन तँ कोनो प्रश्ने ने मनमे जगैत, मुदा से तँ भेल नइ। कक्काक मुँह किए बिजकलैन से मनकेँ खोलि देलक। बजलौं»

“से की, काका?”

जीतू कक्काक मनमे रहैन जे कन्यादानक शुरूसँ अन्त धरिक विचार करी, मुदा बिच्चेमे दोसर प्रश्न उठि गेल। कक्काक मनमे ईहो उठलैन जे जखन कन्यादानक बीच कोनो विघ्न-बाधा उपस्थित नइ भेल, तखन तँ स्पष्ट अछि जे समीक्षा-जोकर कोनो जगहे ने रहि गेल, मुदा तैयो एते तँ ऐछे जे एक-कड़ीमे ओकरा जोड़ि माला-रूपमे एक झलक देख ली...।

विचारकेँ असथिर करैत जीतू काका बजला»

“बौआ, ओना पहिने बिआह-दुरागमन दू बेर होइ छल, माने दू लगनमे होइ छल। आ ई भाड़ छी दुरागमनक पछातिक, मुदा आब तँ दुनू एके बेर हुअ लगल अछि, तँए..?”

बिच्चेमे बजा गेल»

“से की?”

काका बजला»

“ई भाड़ जे छी, दुरागमनक पछातिक पहिल भाड़, ओ छी कन्याक भोज्य-विन्यासक लूरिक परीक्षा। मुदा से आब थोड़े होइए। अनेको एहेन-एहेन कारण सभ बीचमे उपस्थित भऽ गेल अछि जे परीक्षाक परिस्थिये बिगाड़ि देलक अछि।”

पुछलयैन»

“से की?”

काका बजला»

“ई परीक्षा परिवारक बीचक छी। माने ई जे सासुरमे पहिल दिन कनियाँ भोजन बनौती से परीक्षा परिवार-जन खा कऽ बुझता। मुदा आब तँ जहिना बिआहक बरियातीक ठेकान नइ अछि, तहिना ईहो बेठेकान भऽ गेल अछि। मानि लाए जे पचास गोरेकेँ भोज खाइक न्योँत दऽ देलिऐ, ओतेक भोजन बनाएब कनियासँ सम्भव नइ अछि। मुदा वएह कनियाँ जइ परिवार भरिक भोजन बनौती, ओही काजे ने एबो केली अछि। कहब जे समाजिक भोजमे सभ तरहक लोकक समावेश भेने बेसी नीक हएत, मुदा काजोक तँ सीमा अछि। एक आदमी केते कए सकैए...।”

धुर-झार काकाकेँ बजैत देख अपनो मन बजैले लुसफुसाइत रहए मुदा जँ दुनू गोरे बजबे करब तँ सुनिनिहार के हएत। तँए मुँह दाबि कऽ रखने रही। ओना जहिना कोनो धारमे बाढ़िक पानिक बेसी आगमन होइते धार फुलाइयो लगैए आ प्रवाहो तेज भऽ जाइ छइ, तहिना कक्काक रूप देख बुझि पड़ैत रहए। मुदा जहिना कोनो टटका घटना बिनु टाट लगने छिड़िया कऽ नाचि जाइए जइसँ सभ बात सबहक बीच आबि गेने बेसी शुद्ध रहैए, मुदा बसिएला पछाइत ओहूमे केते टाट-फड़क लगि जाइए, तहिना अखन कन्यादान सन यज्ञ सम्पन्न भेल अछि, जेकरा बुझब-जानब जरूरी अछि जँ आने-आन गप-

सप्पमे समए ससैर जाए आ मुख्य बात छुटि जाए, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। तँए विचारकेँ मोड़ैत, बिच्चेमे बजलौं»

“काका, बड़ीटा दुनियाँ अछि आ बहुत लोको अछि, ओकरे दिस जँ देख-देख मुँह तकैत रहब तखन अपना सिरक जे काज अछि से केना हएत?”

हमर बात सुनि काका गम्भीर भेला। गम्भीर होइत मुड़ी डोलबैत स्वीकारि लेलैन मुदा मुँह बने रहलैन। तैबीच काकी टपैक गेली»

“बिआहक पछाइत पहिल सालक सौनमे भरि अन्हरिया परब फूल लोढ़ै छेलौं, से वीध आब थोड़े हएत। नैहरक वीध छी से सासुरमे केना हएत?”

ओना, जीतू काकाकेँ काकीक विचार सोहनगर लगलैन मुदा मुस्की भरैत मुँह बने रखला। बजलौं»

“काका, तेहेन दुरकाल समए आबि गेल अछि जे अपना सभ सन लोककेँ जीब कठिन भऽ गेल अछि!”

हमर बात सुनि जीतू कक्काक नजैरक पानि जेना जगलैन। जगिते नजैर चढ़ए लगलैन। आँखि उठा हमरा दिस तकलैन तँ बुझि पड़ल जे जे नचारीक बात कक्काक सोझ रखलौं ओ जेना हुनका धड़ि लेलकैन! किएक तँ जहिना साँप धेला पछाइत बिखक असैरसँ नजैरक रूप बदलए लगै छै तहिना जीतू कक्काक नजैर बदलए लगलैन। बजला»

“बौआ, जे दुनियाँ अछि आ ओकर जेहेन परिवेश छै ओहीमे ने अपनो सबहक परवरिस हएत, तेकरा जँ दुतकारि दुरकाल कहि हारि मानि लेब तँ यएह ने भेल कायरता?”

कक्काक बात सुनि अपनो मनमे विचार-मल्ल जगल। जगिते भेल जे औझुका मनुख ने हम भेलौं। जँ अपनाकेँ हजार बर्ख पैछला

आकि हजार बर्ख ऐगला बुझब तँ वएह ने भेल बचपना।

..जनम-सँ-मरण धरिक जे जिनगीक यात्रा अछि ओ तँ आइयेक समैमे ने चलैत बितबैक अछि। मुदा जीतू कक्काक संग रहने एते तँ भाइये ने गेल अछि जे ओहो हमर जीवन-मरण देख रहला अछि। मुदा, प्रश्न तँ ईहो ने अछि जे जीतू काका अपना संग रहितो कायर जकाँ बुझि रहला अछि..!

अपनाकेँ सम्हारैत बजलौं»

“जीता-जिनगीकेँ जँ चीता-जिनगी बना जीबे करब तँ ओ थोड़े जिनगी भेल?”

हमर बात सुनिते जीतू कक्काक मन जेना खनखनेलैन! बजला»

“बौआ, ने परिवार छोड़ि पड़ाइक अछि आ ने दुनियाँ छोड़ि आ ने जिनगी छोड़ि केतौ पड़ाइक अछि। असल अछि जिनगीकेँ पकैड़ चलब।”

जीतू कक्काक बात नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं। मनमे बुझि पड़ल जे जेना अधखिज्जूए बुझलौं। मुदा अधखिज्जू धानक चाउरकेँ दोहरा कऽ ढेकीमे कुटि-छाँटि जहिना छाँटल चाउर बनौल जाइ छै तहिना बिनु बुझल बातकेँ छँटियबैत बजलौं»

“काका, हमरा अहाँक परिवारमे अन्तरे की अछि। जेहने मझोलका परिवारमे गिनती अहाँ-परिवारक होइए तेहने हमरो-परिवारक अछि। तँए एहेन-एहेन यज्ञ काजक भार तँ पड़बे करत किने।”

जीतू काकाकेँ हमर बात नीक लगलैन। जहिना केकरो चाहो, पानो, सिगरेटो आ नोइसो लैक अभ्यास रहल, आ कखन कोन अम्मलक प्रयोगक प्रयोजन मनकेँ अछि ओ तँ अपने-अपने मनमे होइए, मुदा एहनो तँ होइते अछि जे अन्ना-गाहिंस झटहा जकाँ

फेकलासँ आनो काज सुतैर जाइए, तहिना भेल। भेल ई जे जीतू कक्काक मनमे रहैन जे कन्यादान परिवारक काज छी, ओ तँ परिवारे-जनकेँ करैक भार अछि, ओना कहनिहार, सुननिहार आ केनिहारो तँ समाजमे ऐछे, मुदा ओ तँ केना सुति रहल अछि, आकि सुता गेल छइ, आकि सुता देल गेल छै ओ तँ सभ समाजक मुहेँ-कानसँ बुझल-जानल जा सकैए।

अपन शुभ काजक अनुकरण जँ दोसरो-तेसरो परिवार करत तँ ओकरो शुभे-शुभ हेबाक सम्भावना रहै छै मुदा बदलैत समाजिक परिवेशमे एकरो निश्चितता नइ रहि गेल अछि। तँए अपन कएल शुभ कर्मक महत घटि गेल सेहो तँ नहियेँ अछि...।

जीतू काका बजला»

"बौआ, परिवारक काज समयानुसार समैपर सम्पन्न होइत चलए, वएह भेल परिवारक शुभ गति-विधि।"

जीतू काकाकेँ आगूक बोल मुहेँमे रहैन कि बिच्चेमे बजा गेल»

"एकरा के काटत?"

ओना बजलौं अनठेकानियेँ मुदा जीतू काकाकेँ अपन विचार अकाट बुझि पड़लैन, जइसँ मनक मणि मुनि रूपमे फुटलैन»

"बौआ, बेटीक बिआह भेल, जइमे बहुत एहेन विधि-बेवहार भेल जेकर या तँ प्रयोजने ने छल, वा नव सिरासँ चढ़ि गेल। मुदा कन्यादानो करब तँ अनिवार्य, जे काजक मूल बिन्दु भेल। हँ! तखन, औझुका परिवेशमे अपन-काजक अँटावेश केना हएत, ई तँ अपने ने बुझए पड़त?"

कहलयैन»

"हँ।"

काका बजला»

"छह लाख रूपैआ कन्यादानमे खर्च भेल, खेत बेच कऽ केलौं। अदहासँ बेसी रूपैआ धुर-खेल भऽ गेल। मुदा उपायो तँ दोसर नहियेँ छल। नीक-अधला बजनिहार समाजमे ढेरियाएल अछि, मुदा नीक-अधलाक विचार करैत समाजकेँ आगू दिस लऽ चलब, एहेन विचारक लोक केते अछि?"

मनमे बेर-बेर उठए जे जे विचार करए चाहै छी ओ विचार भाइये ने रहल अछि आ अनेरे समाजक बात दौड़-दौड़ कऽ बीचमे आबि खसि पड़ैए..!

सम्हारि कऽ बजलौं»

"काका, ऐ बेरक समए तँ लगनक हिसाबे कहियौ आकि बिआह-दानक हिसाबे, सोल्हन्नी धुर-खेले भऽ गेल! जेते नेंगरा-लुल्हा, कन्हा-बौका छल सभ उठि गेल!"

हमर बात जेना जीतू काकाकेँ नीक लगलैन। गाम दिस हिया कऽ ताकए लगला, चारिटा बिआह नजैरपर पड़लैन। ओना गामे छी, जे गाम जेते नमहर तइ गाममे तेते काज होइते अछि। मुदा हमर गाम से नहि, अखुनका जे सरकारक पंचायतिक नाप अछि, तइ हिसाबक गाम अछि।

ओना जीतू काका चौअन्नी मुस्की भरि चुपे रहला, मुदा फुलटुसी काकीकेँ जेना छुबि देलकैन! बजली»

"बौआ, बजैमे केकरो किछ लगै छै! बेटी बिआह केहेन होइ छै से जेकरा करए पड़ै छै ओ बुझैए। कोढ़ तोड़ि देलक!"

ओना काकीक विचारकेँ जीतू काका सेहो मने-मन मानि रहल छला मुदा बजला किछु ने। कनी काल तीनू गोरेक बीच गुमा-गुमी बनल रहल। सभ सबहक मुँह देख-देख नजैर उताइर धरतीपर लऽ

आनी...।

कनी कालक पछाइत मौन-भंग करैत जीतू काका काकीकेँ कहलखिन»

"एते काल चाह-चाह, मिठाइ-मिठाइ घोल करै छेलौं, आ जखन बेर आएल तखन मुँह दाबि नेने छी!"

'खग जानए खगक भाषा', जीतू कक्काक बात फुलटुसी काकी बुझि गेली। बीचसँ उठैत बजली»

"बहुतरबा कौफी सेहो उगरल अछि।"

तनैत वाणमे जीतू काका बजला»

"चाह-कौफी पछाइत पियाएब, पहिने कनी नोनगर-मिठगर लाउ।"

जहिना अफरजात वौस रहने बारीककेँ परसैमे नीक लगै छै तहिना फुलटुसी काकीकेँ सेहो भेलैन। घरमे सभटा वौस देखले रहैन, उठि कऽ गेली आ थारी भरि साँठि आगू बढ़ली।

बीचमे बजलौं»

"काका, समाजो आ गामो एक रहितो टुकड़ी-टुकड़ी बनल अछि। जइसँ एके गामक वा एके समाजक काज रंग-विरंगक भऽ जाइए। जइसँ समाजिक सरोकारपर..!"

बिच्चेमे जीतू काका लोकि लेलैन। बजला»

"हँ से तँ ऐछे।"

तैबीच भरल थारी नेने फुलटुसी काकी सेहो पहुँच आगूमे रखि देलैन। मधुर भोज्य-वस्तुसँ थारी भरल रहबे करइ। देखते जेना मनो मिठाएल। बजलौं»

"काका, अनेरे लोककेँ दुरमतिया चढ़ल छइ। कहू जे वैवाहिक

सम्बन्ध दूभि-धानसँ सेहो भऽ सकैए, तइमे लाखक-लाख, करोड़क-करोड़ रूपैआ धुर-खेल भऽ रहल अछि! लूटा रहल अछि! मुदा की गाम-समाजमे ओते सम्पन्नता आबि गेल अछि जे जेकर कुप्रभाव समाजपर नइ पड़त?"

मुड़ी डोलबैत जीतू काका सूहकारि तँ लेलैन, मुदा बजला किछु ने। तैबीच दुनू गोरे एक-एकटा रसगुल्ला थारीसँ उठेलौं। जीतू काका हाँइ-हाँइ मुँहक रसगुल्ला चिबबैत बजला»

"बौआ, दहेज आइ कोढ़ बेमारी जकाँ समाजक कोढ़केँ खखोरि-खखोरि खा रहल अछि, से केकरा?"

ओना मुँहमे अपनो लालमोहन लऽ नेने रही मुदा जेना रस तर चलि गेल आ गिट्सबला छेना मुहेँमे लठिया गेल रहए, तैयो बजलौं»

"नइ बुझि पेलौं, कका?"

नइ बुझि पबैक कारण अछि जे समाजक सभ बजैए जे दहेज अधला छी। तैठाम काका की बाजि रहला अछि?

जीतू काका बजला»

"बौआ, गाम-समाजमे जे जाइतिक जल्ला पसरल अछि ओइ जल्लाकेँ सोझरबैमे दहेज आएल। जे नीक भेल।"

एक तँ कक्काक पहिलुके बातक ओझरी मनमे नइ छुटल छल, तैपर फेर दोसर ओझरी लगा देलैन! ओझरी ई जे 'दहेज नीको छी।'

..छँटियबैत बजलौं»

"काका, दूटा प्रश्न एक संग आगूमे आबि गेल अछि। पहिल, दहेज नीक केना? आ दोसर, ओझराएल समाजक जालकेँ दहेज केना सोझरा रहल अछि?"

तैबीच दुनू गोरे दू-दूटा मिठाइ आ चरि-चरिटा नमकीन-कटलेट

खा पानि पीब नेने रही। चाहक बारी आबि गेल छल। मुदा फुलटुसी काकी सेहो दुनू बात सुनने छेली तँए उत्तर पबैले मुँह बाइब निचेनीमे बैसल छेली। चाहक छौंकमे जीतू काका बजला»

"बौआ, अखन कोनो काजक औगताइ नइ ने छह?"

कहलयैन»

"नइ।"

ओहुना तँ बाते-विचारक काजे एतए आएल छी, तखन आन काजक अगुताइयोक बात केना कहि दैतिऐन।

असथिर होइत जीतू काका बजला»

"बौआ, काजक खुशी आकि गम किछु ने अछि। ई तँ परिवार चलैक प्रक्रिया छी जे सभकेँ करै पड़तै।"

ओना, मुड़ी डोलबैत बजलौं»

"हँ, से तँ करै पड़तै।"

मुदा मनमे ईहो होइत रहए जे फेर ने कहीं काका परिवारक दोसर

विचारमे ओझरा जाथि। मुदा से जेना जीतू कक्काक अन्तरात्मा बुझि गेलैन। बजला»

"बौआ, अपना सबहक गाम-समाजमे जाइतिक भीतर जाइतिक जल्लाक सीढ़ीनुमा खाढ़ही बनल अछि, किछु काजोक हिसाबसँ आ किछु वृत्तियोक हिसाबसँ आ किछु माननौं।"

जीतू कक्काक सोझराएल बात सुनि मुड़ी डोलबैत बजलौं»

"ऐमे के 'नइ' कहत!"

जेना हमर बातसँ जीतू काकाकेँ सह भेटलैन, तहिना सहियारैत बजला»

"एतबे जँ रहैत तँ सोझ-साझ डाँरि घीच डँरियाएब हल्लुको होइत, मुदा..!"

जीतू काका 'डाँरि घीच डँरियाएब' की बजला सँ नीक जकाँ बुझबे ने केलौं! बुझबो केना करितौं, कागजपर कलमसँ डाँरि घीचलकेँ सभ देखैए। खेतमे आड़ि बना सेहो लोक अड़िया-अड़िया डँरियबैत अछि। मुदा मनुख तँ बिनु सींग-नाँगैरक छी। मनुखकेँ डँरियाएब! ई की..?

मुँह खोलि बजलौं»

"काका, कनी आरो सोझरा कऽ कहियौं। मन पूरा फरीच नइ भेल।"

हमर बात सुनि जेना जीतू काका विह्वल भऽ गेला, मनमे विचारक लहैर उठि गेलैन, कोन ढंगे बुझौल जाए जे मनक बात ओहो बुझि जाए..?

संयमित होइत बजला»

"बौआ, समाजमे पहिल भेल समाजिक जाति आ समाजिक

जाइतिक बीच जाति-जातिक बीच सेहो अहिना बनल अछि, जहिना समाजमे अछि। जाइतिक बीच अगुआएल-पछुआएल इत्यादि, सेहो अनेको जातिक बीचक दूरी ओतबे अछि जेते समाजक बीचक जाइतिक दूरी अछि।"

भकइजोतमे जहिना कखनो साफो देख पड़ैत आ कखनो अन्हराइयो जाइत, तहिना जीतू कक्काक विचारमे हुअए। जे बात जीतूओ काका बुझि गेला। बजला»

"मन अकछाइ-तकछाइ ते ने छह?"

मुदा हमरो सुतरल। बजलौं»

"मन अकछाएत तँ एक बेर फेरो चाह पीब लेब।"

चाहक चर्च सुनि फुलटुसियो काकीक मन फुरफुरेलैन, जेना अपनो चाह पिबैक विचार पहिनेसँ जगल होइन। फुलटुसी काकी उठैत बजली»

"हमरो आबह देब, तखन फरिछौट करब।"

फुलटुसी काकीक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक जे बात काकी बुझि रहली अछि, से अपने नइ बुझि पेब रहल छी! तैबीच जीतू काका बजला»

"कोनो बाते-विचार आकि काजे-उदेमकेँ फरिछबैक जे रस्ता अछि ओ एक बेर कि हजारो बेर फरिछौल जा सकैए। भेल तँ एतबे ने जे घोर-मट्ठा पोखैरक पानि केना घाटपर फरिच हएत जे साफ पानि लेब?"

ओना, अपना मनमे बेर-बेर उठैत रहए जे जाबे काकी अबै छैथ ताबे विचारकेँ चरियबैत रही, मुदा कक्कोक बातक उलंघन करब नीक नइ बुझि पड़ैत रहए।

अपनो हिस्सा चाह नेने फुलटुसी काकी पहुँचली। बीचमे तस्तरी रखि गिलास उठा जाबे जीतू कक्काक हाथमे पकड़ौलखिन, तइ बिच्चेमे अपनेसँ गिलास उठा मुहमे लगेलौं। ताबे काकी सेहो गिलास उठौली। विचारकेँ खरियबैत बजलौं»

"काका, ऐ बेर तँ बुझि पड़ैए जे बिआहेक साल छी!"

जीतू काका बजला»

"अपना गाममे केते लड़का-लड़कीक बिआह भेल?"

ओना, नजैर उठा-तकलौं तँ बुझि पड़ल जे बिआहो की एके

रंगक भेल। केकरो बिआह-दुरागमन संगे भेल, तँ केकरो दुरागमनेटा। तेतबे नहि, चुमौनो तँ कम नहियेँ भेल। भेल तँ तीनू। मुदा अपना तँ यएह ने अछि जे नव परिवारक ओझराएल बात बुझि, माथक बात पटकैत बजलौं»

"काका, ओते छुट्टी रहैए जे भरि गामक बिआहक हिसाब जोड़ब। तखन ते जइ बिआहमे सागिर्द भेलौं तेतेक ठेकान अछि।"

हमर बात जेना जीतू काका बुझि गेला। बुझबैत बजला»

"बौआ, रंग-रंगक जाइतिक बीच बिआह-दान भऽ रहल अछि, मुदा सभमे किछ-ने-किछ सम्बन्धो अछि आ नहियोँ अछि।"

कक्काक सहगर बात सुनि आरो सह दैत बजलौं»

"हँ, से तँ ऐछे।"

जीतू काकाकेँ जेना सह भेटलैन तहिना सहटैत आगू बढ़ि बजला»

"बौआ, समाजमे एहेन कोनो जाति नइ अछि जेकर काजमे एक-दोसरसँ कनी हटलो आ कनी सटलो नइ होइ। मुदा ओते मगजमारी कथीले करब, अपन बात कहै छिअ।"

कक्काक सुढ़ियाएल विचार सुनि मनमे कनी सबुर भेल जे जइ काजे आएल छेलौं, से पटरीपर आबि रहल अछि! तँए, कनी पाछूसँ काकाकेँ धकियबैत बजलौं»

"काका, अपना ऐठाम जे काज[4] भेल ओ बढ़ियाँ ढंगसँ भेल।"

ओना मनमे ई रहए जे सहगर बात सुनेने कक्काक मन सोहनगर हेतैन जइसँ नीक जकाँ सभ बात कहता। मुदा से भेल नइ। बजला»

"बौआ, आब तँ काजक समापन भऽ गेल। तँए अनेरे छोट-

[4] कन्यादान

छोट खोंच-खाँचकेँ खोंचाह बनाएब नीक नहि।"

गर भेटल, बजलौं»

"हँ-हँ! अनेरो चिक्कन बाँस वा लकड़ीकेँ टेंगारीसँ काटि-काटि खोंचाह बनाएब नीक नइ।"

बजला»

"गाममे ते सभ जाइतिक बीच मिला कऽ साइयोसँ बेसी बिआह भेल, सभटाकेँ समेट एकठाम करब कठिन अछि। मुदा अपन आ गामक तीनटा बिआह मिला चारूक बात कहै छिअ।"

बजलौं»

"चारियोटा कम नइ भेल, चारि रंगक भेल। एको रंगमे केतेको रंगो अछि आ बेदरंगो अछि। बेदरंग भेल बाल-बोधक काजक रंग।"

जीतू काका बजला»

"अपन ऐठाम जे काज भेल तइमे तोंहू जड़ि-सँ-छीप धरि छेबे कएल छेलह, सभ किछु देखबे केलह। ओना, किछु काज एहनो भेबे कएल जे विचारक विपरीत छल मुदा समाजक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि, तइमे दोसर उपैयो तँ नहियेँ छल।"

बजलौं»

"हँ, से तँ बनियेँ गेल अछि।"

आगू बढ़ैत काका बजला»

"श्याम बाबू सेहो बेटीक बिआह केलैन, खर्चक हिसाबे हुनकर काज हमरा काजसँ नमहर भेलैन। मुदा ओ तँ हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ, नीक दरमहो पबै छैथ। पाँच बर्ख पहिनहिसँ, बेटीक नामे रूपैआ बैंकमे जमा करैत आबि रहल छला, सेहो जोर देलकैन आ हितो-अपेछित मदैत केलकैन तँए हुनका कोनो अखर नइ भेलैन।"

बजलौं»

"हँ से तँ भेबे केलैन।"

आगू बढ़ैत जीतू काका बजला»

"तेसर बिआह सोहन लालक बेटीक भेलैन। ओहो ब्लौकमे सप्लाइ इन्सपेक्टरक नोकरी करै छैथ। ब्लौक भरिक डीलर सभ तेते मदैत केलकैन जे उगैड़िए गेल हेतैन। अपना घरसँ एको पाइ खर्चो ने भेल हेतैन।"

बजलौं»

"हँ, सेहो तँ देखबे केलौं।"

जीतू काका बजला»

"चारिम, मुनेसर भाइक बेटीक बिआह भेलैन। हुनको हमरे जकाँ खेत बेच कऽ करए पड़लैन।"

बजलौं»

"काका, बहुत समए भऽ गेल। जाइ छी।"

◌

शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016

गुलेती दास

अन्तिम जेठक दस बजेक समए। चारि दिन पहिने गुलेती दासकेँ दूटा छिट्टा दइले कहने रहिऐ। आइ भोरे समाद पठौलक, 'छिट्टा तैयार भऽ गेल से लऽ जाह।' ..समैमे तीखपन, ओना पूर्बा हवा सिहकैत रहइ मुदा तैयो जेना बुझि पड़ैत जे धरतीसँ आगि उठि रहल अछि, खास कऽ दस बजेक पछाइत आ चारि बजेक बीचक समैमे। रोहनियाँ बर्खा नइ भेल, ओना पनरह दिन पहिने बिहड़िया पानि भेल, मुदा ओहो छीच्चे जकाँ भेल जइसँ समैक तापकेँ दाबि नइ सकल। छिछियाएले जकाँ रहि गेल। गोटि-पँगरा रोहनियाँ आम पकए लगल मुदा समए नइ पेने ओकरो सुआद पकाइने जकाँ, माने रौद-पक्कुए सन बुझि पड़ैत। गुलेती दास ऐठाम छिट्टा आनए विदा भेलौं।

गुलेतीक पुश्तैनी जातीय टाइटिल 'मुखिया' छिऐ। माने मल्लाह परिवारमे गुलेती दासक जन्म भेल। पचीस बर्ख पूर्ब गुलेती मुखिया कबीर पंथी वैष्णव भेल, जइसँ 'मुखिया' टाइटिल बदैल 'दास' भऽ गेल। पचास बर्खक गुलेती दासक जिनगीक अपन रूटिंग बनल छइ। दस बजे ओ भानसक पाछू लगि जाइए, जे एगारह-सबा-एगारह बजे भोजन तैयार कऽ लइए। भानसक पछाइत नहा कऽ, मंत्र-जाप तँ किछु अबै नइ छै, मुदा तैयो 'जय सत्-नाम, जय-जय सत्-नाम' करैत चानन सेहो करैए। चानन केला पछाइत भोजन करैए। बारह-सबा-

बारह बजे थारी-बरतन धो-धा चीनमारपर रखि अराम करए चलि जाइए। तीन बजे ओछाइन छोड़ि मुँह-हाथ धोइ, पानि पीब, तमाकुल चुना कऽ खा, अपन काजमे लगि जाइए...।

भिनसुरका उखड़ाहाक काज सम्पन्न करैत गुलेती भानस करए विदा होइक ओरियान करिते छल कि पहुँचलौं। हमरा देखते गुलेती दास बाजल»

"भैया, तोहर काज काल्हिये बेरू-पहर सम्पन्न भऽ गेल, भने आबिए गेलह।"

कहि दुनू छिट्टा आनि आगूमे रखि देलक। दुनू छिट्टाकेँ निहारि-निहारि देखलौं तँ बुझि पड़ल जे जहिना कहने छल, तहिना छिट्टा बनौनौं अछि। पुछलिऐ»

"गुलेती, दुनूक केते दाम भेलह?"

ओना शुरूहेमे, माने जखन छिट्टा दइले कहने रहिऐ तखने डेढ़-डेढ़ साए रूपैयेक हिसाबसँ कहने रहए। मुदा ईहो कहने रहए जे जखन छिट्टा बनि जाएत तखन दस-बीस कमे करि कऽ दिहह। ..छिट्टा देख मनमे भेल जे जेहेन वौस देलक अछि तइमे दामक अतिरिक्त किछु उपड़ा सेहो दिऐ, मुदा लेबाल-देबालक विचार मनमे जोर मारि देलक तँए दोहरा कऽ कहा गेल 'केते दाम भेलह।'

गुलेती दास बाजल»

"भैया, कहनहि रहिहह जे तीन साएमे दस-बीस कमे दिहह।"

साए-साए रूपैआक तीनटा नमरी जेबीसँ निकालि गुलेती दासक हाथमे दैत कहलिऐ»

"गुलेती, तूँ जेते दस-बीस कम करहब, ओते दाम कम भेल, मुदा तोहर कारीगरी देख मन खुशी भऽ गेल तँए तोरा ओते इनाममे दइ

छिअ, ओहो रखि लएह।"

'इनाम' सुनि गुलेती मुस्कुराइत कहलक»

"भैया, पाइ-कौड़ी कोनो वौस छी, असल छी जे मनसँ असिरवाद दएह जे अहिना काज लगल रहए जइसँ समाजक उपकार करैत रहिऐ। भानस करैक बेर भऽ गेल तँए अखैन बेसी गप नइ करबह।"

अपनो गुलेती दासक रूटिंग बुझले अछि तँए बेसी गप-सप्पकेँ आगू नहि बढ़ा, दुनू छिट्टा हाथमे लऽ विदा भेलौं।

जहिना कोनो गाममे जे जेते पहिने आएल रहल ओ ओते नीक बासभूमि अपनबैत बसैए, आ जे जेते पछाइत आएल ओ ओते आगू बढ़ैत बास बनबैत जाइए, तहिना गुलेती मुखियाक पिता–दोरिक मुखिया सेहो हरिपुरमे आबि बसला। से खाली दोरिके मुखिया नहि, आठ-दसटा मलाह परिवार कोशिकन्हासँ उपैट आबि बसल छला। करीब साठि बर्ख पहिने...।

जइ समए दोरिक मुखिया हरिपुरमे आबि बसला, तइ समए मात्र तीनियेँ गोरे परिवारमे छला। दोरिकक माए- रूपनी, पत्नी- तेतरी आ अपने दोरिक। गैरमजरूआ आम जमीन, करीब पाँच कट्ठाक परती रहै तेहीपर आठो-दसो परिवार बसला।

हरिपुरक अवादी पतराएले छल, खेती-पथारी करैबलाक खगता छेलैहे। ..जहिया आठो-दसो परिवार आबि बसला, तहिया हरिपुरमे जे सुभ्यस्त किसान सभ छला ओ भरपुर सहयोग केलखिन। चारि-पाँच परिवार दू-दू-तीन-तीन परिवारकेँ अपना बीटक बाँस, खढ़ आ साबे दऽ दऽ घर बनबा देलखिन। ओहू दसो-बारहो परिवारकेँ बोनि-बुत्ता करैक गर सेहो भेटलैन।

ओना, रूपनी उमेरदार मुदा तैयो बेटा-पुतोहुक संग अखाढ़मे

धनरोपनी आ अगहनमे धनकटनीक संग रब्बियो-राइ उखाड़ए-काटए जाइते छेली। जे किसान दोरिककेँ घर बनबैमे बाँस, खढ़ आ साबेक मदैत केने रहथिन, हुनके हरवाहि दोरिक करए लगला।

सालक बारह मासमे दू मास हरवाहि चलै छल, जइमे एक मास सुख-जोत आ एक मास कदबा चलइ, बाँकी दस मास हरवाहिक काज बन्ने रहइ। खेतियो असान छेलइ। अखाढ़मे धनरोपनी, भादो-आसीनमे खरहाएल धानक खेतमे कमठौन आ अगहनमे धनकटनी चलइ। दौन-दोगौन किसान अपने कऽ लइ छला।

समए आगू बढ़ल। दोरिक मुखियाक माए मरि गेली। दोरिककेँ सेहो पहिल बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। सात सालक जेठ बेटा- फुदी मुखिया। फुदियाक बिआह सेहो भऽ गेल।

दुनू बेटी, जे एकटा पाँच बर्खक छल आ दोसर अढ़ाइ बर्खक छल, ओ आ फुदिया लगा पाँच गोरेक परिवार दोरिक मुखियाक छेलैन। ओना, बेटाक बिआह भऽ गेल मुदा ओइसँ परिवारक जनसंख्यामे कोनो बिरधी नइ भेल। होइतो अहिना छेलै आ अखनो केतौ-केतौ होइते अछि जे बच्चेमे बेटा-बेटीक बिआह भेल आ दस-बारह बरिसक पछाइत दुरागमन।

बाल-विवाहक कारण छल, बेटा-बेटीक बिआह माए-बापक अनिवार्य कार्य मानल जाइत रहल अछि जेकर पुरती करब सेहो अनिवार्य बुझल जाइत रहल अछि। एक तँ ओहुना मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक जिनगीक कोनो निसचित ठेकान नइ अछि। मर्त्त लोक छी, जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। मुदा तोहूमे जैठाम जिनगी-ले अनुकूल परिस्थिति नइ रहल तैठाम तँ आरो जिनगी बेठेकान भऽ जाइए। ओना, जँ मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक अनुकूल परिस्थिति रहल तँ जिनगीकेँ ठेकनौले जा सकैए। बच्चासँ वृद्धि होइत

वृद्ध बनैत-बनैत साए बर्ख भाइये जाइए।

चारि साए बीघाबला गाम हरिपुर। चारियो साए बीघा जमीन चारि किस्ममे बँटल अछि। ओना माइटिक अनेको किस्म अछि मुदा से नहि, साइजिक हिसाबसँ हरिपुरमे चारि किस्मक जमीन अछि। पहिल अछि- 'उपराइर', जइमे बासो-अगवास अछि, बाड़ियो-चौमास अछि आ गाछियो-बिरछी अछि। दोसर अछि- 'मध्यम जमीन'। मध्यमोमे दू रंगक किस्म अछि। पहिल 'ऊँच मध्यम' आ दोसर अछि 'नीच मध्यम'। आ चारिम अछि 'चौरी', 'चौर'।

चारि साए बीघा जमीनमे दू साए बीघा चौरी अछि, बाँकी दू साए बीघा मध्यमसँ बास धरिक अछि। ओना, चौरियोमे धानक खेती होइए, मुदा अबिसवासू। जइ साल अगते नमहर बर्खा भेल आकि बाढ़ि आएल पानिसँ चौरी भरि गेल, तहन तँ दहार भेल तँए एको कनमा धान नइ उपजत।

हरिपुरक उत्तर-पच्छिम कोण होइत सुपर्णा धार प्रवेश केने अछि। जे उत्तर-पच्छिमसँ शुरू होइत गामक उत्तरबरिया बाध देने उत्तर-पूब कोण पकैड़ दच्छिन-मुहेँ होइत गामसँ बहराएल अछि। गामक चारू-कात माने चारू बाधमे चौरियो अछि आ आनो-आनो किस्मक जमीन। ओना, जँ समए नीक रहल, माने दाही-रौदी नइ भेल, तखन तँ एते उपजा भाइये जाइए जइसँ सालो भरिक बुतातमे कटमटी नइ अबैए मुदा दाही-रौदी भेने तँ आबिए जाइए।

दोरिक मुखिया, जिनका अपन घर छोड़ि किछु ने छैन, सेहो अपन काजकेँ बढ़ौलैन। बारह मासक सालमे तीन मास काज रहने, तीन मास तँ परिवारक गुजर चलि जाइ छेलैन, मुदा बाँकी मासमे भुखमरी आबि जाइ छेलैन। ओना, परिवारमे गुलेतीक जन्म सेहो भऽ गेल। गुलेती माने दोरिक मुखियाक चारिम सन्तान।

गामक दछिनबरिया चौरीक बगलेमे पूबसँ पच्छिम-मुहेँ बान्ह अछि। जे बीचमे टुटल अछि। सुखार मासमे तँ सुखले-सुखल लोक टपैए मुदा जखने बर्खा भेल आकि बाढ़ि आएल तहन रस्ता बन्न भऽ जाइए। ओना सोलहन्नी तँ बन्न नइ होइए, मुदा भरि-जाँघ-भरि-डाँड़ पानिमे टपए पड़ै छइ।

करीब एक कट्ठामे बान्ह टुटल अछि। जइ देने चौरियोक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो बरसातमे बहैत रहैए। जेकरा लोक खोरबन्हा सेहो कहै छइ। ओही टुटलाहा बान्हमे दोरिक टौहकी पहटासँ घेर मछबारि सेहो करै छैथ। जइसँ साओन-भादोसँ लऽ कऽ कातिक तक मछबारिक रोजगार चलिते छैन। ओना, पोखैरक पोसा माछ जकाँ तँ नहि मुदा अनेरूओ आ पोखैर-झाँखैरक जे पुरना माछ बाढ़िमे भँसि-भँसि पड़ाइए ओहो तँ होइते छैन।

बाँसक छिट्टा-पथिया आ टौहकी-पहटा सेहो बनबैक लूरि दोरिक मुखियाकेँ छैन्हे। टौहकी-पहटाक बिकरी तँ बेसी नहियेँ होइ छेलैन मुदा छिट्टा-पथियाक बिकरी तँ होइते छेलैन। ओहीठाम माने खोरिबन्हाक पुबरिया भित्तामे, खोपड़ियो आ मचानो बना दोरिक मुखिया सौनसँ जे रहए लगै छला ओ कातिक तक बाधेमे दिन-राति बितबै छला।

एक-बेर-दू-बेर टौहकी चाहि माछो ऊपर करै छला आ भरि दिन छिट्टा-पथिया सेहो बनबै छला, जेकर बिकरी गामोमे होइ छेलैन आ आनो-आनो गामक लोक आबि-आबि किनै छल।

जहिना दुरागमनक पछाइत दुनू बेटी सासुर चलि गेल तहिना जेठका बेटा–फुदिया सेहो दुरागमनक पछाइत घर-जमाए बनि सासुरेमे रहए लगल। कारण भेल, ससुरकेँ मात्र एकेटा बेटी दोसर कोनो सन्तान नहि। सासुरमे घराड़ीक संग दू कट्ठा बाड़ियो...।

ओना, गुलेती सेहो पनरह बर्खक भऽ गेल, मुदा अलबटाह जकाँ रहने बिआह नइ भेलइ। अलबटाह ई जे देहक हिसाबे माथो नमहर रहै आ बोलियो साफ नइ निकलै। ओना बाजै सभ किछु मुदा स्पष्ट बोल नइ रहने सुननिहार साफ-साफ नइ बुझैत। तैसंग दुनू पएरो झखाइ।

भादो मास, सूर्यास्तक समए। टौहकी चाहैत दोरिक मुखिया भरि डाँर पानिमे रहैथ। बड़का टौहकी रहइ। ओइमे एकटा साँप फँसि गेल। मेघौन समए, दोरिककेँ बुझि पड़लैन जे अन्है छी। टौहकीक मुँह खोलि साँपकेँ अन्है बुझि पकड़ए चाहलैन।

टौहकीमे फँसल साँप छटपटाइते रहए। जहाँ दहिना हाथे साँपकेँ पकड़ए लगला कि हाथेमे साँप काटि लेलकैन। जखन हाथमे साँप काटि लेलकैन तखन दोरिककेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक ढोढ़ साँप छी, वएह काटि लेलक।

ढोढ़क बिख माल-जालकेँ तँ लगै छै मुदा मनुखकेँ नइ लगै छइ। ओना, हाथसँ छर-छर खून बहए लगलैन मुदा तेकरो चिन्ता मिसियो भरि दोरिकक मनमे नइ भेलैन।

टौहकीक मुँह बान्हि दोरिक ऊपर एला आ जैठाम खून बहैत रहैन, तैठाम चुनौटीसँ चून निकालि लगा लेलैन। ओना, बिख तरेतर देहमे पसरए लगलैन मुदा तेकरा अनठा देलखिन। चून लगा फेर पानिमे पैस टौहकी उठौलैन। टौहकीक मुँह खोलि साँपकेँ निकालए लगला कि फेर दोहरा कऽ साँप काटि लेलकैन। टौहकी चाहिते-चाहिते दोरिक पानिमे खसि पड़ला। दोसर कियो ओइठाम नहि। पानियेँमे दोरिक मरि गेला।

एक घन्टाक पछाइत जखन गुलेतियो आ ओकर माइयो पहुँचल तँ दोरिककेँ खोपड़ीमे नइ देखलक। चारू-कात तकलक तँ केतौ ने

नजैरपर पड़लैन। अन्हार सेहो भऽ गेलइ। गुलेती कपड़ा बदैल पानिमे पैसल तँ पिताकेँ मुइल पड़ल देखलक। देखते जोरसँ माएकेँ शोर पाड़ैत बाजल»

“माए! बाबू मरि गेल!”

‘मरब’ सुनि तेतरियो पानिमे पैस कऽ देखलैन जे पतिक साँस बन्न भऽ गेल छैन।

पानिपर ताबे अलगल नइ रहैथ। गुलेतीकेँ कहलखिन»

“बौआ, पहिने दुनू गोरे पकैड़ कऽ ऊपर लऽ चलह।”

भरि राति दुनू माय-पुत माने गुलेतियो आ तेतरियो दोरिककेँ खोपड़ीमे रखि ओगैड़ कऽ बैसल। भोर होइते दुनू माय-पुत खोपड़ीए-मे कानए लगल। ओना गामसँ हटल खोपड़ी, मुदा रहै तँ गामेक दछिनबरिया बाधमे। ..दुनू माए-बेटाक कानब सुनि एके-दुइए गामक लोक पहुँचए लगल। अन्तमे मचानेक फट्ठो आ बल्लोक चचरी बना दोरिकक लाशकेँ उठा धारक कात लऽ जा गाड़ि देलकैन।

अखन धरि तेतरीक मनमे मिसियो भरि ई चिन्ता नइ पैसल छलैन जे निसहाय छी। बुझियो केना पड़ितैन, सोझमे पति, बेटा, बेटी सभकेँ देखैत। तैसंग जे जिनगी बनल आबि रहल छेलैन सेहो तँ रहबे करैन। माने ई जे जइ सुख-दुखक बीच जिनगी बनल छैन सेहो तँ छैन्हे, जइसँ अपन ऐगला शेष जिनगीपर नजैर किए जइतैन। मुदा पतिक परोछ भेने तेतेरीक मनो आ शरीरो हरहरा कऽ जेना बैसए लगलैन। ओना तेतरी सत्तैर बर्ख टपि चुकल छैथ मुदा अखन तक मनसँ मृत्युओ आ दुखो हेराएल छेलैन।

पतिक परोछ भेने जेना एकाएक तेतरीक मनकेँ चिन्ता दाबए लगल। दाबबो केना ने करितैन। एक दिस गुलेती सन अलबटाह बेटा सोझहामे देखैत तँ दोसर दिस जेठ बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीकेँ

अपनासँ दूर हटल दोसर गाममे देखैत। जे कहियो एको कौर खाइक आकि एको बीत वस्त्रक जोगार नइ करैत। बेटी तँ सहजे जन्मदाता माए-बापसँ हटि दोसर घर बसिते अछि, तँए ओकर आशे कोन...।

साल बितैत-बितैत तेतरीक शरीर जड़ि कटल लत्ती जकाँ अलिसा-अलिसा सुखैत-सुखैत सुखि गेलैन। माने तेतरी मरि गेली।

पिताक मृत्युक पछाइत गुलेती मुखियाक ऊपर परिवारक भार आबि गेल। ओना, गुलेतीक बुधि ओते परिपक्व नहि जे अपन पूर्ण दायित्व बुझैत मुदा तैयो तँ एते बुझबे करै छल जे जहिना पिताक अमलदारीमे माछक कारोबार करै छेलौं तहिना आबो करब। जइसँ तीन-चारि मास गुजर चलिए जाइए। तैसंग पिताक संग बाँसक बीटसँ बाँस काटि अनै छल आ ओकरा पाँगि-पुईंग कऽ टुकड़ी बना-बना, माने ओकरा टोनि-टोनि, चीर-फारि छिट्टा-पथियाक कड़ो आ बीनैबला कैमचियो बनबै छल, तैसंग छोट-छोट पथियो-टौहकी आ पहटो गुलेती बना लइ छल। ओना पहटा बनाएब सभसँ सोझगर अछि मुदा आब ने ओकर खगता गाममे अछि आ ने बिकरीक वस्तु बनल अछि।

जहिया दोरिक कोशिकन्हासँ पड़ा कऽ हरिपुर आबि बसला तहिया तीन गोरेक परिवार रहैन–अपने, माए आ पत्नी, जे समए पेब कलशल। बेटा-बेटी भेने पाँच गोरेक परिवार भेलैन। मुदा बेटा-बेटीकेँ सासुर बास भेने फेर तीनियेँ गोरे–तेतरी आ गुलेतीपर आबि अँटैक गेलैन। ओना, बेटो-बेटी जे सासुर बसैए, जीवित छैन आ तैसंग पोतो-पोती आ नातियो-नातीनसँ परिवार झमटगर भाइये गेल छैन, जइसँ दुनू परानी दोरिकक मनमे खुशी रहबे करैन। मने-मन बजबो करिते छला जे जहिना कोशिकन्हासँ पड़ा आबि हरिपुरमे बसलौं तहिना भगवान एकसँ एक्कैस परिवार बना देलैन। आगू की हएत से लोक थोड़े देखैए। बड़ देखैए तँ वर्तमान देखैए आ अतीत देखैए। अतीतो तँ

अतीते छी जे अपन चुगली अपने करैए। चुगली ई जे जहियासँ मनुख ऐ धरतीपर जन्म लेलक आ लतड़ैत-चतड़ैत आगू बढ़ल तहियासँ हमरो वंश जीबैत आबि रहल अछि, जँ से नइ जीबैत रहल अछि तँ आइ हम केना छी। समैक चपेटमे, माने समैक उतार-चढ़ावमे परिवारक डारि-पात जे टुटल हुअए आकि झड़ल हुअए मुदा शील रूपमे वंशो तँ जीवित ऐछे।

ओना, गुलेतीक परिवार असगरक भऽ गेल। माने परिवारमे गुलेती असगरे रहि गेल। मुदा असगरो रहल तैयो तँ परिवार रहबे कएल, भलेँ अलबटाह रहने गुलेतीक बिआह नइ भेल, तइसँ परिवार आगू नइ बढ़त, मुदा असगरोक परिवार तँ ऐछे। जखने परिवार रहल तखने ओकरा जीवित रखैले परिवारक सभ विहीत करए पड़ै छइ।

परिवारो तँ परिवार छी। एको गोरेक होइए आ पचासो गोरेक होइते अछि। एक गोरेक परिवार ओ भेल जे गुलेतीक छइ, आ गोटे-गोटे ऋृषि-ऋृषिकाक सेहो होइए, जइमे असगरेक जिनगियो आ परिवारो होइए आ दुइयो-तीनियोँ आ चारियो-पाँचोक होइए। तैसंग जँ दू भैयारी आकि तीन भैयारी आकि चारि भैयारीक रहल, तँ पाँच-दस-पनरह-बीसक सेहो होइए। तहूसँ बेसी जँ पिताक परिवारसँ आगू बढ़ि बाबा तकक रहल तँ तीसो-चालीस गोरेक भेल आ जँ तहूसँ पाछू परबाबा तकक संयुक्त रूपमे रहल तँ पचासो-साठि गोरेक परिवार होइते अछि जेकरा ‘संयुक्त परिवार’ सेहो कहै छी। ओना, संयुक्तो परिवार केते रंगक होइए। जँ दू-तीन भैयारीक रहल तँ ओहो संयुक्त परिवार भेल आ जँ तइसँ पाछू बाबा तकक भेल तँ ओहो भेल आ जँ परबाबा तकक भेल तँ ओहो संयुक्ते परिवार भेल।

मुदा तँए कि एक गोरेक आकि दू गोरेक परिवार नइ अछि, एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए किएक तँ सेहो ऐछे। ओना, एक-

पुरखिया परिवारकेँ संयुक्त परिवार बनैक अनुकूल परिस्थिति बनितो नहियेँ अछि तँए ओ नमहर जड़ि रहितो ताड़-खजूर जकाँ एक-पुरखियाहे रहैए। माने ई जे जँ परबाबा धरिक परिवार अछि। ओइ परिवारमे परबबो असगरे भैयारी छला आ बेटो एकेटा भेलैन, बेटी भलेँ बेसीए रहल होनि जे सासुर चलि गेलैन ओ परिवार तँ एक-पुरखियाहे आगू बढ़ि बाबापर पहुँचैए। आ जँ बबोक वएह गति भेलैन जे एकेटा बेटा भेलैन जइसँ फेर एक-पुरखियाहे परिवार आगू बढ़ल...। तँए ओहन परिवार तँ कहियो संयुक्त नहियेँ बनि पाऔत, बेसीसँ बेसी एतबे ने हएत जे बबो-दादी आकि माइयो-बाप आकि बेटो-पुतोहु एकठाम रहि गुजर-बसर करैथ। ओना, अकसरहाँ लोकक मुहेँ यएह निकलैत जे 'संयुक्त परिवार नष्ट भऽ गेल वा जेहो अछि से नष्ट होइक बाट पकैड़ नेने अछि।' मुदा ऐठाम हमरा भ्रम भऽ गेल अछि। भ्रम ई भऽ गेल अछि जे हम समयक गतिकेँ नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।

जहिना समैक गति अछि जे भिनसरसँ दुपहर, दुपहरसँ साँझ पड़ैए तहिना सभ कथुक अछि, जइमे परिवारो आ समाजो अछि। समाज परिवर्तनशील अछि। कोनो क्षण एहेन नइ होइ छै जइमे परिवर्तन नइ होइए। मुदा प्रति क्षण होइबला परिवर्तन जाबे तक पुरान स्थितिमे रहल माने पुरान सीमाक बीच रहल–ताबे तक मात्रात्मक परिवर्तनक बीच रहल मुदा जखन ओ धीरे-धीरे बदलैत ओइ सीमापर पहुँच लांघए चाहैए वा लांघैए तखन स्थिति बदलौ चाहै छै आ बदलियो जाइ छै जइसँ बदलावक एक नव रूप धारण करैए जेकरा गुणात्मक परिवर्तन कहै छिऐ, अहीठामसँ परिवारो आ समाजोमे एक नव रूपक उदय होइ छै जे विकास कहबैए। उदाहरणक रूपमे हम देखै छी जे जहिना केटलीमे पानि भरि चुल्हिपर चढ़बै छी, ओइमे निच्चासँ आँच दइ छिऐ, जइसँ पानि गर्म होइत खौलए लगैए। जाधैर

पानि खौलैत रहैए ताबे धरि ओ मात्रात्मक परिवर्तनक रूपमे रहल मुदा जखने खौलैत पानि वाष्प बनि उड़ए लगैए तखन ओ गुणात्मकमे बदैल जाइए, जइसँ पानिक रूप वाष्पक रूपमे बदैल जाइए।

अहिना परिवारोक संग अछि। जेकरा हम 'संयुक्त परिवार' कहै छिऐ ओ अखनो अपन बदलैत रूपमे जीवित अछि आ आगूओ रहत। अखनो एहेन परिवार तँ ऐछे जे पचीस-पचास जनक अछि। परिवारक जे श्रमशील लोक छैथ ओ अपन-अपन जीविका-ले अपन-अपन उत्पादनमे दसठाम छिड़ियाएल रहै छैथ, आ जखन परिवारमे कोनो पैघ काज– विवाह, श्राद्ध इत्यादि भेल तखन सभ एकठाम भऽ दस-दिन-बीस-दिनमे काज निवटा अपन-अपन जगह पुन: पकैड़ लइ छैथ। ..जाबे धरि परिवारक सभ जनकेँ जीबै जोग उपार्जन नइ रहतैन ताबे ओ परिवार ठाढ़ो केना रहि सकैए तँए जेकरा नष्ट होइत संयुक्त परिवार बुझै छी ओ पाछूक विचार आ ढाँचा छी। मुदा नव ढाँचाक रूपमे 'संयुक्त परिवार' अखन नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। हँ, एते जरूर भेल अछि जे ओ नव रूप पकैड़ ठाढ़ अछि।

गुलेती मुखियाक परिवारक जे पैछला रूप छल ओ बदैल गेल मुदा जीवित भाए-बहिनक बीचक सम्बन्ध अखनो जीवित अछि। माने ई जे गुलेतीक जेठ भाइयो आ बहिनो–जे सासुर बास करैए, अपन के कहए जे दुनू बहिनो आ भागिनो-भगिनीक आवा-जाही छइ। तैसंग ईहो छैहे जे गुलेतियो कहियो काल अनदिनो माने बिना कोनो काज-उदेमक सेहो–जाइते अछि आ तैसंग जँ कहियो कोनो विशेष काज–बिआह आदि- भेल तँ तहूमे जाइते अछि। ओना, माता-पिताक मुइने गुलेतीक परिवार असगरेक रहि गेल, मुदा परिवार तँ ठाढ़ रहबे कएल। नमहर परिवार रहने परिवारक जे जरूरतक वस्तु अछि ओकर जरूरत बेसी होइ छइ, आ जेते छोट रहल तेते कम होइ छइ। माने ई जे रहैक घर हुअए आकि भोजनक सिदहा-समर, आकि देहक

वस्त्र आकि रोग-वियाधिक दवाइ-दारू ऐ सभ चीजक खगता कम आ बेसी रहने बेसी होइ छइ।

जाबे तक दोरिक मुखिया जीबै छला ताबे तक शकलदेवकेँ गिरहत मानि हुनके काज-उदेम करैत रहलैन। शकलदेवे दोरिककेँ घर बनबैक बाँसो-खढ़ देने रहथिन आ अपन गिरहस्तीमे काजो देने रहथिन, तैसंग मौका-कुमौकामे दू सेर आकि दू टाका दऽ मदैतो करै छेलखिन। ओना, शकलदेवो मरि गेला। बेटा सुरतलाल छथिन जे पितेक सीख-लिखे अखनो धरि परिवार चलबै छैथ।

हाथ-पएर टेँढ़ रहने गुलेतीकेँ ने हर जोतल होइ आ ने धनरोपनी कएल होइ, जइसँ सुरतलालक संग सम्बन्धमे कमी आबि गेल। ओना, सुरतलाल हर जोतैले दोसर गोरेसँ सम्बन्ध बना लेलैन मुदा गुलेतीकेँ सेहो सोलहन्नी नहियेँ छोड़लखिन। अखनो जइ दिन सुरतलाल खेती शुरू करै छैथ, माने पहिल दिन, जइ दिन जन-हरबाहकेँ नति कऽ खुअबै छथिन- तइ दिन गुलेतीकेँ सेहो नौत दऽ खुऐबते छथिन।

दोरिकक अमलदारीमे परिवारमे तीन दिसक आमदनी छल, पहिल छल हरबाहिक संग रवियो-राइ उखाड़ै-काटैसँ लऽ कऽ धनकटनीक बोइन सेहो, तैसंग सौनसँ लऽ कऽ कातिक तक माछोक छल आ टौहकी-पहटा-छिट्टा-पथिया जे बनबै छला सेहो छेलैन। से गुलेतीक परिवारमे नइ रहल। मुदा तैयो मछबारिक आमदनी आ छिट्टा-पथियाक रहबे कएल। टौहकी-पहटा बनाएब छोड़ि गुलेती सोलहन्नी छिट्टा-पथिया बनबैए।

सुरतलाल गामक सुभ्यस्त किसान छैथ, जिनका दस बीघा जोतो, खढ़ो-खरहोरि आ वेखो-बुनियादि छैन। पाँच कट्ठाक जे बँसवाड़ि छैन ओ ओहन जइमे दस-बीसटा बाँस सभ दिन सुखले रहैए। गदिआह माटिपर बँसबाड़ि छैन जइसँ एक-एकटा बाँस पचास-

पचास हाथक होइ छैन। तहूमे जीवनी किसान शकलदेव, रंग-रंगक बाँसो लगौने छला आ ओकर तरद्दुत सेहो साले-साल करिते छला। तरद्दुत ई जे बाँसक बीटमे साले-साल बैशाख-जेठमे माटियो दइ छेलखिन आ खाली जमीनक तमनी सेहो करिते छला, जइसँ पुरान बीट रहितो बुझिए ने पड़ैत जे ई एते पुरान अछि। ओना, नवो बीट पुरान बीट जकाँ बिना तरद्दुतक भाइये जाइए। हेबो केना ने करत जहिना गरीब परिवारमे समुचित भोजन आ बर-बेमारीमे समुचित दवाइ नइ भेटने जुआनो-जहान झखड़ल बुझि पड़ैए तहिना नवको बाँसक बीटमे भाइये जाइ छइ।

गुलेतीक परिवारक सम्बन्ध जे शकलदेव परिवारक संग अखन धरिक छल ओइमे काजक कमी भेनौं कमी नइ आएल अछि। जइ समए दोरिक जीबै छला तहू दिनमे छिट्टा-पथिया बनबैले शकलदेवक बाँस कीनि बनबै छला आ गुलेती जखन करए लगल तखनो सुरतलालेसँ बाँस कीनि-कीनि बनबैए। ओना, गुलेतीक परिवार आ सुरतलालक परिवारक सम्बन्धमे मिसियो भरि विघटन नहि भेल मुदा सम्बन्धक रूपमे परिवर्तन तँ भेबे कएल। होइते अहिना छै जे समैक संग बेकतियो, परिवारो आ समाजोक सम्बन्धमे परिवर्तन भऽ जाइए।

जहिना दोरिककेँ हरिपुर एलापर शकलदेव बिसवासक संग बाँस, खढ़, खरही दऽ घर बनबा बसौलखिन आ अपन मदैतक लेल हरबाहिक संग गिरहस्तीसँ जोड़ि जिनगीकेँ बिसवासक संग आगू बढ़बैत रहलखिन तहिना सुरतलालो गुलेतीक संग अपन बिसवासकेँ जीवित रखनहि छैथ। माने ई जे गुलेतीकेँ जे छिट्टा-पथिया बनबैले बाँसक खगता होइ छै तइले कहि देने छथिन»

"गुलेती, बाँसक बीट अपने बुझिहह, तँए जखन तोरा खगता हुअ तखन परोछोमे काटि सकै छह। दामक कोनो बात नहि, तोरो

बुझले छह जे बीस रूपैआ एगो-बाँसक दाम होइए, जे तूँ पहिनौं दऽ सकै छह आ पछातियो दऽ सकै छह।"

ओना, गुलेतियो इमानदारीसँ ई बुझिते अछि जे बिसवासो तँ पुरनाइये गेल अछि जइसँ कमी आबिए जाइ छइ। तँए जखन बाँसक खगता होइ छै तखन ओ अपन जीवनक जीविकाक काज बुझि पहिने सुरतलालकेँ जानकारी दैत काज करैए।

अन्तिम जेठ, टहटहौआ रौद। गुलेती मुखिया तीन बजे अपन छिट्टा बीनैक सभ समचाक संग एकटा डाबामे पानि नेने घरसँ थोड़े हटि रस्ता परक पाखैर गाछ लग पहुँचल। ओना, ओ आइए-टा नहि, सभ दिन ओही गाछक निच्चाँक छाहैरमे बैस अपन काज करैए।

गाछक निच्चाँमे काड़ा, कैमची, पगहरिया आ पानिक डाबा रखि बौगुलीसँ तमाकुल निकालि चुनबए लगल। तही काल लोहिया पट्टीवाला श्याम सुन्दर दास अपन दूटा चेलाक संग पहुँचला। तीनू गोरे भनडारा पुरए दीप जाइ छला। ओना, तीनू गोरे छत्ता सेहो ओढ़ने रहैथ मुदा तैयो रौदा गेले छला। रौदेबो केना ने करितैथ, एगारहे बजे खा-पी कऽ गामसँ विदा भेला। लोहिया पट्टी आ दीपक बीच पाँच-छह कोस जमीन अछि। चारि बजेसँ भनडाराक कार्यक्रम पहुँचनहि शुरू हएत।

भनडरो नमहर छइ। एगारह साए टूक बँटने छैथ। सातटा महात्माक जुटानी अछि। तैसंग परोपट्टाक जे कण्ठीधारी कबीर पंथी छैथ, तिनको सभकेँ दल पड़ले छैन। एक-सँ-एक गबैया सभ सेहो एबे करता। ओना, कम कि बेसी जे साधु-महात्मा छैथ, सभकेँ किछु-ने-किछु भजन कीर्तन अबिते छैन, जे कियो खौजरीपर गबै छैथ तँ कियो ढोलक-हरमुनियाँपर तँ कियो ओहिना थोपड़ी बजा-बजा सेहो गेबे करै छैथ।

जहिना छोट-पैघ कबीर पंथी महंथक जुटानी अछि माने दल पड़ल छैन, तहिना छोट-पैघ गबैयोक जुटानी ऐछे। रहबो केना ने करैत, अखुनका जकाँ कि अपन-अपन फीस बना गबैया चलै छैथ, एक टूक सुपारी अपना पंथक भेट जाइ छैन कि अपन सेवा दइले तैयार भऽ जाइ छैथ, जइसँ नीकसँ नीक भजन-कीर्तनक कार्यक्रम, कम-सँ-कम खर्चमे चलिते अछि। ..इलाकाक पैघ गबैया सरिया दासीन जे डोम परिवारक छैथ, जिनकर कहब छैन जे सात-दिन-सात-राति एक-सुरे जँ गबैत रहब तैयो दोहरा कऽ एक भजन नइ गाएब। गबैया नमहरक दोसर कारण ईहो अछि जे अपने-आपमे ओ पूर्ण छैथ। माने ई जे ने हुनका दोसर संग पुरनिहार गबैयाक खगता होइ छैन आ ने कोनो बजन्त्रीए-क। माने ई जे एहनो गबैया तँ छैथे जिनका नीक माईक आ आधुनिक बाजाक संग नीक बजौनिहारोक खगता होइ छैन, तैठाम सरिया दासीन अपने मुहेँ गेबो करै छैथ आ अपने हाथे खौजरियो बजबै छैथ। चेहरा-मोहरा भलेँ देखनुक नइ होनि मुदा ज्ञान ज्योतिक प्रखर गबैया तँ छैथे जे पारखी लेल आकर्षणक कारण ऐछे। तँए खाली पंथाइयेक सुननिहारटा नहि आनो-आन कला-पारखीक जुटान तँ भाइये जाइए। तहूमे सरिया दासीनक संग छट्ठू दास, हिताइ दास, राम अशीष दास, रामजी दास इत्यादि अनेको गबैयाकेँ टूक भेटले छैन। सभ कियो जुटबे करता।

एक तँ ओहिना गोसाँइ साहैबक सेवकान तहूमे नमहर कार्यक्रम ऐछे तैठाम जँ कार्यक्रम शुरू होइसँ एको घन्टा पहिने नइ पहुँचता सेहो केहेन हएत। ..यएह सोचि लोहिया पट्टीबला महात्मा श्याम सुन्दर दास एगारह बजे खा-पी कऽ गामसँ विदा भेला जे तीन बजे तक दीप पहुँच जाएब। मुदा से भेलैन नइ शुरूमे तँ एक झोंक खूब चलला जइसँ घन्टे भरिमे दू कोस टपि परसा लगिचा देलखिन। मुदा एक तँ खेलहा-पिलहा परहक चालि, दोसर जेठुआ रौद, परसा अबैत अबैत बेदम भऽ

गेला। कटोरिया धोधि थुलथुल देह, थकानसँ ई बुझि पड़लैन जे जँ एको डेग आगू बढ़ब तँ खसि पड़ब। ओना, अपनोसँ तबाह दुनू चेला भऽ गेलैन। चेलाक तबाहीक कारण भेल जे दुनू गोरेक काँखमे नमहर-नमहर झोरो, जइमे कपड़ा-लत्ताक संग झालि-खौजरी इत्यादि छेलैन, तैपरसँ एक हाथे छत्ता सेहो पकड़ए पड़ल रहैन। मुदा मुँह फोरि अपन बेथा गोसाँइ साहैबकेँ कहबो केना करतैन। कहैक माने भेल अपना संग गोसाँइयो साहैबक समए लेब। एक तँ ओहिना समैपर पहुँच पएब कि नहि, तैपर सँ आरो समए खटियाएब उचित नहि। ..संजोग नीक बनल। परसा धामक आगू पहुँच गेला। केना गोसाँइ साहैब श्याम सुन्दर दास कहितथिन जे 'थाकि गेलौं, कनी अराम करब।' तँए बोल बदलैत बजला»

"छीतन दास, भने नीक जगहपर पहुँच गेलौं। सूर्य मन्दिर छी। चलू कनी दर्शन कऽ लेब।"

एक तँ ओहिना सबहक मनकेँ रौदक थकान दबने, तैपर गोसाँइ साहैबक विचार कटलो तँ नहियेँ जा सकैए। छीतन दास बजला»

"हँ-हँ सरकार, फेर कहिया ऐ रस्ते आएब कहिया नहि, तँए जिनगीक जे काज अगुआइत भऽ जाए ओ ओते बढ़ियाँ किने।"

ओना, दोसर चेला–दुखी दास बुझि गेला जे दुनू बहन्ना कऽ रहला अछि, भरि दिन निरगुने-सगुनक विचार करैत रहै छैथ आ अखन दर्शन करैक मन भऽ रहल छैन! तँए दुखी दासक मुँह बिजकैत रहैन। जे बात श्याम सुन्दर दास बुझि गेला। दुखी दासकेँ पछुअबैत पुछलखिन»

"की दुखी दास अहाँक की विचार अछि?"

गोसाँइ साहैबक विचार कटलो तँ नहियेँ जा सकैए तखन तँ भेल गुरुकेँ अनुकूल बना चली जइसँ अनुकूलता औत। ..मुस्की दैत दुखी

दास कहलकैन»

"साहैब, अहाँक ने पहिल दिन छी। मुदा हमर तँ सासुरे परसा छी। जखन सासुरमे रहै छी तँ भोरे सुति उठि नहा कऽ पहिने एक लोटा जल सूर्ज भगवानकेँ चढ़बै छिऐन, तेकर पछाइते चाहो-पान करै छी आ दुनियोँ-दारीक गप-सप्प।"

सभ गप करिते तीनू गोरे मन्दिरक आगूक आँगनमे पहुँच अपन-अपन झोरा-झपटा रखि अराम करए लगला।

ओना, तीनू मुरतेकेँ निन सेहो दाबए लगलैन मुदा चारि बजेसँ पहिने दीप पहुँचैले कछमछी सेहो मनकेँ रेबारिते रहैन। पनरह-बीस मिनट अराम केला पछाइत श्याम सुन्दर दास बजला»

"छीतन दास! अराम केने समैपर नइ पहुँचब, आगू बढ़ू।"

छीतन दास बिना किछु बजने उठि कऽ झोरा काँखमे लटकौलक। तीनू गोरे परसा धामसँ टहटहौआ रौदमे छाता तानि विदा भेला।

परसा धामसँ दू कोस आगू हरिपुर। हरिपुर अबैत-अबैत तीनू मुरते फेर बेदम भऽ गेला। तीनूक मन लुस-फूसाए लगलैन जे केतौ बैस कनी काल अराम करी। मुदा श्याम सुन्दर दासक नजैर जखन घड़ीपर पहुँचैन तँ मन कड़ुआ जाइन। एके घन्टा समए बँचल अछि आ कोस भरिसँ बेसी जमीन चलबो अछि। मुदा आगू बढ़ैक डेगे ने ससरैन। तैपर पियाससँ मन छटपटाइत रहैन। तहूमे गामो तेहेन अछि जे अँगने-अँगने सभ चापाकल गरौने, रस्ता कातमे एकोगो कल नहि, पानियोँ केतेए पीब। केकरो ऐठाम जँ पानि पिबए पहुँचबो करब तँ तेते ने आगत-भागत करए लगता जे आरो बेसी समए लगत। अपन सेवकानमे भनडारा छी, गेला पछाइते कार्यक्रमक श्री गणेश हएत। ..श्याम सुन्दर दासकेँ कोनो रस्ते ने सुझैत रहैन जे की केने की नीक

हएत। ततमत करैत तीनू गोरे पाखैर गाछ लग पहुँचला।

गाछक जड़िमे गुलेती डाबाक मुँहपर लोटा औन्ह कऽ रखने रहए। जहिना प्रियतमक प्रेममे प्रेमीक नजैर चकोनो होइत रहैए तहिना श्याम सुन्दर दासक नजैर पाखैर गाछक जड़िमे राखल माटिक कलशपर अँटकल रहैन। मुदा ताकमे रहैथ जे चीजबला किछु बाजत तखन ने बातक सोरि पकैड़ अपन बात राखब। से गुलेती दास किछु बजबे ने करैत। मतलबे वेचाराकेँ की रहइ। तहूमे रस्ता-पेरा चलनिहारकेँ उपकैर कऽ टोकबो नीक नहि। जँ कहीं टोकाइन लगि जानि तँ अनेरे गुम्हरता। तँए, तइसँ नीक ने जे 'ने मारी माछ आ ने उपछी खत्ता।'

ओना, श्याम सुन्दर दासकेँ नमगर चानन देख गुलेती बुझि गेल जे ई सभ बबाजी छिआ। किएक तँ श्याम सुन्दर दासकेँ मोछ-दाढ़ी ने झमटगर नइ छैन मुदा चानन तँ नमगर-चौड़गर छैन्हे। छीतन दास आ दुखी दास ने झोंटो बढ़ौने छैथ आ मोछो-दाढ़ी बढ़ौने छैथ, भलेँ कण्ठी गमछे तरमे किए ने झँपाएल होनि मुदा छैथ सभ बबाजीए।

समयक गतिकेँ अँकैत श्याम सुन्दर दास गुलेती दिस तकैत बजला»

"बाउ, दीप केते दूर हएत?"

ओना, श्याम सुन्दर दासकेँ बुझल रहबे करैन, किए तँ केतेको दिन अही रस्ते दीप गेल छैथ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे लग-पासक गामक दूरी बेसी आबा-जाही भेने छोट भऽ जाइए आ बाहर-बलाक लेल माने दस-कोस-बीस-कोस चलनिहार थाकल लोक-ले बढ़ि जाइए।

गुलेती मुखिया बाजल»

"बाबा महराज, किरिण डुमैत दीपक हाट तीमन-तरकारी-ले

जाइ छी आ दोसर साँझ होइत-होइत घुमि कऽ आबि जाइ छी, तेतबे दूर अछि।"

गुलेतीकेँ कोस आकि किलोमीटर बुझब कोन जरूरी छइ, अपन काजसँ मतलब छइ, तँए अपन काजक नापसँ दीपकेँ नापि बाजल। ओना, गुलेतीक इमान श्याम सुन्दर दासक मनकेँ मोहि लेलकैन। मोहि ई लेलकैन जे अखनो जँ केतौ इमान बँचल अछि तँ एहने-एहने लोकक बीच अछि। ऐठाम जँ सम्बन्ध नइ बनाएब तँ नीक सम्बन्धीसँ भेँट हएब कठिन अछि। विचारकेँ आगू बढ़बैत श्याम सुन्दर दास बजला»

"बाउ, डाबामे जल छी?"

'जल' सुनिते गुलेतीक अपनो मन जलजला गेलइ। जलजला ई गेलै जे भूखलकेँ एक कौर अन्न आ पियासलकेँ एक लोटा जलदान करब धरम छी। मुदा अपनो तँ धर्म अछि, जँ धर्म-धर्म अपनेमे लड़त तँ अधर्मक राज हेबे करतै। अपन धर्म बँचबैत गुलेती मुखिया बाजल»

"बाबा महराज! हम साँकठ छी। मलाह सेहो छी, सालमे चारि मास मछबाइरे करै छी। हमर घैलक जल केना पान करब?"

गुलेतीक बात सुनि श्याम सुन्दर दासक मनमे एकाएक अनेको प्रश्न उठि गेलैन। मुदा समैकेँ देखैत अपन विचारकेँ दाबए चाहैथ। मुदा जे रणक्षेत्रमे प्रश्न उठि गेल अछि ओकरा छोड़बो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा प्रश्नो तँ एहेन जटिल अछि माने पेरासूत जकाँ तेहेन घुरछी लागल छै जे धड़फड़मे सोझराएबो कठिन ऐछे। जँ कहबै जे 'बौआ माछ खाएब छोड़ि दहक सेहो नइ हएत। किए तँ कैतकी गैंचीक सुआद मनमे हेबे करतै। हमर बात किन्नौं सुनत। ..जाबे केकरो अनुकूल नइ बना पएब ताबे ओ संग थोड़े आबि सकैए। मुदा 'पियास ने मानए धोबी घाट...।'

..पियाससँ तीनू मुरतेक मन माटिपर पड़ल माछ जकाँ छटपटाइत रहैन। श्याम सुन्दर दासक मनमे ईहो उठैन जे हमर जे पूर्व महापुरुष सभ भेल छैथ ओ भूखलमे कुत्तोक मौसुकेँ अमृत मानि भक्ष वस्तु कहने छैथ...।

श्याम सुन्दर दास मने-मन विचारए लगला जे की कहलासँ गुलेती अनुकूल हएत। जाबे अनुकूल नइ हएत ताबे जे जल पियौत तँ मन अपन गवाही देबे करतै जे पाप केलौं! एक दिस 'साधु-महात्मा'क सेवा, दोसर दिस 'पाप', दुनू सिरापर ऐछे! तैबीच ईहो तँ ऐछे जे दुनियाँमे सभकेँ अपन इष्टदेव छै आ ओही इष्टदेवक आदेशानुसार अपन-अपन बुधि-विवेकसँ काज करैए। तत्काल जँ किछु आदेशो देबै आ परिस्थितिवस जँ मानियौं लेत तँ पछाइत अपन मन कहबे करतै जे ई अनुचित भेल। माने ई जे बटोही-अभ्यागत बुझि कहबै आ तेकरा जँ ओ सेवा बुझि काइयो लेत तैयो मने-मन गुनधुन करबे करत। मुदा जाबे ओकर मनकेँ मोड़ि अपना मनोनुकूल नइ बना लेब ताबे आगूओ केना बढ़ब। ..एकाएक श्याम सुन्दर दासक मनमे भेलैन कहाँ एक लोटा 'जल' आ कहाँ जलसँ भरल अथाह समुद्र.., तैठाम जँ पछैड़ जाइ सेहो नीक नहि, तँए नीक ई हएत जे अनकर मनकेँ मोड़ैले कनी अपनो मनकेँ लियौन करी।

अपन मनकेँ लियौन करैत श्याम सुन्दर दास गुलेतीकेँ कहलखिन-

"बौआ, परिवारमे के सभ अछि?"

'परिवार' सुनि गुलेती मुखियाक मन चौंकल। चौंकल ई जे आइ तक कियो एहेन शुभचिन्तक नइ भेला जे हमरा सन गरीब लोकक परिवारक खोज-खबैर लथि। ओना गुलेती काज करैक सुर-सार करिते रहए, हाथ नइ लगौने रहए, तइ बिच्चेमे परिवारक बात उठि गेल।

..गुलेती बाजल»

"बाबा महराज, असगरे छी माइयो आ बाउओ मरि गेल।"

'असगर' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे उठि गेलैन जे एक दिस लसगरक बीच जा रहल छी आ दोसर दिस बाटेमे असगरसँ भेँट भऽ गेल। किए ने एकरो ओही लसगरमे लसका दिऐ जे समूहमे समाज बनि समाजिक जीवन धारण करत। तैबीच मनमे ईहो उठलैन जे लसगर जँ बोनो-झाड़ आकि धारो-समुद्रमे रहैए तँ ओकर जिनगीक अपन आनन्द छइ, मुदा असगर जँ से रहत तँ बोन-झाड़मे बाघ-सुगरक डर हेतै जे कहीं किम्हरोसँ आबि चाभि ने दिअए। तहिना धारो-समुद्रमे हेबे करतै जे कोनो मोइनमे ने डुमि जाइ...।

विचारकेँ आगू बढ़बैत श्याम सुन्दर दास बजला»

"असगरे परिवारक सभ काज सम्हारि केना लइ छी। परिवारमे काज तँ बहुत होइ छइ, उपैतसँ विपैत धरि?"

ओना, श्याम सुन्दर दासक विचार गुलेती नीक जकाँ नइ बुझलक। माने उपैत-विपैतक अर्थ नइ बुझलक। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे दू गोरेक गप-सप्पमे बिनु बुझलो प्रश्नक उत्तर लोक दइते अछि। ..गुलेतियो मुखिया सहए बाजल»

"बाबा महराज, गरीब लोकक परिवारे की! 'आगू नाथ ने पाछू पगहा।' तखन तँ पेट अछि ते भूख लगबे करत, तइले कमा कऽ खाइ आकि भीख माँगि कऽ आकि ठकि-फुसिया कऽ, लोक कहुना तँ जीबे करत।"

ओना, गुलेती अपना धुनिमे बाजल। मुदा श्याम सुन्दर दासकेँ जिनगीक एकटा पन्ना[5] भेटलैन, जेकरे पकैड़ पुछि देलखिन»

[5] पोना

"कमाइ की सभ अछि?"

'कमाइ' सुनि गुलेती मुखियाक मनमे ठहकल। पहिने काज तखने कमाइ। काज करब तखन ने कमाइ हएत.. । बाजल»

"बाबा महराज, सालो भरि बाँसक छिट्टा-पथिया बनबै छी, ओकरे बेच कऽ खाइ-पिबै छी।"

श्याम सुन्दर दास»

"एकेटा काज करै छी आकि दोसरो?"

गुलेती»

"ई भेल सालतनी काज आ बीचमे एकटा दोसरो काज अछि। सालक चारि मास मछबारि सेहो करै छी।"

श्याम सुन्दर दास»

"जखन मछबारिक काज करैत हएब तखन तँ छिट्टा-पथियाक काज छुटि जाइत हएत?"

ओना, गुलेती मुखियाक मोट बुधिक मन तँए मेही बात सभ बिसैर-बिसैर जाइते अछि। मुदा अखियास करैत बाजल»

"बाबा महराज, आसिन-कातिकमे जहिना पावैनक धुमसाही रहैए तहिना काजोक भऽ जाइए। एक तँ जनमारा मास दुनू छी, केकरो मलेरिया बोखार धरैए तँ केकरो साँप-बिच्छूसँ छुबबैए, तैपर दिनो कनी छोट भाइये जाइए। मुदा..?"

'मुदा' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे ठहकलैन। ठहैकते मुहसँ

मुस्की छुटलैन। मुस्कियाइत बजला»

"तखन पार केना लगैए?"

जहिना कोनो भारी माने चौड़गरो आ गहींरगरो धार टपै काल

मनमे समोह उठैए तहिना गुलेतीक मनमे समोह उठल, जइसँ बोली लटपटाए लगल। बाजल»

"गरीब लोकक जिनगीक कोनो लज्जैत रहैए। ने खाइ-पिबैक ठेकान आ ने रहै-सहैक, तखन तँ कहुना मनकेँ मारि नहि रहत तँ.. ।"

ठमकैत गुलेतीकेँ देख श्याम सुन्दर दास बिच्चेमे पुछि देलखिन»

"जखन असगरे छी तखन एते लन्द-फन्द काज किए करै छी? काजकेँ समैट जतबे खगता अछि तही हिसाबसँ करू।"

श्याम सुन्दर दासक विचार जेना गुलेती मुखियाक मनमे भरि गेल तहिना तीर लगल चिड़ै जकाँ छटपटाइत बाजल»

"से केना हएत?"

श्याम सुन्दर दास बजला»

"जँ साल भरिक रस्ता भेट जाए तँ चारि-छह मासक रस्ता छोड़ि दी।"

हँसैत गुलेती बाजल»

"से तँ नानियोँ-मुहेँ सुनने छी जे बेसी काल बजै छेली जे छह मासक रस्ता नइ चलि साल भरिक चली।"

सुढ़ियाइत गुलेतीक मनकेँ देख मोहैन चलबैत श्याम सुन्दर दास बजला»

"जखन रूख-सुखमे बैस छिट्टा-पथियाक काज कऽ लइ छी तखन जँ पानि-झाड़क काज करै छी से नीक लगैए?"

'पानि-झाड़' सुनिते गुलेतीक मन पनियाइत झहरल»

"बाबा महराज, हमर बाउओ पानियेँ-मे मरल।"

'पानिमे मरल' सुनिते श्याम सुन्दर दासक मनमे उपकलैन- मुर्दघट्टीए ओहन जगह छी जैठाम लोक अन्तिम साँस लइए। जखन

जिनगीक अन्तिम साँसक समए अबैए तखने नव साँस पौने मनमे परवेशो करैए...।

जहिना मरैत रोगीकेँ कोराइमिन दऽ किछु समए प्राणकेँ ठहरौल जाइए तहिना जिनगीक कोराइमिन दैत श्याम सुन्दर दास बजला»

"बाउ, जखन साल भरिक उपैतिक काज लगले अछि तखन दू-मसुआ आकि चरि-मसुआ काज छोड़ि देब नीक। ओना, टुकड़ी-पुरजा काज जे होइए ओ थोड़े लभगर होइते अछि मुदा ओइ लभगरक लोभमे नइ पड़ी।"

जहिना धुर-झार श्याम सुन्दर दास अपन विचारकेँ व्यक्त करैत गेला तहिना गुलेतीक जिज्ञासा सेहो बढ़ैत गेल, जेकरा ओ ठाढ़ कानक कोन बात जे मुँह-बाबि सुनबो करए आ अखियासो करए, मुदा जड़िक मूल लग नजैर जेबे ने करइ जे श्याम सुन्दर दास की कहि रहला अछि। खएर.., एते तँ जिज्ञासा जगिए गेलै जे बाजल»

"बाबा महराज, अहीं सेने हमहूँ जाएब। केतए जाइ छिऐ आ कहिया घुमबै?"

अपन मेहनतक फल देख श्याम सुन्दर दासक मन ठाढ़ भेलैन। ठाढ़ होइते हियाबए लगला जे 'की केने की नीक हएत' तँए किछु बजैमे बिलम होइत रहैन। बिच्चेमे छीतन दास टीपलक»

"गुलेती भाय, करीब बीस बर्ख पहिनहि हमरो घरवाली मरि गेल, आ जेठका बेटा जे पनरह सालक रहए ओ गौंआँ सबहक संगे बिराटनगर पड़ा कऽ चलि गेल।"

बिच्चेमे गुलेती बाजल»

"दोसर-तेसर धिया-पुता बीचक नइ अछि?"

गुलेती मुखियाकेँ धड़फड़ाइत देख छीतन दास बाजल»

"छह मास अल्हुआ माटि तर रहैए से धड़फड़ेबे ने करैए आ अहाँ लगले धड़फड़ा गेलौं। पहिने भेख लिअ तखन आरो भीख भेटत।"

लगले सूरमे गुलेती बाजल»

"अहाँक विचार मानि गेलौं। पहिने एक लोटा जल पीब लिअ जे थाकल-ठेहियाएल छी, बजैमे कण्ठो सर्रास हएत।"

कहि गुलेती पाखैर गाछक जड़िमे माटिक डाबा लग आबि लोटा अखारि कऽ पानि भरि श्याम सुन्दर दासक हाथमे दैत बाजल»

"गरीब लोक छी, ऐसँ बेसी ऐठाम उपाइए की अछि। जँ आइ ठहैर जैतिऐ तँ सौंझुका भनडारा चलितै।"

लोटो भरि जल पीब श्याम सुन्दर दास बजला»

"अखनसँ अहाँ 'गुलेती मुखिया' नइ 'गुलेती दास' भऽ गेलौं।"

अपन बदलैत नाउक-नाँगैर सुनिते गुलेतीक मन भगवान रामक धनुषपर पहुँचल। ..पियाससँ छीतनो-दास आ दुखियो दासक कण्ठ सुखिते रहैन। तैबीच गुलेती दासकेँ देखलैन जे हाथ बागि माने पानि पियाएब छोड़ि विचार सुनैमे वौआ रहल अछि। अपनो-ले अपने मुँह नइ उठाएब तखन तँ अन-पानि बेतरे मरिए जाएब आ कियो पुछनिहारो ने हएत। बजला»

"गुलेती भाय, पहिने जल पिआउ तखन गुलेतीक फट्ठाकेँ धनु-

षक फट्ठा बनाएब।"

छीतन दासक व्यंग्य-वाण सुनि श्याम सुन्दर दासक मसुएलहा मन मकड़ जकाँ जे खापैड़ पड़िते भरभरा जाइए तहिना बत्तिसो दाँतकेँ छिटकबैत भरभरा गेलैन। बजला»

“छीतन दास, बहुत दिनक पछाइत एहेन संगी भेटल।”

गोसाँइ साहैबक वाणीक वाण जेना छीतन दासक छातीकेँ पघिला देलकैन। मनमे एलैन- जहिना असगरूआ अपने छी, तहिना गुलेतियो दास अछि मुदा जाबे अपन बात गुलेतीकेँ कहि नइ देबै ताबे ओ ओते लग केना औत। माने ई जे जाबे अपन हृदयक दर्द कहबै नइ ताबे अनका दर्दक संग अपन छातीक दर्द घुलत-मिलत केना।

..छीतन दास बाजल»

“गुलेती भाय, पहिलुका जे पनरह बर्खक बेटा रहए जे पड़ा कऽ बिराटनगर चलि गेल ओ जीबैए कि मरैए से अखनो ने बुझै छी। तैबीच डेढ़-साल-दू-सालपर पान-सातटा धिया-पुता भेल, नीक जकाँ मनो ने अछि।”

बिच्चेमे गुलेती टोकलकैन»

“अपनो धिया-पुता मन नइ अछि?”

मुस्कियाइत छीतन दास बाजल»

“एकोटा जीबैत रहितए तखन ने। कोनो तीनियेँ मासमे, तँ कोनो साल भरिपर, तँ कोनो तीन सालक भऽ भऽ कऽ मरि गेल।”

मुस्की दैत गुलेती बाजल»

“घरवाली अछि किने?”

छीतन»

“सएह ने कहै छी, अन्तिम बेर जौंआ बेटा भेल, मुदा बेटाक संग घरोवाली सोइरीए-मे मरि गेल। तेकर पछाइत हमहूँ गोसाँइये साहैबसँ भेख लऽ बेरागी बनि साधु-सेवामे लगल छी।”

धड़फड़ाइत गुलेती बाजल»

“बाबा महराज, अपन सभ अरजाल-खरजाल समैट कऽ अखने

आँगनमे रखि अबै छी। अही पाखैरक गाछक निच्चाँमे अपनेसँ भेख लेब आ अपने संग सेहो जाएब।”

◌

शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016

भोला नाथ बाबा

अन्तिम जेठ, काल्हि सौंझुका बरखा तेहेन भेल जे मौसमोमे बदलाहट आएल आ धारो सभ फुलाए लगल। ओना, दूटा बरखा पहिनौं भेल छल, ई तेसर बरखा जेठक छेलै, जइसँ जे धार आर्द्राक ओद्रसँ निकैल फुलाइ छल ओ अनुकूल मौसम पाबि अगते फुला गेल। होइते अहिना छै जे जँ समैकेँ अनुकूल बनैसँ पहिने अनुकूल वातावरण बनि गेल तँ ओइमे अनुकूलता स्वत: आबए लगै छइ, सएह भेल।

..अनुकूलता ई भेल जे पहाड़ी धार हौउ आकि तराइ इलाकाक, बर्खाक पानि पबिते फुला जाइए, सएह भेल। नेपालसँ लऽ कऽ दूर-दूर तक तराइ इलाकामे तेते बर्खा भेल जे धारक संग-संग मौसमोमे बदलाहट आबि गेल।

सालोक संजोग नीक रहल, जहिना अगहनमे धनमण्डल धान भेल तहिना चैतमे दलिहनो आ गहुमो भेल। तैसंग आमो-जामुन तेते फड़ल जे ऐ बेर कौओ-कुकुरक मन अघेबे करत। जहिना आमक फड़ी तहिना जामुनक फड़ी लगने छोट-छोट गाछक कोन बात जे बड़को-बड़को गाछक डारि सभ धरती दिस झूकि कऽ निच्चाँ-मुहेँ भऽ गेल। छोट-छोट आमक गाछमे तँ बाँसक सोंगरो लोक लगौलक मुदा नमहर गाछमे सोंगर केना लगौत, तँए ओ ओहिना रहि गेल। जामुनक गाछकेँ तँ बेसी फड़नौं, फड़ छोट भेने, सोंगरक खगते ने होइ छै जे सोंगर

कियो लगौत। ओना, आमक गाछ आ जामुनक गाछक लकड़ियोमे अन्तर होइते अछि जइसँ लकड़ीक गुणोमे अन्तर होइते अछि। जइसँ जेते भार उठबैक शक्तियो मजबुतियो जामुनक गाछकेँ होइ छै तइसँ कम शक्ति आमक गाछकेँ होइ छइ। मुदा तैसंग एकटा कुभाँजो तँ ऐछे। कुभाँज ई जे तगतगर जामुनक गाछकेँ होइतो फड़ छोट होइ छै आ आमक गाछमे नमहर फड़ होइए...।

बेरुका समए, भोला नाथ बाबा दुपहरिया सूतबसँ उठि मुँह-हाथ धोइ, पानि-चाह पीब दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस अपन पचासी बर्खक बीचक आजुक दिनपर मने-मन विचार करए लगला।

बेर झुकने सुरूजो पच्छिम-मुहेँ झूकि पछबरिया रस्ता पकैड़ नेने आ पुरबा हवा अपन रस भरल चालि पकैड़ रसे-रसे चलि रहल अछि।

पनरह गोरेक परिवार भोला नाथ बाबाक छैन, जइमे सभसँ श्रेष्ठ अपने छैथ, से दुनू मानेमे परिवारमे श्रेष्ठ छैथ। पहिल जे बाबाक सीढ़ीपर छैथ आ दोसर पचासी बर्ख बितौल जिनगियो छैन।

आइक परिवार मनमे अबिते भोला नाथ बाबाक पहिल नजैर पत्नीपर गेलैन। ओना, साले भरिक छोट पत्नी छथिन, मुदा काजमे केतौ साल भरिक छोट, तँ केतौ पचीस-पचास सालक छोट छथिन। माने ई जे किछु काज भोला नाथ बाबाक बहुत अगुआएल छैन मुदा पत्नी ओइ काजमे बहुत पछुआएल छथिन। ओना, किछु छथिन मुदा पैंसैठ-छियासैठ बर्खसँ संगी बनि संग-संग चलि तँ आबिए रहल छथिन।

पत्नीपर नजैर पड़िते भोला नाथ बाबाक मन मधुएलैन। मधुआइते मन मुस्कियेलैन। मुस्की भरैत बुदबुदेला»

“तुलसी ऐ संसारमे भाँति-भाँतिक लोक...।”

मुहसँ तँ निकैल गेलैन मुदा मने-मन जखन विचार करए लगला

तखन एकटा काज मन पड़लैन। मन पड़िते मुहसँ फुटलैन»

"कहू जे ई केहेन भेल!"

..भेल ई रहैन जे पोता मोटर साइकिल किनलकैन। नव रहने झलकैत रहबे करइ। मधुबनीसँ आनि दरबज्जाक आगूमे लगौलक। गाड़ीसँ उतैर दरबज्जेपर सँ दादीकेँ ई सोचि शोर पाड़लक जे गाड़ी देख मन खुशी हेतैन, असिरवाद देती। जखने दादीक असिरवाद भेट जाएत तखने बबोक असिरवादक मिनहा भाइये जाएत आ आरो जे सभ परिवारमे छैथ, माने माता-पिता, काका-काकी ओ नीक छोड़ि अधला बात बाजिए ने सकै छैथ। खुशीए-खुशी परिवारमे हएत। यएह ने भेल परिवार आकि समाजक काज जइसँ सभ एकमुहरी अनुकूल वा खुशीक नजैरसँ ओइ काजकेँ देखए।

दरबज्जाक आगूमे गाड़ी ठाढ़ कऽ 'दादी-दादी' बजैत राम किशुन आँगन आबि दादीकेँ गोड़ लागि बाजल»

"दादी, गाड़ी कीनि कऽ अनलौं हेन?"

गाड़ीक नाओं सुनिते दादीक मन खुशीसँ खुशिया लगलैन। ओसारपर सँ उठि सोझे दरबज्जापर आबि गाड़ी देख बजली»

"ताबे निच्चेमे रहए दहक...।"

कहि पार्वती चोट्टे आँगन घुमि सिदहा नापैबला तम्मामे धान लेलैन, हाँइ-हाँइ कऽ चारिटा दुभि सेहो नोंचि अनलैन आ पुतोहुकेँ कहलखिन»

"कनियाँ कनी पीठार पीसू।"

सासुक आदेशे पुतोहु सुखले अरबा चाउरकेँ पानि दए-दए पीठार पिसलैन।

सिनूर-पीठार आ दुभि-धान नेने पार्वती लोहाक गाड़ीकेँ बाहर

पुइज घर प्रवेशक आदेश देलखिन। ओना, भोला नाथ बाबा सेहो दरबज्जापर बैसल दादीक सभ लीला देखलैन मुदा बजला किछु ने। मुदा मनमे एते उठबे करैत रहैन जे एक परिवार रहितो कियो अपना मनक धारमे भँसिया रहल अछि तँ कियो जीवनकेँ धार बुझि पार होइक ओरियान कऽ रहल अछि।

..मुदा लगले दादीक ओ रूप सोझहामे आबि गेलैन जे संग मिलि केहनो रौद रहौ कि बरखा हौउ आकि जाड़े-ठाढ़ रहौ, एते तँ गुण छैन्हे जे जाधैर काजमे जुटल रहै छी ताधैर पार्वती सेहो समयकेँ बिनु ठेकनौनौ जुटल रहै छैथ। यएह ने भेल संगीक संगपना, जे गुण पार्वतीकेँ शुरूहेमे धेलकैन से अखनो धेनहि छैन। ओना उमेरोक हिसाबे आ समैयोक हिसाबे काज बदैल गेल छैन, मुदा काज करैक जे उत्साह आ जिज्ञासा शुरूसँ धेलकैन ओ अखनो धेनहि छैन।

पत्नीपर सँ नजैर उतैर भोला नाथ बाबाकेँ अपनापर एलैन। अपनापर अबिते मन ठमकलैन। मुदा ठमकला कनीए कालक पछाइत मन घुसैक कऽ शासन आ सत्ता दिस बढ़ि गेलैन।

सत्ता दिस नजैर बढ़िते हँसी लगलैन। हँसी ई लगलैन जे जइ सत्ताक पाछू पत्र-पत्रिका, रेड़ियो, टी.भी, इन्टरनेट सभ सहयोगी अछि तैठामक आम-अवामक जे समस्या अछि आ सरकारक जे समाधान छइ, से लोक बुझिए ने रहल अछि जइसँ ओकर लाभ उठौत। मनमे अबिते भोला नाथ बाबा गुनधुन करए लगला जे एना किए भऽ रहल अछि? एक दिस देखै छी जे धिया-पुताक कलम-किताब आ स्कूलक बैग तकक माध्यमसँ प्रचार भऽ रहल अछि आ दोसर दिस सभ शून भेल बैसल अछि। मुदा लगले भोला नाथ बाबाक मन उचैट कऽ फेर अपनेपर आबि गेलैन। अपनापर अबिते बुदबुदेला»

"जानए जअ आ जानए जत्ता। जखन राज सत्तासँ कोनो

मतलब नइ अछि तखन ओइ पाछू माथे धूनब फाजिल हएत। जँ एते माथ अपना-ले धूनब तँ अपनो कल्याण हएत, परिवारो-समाजक हेतइ आ देशो-दुनियाँक हेतइ। पाँच बीघा जमीन अछि, जेकर मालगुजारी सरकारकेँ दइते छिऐ, ओही जमीनक ने उपजा-बाड़ीसँ अपनो आ परिवारो ठाढ़ अछि। जँ कनियाँ नजैर सरकार आकि सत्ताक रहैत तँ ओहो ने अपन देशक सम्पैत[6] बुझि सहयोग करितए, सेहो तँ नहियेँ अछि। लऽ दऽ कऽ पाँच बीघा जमीनक माटि अछि, जेकरा उपजबै-ले पटौनीक संग-संग नीक बीआ, नीक खादक खगता अछि, से पुरौनिहार के अछि। जखन अपने केने होइए तखन अनकर भरोसे केते। सहजे तँ इनारेमे भाँग घोरा गेल अछि तखन तँ जीविते छी सहए बहुत भेल।"

सितम्बर 1929 ईस्वीमे भोला नाथक जन्म एकटा साधारण किसान[7] परिवारमे भेलैन। गाममे तँ लोअरे प्राइमरी धरिक स्कूल, मुदा कोस भरि हटि दोसर गाममे मिड्ल स्कूल रहइ। गौरी नाथक बहुत इच्छा रहैन जे बेटाकेँ पढ़ा-लिखा एक सुशिक्षित नागरिक बनाबी मुदा अंग्रेजी शासन रहने विचारमे बाधा रहबे करैन। पाँच बर्खक पछाइत भोला नाथकेँ पिता स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। साले-साल आगू बढ़ैत भोला नाथ सतमामे पहुँचल।

1942 ईस्वी। अंग्रेजी शासनक खिलाफ गामे-गाम आन्दोलन पसैर गेल। जइ स्कूलमे भोला नाथ पढ़ै छला, ओइ स्कूलमे पाँचटा शिक्षक, जइमे चारि गोरे तँ अपनाकेँ शिक्षक बुझि आन्दोलनसँ हटल रहला मुदा पाँचम– देवकान्त बाबू आन्दोलनमे कुदि पड़ला। जखन सौंसे देशक लोक अपन-अपन स्वतंत्रताक भागीदारी दर्ज करा रहला

---

[6] जमीनो आ श्रमो

[7] पाँच बीघाबला

अछि तखन हमहूँ तँ अही गुलाम देशक एक पढ़ल-लिखल नवयुवक छी। कहिया-ले ई जुआनी राखब। ..यएह सोचि देवकान्त बाबू अजादीक आन्दोलनमे कुदल रहैथ।

दस-बारहटा स्कूलक विद्यार्थी सेहो संग देलकैन। मुदा जहिना रामकेँ बानर-भालू संग देने रहैन तहिना देवकान्तो बाबूकेँ बाल-बोध संग देलकैन। ओना, गामे-गाम आन्दोलन पसरल रहबे करइ तँए संगीक अभाव नहियेँ रहैन।

..ओही समैमे भोला नाथ दसो-बारहो विद्यार्थीक संग अजादीक

आन्दोलनमे आगू बढ़ला।

जहिना कोनो तीर्थ-व्रत करैले लोक संगी भँजियबैए तहिना देवकान्त बाबू सेहो नजैर खिड़ा भँजियौलैन। गाममे गाँधीजी आन्दोलनक ऐगला बाहन रहैथ। ओना, गाँधीजीक असल नाओं रघुनन्दन रहैन जे 1921 ईस्वीमे गाँधीजीक नाओं सुनि आन्दोलनमे कुदल रहैथ।

1934 ईस्वीमे जबरदस भुमकम भेल छल, जहिना 1988 ईस्वीमे भेल तहूसँ नमहर। केतेको लोक मरल, केतेको घर-दुआर खसल, केतेको नीक खेत बाउलसँ बलुआहा खेत बनि गेल। ओही भुमकममे जे सहयोग-ले अन-पानि कपड़ा-लत्ता, गाममे भेटलैन, ओइ सहयोगकेँ तेते इमानदारीसँ रघुनन्दन बँटलैन जे गामक लोक 'गाँधीजी' कहए लगलैन। ओना, जेते भुमकम पीड़ित गाम छल, अकसरहाँ गामकेँ सहयोग भेटल, मुदा गामक जे अगुआ सभ छला ओ आधा-छिधा बँटबो केलैन आ आधा-छिधा अपनो रखि लेलैन।

ओना, जखन देवकान्त बाबू आनन्दोलनक संकल्प मनमे रोपि विद्यालय छोड़ि विदा भेला तखन चारू शिक्षक, जे आन्दोलनमे नइ

बढ़ला, देवकान्त बाबूकेँ मनाही केलकैन जे नइ जाउ। मुदा किनको बात नहि सुनि देवकान्त बाबू विद्यालयसँ निकैल गेला, जिनका संग दस-बारहटा विद्यार्थी सेहो देलकैन। जइमे भोला नाथ सेहो छल।

विद्यालयसँ निकैल दसो-बारहो विद्यार्थीक संग देवकान्त बाबू एकटा आमक गाछक छाहैरमे बैस विचार करए लगला। विचारमे एलैन जे जइ बाल-बोधकेँ संग नेने जा रहल छी, ओ मनसँ जा रहल अछि आकि होहामे जा रहल अछि। तँए सबहक मनक बात बुझैले एका-एकी सभकेँ पुछलखिन। उत्साहित बाल-बोध सभ हँ-मे-हँ मिला देलकैन। हँ-मे-हँ मिलिते देवकान्त बाबूक मन कलशलैन। कलशलैन ई जे ऐ जत्थाक नेतृत्व करैक भार ऊपर आबि गेल। आब तँ अपने ने विचार करए पड़त जे केतएसँ शुरू करब? ..मन ठमकलैन, ठमैकते आन्दोलनक सीमांकन केलैन। एक दिस दिल्लीक गद्दी आ दोसर दिस गाम-गामक लोकसँ लऽ कऽ खेत-पथार धरि दाबल अछि। तैठाम जँ गामक लोक गामसँ आन्दोलन शुरू नइ करत तखन तँ गामे छुटि जाएत। गामे-सँ-गाम जोड़ि ने जिलो-जबार आ राजो-देश बनल अछि।

देवकान्त बाबू दसो-बारहो आन्दोलनकारी सभकेँ संग नेने गाँधीजी माने रघुनन्दन ऐठाम पहुँचला। पनरह-बीस गोरेक संग गाँधीजी आन्दोलनेक विचार कऽ रहल छला। कियो रेलवेक पटरी उखाड़ैक विचार दइ छेलैन, तँ कियो पोस्ट ऑफिसमे आगि लगबैक, कियो गोरा-सिपाहीक रस्ताकेँ अवरूद्ध करैले पुल तोड़ैक विचार दइत रहैन…। मुदा जाबे कोनो एकमुहरी विचार नइ भऽ जाएत ताबे आगू केना बढ़ल जा सकैए। ..अही गुनधुनमे सभ कियो विचार करिते छला कि देवकान्त बाबू अपन जत्थाक संग पहुँचला।

बाल-बोधक जत्था देख सभ आन्दोलनकारी खुशियो भेला आ

छगुन्तोमे पड़ला। खुशी ई भेला जे जखन कोनो देशक बच्चा-बच्चा अपन देशक गरिमा बुझत तखन ओ देश अजादक कोन बात जे एक सुसम्पन्न देश सेहो बनबे करत। आ छगुन्तामे ई पड़ला जे बाल-बोध केना पैघ-सँ-पैघ यातना सहि सकैए! गाँधीजी देवकान्त बाबूकेँ पुछलखिन»

“देवकान्त बाबू, समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ अहीं सभ छी, केना आगूक कार्यक्रम बनाएब?”

गाँधीजीक प्रश्न सुनि देवकान्त बाबू ठमकला, मुदा ई जगह तँ कोनो प्रश्नक निर्णायक उत्तर दइबला नइ छी, अपन विचार रखैक छी, जे निर्णायक दौड़मे अछि। ..देवकान्त बाबूक नजैर तखन भोले नाथपर रहैन। हीगर-पुष्टगर भोला नाथ रहबे करए। ओना, छल बारहे-तेरहे बर्खक मुदा रहए कलशगर। सदिकाल कानो आ कन्हो उठौनहि रहै छल। देवकान्त बाबू बजला»

“जखन अंग्रेजी शासन तोड़ए चाहै छी तखन ओकर डारि-पात

सभकेँ तोड़ए पड़त। नइ तँ जहिना कोनो बर-पीपरक गाछकेँ जड़ि काटि खसा देबइ आ ओकर डारि-पात, फूल-बीआ रहबे करतै तखन तँ ओ फेर गाछ हेबे करत।”

देवकान्त बाबूक विचारपर सभ बुजुर्ग आन्दोलनकारी विचार करए लगला। अन्तो-अन्त विचार भेल जे गाँधीजीक मुहेँ बजौल गेल»

“पहिने थानाक चौकी जे चौकीदारक जिम्मामे छइ, ओकर बरदी-मुरेठा छीनि कऽ आइ जरा देब अछि।”

गाँधी जीक संग सभ कियो विदा भेला…।

गाममे दूटा चौकीदार दुनू गामेक। दुनू गोरेकेँ भाँज लगि गेल जे बरदी-मुरेठा जरबैक विचार आन्दोनकारी कऽ लेलक अछि। दुनू

चौकीदार विचारलक जे अनेरे गौआँ हाथे मारियो खाएब आ समाजिकता सेहो टुटत, तहूमे अंग्रेजी सरकार कि अपना देशसँ रूपैआ आनि दरमाहा दइए। ओकर कि कोनो नून-हरदी खाइ छिऐ। गौएँ ने आठअना-एक-रूपैआ चौकीदारी दइए जइसँ पनरह-पनरह रूपैआ दुनू गोरेकेँ दरमाहा भेटैए। खाली बरदी देने अछि आ लऽ दऽ कऽ चारि हाथ मुरेठाक कपड़ा देने अछि। ..किए ने अपन समाजिकता राखब। सएह केलक।

ओही मुरेठा जरबैक घटनामे देवकान्तो बाबू आ भोलो नाथ जहल गेला। पहिल बेर, देवकान्त बाबू सन 1942 ईस्वीमे तीन बर्ख धरि जहलमे रहला आ भोला नाथ छबे मासमे नवालिक दुआरे छुटि कऽ एला।

भोला नाथक जिनगी सन 1942 ईस्वीक आन्दोलनसँ शुरू भेल समाजसँ अपन अलग रूपमे अपन जिनगीक क्रिया-कलाप अपनौलैन। आन्दोलन बढ़ैत गेल, भोला नाथक जहल यात्रा सेहो बढ़ैत गेलैन। देशक सत्ता विदेशीसँ देशीक हाथमे आएल। आने जकाँ भोलो नाथ स्वतंत्र देशमे साँस लेलैन।

ओना, अजादीसँ पूर्ब आ 1942 ईस्वीक बीच भोला नाथ आरो तीन बेर जहल गेल छला। समाजोक बीच विचारमे बदलाव आबि चुकल छल। बदलाव ई जे अखन तक समाजमे एहेन धारणा बनल छल जे जहल जाएब पाप छी आ पापीए-ले जहल अछि, माने जे पाप करैए सएह जहल जाइए।

तीन भाए-बहिनक बीच भोला नाथ। दू बहिनक बीच जेठ भोला नाथ। पिता गौरीनाथकेँ पुश्तैनी पाँच बीघा जमीन। समयानुसार जिनगी बना परिवारकेँ अखनो ओहिना जीवित रखने छैथ जहिना बाबाक अमलदारीमे रहैन।

देशक बीच अजादीक विर्ड़ो उठल, गाम-गामक नवयुवको आ समझदारो सभ आन्दोलन कऽ रहला अछि तँए कहियो भोला नाथकेँ पिता ई नइ कहलखिन जे बौआ आन्दोलन अधला छी…।

नव उमेरक भोला नाथक मनमे बैस गेल छल जे आन्दोलनेसँ अजादियो भेटत आ अजादीक पछाइते अजाद भऽ कियो अपन जिनगीकेँ अजाद बनौत। तैसंग जहलमे ईहो आन्दोलनकारी सभसँ सीख नेने छला जे अपन देश आइए नइ बहुत दिनसँ गुलामीक शिकंजामे कसल आबि रहल अछि। गुलाम देशक आम-अवामक जिनगीकेँ तोड़ैत-तोड़ैत एते तोड़ि देल जाइए जे मनुखक जिनगीकेँ पशुवत बना दइए। जइसँ चीन-पहचीन रहिए ने जाइए।

भोला नाथ जखन उन्नैसम बर्खमे पहुँचल तखन गौरीनाथ कहलखिन»

“बौआ, आब तँ हमहूँ चारिमे सीढ़ीमे पहुँचब, दुनू बेटीक बिआह भाइये गेल, माता-पिताक जिनगीक अन्तिम क्रियो-कर्मसँ निवृत्त भाइये गेल छी, खाली तोरे बिआह-टा पछुआएल अछि।”

पिताक विचारकेँ स्वीकार करैत भोला नाथ बाजल»

“बाबू, परिवारक जे ढर्रा बनि गेल अछि तइ अनुकूल मानि गेलौं

मुदा परिवारक संग समाजोक सेवा करबे करब।”

बेटाक विचारसँ सहमत बनबैत गौरीनाथ बजला»

“जाबे जीबै छी ततबे दिन ने, मुदा पछाइत तँ अपने निमाहए पड़तह।”

ओना, अखन तक परिवारक कोनो भार भोला नाथक ऊपर नइ पड़ल छल तँए भारक-भारीपन बुझबे ने केलक आ बाजल»

"बड़ बढ़ियाँ।"

भोला नाथक बिआहो भेल।

जहलमे एते भोला नाथ बुझि गेल छल, पैघ-पैघ विचारकक विचार सुनि, जे पहिने परिवारसँ गाम, गामसँ जिला-जबार होइत राज्य-देशकेँ जानब अछि, तइले अध्ययनो आ देशाटनो जरूरी अछि। तहूमे पिता जीवित छैथ तँए अखन मौका अछि। सएह केलैन।

जहिना कोनो तीर्थ स्थानक कियो तीन-पेखैन करैत तहिना भोला नाथ सौंसे देशकेँ तीन बेर भ्रमण करैत देशक समाजिक आर्थिक अध्ययन देखियो कऽ आ किताबो पढ़ि कऽ बहुत किछु जानि चुकल छला।

दस बर्खक पछाइत माता-पिताक अन्त भेलैन। परिवारक भार भोला नाथकेँ अपना ऊपर ओइ रूपे आएल जे पिताक अमलदारीमे पाँच गोरेक परिवार छेलैन जे अखन छअ गोरेक भऽ गेल अछि।

देशक संग गामोक दशा पछुआएले छल। ने खेती-बाड़ीक समुचित बेवस्था आ ने पढ़ै-लिखैक स्कूल-कौलेजक सुविधा आ ने बर-बेमारीक इलाजक समुचित सुविधा। ओना, लहेरियासराय अस्पताल आ ठाम-ठाम स्कूलो-कौलेज खुजि गेल, मुदा आवश्यकतानुकूल नहि।

अपन पाँचो बीघा जोतसीम जमीनकेँ भोला नाथ एकठाम केलैन। माने गौंआँ सभसँ अदैल-बदैल, एकटा बोरिंग गड़ा खेतक पानिक सुविधा बनौलैन। एक जोड़ बरद आ एकटा महींस सभ दिने परिवारमे रहलैन जेकरा समुन्नत बनौलैन। समुन्नत ई जे महींसक सेवासँ कम्मो सेवामे गाइक सेवा होइ छइ, परिवारमे जेते करताइत अछि तही हिसाबसँ ने परिवारक काज ठाढ़ हएत। ..काज करैबलाक हिसाबसँ अपन काजक रूप-रेखा बना भोला नाथ काजकेँ बदलबो

केलैन आ निरमेबो केलैन।

समैक संग अपन जिनगीकेँ ताल-मेल बैसबैत परिवारक गाड़ीकेँ भोला नाथ खिंचए लगला। खेती-पथारी आकि कोनो आमदनीक जड़ि समैक अनुकूल घटौलो-बढ़ौलो जा सकैए। मुदा मनुखक जनमसँ लऽ कऽ धरम-करम धरिक जिनगियो तँ परिवारेमे सृजित होइए। तइमे भोला नाथ बाबा स्वतंत्र देशक, स्वतंत्र जिनगीक संग जीविए रहला अछि।

◌

शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016

दुरकाल

'दुरकाल'क अर्थ भेल ओहन काल जे जिनगीक अनुकूल नइ भेल। दोसर भेल 'काल' जे ने जिनगीक बेसी अनुकूल भेल आ ने बेसी प्रतिकूल भेल आ तेसर भेल 'सुकाल' जे जिनगीक अनुकूल भेल।

बहुत बर्खक पछाइत एहेन 'दुरकाल'सँ किसान सभकेँ भेँट भेलैन, किसाने-टा नहि मनुख-मात्रेकेँ भेँट भेलैन। ओना, पनरह बर्ख पहिनौं एहेन समय भेल छल, आ तइसँ पूर्व 1981 ईस्वीमे सेहो भेले छल। मनुखेक इतिहास जकाँ समैयोक इतिहास अछि, जइमे उपजा-बाड़ीसँ लऽ कऽ जिनगीक दशा तकक वृतान्त सेहो ऐछे। केते दिनपर केहेन भुमकम भेल, केहेन बरखा कहिया भेल, केहेन रौदी कहिया भेल, केहेन झाँट-बिहाड़ि कहिया आएल इत्यादि..। मुदा ई तँ समयक गति-विधि छी, हेबे करत। तहूमे बेठेकान हएत। तैबीच ईहो तँ सच ऐछे जे देशक सवा अरब लोकक पूर्वज सेहो जीवित धारमे बहैत आबिए रहला अछि। जँ से नइ जीवित अबैत रहितैथ तँ आइ हम-अहाँ केना छी? तँए दुनू संगे-संग अबितो रहल अछि आ आगूओ रहबे करब...।

दरबज्जापर बैसल शिव शंकर काका मने-मन दुनियाँक संग-संग अपन परिवारोकेँ तजबीज कैये रहल छला कि मौलाएल सरूप पहुँचल। ओना, तजबिजोक अपन-अपन ढंग अछि, कियो बैसले-

बैसल दुनू आँखि मुइन तजबीज करै छैथ, तँ कियो ओछाइनपर पड़ल-पड़ल, तहिना कियो दुनू आँखि तकैत तजबीज करै छैथ, तँ कियो दुनू हाथे काज करैत आ दुनू आँखि तकैत सेहो तँ करिते छैथ। ..शिव शंकर काका दुनू आँखि तकैत तजबीज करै छला तँए सरूप लालकेँ पहुँचते देख लेलैन। देखते बजला»

"सरूप, बहुत दिनक पछाइत नजैरपर चढ़लह अछि?"

शिव शंकर कक्काक आगूमे बैसल सरूप लाल बाजल»

"काका, की नजैरपर चढ़ब, जीब कठिन अछि! गाम छोड़ि पड़ाए पड़त।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काका ठमैक गेला। ठकमुराइत मने-मन विचार करए लगला जे मिसियो भरि सरूप लाल झूठ नइ बाजल अछि। कहलो गेल छै जे 'कंगनाकेँ देखैले ऐनाक खगता थोड़े पड़ै छइ।' ओ तँ आँखिक सोझहेमे अछि। अखनो तँ ओही बीच छी। मुदा सरूप लालक बेथित मनकेँ जँ सुथित नइ बना देबै तखन तँ आरो जे छह मासमे मरत आकि गाम छोड़ि पड़ाएत, से लगले पड़ा जाएत।

अपनाकेँ समरस बनबैत शिव शंकर काका बजला»

"सरूप, तोहूँ सभ दिन एके रंग रहि गेलह!"

'सभ दिन एके रंग' सुनि सरूप लाल चौंकल। चौंकल ई जे काका की कहि देलैन जे 'सभ दिन एके रंग रहि गेलह!' लोक केना सभ दिन एके रंग रहत? जखन बच्चासँ चपलगर होइत सियान बनैत अधवेसू बनैत बुढ़ भऽ कऽ मरि जाइए। तखन ओ एक रंग केना भेल रहत?

मुदा लगले सरूप लालक मन घुमलै। घुमिते ठमकलै। ठमकलै ई जे शिव शंकर कक्काक बात आकि विचार तँ कहियो हूसल नइ

भेलैन अछि आ ने कहियो कोनो हूसल विचारे देलैन। तखन एहेन जँ कहलैन तँ हुनको अपन विचार हेतैन। तँए पुछि लेब नीक हएत...।

सरूप लाल बाजल»

“काका, एके रंग की कहलिऐ से नीक जहाँति नइ बुझि पेलौं।”

सरूप लालक जिज्ञासा देख शिव शंकर कक्काक मन मणियेलैन। मणियाइते बजला»

“सरूप, जहिना तूँ धिया-पुतामे डरबुक छेलह तहिना अखनो छहे।”

सरूप लालक मनमे आरो ओझरी लगि गेल। तहूमे पेरासूत जकाँ दोहरी ओझरी भऽ गेलइ। पहिल ‘एकरंग’ दोसर ‘डरबुक’ जहिना धिया-पुतामे डरबुक छेलौं तहिना अखनो छीहे..!

अपन विचारो आ काजोक बुझैक लूरि अपने भेने जहिना बुझनिहारक मनमे खुशी उपकै छै तहिना सरूप लालकेँ उपकल। मनमे उपकल यएह भेल जिनगीक रंग। मुदा जखन एके मंत्रकेँ बेर-बेर जपल जाइए, तहू पाछू तँ किछ कारण हेबे करत, तँए किए ने कक्केसँ दुनू शब्दक माने पुछि लिऐन। बाजल»

“की डरबुक छी काका?”

सरूप लालक प्रश्न सुनि शिव शंकर काका मुस्कियेला। ओना, कक्काक मुस्की देख सरूप लालक मनमे शंका उठल। शंका ई उठल जे भरिसक काका कोनो डेराएल काज देखलैन तँए मुस्की मारि रहला अछि! मुदा सरूप लाल पाछू दिस नजैर खिड़ौलक तँ केतौ किछु ने देख पड़इ। लगले मनमे होइ जे देखैयोक तँ अपन-अपन नजैर होइए। कोनो चीजपर जँ हमर नजैर नइ जा रहल अछि एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे ओ चीज ऐछे नहि। ..सरूप लाल बाजल»

“काका, कनी अपन विचारकेँ फरिछा दिअ।”

‘अपन विचार फरिछा दिअ’ सुनि शिव शंकर काका मने-मन तजबीज करए लगला जे कोन रूपे फरिछाएब नीक हएत, जे बात वा विचार करए चाहब ओ नीक जकाँ ओहिना हू-बहू बुझि जाएत। बुझनिहारो तँ रंग-रंगक अछि। कियो हू-बहू ओहिना बुझनिहार अछि तँ कियो बेसियो बुझनिहार अछि आ कियो जेतबो अछि तहूसँ कम बुझैबला अछि। ..मुदा लगले मन हरिया गेलैन। हरिया ई गेलैन जे सरूप लालसँ की कोनो आइए-टा भेँट भेल अछि जे नइ चिन्है छिऐ। बेसी काल एकठाम बैस अपनो परिवारक आ गामो-समाजक गप-सप्प करिते छी...।

शिव शंकर काका बजला»

“सरूप, कोनो कि अही बेर एहेन दुरकाल समए भेल हेन जे डरे पड़ा जेबह। जिनगीमे समैसँ कहियो डर नइ करी। केहनो समए किए ने हुअए, ओकर मुकाबला करी।”

‘समैसँ मुकाबला करी’ सुनि नहाएल चिड़ै जकाँ पाँखि झाड़ि सरूप लाल बाजल»

“काका, कहलिऐ तँ बेस बात मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि शिव शंकर काका बुझि गेला जे जहिना रस्ता चलैत बटोहीकेँ आगूमे टुटल रस्ता वा खच्चा वा काँट-कुशसँ घेरल देख पएर अँटैक जाइ छइ, भरिसक तहिना सरूपो लालकेँ भऽ रहल छइ। मुदा चलैक ने रस्ता एकटा होइए, जिनगीक तँ से नइ अछि। अनेको रस्ते एक दिन, एक क्षण चलए पड़ै छइ। तँए कोन रस्तामे बाधा उपस्थित भेलै जे गामे छोड़ि पड़ाए चाहैए वा जिनगीए-सँ हाथ धोइक परिस्थिति बनि गेल छइ, ओ तँ जाबे खुलि-खरियारि कऽ नइ पुछि लेब ताबे नीक जकाँ उत्तर केना दऽ पेबइ। उत्तर तँ ओ ने भेल जे समस्याकेँ निच्चाँ

उताइर टपि जाइ। ..शिव शंकर काका बजला»

“सरूप, दुनियाँमे एहेन कोन रोग अछि जेकर दवाइ नइ छइ, आ एहेन कोन प्रश्न अछि जेकर उत्तर नइ छइ आकि एहेन कोन समस्या अछि जेकर समाधान नइ छइ।”

...ओना, जहिना सरूप लाल लहका बंशी जकाँ अन्दाजे खेल रहल

अछि तहिना शिवशंकरो काका खेला रहला अछि, तँए प्रश्नोत्तरी भेला पछाइतो प्रश्न हेराएले छैन, मुदा तैयो दुनू गोरे मने-मन गुड़-चाउर तँ खाइए रहला अछि।

तैबीच सरूप लालक मन कलशल। होइतो अहिना छै जे पात झड़ल गाछ हुअए आकि अधसूखू गाछ हुअए–अधसूखू गाछ जीवित-सुखल केर बीच बँटाएल रहैए, तइमे जेमहरसँ जीवित रहल–वसन्तक समय पबिते कलैश जाइए तहिना वसन्ती विचारसँ सेहो मन कलैशते अछि, सएह सरूप लालकेँ भेल। मन कलैशते सरूप लालक मुँहक टुसी खिलल। खिलते खिल-खिलाइक खेल खेलए चाहलक मुदा विवेकी विचार रोकि देलकै।

ओना, शिव शंकर काका सरूप लालक मुँहक टुसीसँ बुझि गेला जे सरूपक मन पाहिपर चढ़ि गेल अछि। मुदा पाहियोपर चढ़ने तँ धड़फड़ीमे पहिया नहियेँ पाबि सकै छी, किएक तँ प्रश्नकेँ बिनु पहियेने पाहिपर चढ़ाएब बचपना हएत।

तैबीच सरूप लालक मनक टुसी टुसिया कऽ नव पातक रूप पकैड़ लेलक। मुस्की दैत बाजल»

“काका, ऐ बेर भगवान सोलहन्नी बेपाट भऽ दुरकाल बना देलैन!”

ओना, शिव शंकर काकाकेँ सेहो देखलो आ भोगलो समय

छैन्हे। मुदा कालक सीमा तँ ऐछे। केकरो पेटक समस्या अछि, केकरो घरक अछि, केकरो बर-बेमारीक अछि, तँ केकरो बाल-बच्चाकेँ पढ़ै-लिखैक, तैठाम जँ फुटा कऽ नइ बुझि लेब तखन ओकर समाधानक समुचित उपाय केना हएत। ओना, तैयो शिव शंकर काका अनुभवी डॉक्टर जकाँ चेहरेसँ बेमारीकेँ अँकैत रहैथ, मुदा रोगीक बिनु हाल-चाल बुझबो अधखिजुए भेल। ओना, शिव शंकर कक्काक अपन आत्माराम गवाही दइते रहैन जे सरूप लालकेँ परिवार नमहर छइ, खेते-पथार-टा जीविका छइ, असगरूआ समांग अछि, तैपर अभागल एहेन अछि जे अनेरे चारि गोरेक परिवार आरो बढ़ा लेलक। बढ़ा ई लेलक जे दोसर बिआह सेहो कऽ लेलक। ..फेर लगले मनमे एलैन जे जे कियो बेल खाइए अपना अँतड़ी भरोसे आकि अनका भरोसे, कियो ताड़क गाछ आकि नारिकेलक गाछ रोपैए अपना हाथ-पैरक भरोसे आकि अनका भरोसे। ..शिव शंकर कक्काक मन ठमैक गेलैन। आगू बजैक हिम्मते ने होइन। मुदा जइ समस्याक जिज्ञासासँ गप-सप्प शुरू भेल ओ तँ आगूमे ऐबे ने करत। तखन मुहोँ चुप राखब नीक थोड़े हएत। ..आगू-पाछूक विचार करैत शिव शंकर काका बजला-

“दुनियाँ बड़ भारी अछि। खोजनिहार सभ अपना-अपना ताले खोजि रहला अछि, कियो मेघमे लोहापर उड़ि रहला अछि, तँ कियो धरतीमे सोना उपजा रहला अछि, तँ कियो खानसँ सोना खुनि रहला अछि। मुदा जहिना सभकेँ अपन-अपन जिनगीक बाट बनल छैन जे अपना-अपना बाटे कियो दौगियो कऽ तँ कियो रसो-रसो रमि रहला अछि, तहिना ने अपनो सबहक जिनगीक आगू टपान अछि जेकरा अपने टपब।”

शिव शंकर कक्काक विचार सुनि सरूप लालक मन झुझुअए लगल। झुझुअए ई लगल जे भरिसक हमर बात काका कातमे रखए चाहै छैथ, आ दुनियाँक बीच वौआबए चाहै छैथ! ..दुनियाँमे केकरा-ले

के अछि, मुदा अपना-ले तँ सभ अपना-अपनी-के ऐछे। अपन समस्या जाबे काकाकेँ नहि कहबैन ताबे समधानल जवाब थोड़े भेटत। बाजल»

"काका, ई साल जहिना शुरू भेल तहिना अन्तो-अन्त भऽ रहल अछि। तैबीच केना जीब?"

ओना, सरूप लाल अखनो काते-कात प्रश्नकेँ घुमा रहल अछि, मुदा शिकारी जहिना बोनमे चारू कात रस्ते-रस्ता देखैए, किसान बाधमे देखैए तहिना शिव शंकर काका सेहो देख तँ रहला अछि, मुदा घिरनीबला बंशी खेलेनिहार जकाँ, तँए मनमे कोनो औगताइ रहबे ने करैन। तहूमे मन गवाही दैन जे एहेन जे बुड़िवाण अछि जे घरमे अखैन सिदहा नइ हेतइ आकि कोनो आने वौस नइ हेतइ, तेकर ओरियान छोड़ि बात बनबैए! मुदा लगले मन रोकि कहलकैन। सरूप लालेकेँ एहेन किए बुझब। एते तँ देखते छी जे दस-एगारह गोरेक परिवार अपना बाँहु-बले चलाइए रहल अछि। सेहो जे चला रहल अछि ओ ओही बपौती खेत-पथारकेँ जोति-कोरि कऽ किने। अनका जकाँ थोड़े अछि जे मनोरंजनक रूपमे ताश खेलैत जुआक पाशा बना पान-साए-हजार जीत कऽ आनत आकि बुड़ौत। तेतबे किए, शास्त्रो-पुराण कि कोनो झूठ कहैए जे जुआ खेलब अधला छी। जँ अधला रहैत तँ कृष्णक बीचमे दुनू भैयारी कौरब-पाण्डव खेलबे करैत। जइ काजकेँ शास्त्रो-पुराण अधला नइ कहि कर्मक्षेत्र कहियौ कि कुरूक्षेत्रक लेल उचित ठहरौने छैथ, ओ अधला केना भेल जे कियो ओकरा अधला बुझि वर्जित करत?

..मनक अपने विचारमे शिव शंकर काका ओहिना ओझरा गेला जहिना केकरो अपने पाइक खगता रहनौं जोगारक पाछू रहैए आ तैबीच जँ कियो जोगारी जानि कऽ पाइक मांग करइ, आ तखन

जहिना मन तबैए तहिना तरे-तर शिव शंकर काकाकेँ सेहो हुअ लगलैन, मुदा प्रश्न तँ एहेन ऐछे जे अपन जोगार भोजनक लेल पाइयक अछि आ दोसरकेँ बर-बेमारीक इलाजक लेल, ओना बरो-बेमारीक महत केतौ-केतौ भोजनसँ कम्मो अछि आ केतौ-केतौ बेसियो, मुदा लतड़ल मनक विचारकेँ समेट शिव शंकर काका सरूप लालक मनक मलिन प्रश्नकेँ, कोनो वस्तुकेँ जहिना पत्तरक चुट्टासँ पकड़ल जाइत, तहिना चुट्टी जकाँ पाते-पात टहलैबला विचारकेँ बिच्चेमे पकड़ैत बजला»

"सरूप, मनुखो बड़ अखज होइए!"

'अखज' सुनि सरूप लाल चौंकल। चकोना होइत बाजल»

"से की कहलिऐ काका?"

सरूप लालक पिपाशु मन देख शिव शंकर कक्काक मन गवाही देलकैन जे सरूप लाल पाहिपर चढ़ि गेल। आब पहियबैमे देरी नइ हएत। बातकेँ लतड़बैत बजला»

"सरूप, एन-एच. सभपर देखबहक जे गाड़ीमे गाड़ीकेँ जे भिरानी होइ छइ, ओइमे निचेनसँ बैसल यात्री सभकेँ देखबहक जे यात्रामे अछि आ दुनू टाँगे तेना कऽ टुटि गेलै जे अपना बुते उठि कऽ ठाढ़ो ने भेल हेतइ, मुदा की ओकरो मन कहै छै जे यात्रा नइ पूरत आकि नइ पहुँचब?"

शिव शंकर कक्काक विचार सरूप लालक मनकेँ जेना बेधलक। होइतो अहिना छै जे अस्पतालमे आकि कोनो डॉक्टरक क्लिनीकमे एक रोगी दोसरक दुख देख अपनाकेँ आशान्वित होइए जे जखन ईहो जीवित जिनगी पेब सकैए तखन हमहीं किए ने पेब। माने ई जे आँगुर टुटल रोगीकेँ गट्टा टुटल रोगीकेँ देखने सबुर होइ छइ, तँ गट्टा टुटल रोगीकेँ बाँहि टुटल रोगीकेँ देखने सबुर होइ छइ। कष्ट-पीड़ा भलेँ तरे-

तर जेकरा जेते होइत हौउ, मुदा मुँहक चुहचुही थोड़बे बिलाइए। बिलेबो केना करत, दुनियोँ तँ पागलेक छी। सभ पागले अछि, मुर्ख मुरुखपनामे पागल अछि, ज्ञानी ज्ञानपनामे। तहिना कियो इमनपनामे पागल अछि, तँ कियो बे-इमनपनामे। कियो गुणपनामे पागल अछि तँ कियो अवगुणक बोनमे पगलाएल अछि। केकरो अमृत पीलाक पछाइत अमरताक बोध होइ छइ, तँ केकरो मृत मृत्तिकापन पिबैमे होइ छइ। ..नचैत मनमे शिव शंकर कक्काक नव विचार जगलैन। बजला»

"सरूप, तेहेन दुरकाल समए आबि गेल जे जएह दिन जीबै छी, सहए दिनकेँ लाख बरिस बुझि मनकेँ बुझबै छी।"

गरदैन लग तक भरल पानिक बरतनकेँ चुल्हिपर चढ़ा निच्चासँ आगिक ताउ देलासँ जहिना खौलैत पानि उधिया-उधिया ऊपर अबैत तहिना सरूप लालक मनक विचार तरसँ ऊपर आबए लगल। बाजल»

"ऐ बेरक समए, माने ई साले तेहेन कुसमय भऽ गेल जे ऐगला साल पकैड़ पएब कि नहि, से मन नइ मानि रहल अछि।"

समुद्रक गहराएल पानि देख जहिना विचार गहराइ छै तहिना सरूप लालक विचार सुनि शिव शंकर कक्काक मन गहराइते कलपलैन। कलैपते बजला»

"लोक बजैए जे एके दहारमे किदैन बहार।"

शिव शंकर कक्काक विचार सरूप लालक मनमे जेना गहराइसँ गड़ल। गड़िते बाजल»

"से की कक्का?"

सरूप लालक जिज्ञासा देख शिव शंकर कक्काक मनमे एलैन जे सरूप लालक अशियाएल मन टुटि रहल अछि, जँ अखैन संजीवनी नइ देब तँ हो-ने-हो एके बेर छाती ने कहीं चहैक कऽ टुटि जाइ। तँए

जाबे हर्ट-एटेक नइ भेल अछि तइ बीचक जे समए अछि, यएह ओकरा बँचबैक समए छी।

..जहिना मेघनादक वाणसँ लक्ष्मणकेँ भेल रहैन जे सूर्योदयसँ पहिने संजीवनी सेवन जँ नइ करौल जेतैन तँ ऐगला दिन मृत्त घोषित भाइये जइतैथ। मात्र किछु घन्टाक समए बीचक अछि...।

चितवनमे विचड़ैत शिव शंकर काका बजला»

"पहिने ई कहह सरूप, जे केते दिन घरक बुतात से काज चलि सकै छह?"

शिव शंकर कक्काक विचार सुनि सरूप लालक मन जगलै। जगिते उठलै जे झूठ-फूस नइ बाजब मुदा सतो बाजब कि असान अछि। ओहो तँ कठिन ऐछे। कठिन ई जे अखन तक अपने खेत-पथारसँ आकि आने कोनो उपायसँ उपारजन कऽ आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छिऐन। तखन घरमे की अछि आ की नइ अछि से अपने थोड़े बुझै छी। बुझियो तखने ने सकै छेलौं जखन पत्नी कहितैथ जे चाउर सठि गेल आकि गहुम सठि गेल, सेहो तँ नहियेँ कहली अछि। बाजल»

"काका, घरे छी तँए घरक कोठीमे की अछि आ की नइ अछि से केना कहब।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काका अपना विचारकेँ आगू बढ़ैसँ रोकि दोसर दिस मोड़ि लेलैन। मोड़ैत बजला»

"सरूप, समैक संग मनुखकेँ लड़ए-झगड़ए पड़ै छइ। केहनो समए आगूमे आबए, लड़िए-भिड़ कऽ ओकरा टपि सकै छी। जँ से नइ करब तँ आजुक बाधा व्योधाक शिकारी बना शिकार कए लेत। जखने व्योधाक शिकार बनब तखने जिनगी विलोप भऽ जाएत! तँए सदिकाल अपनाकेँ जिनगीक संग लड़ैत-भिड़ैत चलैत रही।"

ओना, शिव शंकर काका एके साँसमे आरो बाजए चाहै छला,

मुदा मनमे भेलैन जे कनछेदन काल बाल-बोधकेँ ओतबे गुड़ खियौल जाइए जेतेक पीड़ा कनछेदनमे होइ छइ। ई तँ नइ ने जे गुड़क चेकीए आगूमे रखि देब। ..बिसमित होइत सरूप लाल बिच्चेमे टोकलकैन»

"काका, नीक जकाँ अहाँक बात नइ बुझि पेलौं। कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर कक्काक मन पघिल गेलैन। पघिलते मनमे उठलैन जे सरूप लाल अपन जिनगीक सूत्र नइ पकैड़ पाबि रहल अछि। किसान छी, किसानी जिनगी छइ, मुदा किसानी जिनगी धड़धड़ाइत धार जकाँ केना आगू दिस चलैत रहत, भरिसक सरूप सएह नइ बुझि रहल अछि। मुदा प्रश्नो तँ जटिल अछि। ने किसानकेँ एक रंग जमीन अछि आ ने करताइते एक रंग छइ। तैठाम सामूहिक विचार करैमे थोड़े कठिनाह तँ ऐछे। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे परिवारो कि कोनो सबहक एके रंग अछि। खगतो तँ सभ परिवारकेँ सभ रंग छइ। तखन तँ भेल जे जेकरा जेते खेत छै आ जेते लोकक परिवार छइ, ओइ दुनूक बीच सामंजस करए। केना खेतमे सालो भरि उपज लागल रहत, जइसँ एकटा घर औत दोसर घरसँ खेत जाएत। तैसंग जे परिवारक श्रमशक्ति अछि ओ सभ दिन श्रमशील केना बनल रहत...। मुदा जहिना रोगसँ दाबल रोगीकेँ तत्काल दवाइक जरूरत होइ छै नइ कि रोगक जड़ि कारण बुझैक आकि दवाइयेक जड़ि कारण बुझैक। मुदा बिनु बुझनौं तँ स्थायी काज नहियेँ चलत। तखन तँ यएह ने नीक हएत जे दवाइक संग-संग रोगोक कारणक उपाय सुझौल जाए। ..मन खनहन भेलैन। खनहन होइते शिव शंकर काका बजला»

"सरूप, तोरा ते नइ ठेकान हेतह मुदा हमरा तँ भोगल अछि।"

बिच्चेमे सरूपलाल टोकि देलकैन»

"नइ बुझलौं, काका?"

शिव शंकर काका बुझबैत कहलखिन»

"1971 ईस्वीक बात छी। तइ समए जुआन रही, माने पचीस बर्खक अवस्था रहए। अखन तोहर उमेर केतेक छह?"

सरूप लाल»

"केते भेल हएत! पैंतीस-चालीसक लगधगमे हएब।"

शिव शंकर काका»

"जहिना ऐ बेर शुरूहे अखाढ़सँ जे सुपाने बरखा हुअ लगल जइसँ धानो दहा गेल आ केते लोकक घरो खसल, तहूसँ बेसी बरखा ओइ साल, 1971 ईस्वीमे भेल रहइ। सालो भरि लधनहि रहि गेल छल। ओही बेर बंगला देश पाकिस्तानसँ फुटि स्वतंत्र बंग-भाषी देश बनल। बड़ भारी लड़ाइ भेल रहइ। देशक ओहन हालत भऽ गेलै जे लोककेँ जीब कठिन भऽ गेलइ। तैठामक लोक तँ एते ठाठसँ जीविते अछि। आ अपना सभकेँ कोन भारी विपैत अछि।"

शिव शंकर कक्काक विचार सरूप लालक मनक सोगकेँ जेना थबकौलक। सोग थबैकते सरूप लाल बाजल»

"काका, मनुख ते मनुख छी किने। ओ तँ मनुखे जकाँ ने जीबए चाहत।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काका भभा कऽ हँसए लगला। जइसँ जे बात बाजए चाहै छला ओ पेटेमे कुदैत रहि गेलैन।

जहिना अबोध बच्चा माए-बापक हँसी देख अपन कानब छोड़ि हँसए लगैए तहिना सरूप लालकेँ सेहो भेल। मुदा बाल-बोध बच्चासँ भिन्न चेतन बोध होइए। बाजल»

"काका, हाथी केतबो नमहर किए ने भऽ जाए मुदा मूसकेँ जे

घर बनबैक लूरि छै से ओकरा हेतइ?"

सरूप लालक बात शिव शंकर काकाकेँ ओहिना बुझि पड़लैन जहिना एक तीर्थ स्थान गेनिहार यात्रीकेँ एके रस्ताक ठेकान करब जरूरी होइ छइ। तँए सरूप लालकेँ आगूक बन्द बाट देखा अपन जे पएर रोपैक जगह छै तैठामसँ रस्ता बनाएब सभसँ बेसी उपयुक्तो आ नीको हएत..। बजला»

"बौआ सरूप, अपना सभ किसान छी। खेतेक उपजावाड़ी ने जीविका छी। तँए अपन जीविका जहिना फुलाइत-फड़ैत चलत तहिना ने जिनगियो चलत।"

जहिना कोनो अनाड़ियो-धुनाड़ीकेँ, माने जे पारखी नइ अछि, जँ रस्तापर चमकैत लाल अन्हारोमे प्रकाशित मणि देख मनमे नव शक्तिक संचार होइ छै तहिना सरूप लालकेँ सेहो भेल। बिच्चेमे बाजल»

"कक्का, कनी खरियारि कऽ बुझा दिअ।"

सरूप लालक बात सुनि शिव शंकर काकाकेँ जेना शिव दर्शनक बोध भेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे एहनो-एहनो जगह-स्थान तँ ऐछे जेकरा बुझै-बुझबैले शब्दे ने अछि। तँए ओहन जगह वा स्थानकेँ बुझाएब तँ कनी कठिन ऐछे। मुदा लगले मन खनखना गेलैन। खनखनाइते उठलैन, कोनो भाषा आकि साहित्यमे कम शब्द अछि, आ कोनोमे बेसी अछि, तँए कि ओइ भाषा आकि साहित्यकेँ कमजोरो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जँ ओ कमजोर भेल तँ ओइ भाषा-भाषी आकि साहित्य-साहित्यिकीकेँ की कम रस भेटै छैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा लगले फेर भेलैन जे अनेरे मनकेँ वौआबै छी। असल भाषा आ साहित्य तँ ओ भेल जेकरा दिअ चाहै छिऐ ओ बुझि कऽ अपनामे ढाइर लिअए...।

मन असथिर करैत शिव शंकर काका बजला-

"बौआ सरूप, अपना जेते खेत छह, ओकर हिसाब जोड़ि कऽ देखहक जे सालमे ऐसँ केते आमदनी होइए। दाही भेने केतेपर आबि कऽ अँटकै छी वा रौदी भेने केतेपर अँटकै छी। भगवानक भरोस छोड़ि दहक जे नीक समए करबे करता, सालो भरि उपजा-बाड़ी होइते रहत, गुजर-बसर चलिते रहत।"

शिव शंकर कक्काक विचार सुनि सरूप लालक मनमे उठल जे शिव शंकर काका ठीके कहि रहला अछि। मुदा हिसाबो जोड़ब तँ कठिन ऐछे...।

बाजल»

"कक्का, कनी हिसाबसँ अपन बात कहियौ।"

'हिसाब' सुनिते शिव शंकर कक्काक मनमे खुशी ई उठलैन जे जखने लोक परिवारो आ समाजोक अपन-अपन हिसाब बुझि अपना-अपना हिसाबे चलए लगत तखने ने जिनगीक हिसाब हएत। जाबे से नइ हएत ताबे तक तँ ओ बेहिसाबेक भेल, जेकर कोनो मोल नइ छइ। ..शिव शंकर काका बजला»

"सरूप, सरकारी सेवा बहबाँइर भऽ गेल अछि, मुदा जिनगी तँ क्षण-पलमे चलैए, तँए क्षण-पलक हिसाब जखन भेटत तखने ने ओ हिसाबसँ चलि सकैए, जाबे से नइ हएत ताबे तँ जिनगी बेठेकाने बनल रहत किने।"

मुड़ी डोलबैत सरूप लाल बाजल»

"बेस कहलौं काका।"

सालक हिसाब जोड़ैत शिव शंकर काका बजला-

"सरूप, चारि मास बर्खाक समए होइए। माने अखाढ़सँ आसिन

तक। ओना बिचला दुनू मास माने सौन-भादो, ढेनुआर भेल, अखाढ़ चढ़ल भेल आ आसिन उतरल भेल। जँ खूब बरखा भेल तँ दाही होइए, बाढ़ि अबैए आ जँ नइ भेल तँ रौदी होइए। यएह भेल रौदी-दाही। मुदा बारह मासक सालमे आठ मास ऐसँ अलग अछि। जेकरा हाथमे आनब अछि। ओना, रौदियो-दाहीक समैकेँ हाथमे आनल जा सकैए, मुदा ओ कनी भरिगर अछि। जैठाम किसानी जिनगीए दबल अछि, तैठाम रंग-रंगक दबौठकेँ एके बेर नहियेँ हटौल जा सकैए मुदा बेरा-बेरी तँ हटौले जा सकैए।"

सरूपक मन जेना भरि गेल। बाजल»

"काका, अखन जाइ छी, काल्हि निचेनसँ आरो बुझब।"

◌

शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016

कलंक

पैंतीस साल हाइ स्कूलमे शिक्षकक नोकरी केला पछाइत सेवा निवृत्त भऽ जीवन लाल काका अपन गाम जगरनाथपुर आबि गेला। ओना, तीन भाँइक भैयारी छैन मुदा छोट दुनू भाँइकेँ अखन अवस्था रहने नोकरी छैन्हे। गाममे नइ रहने खेतो-पथार, कलमो-गाछी आ घरो-दुआर अनभुआर जकाँ भाइये गेल छेलैन जे गौंओं बुझै छैन, तँए अपन परिवार आकि अपन सम्पैतमे कोनो बाधा बीचमे नहियेँ भेलैन।

हजार बीघा रकबाक गाम जगरनाथपुर। जइमे बारहो वर्ण बसल अछि जइसँ परोपट्टामे जगरनाथपुर सम्पन्न गाम मानल जाइते अछि, जे आनो गामबला मानिते अछि आ गौंओं अपन गामक समृद्धताक सुखो तँ भोगिते छैथ। सुख ई जे जिनगीक अधिकांश जरूरतक काज गाममे पुरि जाइ छैन। माने ई जे दैनिक जिनगीक जरूरतक पूर्ति जँ गाममे हुअए तँ यएह ने भेल समृद्धता। ओना लोकोक जिनगी समटल ऐछे, तेकर कारण अछि जे बाहरी वातावरणक प्रवेश आन गाम जकाँ जगरनाथपुरमे नहियेँ भेल अछि।

जहिना पसारी– माने नौआ, धोबि, बड़ही इत्यादि अछि जेकर अपन-अपन बेवसाय समाजमे छइ, तहिना गामक किसानो आ बोनिहारो तँ ऐछे। बेवसायिक जाति अपन-अपन बेवसाय करिते छैथ। ओना साएसँ ऊपर किसान परिवार छैथ, मुदा सभकेँ एक-रंग

जमीनो-जत्था नहियेँ छैन। पचासो बीघाबला किसान छैथ आ तीनियोँ बीघाबला छैथ। तहिना बोनिहारोक अछि। किछु एहनो अछि जेकर घरो अनके जमीन वा सरकारी जमीनमे छै आ किछु एहनो अछि जेकरा अपन घर-घराड़ी अछि आ किछु एहनो अछि जेकरा अपन दस-पाँच कट्ठा खेतो छै आ किछु एहनो अछि जेकरा अपना खेत पथार तँ नइ छै मुदा दस-पाँच कट्ठा बर-बटाँइ सेहो करैए।

गामक जमीन सेहो एक रंगाहे अछि। एक रंगाह भेल जे ने बेसी उपरारि जमीन अछि आ ने बेसी चौरी अछि। ओना, चौरीक तँ छुतियो नइ अछि मुदा डेढ़-दू साए बीघा उपरारि अछि जइमे लोक घर-घराड़ीसँ लऽ कऽ गाछी-कलम लगौने छैथ। ..जहिना सम्पन्न गाछी-कलम अछि तहिना बँसवाड़ि सेहो ऐछे। उस्सर जमीनक छुतियो गाममे नहियेँ अछि। चालीस-बियालीसटा पोखैर सेहो अछि जे करीब साए बीघा जमीनमे अछि। पोखैरक महारपर बेसी लोकक बास छइ।

ओना गाम बरह-वर्णा छी, मुदा कोनो जाति एहेन नहि छैथ, जे जमीनेमे आकि जनसंख्येमे दोसर-तेसरसँ बेसी अगुआएल छैथ। चालीस-पचास बीघा जमीनबला पाँच गोरे छैथ जे पाँच जातिक छैथ, जहिना साए घरसँ ऊपर जातिबला चारि छैथ, जे चारि जातिमे छैथ। नोकरी-चाकरी चाहे सरकारी हौउ आकि गैरसरकारी, कम लोक करै छैथ। तहूमे ओहन लोक करै छैथ जे समंगर छैथ। सोभाविके छै जे जखन गुजर करै-जोकर अपने साधन रहत तखन लोक नोकरीए किए करत। ..ई धारणा पढ़लो-लिखल लोकमे छैन तँए ओहो सभ अपन गिरहस्तीकेँ अगुआ कियो माछ उपजबै छैथ, तँ कियो खेतीक संग गाइयो-महींस पोसै छैथ। सबहक (माने पढ़ल-लिखल) मनमे धारणा बनले छैन जे सरकारी नोकरीमे ओतबे दरमाहा भेटैए जइसँ पदक हिसाबसँ माने स्तरक हिसाबसँ जिनगी बना जीब सकै छी। तहिना बोनिहारोक धारणा बनल अछि जे जखन मेहनैते केने केतौ गुजर

करब आ जँ गाममे बारहो मास काज भेटत तखन अनेरे गाम-समाज छोड़ि आन गाम-समाजमे किए जाएब। किए गामक नाक कटेबै जे फल्लाँ गामक भिखमंगा भीख मांगए आएल अछि। की ई कहब झूठ अछि जे 'अपन घरक अदहो पेट खेनाइ आन घरक भरि पेटसँ नीक होइए।' तहूमे समाज अपन खगताक पूर्ति लेल केतेको पावैनक उपास सेहो कऽ कऽ अपन साल पुराइए लइ छैथ। ओना अपना ऐठाम किसानी जिनगी अपन समुचित रूप नइ पौने ठूठ भऽ ठूठिया जरूर गेल अछि, मुदा से जगरनाथपुरमे नइ अछि। सबहक मनक विचार एक-रंगाहे छैन जे जखन तीन साए पैंसैठो दिन माने सालो भरि मनुखो आ पशुओकेँ भोजनक संग चैनसँ रहैले घरोक जरूरत होइ छइ, तेतए तँ तीन साए पैंसैठो दिनक प्रबन्ध सेहो ने करए पड़त। तहूमे हम सभ ओइ धरतीक वासी छी जैठामक ऋषि-मुनिक परम्परा रहल अछि जे आजुक खगताक पूर्तिसँ जँ एको मुट्ठी सिदहाक चाउर काल्हि-ले रखै छी तँ अहाँ समाजमे चोर भेलिऐ। ओना ऋषि-मुनिक जिनगी, किसानी जिनगीसँ ऊपर अछि मुदा विचारमे इमान नइ छैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे जनक सन-सन महापुरुष जे हरबाहि करैत किसानी जिनगी धड़ैत जोगी-संयासी छला।

जगरनाथपुरक बोनिहारोक बीच धारणा एहेन बनले अछि जे- 'लूटि लाउ कुटि खाउ, भिनसर भने फेर जाउ।' ..जैठाम श्रमक संग जिनगी सटि कऽ चलि रहल अछि तैठाम श्रम-साध्यमे भेद केना उपस्थित हएत। हाथसँ जेते काज भऽ सकैए ओ तँ हाथक काज भेल, जेकरा करैले सभकेँ दू-दूटा छइहे। अही दुनू हाथक भरोसे ने बीत भरिक पेट अछि…।

गाम एला पछाइत जीवन लाल काका एक-पनरहिया अपना रहै-जोकर घर-दुआर बनबैमे लगौलैन। पनरह दिनक पछाइत रहैक घर देख नमहर साँस छोड़ैत मने-मन विचारलैन जे आइ धरिक जे

समाज छल आकि उपैतिक जिनगी छल ओ दुनू हेरा गेल। जखन जिनगीमे दुनू हेरा गेल, तखन आगूक जिनगी-ले रहल की जे अपनाकेँ ओहन बुझब? ..आइ धरि जीवन लाल काकाकेँ एहेन विचार मनमे कहियो ने उठल छेलैन।

जहिना तीन भाँइक भैयारीमे दुनू छोट भाए अपन-अपन परिवारक संग बाहरे छैन, तहिना दुनू बेटो अपन-अपन परिवारक संग सेहो रहिते छैन। असगरे दुनू परानी गाम आबि शेष जिनगी बितबैक विचार कैये नेने छैथ। ओना जखन मास दिन समए सेवा निवृत्ति होइमे जीवन लाल काकाकेँ रहलैन तखन चाह पिबै काल पत्नीकेँ कहने रहथिन»

“ऐ बेरक अदरा पावैनक खीरो आ गुलाब खास आमो निचेनसँ गामेमे खाएब।”

ओना अखन धरिक बाहरक अभ्यस्त जिनगी तँए अनुराधाकेँ ओते मनमे नइ गड़लैन जेते गड़क चाहिऐन। मुदा गामक नाओं सुनि बेटा-पुतोहु दिस नजैर तँ गेबे केलैन। ..बजली»

“आब चारिम-पनमे दुनू परानी ऐलौं, जाबे हूबा छल ताबे ने कमाइयोक आ भोगैयोक मनसूबा छल, मुदा ऐ अवस्थामे बिनु सहाराक जीवियो तँ नहियेँ सकै छी।”

पत्नीक थरथराइत विचार सुनि जीवन लाल काका बजला»

“हमरा-ले कोनो हर्ष-विस्मय नइ अछि, दूटा बेटा अछि, जखन गरमी मास रहतै तँ राँचीबला ऐठाम रहब आ आन छह मास दोसर बेटा लग।”

ओना जीवन लाल काका लहका बंशी जकाँ पत्नीक आगू अपन विचारकेँ रखलखिन मुदा अनुराधाकेँ घिड़नीबला बंशी जकाँ विचार मनमे घुरिया लगलैन। विचार ई घुरिया लगलैन जे ‘साँइक राज अपन

राज, बेटाक राज मुँह तक्की।’ तहूमे तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे कोन पुतोहु सासुकेँ सासु बुझैए। जहिना मनमे सोचै छी जे निचेनसँ बेटा-पुतोहु लग रहब तहिना तँ तेकर उल्टो भऽ सकैए। उल्टा होइक कारण अछि जे कियो वंशगत परिवारक सम्पैतिक संग बेटा-पुतोहुक बीच जिनगी बसर करै छैथ, तँ कियो घरसँ बाहर नोकरी-चाकरी करैत वा कोनो बेवसाइए करैत, तैबीच रहब दुनू एक केना भऽ हएत? तँए किछु-ने-किछु ओकर असर तँ पड़बे करत। माने ई जे वंशगत परिवारमे वंशगत आचार-विचार आ बेवहार वंशक बाट पकैड़ चलैए जइसँ मन-मनान्तरक कोनो कारणे ने रहैए मुदा नव जगहपर समाजिक नव परिवेश तँ रहिते अछि जइसँ जिनगीमे किछु-ने-किछु मन-मनान्तरमे भेद आबिए जाइए। मानि लिअ जे कियो अपन भारतीय साहित्यसँ एम.ए. केने छैथ, जिनका ऊपर अपन भारतक जीवन दर्शनक प्रभाव छैन, माने ई जे राम, कृष्णक संग सीता, राधा, सावित्रीक जिनगीक अनुकरण करबाक ज्ञान छैन आ कियो फ्रेंच साहित्यसँ एम.ए. केने छैथ जिनका ऊपर शारीरिक खुला जिनगीक प्रभाव छैन, तैठाम तँ ज्ञान वा डिग्रीक एक सीमा रहितो विचार आ बेवहारमे अन्तर हेबे करत। ओना, ई अन्तर अपन समाजक बीच परिवेश पाबि सेहो भाइये रहल अछि। परिवेश ई जे कियो किसानी जिनगी धारण केने छैथ आ कियो नोकरीक, दुनूक बीच काजक माने उपार्जनक लेल साध्यक अन्तर तँ आबिए जाइत अछि, जे मनुखक जिनगीक गठनमे किछु-ने-किछु जीवन-गाँठ तँ बनाइए दैत अछि, जइसँ किछु-ने-किछु दूरी बनियेँ जाइत अछि। ओना, अनुराधाक मनमे एहेन विचार नइ उठल छेलैन, हुनका मनमे ई उठल छेलैन जे अखन धरि अपना हाथे-मुट्ठीक बले जीबैत एलौं, जइसँ अखन धरिक जिनगीक रूप बनल आबि रहल अछि, ओ जखने बेटा-पुतोहुक परिवारमे रहब, जे परिवार बेटा-पुतोहुक हाथे-मुट्ठीए चलि रहल अछि,

तैठाम अँटावेशमे किछु-ने-किछु विघटन तँ हेबे करत, जखने विघटन हएत तखने ने ओइमे भेद औतइ। जखने भेद औतै तखने ने मन-भेद जगत। जखने मन-भेद जगतै तखने ने रक्का-टोकी हएत, जखने रक्का-टोकीक जन्म परिवारमे भेल तखने परिवारक रूपमे विश्रृंखलता एबे करत जइसँ कहा-सुनी होइत-होइत झगड़ा-झाँटी हएत जे आब जिनगी भरि लधल रहि जाएत! तेतबे नहि, जखने मनमे झगड़ा-झाँटीक रूप बनल रहत आ देहमे केहनो चिक्कने वस्त्र वा पेटमे भोजन रहबे करत तइसँ चेन मन थोड़े रहत। आ जखने मनमे चेन नइ रहत तखने ओ निचेनीकेँ बास थोड़े हुअए देत। ..मनमे उठिते अनुराधाक मन औना गेलैन। आगूक कोनो निचेनी जिनगीक बास नहि देख भकमोड़पर मन भकुअए लगलैन।

भकुआइत अनुराधाक मन ठमकल गाछमे जहिना कोनो मुड़ीमे कलशक नव टुसाक आगमन होइते गाछकेँ नव जिनगी भेटैक आशा जगै छै तहिना भेलैन। भेलैन ई जे दुनू परानीक उमेर साइठ-बासैठ बर्खक भेल अछि, अखन तकक जिनगीक जे अभ्यास बनल आबि रहल अछि ओकरा उमेर की करतै। शर्कसमे देखै छिऐ जे लोक हाथीकेँ उठा लइए ओहो तँ ओकरा अभ्यासेसँ ने भेल रहै छै जे जखन हाथीक बच्चा छल ओकरो महींसिक पड़ू जकाँ दुनू हाथे उठौल जाइए, तहिना ने हाथियोकेँ होइए। बच्चामे दुनूक अन्तरे की रहैए। कनी-मनी रहैए। मुदा उठौनिहार तँ ओइसँ बीस रहबे करैए। तखन जे जिनगी जीबैत आबि रहल छी ओ भारीए केना भेल जे केकरो ऐठाम जा कऽ रहब। ओह! मनमे अनेरे जिनगीक सोग पकड़ैए..! अनेरे बुझै छी जे जिनगी भारी अछि तँए केकरो सहारामे रहब जरूरी अछि। जखन बाप-पुरखाक देल घर-घराड़ीक संग वाड़ी-फुलवाड़ी सेहो ऐछे–माने गाछी-कलम, तखन जे अनेरे कोनो बेटा लगमे रहि कऽ मरब आ बिजलीसँ जरौल जाएब, जइमे ने एको मुट्ठी छाउर हएत जे गयामे

पिण्ड पड़त, आ ने एक्को टुकड़ी हड्डीए बँचत जे गंगा लाभ हएत..?

अनुराधाक घुरियाइत मनमे एकटा विचार जगलैन, विचार जगलैन जे भगवान रामक संग सती सावित्री सीता केना राज-पाट छोड़ि बोने-बोन चौदह बर्ख धरि जिनगी जीलैन! जखन साठि-बासैठ बर्खक उमेर भाइये गेल अछि, सत्तैर-पचहत्तैर बर्खमे सभ मरैए, हमहूँ दुनू परानी मरब, तइले मनहानि करब नीक नहि।

..अनुराधा बजली»

“जहिना सभ दिन दुनू गोरे अपन मनक मन्दिर बना जिनगी जीलौं तहिना आगूओ जीब। बड़-बेसी हएत तँ एतबे ने हएत जे दरमाहा अधिया जाएत, मुदा ईहो तँ हेबे करत जे जिनगी भरि जे कमा-कमा तोरा गाड़लौं, ओहो तोरा तँ भोटबे करत। तैसंग बाप-पुरखाक ओहन सम्पैत ऐछे जइसँ केते पुरखाक जिनगी चलल छैन। तँए अनेरे किए केतौ आनठाम जा कऽ रहब, अपने गाममे रहब, आब केतौ ने जाएब।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन लाल कक्काक मनमे सेहो अपन पैंतीस सालसँ पूर्वक स्मृति मानस पटलपर उतैर धड़-धड़ा कऽ घेर लेलकैन। घेरते मनमे माता-पिताक संग अपन विद्यालय सेहो उतैर एलैन। वएह गाम कहियौ आकि मातृभूमि जैठामक विद्यालयमे पढ़ि अपना-कें सक्षम शिक्षक बनि पैंतीस बर्ख धरि विद्या दान केलौं। कहब जे दरमाहा तरे ने विद्या बेचलौं। बेचलौं कहाँ! जैठाम रहलिऐ तैठामक अन-पानि खेलिऐ-पीलिऐ। ने कहियो केकरो ट्यूशन पढ़ा फीस लेलिऐ आ ने परीक्षामे नम्बर घुसका-फुसका एको पाइ लेलिऐ आ ने केकरो ऐठाम रहि खेलिऐ-पीलिऐ। अपन डेरा बना, अपने परिवार जकाँ जीबो केलिऐ आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ैबो-लिखेबो केलिऐ...।

पत्नीक विचारकेँ शिरोधार्य करैत जीवन लाल काका बजला»

"मन कि दुनू गोरेक बाँटल अछि। जएह मन अहाँक अछि, सएह ने अपनो अछि।"

सिनेह भरल पतिक विचार सुनि, जहिना बिढ़नी वा मधुमाछी अपन छत्तासँ निकैल एके सुड़कुनियाँमे ओतै जा कऽ अँटकैए जेतए ओ अपन बास-भूमि बुझि अपन चसनीक चास चलियबैए, तहिना अनुराधा जिनगीक एके सुड़कुनियाँमे पैंतालीस बर्खं पूर्बक बिऔहती मड़बापर पहुँच गेली। बजली»

"मन अछि की नइ जे पहिल दिन केना चितवनक चितचोर जकाँ दुनू गोरेक चित्त मिलल रहए आ अही मुहसँ जिनगीक संगी बनबक शपथ खेने रही।"

पत्नीक मधुआएल विचार सुनि जीवन लाल कक्काक मन ठहकलैन, ठहकलैन ई जे संगीक संगपनाक बात कहि मनमे मोहैन चलबए चाहि रहली अछि, संगपना तँ तेहेन निमाहली अछि जे मने कहैत हेतैन आ अपनो मन देखैए। कहू जे ई कोन बड़ भारी बात अछि जे ऐ चिनमय संसारक सभ चिनमय छी तखन जे सालमे पचीसो दिन उपासक बहन्ने भूखे टटौलैन से केते नीक भेल। भाय! जँ बनौनिहार अपन पेट साधि सकैए तँ खेनिहार तँ पानियोँ पीब कऽ चौबीस घन्टाकेँ के कहए जे चौबीसो दिन तक जीब सकैए। खएर.., ई तँ अपने मन ने गवाही दइए मुदा घरवाली घरबलाक बीच झगड़ा भेने अनेरे ने तेसर आबि घरकेँ लारत-चारत तँए मनेमे रखलौं। तैसंग ईहो विचार ने रहल जे अपन जन्मभूमि नइ छी, अपन जन्मभूमिमे नँगटो जिनगी लोक धारण केने रहैए (माने बच्चामे) मुदा ऐठामक जन्म तँ हमर शिक्षकक रूपमे भेल अछि, दोसर गाम छी, ऐठामक तँ जे परवासीक गरिमा अछि ओ तँ निमाहए पड़त किने। जहिना कलमक[8] अपन गरिमा छइ,

[8] लेखनीक

तहिना ने वाणी-विचारीक सेहो हेबा चाही। तँए आनठाम मुँहपर कनी ताला लगा कऽ लोककेँ रहए पड़ै छइ...।

जीवन लाल काका बजला»

"छोड़ू बितलाहा बात। तीस बर्खक ऐगला योजना बनाउ। जे आगू तीस साल केना रहब। एते नफ्फा तँ हमरा कमाईसँ अहाँकेँ भेबे कएल अछि किने जे पढ़ि कऽ मास्टर बनलौं हम आ हमरो मास्टरनी बिनु पढ़नौं बनि गेलौं अहाँ, तँए ऐगला तीस बर्खक मास्टरी सेहो अहींकेँ करए पड़त।"

सेवा निवृत्तिक पछाइत जीवन लाल काका अपन जन्मभूमिमे अपन समाधि सेहो बनबए चाहि रहला अछि। मुदा जिनगीक बदलैत स्वरूप देख थकथका जाइथ। थकथकी ई रहैन जे दुनियाँमे पैघ-सँ-पैघ देशो अछि, माने जनसंख्योंक हिसाबसँ आ क्षेत्रफलोक हिसाबसँ, आ छोट-सँ-छोटो देश तँ ऐछे, जेकर अपन सभ किछु छइ, माने जीबैक साधन, रहैक नीक बास, साहित्य, भाषा, संस्कृति इत्यादि। जेकर रक्षा करत तखने ने ओ अपन अस्तित्व बनौने रहत। ऐठाम दुनियाँ दू विचारधारामे बहि रहल अछि। जेकर बीचक जे धारा छै ओ बहबाँइर भऽ गेल अछि। जेकर संख्या एक आ साएक बीच अनठानबे अछि। गामो-समाज ओही रूपमे अछि। अतीतक जे विचार पद्धति रहल ओ सर्वोत्कृष्ट ऐछे मुदा आइ जहिना दुनियाँक दूरी समटा रहल अछि, तहिना तँ वैचारिक दूरी बढ़ियो रहल अछि। जेकर फलाफल परिवार तक पहुँच गेल अछि..!

विचारक दुनियाँमे जीवन लाल कक्काक मन वौआ रहल छैन मुदा समाजक बीच कोनो गर नइ देख रहल छैथ जे एक शिक्षित जनक सेवा गाममे की होइ। ..मन अपना दिस नचलैन। नचिते देखलैन, अपन सभ किछु तँ समाजेक बीच ने रहल, जिनगी भरि उपैत

केलौं, अपनो आ परिवारोक जहाँ धरि बनि पएल केलौं, गामक तँ किछु लेबो नहियेँ केलिऐ। मुदा जइ समाजसँ तीस-पैंतीस साल पूर्ब, निकैल बाहर गेलौं, तहिया आ औझुका समाजक बीचक जे परिवेश बनि गेल अछि, तइमे प्रवेश करब, बाल-बोधक खेल थोड़े छी।

जीवन लाल कक्काक मन कखनो ठाढ़ होनि तँ कखनो झूकि जानि तँ कखनो खसि पड़ैन।

पतिकेँ विचार-मग्न देख पड़ोसीक तीन अँगना अनुराधा टहैल ऐली। रंग-बिरंगक हवा-पानि तँ समाजमे चलिते रहैए। तइ बीचमे एकटा एहेन समाचार भेट गेलैन जे अनुराधाक मने उजगुजा गेलैन। दौड़ल आँगन आबि धियान-मग्न पतिकेँ देख लपैट कऽ बजली»

"भकुआएले रहब कि गाम-घरक हवो-पानि बुझब?"

'हवा-पानि' सुनि जीवन लाल काका अकबकेला। अकबकेला ई जे ने किछु हवामे देखै छिऐ आ ने पानिमे, तखन एहेन भाषा केतएसँ अपने गढ़ि लेली! तँए नीक हएत जे अपन प्रश्न पुछि पत्नीए-सँ उत्तर पाबी। बजला»

"अहाँ तँ देखते छी जे हम केतौ नइ गेलौं अछि, तखन हवा-पानि केना बुझब।"

अपन मास्टरी सुतरैत देख अनुराधा गंभीर शिक्षक जकाँ बजली»

"की कहब, अनर्थ होइए! गाम कलंकित बनैए।"

रंगमंचपर जहिना भावुक कलाकार भावना व्यक्त करैए तहिना अनुराधा अपन मनक अफसोच व्यक्त करए लगली। मुदा दर्शकसँ बेसी कलाकार जहिना अपने भावनामे वौआ अपन प्रदर्शन शुरू करए लगैए, तहिना अनुराधा समाजक कलंकक रूप देखए लगली। मुदा समाधान ओते असान अछि जे लगले बुझि जेती। किन्तु अखन

शिक्षकक रूपमे ने पतिक आगू छैथ, किछु-ने-किछु तँ निर्णय करए पड़तैन। तथापि प्रश्न तँ बेकतीक वा परिवारिक नहि, समाजिक छी, जे समाजकेँ करब छइ। मुदा जइ समाजमे ने कोनो सार्वजनिक भूमि अछि जैठाम बैसार हएत आ ने दसगरदा कोनो काज अछि, एकर माने ई नइ जे ओहन काज नइ अछि जे लोक नइ करै छैथ, दुर्गापूजा दसगरदा सेहो होइए आ परिवारे-परिवारे सेहो होइते अछि।

..दसगरदा भूमिक माने भेल दसक जिनगीक संग चलब। मुदा छोट-सँ-छोट प्रश्न किए ने हौउ आकि पैघ-सँ-पैघ हौउ, गामो-समाज रंग-रंगक अछि, जइमे समाजक कलंकक मुद्दाक रंग-रंगक समाधान सेहो ऐछे। मुदा केहेन समाजमे केहेन मुद्दाक समाधान अछि, ओ निर्भर करैत ओइ ठामक समाजक विचारधारापर।

..परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे शराबी शराब पीब अपन माए-बहिनकेँ माए-बहिन बुझैए मुदा दोसराक माए-बहिनकेँ वेश्या बुझैए। एहेन प्रश्नक विचार कोन रूपे होय..?

अपन चिन्तनधाराकेँ रोकैत जीवन लाल काका बजला»

"सोझे अलंकार सुनौने जाइ छी आ हम माने बुझबे ने करै छी, तँए कनी सोझरा कऽ बाजू जे की बात छिऐ।"

अखन धरि जे अनुराधाक मन विचारमे औनाइत गुर-घावक खिल जकाँ टहकै छेलैन से मुहसँ फुटैक चाप पाबि फुरलैन। अफसोस करैत बजली»

"अपने पड़ोसी मुनेसरा अछि ने, ओकर बेटी हाटपर सँ अबै छेलै, बाटमे गामेक एकटा छौड़ा कोनो करम बाँकी नइ रखलकै। से अहीं कहू जे एहेन होइ।"

अपन भार हटबैत अनुराधा पतिपर फेकलैन, मुदा परिवारसँ आगूक समाजक घटना छी। ओना अपन-अपन परिवारमे तँ सभकेँ

किछु-ने-किछु विचार करैक अधिकार तँ छैन्हे। मनमे अबैत-अबैत जीवन लाल काकाकेँ ओहिना भेलैन जहिना कोनो सितारवादनक स्वरक मिलानी करै काल बगलक कोनो लोहार नहाइपर ठाँहि-दे घन मारैए। ..मनमे उठलैन अपन पैंतीस सालक शिक्षण जिनगीमे जइ नैतिक समाजक पाठ बच्चाकेँ पढ़ौलिऐ ओ समाजसँ केते हटल अछि? इज्जत स्वरूप जइ वृत्तिकेँ नैतिक रूपमे विचारक दुनियाँमे मानि रहल छी ओ समाजमे केते अनुकूल अछि आ केते प्रतिकूल ई तँ समाजक दायित्व बनिते अछि किने। मुदा एक समाजिक प्राणी होइक नाते अपनो किछु-ने-किछु दायित्व तँ बनिते अछि…।

फुसलबैत पत्नीकेँ फुस-फुसा कऽ कानक जड़िमे जीवन लाल काका किदैन कहए लगलखिन जे कानमे पड़िते अनुराधाराक मुँह कखनो चिकुरि जानि तँ कखनो सिकुड़ि जाइन।

फुसलबैत-फुसलबैत जीवन लाल काका फुसला कऽ कहलखिन»

“पैंतीस सालसँ जे गाम छोड़ि कऽ चलि गेल छेलौं से पुन: पैंतीस सालक पछाइत एलौं हेन, तैबीच धारक पानियों केते बहि गेल हएत आ पोखैरो-इनार साले-साले भरलो हएत आ सुखाएलो हएत, तँए असथिरसँ पहिने समाजमे बैसब तखन ने पएर पसारब।”

जीवनलाल काका जइ मने बाजल होथि मुदा अनुराधाकेँ नीक लगलैन। नीक लगिते मुँह विहुँसलैन।

विहुँसैत पत्नीक मुँह देख जीवन लाल काका बजला»

“हँ! सएह कहलौं।”

◌

शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016

अड़िकट्टा चोर

बजार जाइत रही कि टोलक सटले पछबरिया बाधमे लड़ूलाल आ मंगलकेँ ललका-ललकी करैत देखलिऐ। ललका-ललकीसँ बुझि पड़ल जे दुनू गोरे कहीं मारि-पीट ने कऽ लिअए। मनमे भेल जे रस्ता धेने जा रहल छी सोझहामे दुनू गोरे गारि-गरौवैल कऽ रहल अछि, समाज होइक नाते अपनो किछु दायित्व बनैए। जँ कोनो छोट-छीन बात हेतइ तँ किए ने दुनू गोरेसँ बुझि शान्तिसँ बुझा झगड़ा छोड़ा दिऐ। ..फेर भेल जे गाममे सदिकाल तँ किछु-ने-किछु बाते लोक झगड़ा करिते रहैए, सएह किछु हेतइ। मुदा फेर लगले भेल जे जँ चुपे-चाप चलि जाएब तखन दुनू गोरे मने-मन कहबे करत जे फल्लाँ देख कऽ अनठा देलक। ..साइकिल रस्तेपर ठाढ़ कऽ उतैर दुनू गोरे-लग पहुँचलौं।

हमरा देखते मंगलक मनमे जेना हूबा बढ़ल। जोरसँ ललैक कऽ बाजल»

“अड़िकट्टा चोर कहीं-के!”

मंगलक बात सुनि एते तँ बुझिए गेलिऐ जे खेतमे लड़ूलालक हर बहैए, हाथमे कोदारि छइहे, आड़ि बनबैत-बनबैत कहीं आड़िए केतौ काटि नेने होइ। ओना, गामक सभ जनैत जे लड़ूलाल तेहेन अड़िकट्टा अछि जे सभ खेत ओकर सबूतक हिसाबे नम्हरे छइ।

दुनू गोरेक बीच बचाव करैत बजलौं»

“अनेरे अहाँ सभ काज छोड़ि कोन बातमे लागल छी..!”

कोनो नमहर बात-विचार हौउ कि काज, खधियबैत छोटो बनौल जाइए, आ छोटोकेँ धकियबैत नम्हरो तँ बनौले जा सकैए। यएह सोचि बाजल छेलौं। ओना नजैर दौड़ा कऽ देख नेने रहिऐ जे हाथ भरि चौड़गर खेतक आड़ि दुनू गोरेक बीचक अछि। जेकरा लड़ूलाल कोदारिक नमहर छअ भरि काटि खेतमे माटि फेक रहल छेलइ। जँ ओइ हिसाबे सौंसे आड़ि काटल जाए तँ लड़ूलालक आड़ि खेत बनि जाएत आ मंगलक जे बीत भरि अछि, ओतबे आड़ि रहत। खेतोक आड़ि तँ आड़ि छी। केतौ लोक खत्ता खुनि हत्ता बना खेत अड़ियबै छैथ तँ केतौ पजेबाक छहरदेबाली जोड़ि तँ केतौ हाथ भरिक तँ केतौ बीत भरि आड़ि बनबै छैथ! एकर माने ईहो नइ जे हत्ते, छहरदेवालीए आकि माटियेक आड़ि देलासँ खेत अड़ियौल जाइए। चर-चाँचरमे एकटा खरहियो गाड़ि लोक खेत अड़िऐबते छैथ।

हमरा बातक कोनो असर दुनू गोरेमे सँ किनको नइ भेल। ओहिना ललका-ललकी होइते रहल। बीचमे चुप-चाप ठाढ़ भऽ गेलौं। कोनो पनचैतीमे जँ पंचक मुँह बन्न भऽ गेल तँ वादी-प्रतिवादीक जोश बढ़िते छइ। ओना मुँह बन्न करैक कारण भेल जे जहिना लड़ूलालकेँ अपन दियादीक पाँच समांगक ताउ अछि तहिना मंगलोकेँ दसटा समाजक लोकक सहयोग छइहे। तँए दुनू गोरेकेँ अपन-अपन मनक गरमी छइ। मुदा समांगक ताउ हुअए आकि समाजक, ओ तँ केतौ कोनो कारणेपर भिड़ैए। तँए मूल भेल ओ समस्या। ..ऐठाम समस्या अछि जे बीत भरि जमीन मंगलोक अछि आ लड़ूलालोक, जइसँ दुनू गोरेक खेतक परदो अछि, बरसातमे पानियों अँटकैए आ चलबा-जोकर रस्तो अछि। मनुख कि कोनो चरिचकिया गाड़ी छी जे बिना

सड़के नइ चलत। मनुख तँ मनुख छी मात्र दू पएरबला। तहू पैरमे नमतीए बेसी अछि। ..आँखिक सोझमे देख रहल छी जे जइ हिसाबसँ लड़ूलाल आड़ि काटि खेत बना रहल अछि तइ हिसाबे मंगलेक सोलहन्नी आड़ि बँचल रहत आ लड़ूलालक खेत बनि जाएत।

दुनू गोरेक ललका-ललकीसँ बुझि पड़ए जे मारा-मारी, पटका-पटकी हेबे करत। अपने मनमे हुअ लगल जे अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ि गेलौं। जँ दुनू गोरे मारा-मारी करए लगत तखन बीचमे पड़ि छोड़ौल हएत। ‘कुत्ता केकरो किदैन देखए कोय।’ जेकर चीज नष्ट भऽ रहल अछि, जँ अपने नइ बँचौत तँ बँचतै केना। मुदा जेकरा धकिया-धकिया खाइक आदत लगि गेल छइ, ओकरो मन केना बरजल जाएत। मुदा तैयो अपन जान बँचबैत बजलौं»

“हमहूँ बजारक काजे धड़फड़ाएल छी, अखन अहूँ सभ औगता कऽ एहेन काज नइ कऽ लिअ जे होत-सँ-होताँग भऽ जाए।”

बुझि पड़ल जे जेना दुनू गोरेक मनपर विचारक किछु दाब पड़ल, मुदा जहिना वक्ता बजैले कोनो बातक तैयारी मनमे रोपने रहै छैथ आ मंचपर चाहे बेसी विचारक जेड़मे विचरलाहा हेरा जानि वा मन हटने विचारो हटि जानि वा मनक धकमकीमे ससैर कऽ निच्चाँ[9] खसि पड़ैन जइसँ मंचपर मुँह तँ तत्काल बन्न भऽ जाइ छैन मुदा मनक लुस-फुसी तँ लुसफुसाइते रहै छैन जे मंचसँ उतैर काने-कान दोसरकेँ कहए लगै छथिन तहिना दुनू गोरेक बीच बुझि पड़ल। ..सह देख सहैट कऽ आगू बढ़ि बजलौं»

“जहिना लड़ूलाल हमरा लेखे छैथ तहिना मंगल अहूँ छी, तँए हम चाहब जे एक समाजमे एकठाम घर अछि, मनुख मनुखे लग रहत, दुनू गोरे शान्तिसँ रहू। भेल तँ एतेटा दुनियाँमे एक बीत आड़ि;

[9] विचारक स्तरसँ निच्चाँ, मनमे।

तइले अनेरे समाजिकतो आ पड़ोसीपनो समाप्त कऽ लेब तखन रहै जाएब केतए।"

ओना ई सोचि बजलौं जे जाधैर समाजिक आ पड़ोसीपनक सम्बन्ध नइ बनल रहत ताधैर अड़िया चोरि आ पड़ोसियाक छिनरपन पकड़ाएब असान अछि। जँ घरे लग एहेन लोकक बास रहत तहन जे गति हेबा चाही सएह ने हएत..! तइ बिच्चेमे मंगल बाजल»

"भाय साहैब, सझिया आड़ि काटि लडूलाल खेत बना रहला अछि आ..?"

मंगलक बात सुनि मनमे ठहकल जे बड़ियाकेँ वाण नइ लगै छइ, गाममे कोन एहेन खेत लडूलालक छैन जे किछु-ने-किछु धकिया, सवैया-ड्योढ़ा नमहर नइ छैन। मुदा मनमे ईहो हुअए जे अपने दुनू गोरेकेँ शान्तिसँ रहैले कहै छिऐन आ जँ दोसर-तेसर बात बाजि आरो धधका दिऐ सेहो नीक नइ। ..फेर हुअए जे धधकाएबो तँ जरूरीए अछि, मंगलक आड़ि काटि लडूलाल खेतमे मिलौने जाइए, तेतबे बातसँ थोड़े अड़िकट्टा चोरि बन्न भऽ जाएत। काल्हि फेर दोसर ठाम झंझट हएत। ई तँ यज्ञमे छोड़ल घोड़ा जकाँ अछि, तँए समाजमे केतौ-ने-केतौ ओकरा रोकि जाबे पाछू मुहेँ नइ धकेलब ताबे अड़िकटिया बन्न केना हएत। जड़िमे खेतक आड़ि अछि, जखन ओ समाजक मुद्दा बनत तखन विचारमे अड़ि-कटिया शुरू हएत, जखन ओहूसँ आगू बढ़त तँ बेवहारमे हएत! तखन?

..लगले मनमे उठल एक अतीतक भेल दोसर बीर्तमान अछि, आ भविस तँ भेल जे एहेन चोइर मेटा जाए। तँए नीक हएत जे एकटा समय निर्धारित कऽ घटनाकेँ बान्हि दिऐ जइसँ बीचक समय सभकेँ सोचै-विचारैक अवसर भेटने जँ विचारमे लोच अबैन तखन तँ सुगमतासँ समाधान कएल जा सकैए। बजलौं»

"हमहूँ समैपर बैंक नइ जाएब तँ बैंकक काज ने हएत, जइसँ जुआनक खाली भऽ जाएब। जीतन भायकेँ तीन साए रूपैयाक काज पुराएब अछि।"

ओना मंगलक मनक मनसूबा सेहो कम नइ बुझि पड़ए, दोसर दिस लडूलालक तँ खेलहे मन छैन, तँए दुनू गोरेमे सुमा-सुमीक लक्षण देखैमे अबिते रहए। आगिक केहनो लहाश किए ने हौउ, हवा ने सह देत, मुदा पानिकेँ तँ ओकरा मिझबैक ओकाइत छइहे...।

लडूलाल बाजल»

"अखन जेना आड़ि बनबै छी तेना जँ बना नै लेब तँ एकटा काजो ते पछुआएले रहत आ जँ अखन भऽ जाइए ते हर बहिते अछि एक रंग सिरौरो पड़ि जाएत आ चौकीमे गोला फुटि चौकियाइयो जाएत।"

लडूलालक बातसँ बुझि पड़ल जे आड़ि काटैक विचार अखनो मनमे छैन्हे। बीचमे शान्ति बनबैत-बनबैत अपनो ओहने अड़िकट्टा विचारक संग भऽ जाइ, सेहो केहेन हएत..!

मंगल दिस नजैर उठा बजलौं»

"की मंगल?"

मंगल जेना हमरे विचारक प्रतिक्षा करैत रहल हुअए तहिना आकि की, बाजल»

"जखन तीनू गोरेक बीच विचार भऽ गेल जे शान्त बना रहू, जँ से नहि तँ कियो दुनियाँ-ले लड़ैए आ हम अपन खेतक आड़ियो नइ बँचा पाबी तखन की गामे गोबरबै-ले जनम नेने छी।"

अपना स्पष्ट बुझि पड़ल जे दुनू गोरेक विचार दू सिरापर छै, तखन बीचमे डाँइर देब असान तँ नहियेँ अछि। मुदा जँ साढ़े तीन

हाथक मनुखकेँ दू हाथ ऊपर आ डेढ़ हाथ निच्चाँमे नइ डोराडोरि पहिराएब तखन गरदैनमे आकि पैरक घुट्ठीए-मे थोड़े डाँड़क डोराडोरि पहिरौल जाएत।

..मन ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे जन-जनक बोलक समूह भाषा जे जन-जनक कण्ठसँ निकैल जन-भाषाक रूपमे ठाढ़ भेल ओ केना मने-मन मनतर जपैत धन-भाषा बनि गेल! ..जाबे मन-भाषा नइ बनत ताबे विचार-भाषा केना बनि सकैए, आ जाबे विचार-भाषामे समरूपता नइ औत ताबे समाज समरस बनि समरथ केना बनत, आ जाबे समरथ नइ बनत ताबे समृद्ध समाज मनक रौतुका नीनभेर सुतलाहाक सपनाक सिबा आरो भऽ की सकैए? ..मनमे गर उठल, गर ई उठल जे जीतन भायकेँ परिवारमे चाउर सठि गेल छैन, तँए काल्हि दुपहरका सिदहाक जरूरत छैन, जेकरासँ लेता तेकरे कहि देबै जे भाय रूपैआ आनए बैंक विदा भेलौं रस्तामे मंगल आ लडूलाल अड़िकट झगड़ा करै छला, तहूमे मंगल लडूलालकेँ मुहेँपर अड़िकट्टा चोर कहि देने छेलैन। मुँहपर चोट लगने जहिना गहुमन साँपक फुफकार होइए तहिना लडूलालक रहैन। मुदा मंगलो तँ सोझमे अपन अहित देखते रहए। दुनियाँ जनैए जे केना दू खेतक आड़ि दुनू खेतक मध्य सीमाक बीचसँ आगू बढ़ैए, तैठाम जँ एक-अड़िया अपन सोलहन्नी आड़ि काटि खेत बना लेता तँ तत्काल एते तँ भाइये जाइए जे आड़ि भरि खेत ससैर आगू बढ़ि गेल। अहिना ने छबे-छबे खेत[10] आ करे-करे पेटो[11] बढ़ैए। तँए, जँ ओकरा सीमामे बान्हि नहि राखल जाएत तँ ओ बन्हाएल केना रहत। समाजमे विचारक अनुकूल जाबे बेवस्थित ढंगसँ आ वैचारिक आड़िसँ अड़िया बेवहारिक रूपमे नइ आनल जाएत ताबे बेवस्थित

[10] धन

[11] भूखो

समाजक महल केना ठाढ़ हएत? ..साँप छुछुनैरक पइर मनमे उठि गेल। साँप जहिना छुछुनैर मुहसँ पकैड़ लइए आ तखन जे गति ओकर होइ छै, सहए हुअ लगल। कोनो घटनाकेँ या तँ समएमे बान्हि बीचक समए उपयोगमे लऽ आबी, या विचारक रस्तासँ विचारि बिचड़न करी, जँ से नइ भऽ अपन हक-हिस्सा-ले समाजमे टकराव हुअए, तैठामसँ अपनाकेँ कोनो बहन्ने कटि निकैल जाइ ओहो तँ समाजमे बाधके भेल। तँए मन मानैले तैयारे ने हुअए जे दुनू गोरेकेँ झगड़ैत छोड़ि चलि जाइ। मुदा महाभारत जकाँ सुइयाक-नोक भरि जमीनक अड़ारि अछि। तैबीच जीबछ[12] सेहो हर ठाढ़ कऽ पेना नेनहि पहुँच गेल। पहुँचबो केना ने करैत, खेतक आड़िपर अराड़िक झगड़ा हएत आ हरबाह कहतै हम किछु देखबे ने केलौं, एहेन बिसवास तँ ओहने मनुखमे सम्भव अछि जे झड़-मनुख अछि। ..मंगल दिस आँखि उठा बजलौं»

"भाय मंगल, जहिना हमरा लेखे तूँ छह तहिना लडूलाल भाय सेहो छैथ मुदा दुनू समाज भेलह। समाजमे हमरो किछु दायित्व अछि तँए ऐठामसँ झगड़ा टारि जाएबो उचित नइ बुझै छी। तँए चाहब जे दुनू गोरे अपन रस्ता अपने ताकि शान्तिसँ निबटारा कऽ लएह।"

ओना लडूलालक मन सेहो खसल। खसैक कारण भेल रौदमे सक्कत आड़ि काटब, मुदा मनमे एते तँ उठिते रहै जे एक बीत खेत बढ़ने केते लाभ होइ छइ, तैठाम एक बीत जानि कऽ गमाएब अपने धनहानि ने करब। ..लडूलाल बाजल»

"जखन अधहा आड़ि बनिए गेल तखन बँचलोहो जे सोझ भऽ जाएत तँ नीके हएत किने?"

ओना, मने-मन लडूलालक विचार सुनि हँसी लगए मुदा

[12] लडूलालक हार जोतनिहार

हँसियोक तँ अपन-अपन जगहक अनुकूल मोल छइ। ऐठाम तँ से किछु ने अछि, एतबे अछि जे समाजक बीच नीक विचारक रस्ता बनउ। ऐठाम जँ हँसीकेँ उड़ा देब तँ ओ सड़ैन करैत नमहर घाओ बनि विस्फोटक बनि जाएत! ..जहिना विषम परिस्थितिमे रस्ता हेरा जाइ छै तहिना होइत रहए। की करब, की नइ करब से मनमे एबे ने करए। एबो केना करैत जीबछ सहजे भिनसरसँ दुपहर तकक हर जोतैक बोइन लैये नेने अछि, बुधियो हरबाहे छइ, जँ कहीं ओही बोनि तरे लड़ूलालक पक्ष लऽ तैयार भऽ जाए, तहूमे हरबाही पेना हाथेमे छइ, तैपर सँ रौदमे हर जोतै छल मनो गरमाएल हेतइ। जखने लड़ूलालकेँ चारिटा हाथ-पैरक शक्ति औतै तखने ओहो हाथ चलाइए देत। मंगल असगर दूटा हाथ-पैरक रहि जाएत, मारि खेबे करत! ..मन तरपए लगल। तड़पैत मनमे उठल- आइ धरि अहिना ने होइत आएल अछि जे जे कियो समाजक शुभेक्षु भेला अछि, ओ शुभ रहितो अशुभ जकाँ मारि खाइत एला अछि। मुदा हम तँ तेहाला छी, शान्तिसँ समाजक उठान चाहै छी। समाजक उठानमे खुट्टाक जरूरत होइते छै; तइले तँ ठाढ़ हुअ पड़त। मुदा जहिना तेहाला समाजक निर्माणकर्ता होइ छैथ, तहिना तँ दू गोरेक झगड़ामे मारियो तँ दुनू दिसक खेबे करै छैथ। मन चमकल। चमकल ई जे किए ने जीबछेसँ पुछि लिऐ, ओ तँ सभ दिन दुनू खेतकेँ देखतो आएल अछि आ हरो जोतैत आएल अछि, संगे ईहो परीक्षा तँ भाइये जाएत जे खेत जोतैबला खेतक मर्म केते बुझि रहल अछि। ..जीबछकेँ कहलिऐ»

“जीबछ भाय, अहाँकेँ तँ सभ किछ देखल अछि, अहाँक की विचार?”

ओना जीबछ आ मंगलक बीच भीतरिया मिलान। भितरिया मिलानक कारण ई जे गामक अधिकांश लोक संकल्पित भेल छैथ जे जाबे गामसँ रोग-वियाधि नइ हटाएब ताबे गामक उठान नइ भऽ

सकैए। ..जीबछ बाजल»

“हरबाहि करै छी, एकर माने ई नइ जे समाजक नीक-बेजाएकेँ कोठीक कान्हपर रखि दिऐ, समाजमे छी, जँ समाजक नीक-बेजाइक विचार समाज नइ करत, तँ समाज केहेन बनत।”

जीबछक बात सुनि जहिना हूबा भेल तहिना मंगलक मनसूबा सेहो सक्कत भेल, मुदा लड़ूलाल जेना हूबघटू भऽ गेला। हूबधटूक कारण भेल, ऐठाम जँ विचारमे विराम नइ देब तँ.. ।

तैबीच एकटा घसकटनी बाधसँ घासक बोझ माथपर नेनहि मंगल आ लड़ूलालक रक्का-टोकी सुनि नेने छेली। ओ गामपर जा स्त्रीगणक बीच चालि देलैन जे मंगलोकेँ आ लड़ूलालोकेँ आड़िपर झगड़ा होइए। ‘झगड़ा’क नाओं सुनि धियो-पूतो आ मरदो-मरदी एक्के-दुइए पहुँचए लगल... ।

..लड़ूलाल बाजल»

“रहैक अछि समाजेमे। मनुख छी तँए बिनु समाजे जीब नइ सकै छी। समाज जे कहता मानि लेब।”

बजलौं»

“अखन जे सोझमे छैथ सएह ने अखन समाजक भार वहन करता, तँए नीक हएत जे दुनू गोरे अपनेमे पहिने एक-बटू भऽ एकबट भऽ जाउ। समाजेक अंग ने अहूँ दुनू गोरे भेलिऐ।”

लड़ूलाल बाजल»

“मंगलोकेँ पुछि लियौ।”

मंगल बाजल»

“जाबे खेतक आड़िपर नइ आएल छेलौं, परोछमे जे आड़ि कटि गेल, ओ तँ आब घुमि कऽ नहियेँ औत। टुटल हड्डी जकाँ जोड़ेबे करत,

जे पहिलुका रूप नहियेँ पकड़त। मुदा जँ लड़ूलाल समाजक बीच आबए चाहै छैथ तँ हमहूँ ने समाजे भेलिऐ।”

मंगलक विचार सुनि मन फुला गेल। ओना बैंकक काज छुटिए गेल मुदा एते रच्छ रहल जे झगड़ौए जगहपर जीतनो भाय आ चौलूओ साहुसँ भेँट भेल। दुनू गोरेकेँ मुखात्रे[13] करौने अपनो काजकेँ भेल सन बुझलौं।

◌

शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016

[13] 50 किलो चाउरक

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ◌ ◌ ◌



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-8-3

जगदीश प्रसाद मण्डल

बीरांगना



बीरांगना

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-81-936422-2-1

दाम : ₹ 251/-
सर्वाधिकार सुरक्षित © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

BIRANGANA
Collection of Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

समर्पण भाव

कुवृत्ति वृत्ति चित्र बनि-बनि
रूप समाज सजैए।
दृश्य-अदृश्य, अदृश्य दृष्टिक
रूप धार धारण करैए।
धरिते रूप धार धरिया
दृश्य महार सजैए।
धार-महार महैर-महि
रंग समाज चढ़ए लगैए।
चढ़िते रंग समाज संग
निखाइर रूप निरखैए।
परखनिहारो निखैर-परैख
गति-विधि समाज देखैए।
जेहने गति-विधि समाजक
तेहने शीलो-शूल बनैए।
मन मन्दिर बैस पुजारी
पूजा यज्ञक पूर्ति करैए।

...

कथाक सत्तैर

भोरक सपना

तीन बजे भोर, दिनक पहिल-पहर, रातिक अन्तिम-पहरक नीनमे रतन लाल सपना देखए लगल। सपनाक अन्त होइत-होइत नीन टुटि गेलइ। नीनो एहेन टुटान टुटलै जे दोहरा कऽ फेर एलै नहि। ओना, रतन लाल सुरुज उगैत ओछाइनसँ उठैत अछि, मुदा आइ पहिनहि छोड़ि देलक।

जखन रतन लाल सपना देखलक तखनसँ वएह मनमे उठि-उठि घुरियाइ छइ। ओना भोरुए-पहर रतन लाल दादीकेँ कहलक-

"दादी, सपना देखलौं।"

मालक थैर बनबैत सुधनी काकी पुछलखिन-

"बौआ, सपना रातिमे देखलह की भोरमे?"

रतन लाल बाजल-

"तीन बजे भोरमे।"

सुधनी दादी रतन लालक प्रश्नकेँ बिनु विचारने बजली-

"रातिक सपना फुसि होइ छइ।"

कहि दादी अपन काजमे लगि गेली। दादीक उत्तरसँ रतन लालक मन जेते मानक चाही से नइ मानलक, तँए प्रश्न मनमे घुरियाइते रहइ। घुरियाइत मनमे रतन लालकेँ कखनो खुशियो होइ आ कखनो मन ठमैको जाइ। ठमकबो केना ने करिते, सम्भव-असम्भव दुनू रहइ। बेवहारिक रूपमे असम्भव रहइ, किए तँ नौमाक विद्यार्थी

रतन लाल अपन क्लासक अधोसँ बेसी विद्यार्थीसँ नीचाँ अपन सीमाकेँ बुझैत। अठमाक वार्षिक परीक्षामे पैंतीसमा स्थान भेल रहइ। पचास विद्यार्थीमे एक्कैसटा सवजेक्टली पास भेल छल, एक विषयमे उन्नैसटा फेल रहइ, दसटा दू विषयमे फेल केने छल। दू विषय तक फेल केलहा विद्यार्थी पास भेल छल। माने दू विषयमे फेल तकक विद्यार्थीकेँ पास मानल गेल जइसँ नौमासँ दसमामे गेल। अठमा, नौमा, दसमा क्लासक परीक्षा स्कूले शिक्षकक देख-रेखमे होइत, तँए केकरो फेल नहि कएल जाइत। एगारहमाक परीक्षा सरकारी देख-रेखमे हएत, माने बोर्ड परीक्षा।

ओना रतन लाल पहिनहिसँ बुझैत, माने परीक्षा दइसँ पहिने, जे गणितमे फेल करबे करब। मुदा सोल्होअना फेल होइक निआशा मनमे नइ रहइ। तेकर कारण रहै जे तीनू क्लास–माने अठमा, नौमा आ दसमामे विद्यार्थीकेँ आगू बढ़ैसँ नहि रोकल जाइ छइ। तैसंग ईहो रहै जे जहू विषयमे विद्यार्थी फेल रहल, तेकरो पासे मानल जाइत अछि। तँए विद्यार्थीक बीच प्रतियोगिता नइ रहै, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। एकसँ लऽ कऽ पाँच तकक विद्यार्थी जे छल ओइमे कट्टम-कट होइते छल। पोजीशनक फेरा-फेरी होइते छल। माने ई जे अठमामे जेना पोजीशन बनल ओ नौमामे उनैट-पुनैट गेल। जे प्रथम छल ओ तेसरपर चलि गेल आ जे दोसर छल ओ प्रथमपर चलि आएल। जे तेसरपर छल ओ पाँचमपर चलि गेल आ पाँचम तेसरपर चलि आएल। सवजेक्टली पास केनिहारोमे बढ़ोत्तरी भेल। अठमामे पनरहटा सवजेक्टली पास केने छल, जे नौमामे आबि एक्कैसटा भऽ गेल। तैसंग ईहो भेल जे तीन विषयमे जे फेल–अठमासँ नौमा जाइमे–केने छल ओहो आगू बढ़ि दू विषयपर आबि गेल। मोटा-मोटी अठमासँ नीक रिजल्ट नौमामे भेल।

एक लग्गी सूर्ज ऊपर उठि चुकल छला। जखनसँ रतन लालक

नीन टुटल तखनेसँ भोरका सपना मनमे उड़ी-बीड़ी लगा देने छेलइ। दादीक उत्तरसँ जे संतोष हेबा चाही से रतन लालकेँ नहि भेल छल। अनकासँ पुछबो नीक नहि बुझैत, घरक बात छी। मन गवाही दइये दइ जे कियो सपनामे राजो-रानी बनब देखैए आ कियो भगतो-भिखारी, मुदा होइ की छइ। अखन स्कूलमे अधपक्कू आम जकाँ ने छी जे ने पकले खाइ-जोकर छी आ ने काँचे। ने सवजेक्टली पासे केने छी आ ने सवजेक्टली फेले केने छी, तँए छाँटी-छुँटी विद्यार्थीक कतारमे तँ छीहे। मुदा सपना तँ से नइ अछि। सपना अछि जे छाँट लगल चाउर सन छाँटल विद्यार्थीक रिजल्ट जकाँ अपनो रिजल्ट हएत।

दरबज्जाक आगूमे कनैल फूलक गाछतर विधुआएल मने रतन लाल बाबाक प्रतीक्षामे बैस रस्ता दिस देखैत जे कखन बाबा औता, जे पुछबैन। ओना, शुभकान्त बाबा पतरा-पोथी नइ गुनै छैथ मुदा साँझू-पहरमे रामायणिक पाठ तँ करबे करै छैथ।

दस लग्गा आगूए बाबाकेँ अबैत देख रतन लालक विधुआएल मन विहुँसल। विहुँसैक कारण भेलै जे नीक-सँ-नीको आ अधला-सँ-अधलो सपनाक बात बुझबे करब...। बाबाकेँ लगमे अबिते रतन लाल बाजल-

"बाबा, अहींक बाटा-बाटीमे घन्टा भरिसँ बैसल छी।"

रतन लालक चेहरापर नजैर दऽ, चट-दे फेरैत नजरिये शुभकान्त बाबा बजला-

"किए हमरा दुआरे बैसल छह। तोरा ते बुझले छह जे लग्गी भरि सुर्ज जखन माथपर चढ़ै छैथ तखन अपन दुनियाँ देख-सुनि घरपर अबै छी।"

रतन लाल-

"भोरमे सपना देखलौं, तखैनसँ नीनो टुटले अछि आ मनमे जेना

उड़ी-बीड़ी सेहो लागल अछि।"

रतन लालक बात सुनि शुभकान्त बाबा प्रश्नक सम्बन्धमे हूँ हूँ किछु ने बजला। पाशा पलैट बजला-

"अही-ले एते वियाकुल छह!"

रतन लाल चुपे रहल। मुस्की दैत बाबा फेर बजला-

"अच्छा, पहिने चाह पीयाबह। ताबे हाथ-पएर धोइ कऽ पानि-पान सेहो केने अबै छी।"

अपन व्याकुलताक मेटाइक बात सुनि रतन लालक मन सेहो व्यग्र भेल। व्यग्र ई जे बाबा थाकल आएल छैथ तँए पहिने हुनके चाह पीआएब नीक हएत...।

चाहक ओरियानमे रतन लाल आँगन गेल आ हाथ-पएर धोइले शुभकान्त बाबा कलपर गेला।

काजक पानि दुनूक देहपर सवार भऽ सवारी कसने। रतन लालक मन टँगा गेल जे जँ एको रत्ती चाह दब हएत तँ ओते रत्ती बाबोक मन दब हेतैन। जेते मन दब हेतैन तेते विचारो दब हेतैन। जेते विचार दब हेतैन तेते प्रश्नक उत्तरो दब हएत। तँए जेते नीक चाह बनत तेते नीक फलो भेटत...।

दोसर दिस शुभकान्तो बाबाक मन घुमए लगलैन जे जँ बुढ़-पुरान रहैत तँ फुसियाइयो दैतिऐ मुदा बाल-बोधकेँ फुसियाएब विचारक हत्या करब हएत! सभसँ पहिने जे बच्चा 'अ' सीखलक वएह 'अ' ने ओकर जिनगीक आखर बनि अन्तो-अन्त मनमे गड़ले रहै छइ।

जहाँ शुभकान्त बाबा दरबज्जापर पहुँचला कि रतनलालो चाह नेने पहुँच गेल। चाह देखते बाबा पुछलखिन-

"की सपना देखलह? सपना छिऐ तोहूमे रैतुका मोसीमक, तँए

झूठ-फूस नइ बजिहह!"

बाल-बोध रतन लाल, तँए झूठ-फूससँ भेँट-घाँट नहि, जुआन-जहानकेँ ने एहेन अभ्यास भऽ जाइ छै जे अपनो ने बुझि पबैए जे झूठ बजै छी की सत... । रतन लाल बाजल-

"बाबा जड़िए-सँ कहै छी।"

'जड़ि' सुनिते बाबाकेँ राधाक नख-सीखक वर्णन मन पड़ि गेलैन। मुस्कियाइत बजला-

"रातिमे देखलह आकि भोरहरबामे?"

रतन लाल बाजल-

"ओछाइनपर सँ उठलौं तँ तीन बाजि कऽ तीन मिनट भेल छल।"

'तीन बाजि कऽ तीन मिनट' राति भेल आकि दिन, से शुभकान्त बाबाक मनमे फरिछेबे ने करैन, रातिक अन्तिम-पहर तीन बाजब भेल आकि दिनक पहिल-पहर भेल? राति मानल जाए की दिन? ओना, तीन बाजि कऽ तीनियेँ मिनट भेल छल। सवा तीन, साढ़े तीन तक तँ तीनेक नाँगैर भेल!

..अपनाकेँ ओझराइत देख बाबा पुछलखिन-

"की सभ देखलह सपनामे?"

रतन लाल-

"देखलौं जे वार्षिक परीक्षामे हमर रिजल्ट सभसँ नीक भेल।"

बाह-बाही दैत बाबा बजला-

"भोरका सपना छी, तँए नीक फल हेबे करतह। बुढ़-पुरानक सपना रहैत तँ काल्पनिको कहल जा सकै छल। तँए आइए-सँ जी-जाँति पढ़ैमे लगि जाह। सभ साकार हेतह।"

रतन लाल-

"जी-जाँति की भेल बाबा?"

शुभकान्त बाबा अपन दुनू आँखि रतन लालक दुनू आँखिमे गाड़ैत बजला-

"मनकेँ गाड़ि कऽ।"

❑

शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016

बालमण्डली

दिनक बेर टगिते नवटोलीक पाँचो बच्चा, तीन लड़की आ दू लड़का, जे पाँच-सँ-सात बर्खक अछि, ओही मुइलहा बान्हपर आबि खेलैत अछि जे कहियो गामक शीर्ष छल। ओना, बेर टगब बारहो मासक अपन-अपन घड़ीक समयक हिसाबसँ अछि, मुदा बाल-बोध तँ वएह ने बुझत जे आब आँगनसँ निकलै-जोकर समै भऽ गेल, माने समैमे मीठपन आबि रहल अछि।

पाँचो बच्चा, ओहिना आँगनसँ निकैल अपनामे गप-सप्प करैत खेलैले विदा होएत, माने टोलसँ हटि, खुलल आसमानक निच्चाँमे अपन खेलैक जगह बनौने अछि। जहिना पजेबा बनौनिहार पजेबा पाथि पसारि-पसारि सुखैले रखैत तहिना जिनगीक अपन अरमान पूरा करैक दुनियाँ ओहो बालमण्डल बुझैत। पाँचो बच्चाक मनक दल बालमण्डल भेल।

ओना मण्डलियो मण्डले छी। भूमण्डलो छी प्रमण्डलो छी, अनुमण्डलो छी, वायुमण्डलो छी आ बालमण्डलो तँ छीहे। मुदा से नहि, भूमण्डलक सबा लग्गी नमतियो आ सबा लग्गी चौड़ाइयो पुरना सड़कक एक अंश भेल। ओना ऐठाम दुनू बात उठि सकैए जे जखन सबा लग्गी नमतियो आ सबा लग्गी चौड़ाइयो अछि तखन दुनू भेल आकि एकटा नमती भेल आ दोसर चौड़ी? मुदा ऐठाम से बात नइ अछि, पुरना सड़कक जे नमती आ चौड़ी अछि ओकरे नमती आ चौड़ीक मानि अछि।

पौने दू धुरसँ कनी कम्मे जगह माने डेढ़ धुरसँ बेसी आ पौने दू धुरसँ तीन कनमा कम। जैपर कठही गाड़ी चलल सड़क जकाँ ठेहुन भरि गरदा-बौल नहि, मरने सड़क बनि गेल, तँए आवा-जाही कम भेने गरदो-बौल कम। ओना पहिने माने पूर्वमे ईहो सड़क सपना देखै छल जे देशेक सड़क हमहूँ छी, हमरो दिन कहियो-ने-कहियो फिरबे करत। जहिया दिन फिरत तहिया हमहूँ चमकबे करब। हमरो ऊपर एक दिन ईंटा चढ़त, हमहूँ खरंजासँ आभूषित हएब, सीमटी-बौल आ गिट्टी पेब पक्की सड़कक रूपमे सेवाक अवसर हमरो भेटत। भाय किछु छी तँ सड़क छी किने, सड़कक दूभियो एहेन अँखिगर-कन्हगर होइए जे अपना ऊपर चलैत बटोहीकेँ परखबो तँ करिते अछि जे कोन बटोही सासुर जा रहल अछि आ कोन बटोही परदेश जा रहल अछि। तहिना कोन बटोहिनी सासुरसँ नैहर हलसैत-फुलसैत जा रहली अछि आ कोन रूसि कऽ पड़ाएल जा रहली अछि।

नवटोलीक ओ सड़क ओही दिनसँ मरनासन भेल जइ दिन गामक बीचो-बीच बड़का सड़क–एन.एच.–बनि गेल। ओना गाम-घरक बनाबटोमे अन्तर एबे कएल अछि। मोटा-मोटी यएह जे गामक ओभरवाइलिंग भऽ गेल। ऊँचगर-चौड़गर सड़क बनने पड़ोसियो अनगौंआँ भऽ गेल।

अपन जगह पाँचो बच्चाकेँ ठेकनाएल रहबे करै, पाँचो अपन-अपन जगह पकैड़ अँगना-घर बनबए लगल। हाथेक बाढ़ैनसँ गरदा बहारि-बहारि अँगनाक सीमा बनौलक। पाँचो अपना काजमे एतेक व्यस्त भऽ गेल जे केकरो-सँ-केकरो गप-सप्प करैक पलखैत नहि। सभ मगन, सभ व्यस्त। जहिना मातृभूमि-प्रेमी मातृतुल्य बुझि मातृभूमिसँ प्रेम करैत तँ दोसर नारीक रूप देखैत, तहिना मने-मन ईहो पाँचो विचार करैत जे पाँचो घरवासी गामेक भेलौं तँए रहैक घर, भानस करैक घर, पढ़ै-लिखैक घर सभ किछु ने गामेमे बनबए पड़त।

ई तँ नइ ने जे जेमहर पड़ोसियाक विद्यार्थी बैस कऽ पढ़ैए तेम्हरे अपना भानसक घरक खिड़की बना देबइ जे भरि दिन चुल्हिक धुआँसँ ओकर मन कड़ुआएल रहतै। ..तँए देख-सुनि कऽ ने सभटा करए पड़त। मुदा ई भेल नव गामक वासीक गप, ऐठाम तँ गृहवासू घरवासी छी। एक दिनक नहि, सभ दिनक अछि, पुश्त-दर-पुश्तक अछि।

पाँचो बच्चा पहिने अपन-अपन सीमा पड़ोसियाक बीच बनौलक। ठेकनौले आँगन, ठेकनौले सीमा, तँए केकरो बीच आड़ि-मेड़क कहा-कही किए हएत। काजक देह चोरौल जे बेसी फोकटिया रहल ओ ने छड़ैप कऽ बेसी हँसोंथए चाहैए। मुदा ऐठाम तँ कम्मे रहने बेसी लाभक अछि। कनी घरे-दुआर ने छोट हएत, मुदा काजोक अराम तँ ओत्ते बेसी हेबे करत।

ओना पाँचो बच्चाकेँ पँच-पँचे कनमाक आँगन भेल, मुदा सबहक एकरंग रहने किए कियो बुझत जे कम अछि। कम कि बेसी तँ ओइठाम देख पड़ैत जैठाम दू रंग रहैत, मुदा जैठाम एकरंग रहत तैठाम किए कियो अपनाकेँ बेसी बुझत आ कियो अपनाकेँ कम बुझत। धारमे हेलल सुगर जहिना कतबाहिसँ हिया बीचमे जाइते पाछू उनैट कऽ तकैए जे जे हिया चलल छेलौं, से ने तँ टेँढ़ भेल, तहिना पाँचो बच्चा सड़कपर बनौल अपन-अपन आँगनमे ठाढ़ भऽ हिया-हिया देखए लगल जे केतौ अँगनाक छहरदेवाली वा टाटे-फड़क ने तँ टेँढ़ भेल अछि। एक-आधठाम जे घरौदा[1] टेँढ़ो अछि, ओहूले दोसरक जरूरतो नहियेँ अछि। किएक तँ दुनियाँमे के एहेन अछि जे अपन अँगना टेँढ़ बनौत। जखने आँगन टेँढ़ हएत तखने सोझ चलनौं टेँढ़े हएत। तैसंग जखने आँगन टेँढ़ हेतै तखने अँगनाक घरो टेँढ़ हेतै आ जखने घर टेँढ़ हेतै तखने घरवासी सेहो टेँढ़ हेबे करत। जखने

[1] चिक्कन कएल माटिक घेरा

पड़ोसिया घरवासी टेँढ़ हएत तखने ओ बास झगड़ा-दनक अड्डा बनबे करत। मुदा से नहि, पाँचो बच्चाक मण्डलीक समझ अछि जे नवटोली कोनो आइयेक गाम नइ छी, अदौक गाम छी। सभ दिन जहिना, पीढ़ी-दर-पीढ़ी एकठाम बैस शान्तिसँ रहैत एला अछि तहिना ने बालो-मण्डली सभ दिनसँ अबैत रहल अछि।

अँगनाक सीमानक कोणे-काणी सभ अपन-अपन देख घर बनबए लगल। सभकेँ निरमित काजक धड़फड़ी रहबे करइ, तँए जहिना झगड़ा-दनसँ परहेज रखने अछि जे ऐसँ जिनगीक काज बाधित होइए, तहिना फालतू गप-सप करैक समैकेँ सेहो बुझैत। बुझबो केना ने करैत, दिन उगले ने घर-अँगना बना ओइमे बास करैत हँसैत जिनगी सेहो बितबैक छइ। अखन तँ बाले-बोध अछि तँए किए बिआह-दुरागमन आकि नोकरी-चाकरीक बात सोचत।

पाँचोकेँ अपन-अपन आँगन-घर, चुल्हि-चिनवार बना, खाइत-पीबैत, रामलला करैत जिनगी जीबैक छइ। चिक्कन गरदा-माटिक घर-आँगन, आँगुरेसँ लिखए लगल। जेकरा जहिना होइ से तहिना अपन-अपन आँगुर चलबए लगल। केकरो दिस कियो ने तकैत। तकबो किए करत, सभकेँ ने अपन-अपन परिवारक निमरजना करैक छइ। एक सूरे सभ अपन-अपन आँगुरसँ लिखबो करै आ हल्ला होइ दुआरे मने-मन काल्हुका सबकक ओरियान सेहो करए लगल।

दिन अँचल। पाँचो एके-बेर एक दोसर दिस तकलक। अपन-अपन पाठ सभकेँ कण्ठस्थ तँए सबहक मनक रोहैन रोहनियाँ आम जकाँ सिनुराएल रहबे करइ। ओना पाँचोमे कनी थतमती सेहो आबि गेलइ। थतमती ई एलै जे पाँचोक बीच एक सबक रहने, सबहक मनेमे रहैए, मुदा सभ दिनक सबक बेरा-बेरी, सभ दिन सभसँ शुरू होइत। तँए कौल्हुका मिलानी करैत औझुका केकर पार हएत। मुदा तोहूमे

बेसी देरी नहियेँ भेल, किएक तँ चक्कीक चालि सभकेँ बुझले रहै जे के केकरा पछाइत आ के केकरासँ पहिने होएत।

अपना-अपना अँगनामे पाँचो ठाढ़ भऽ गेल। एक स्वरे पाँचो बाजल-

"अपना अँगनामे की सभ देखै छीही?"

प्रश्नक उत्तर दैत सभ बाजल-

"सभ किछ देखै छी, किछ ने देखै छी।"

ओना, पाँचोक बीच एकरूपताक बाढ़ि सेहो रहइ। एकरूपता-बाढ़ि ई जे कियो चारि सालमे स्कूलक मुँह देखलक आ कियो पाँच सालमे, मुदा अ, आ सीखलक संगे। तँए बाढ़िक हिसाबसँ एक दोसरक पुछबैयो भेल आ सुनबैयो, तसफीया तँ पाँचो मील कऽ करत। एक दोसरकेँ पुछलक-

"अपना घरमे की सभ देखै छीही?"

दोसर उत्तर देलक-

"अन-पानि, धन-धानसँ भरल देखै छी।"

खुदरा-खुदरी तँ निर्णय नइ करत। पुछै आ सुनैक अधिकार ने सभकेँ छै मुदा निर्णय तँ ओकाति देख कऽ करए पड़ै छइ। जे पूर्वजक सृजनमे सभ किछु धरोहर अछि, तइ सृजनकर्ताकेँ हवाइ जहाज आ एटम-बम बनबैक लूरि किए ने भेलैन..! देखा-देखी दुनियाँ चलैए, राड़ी-डबहाड़ी फूल तँ अकास मार्गसँ चलिते अछि भलेँ गुलाब अड़हुल धरतीए धेने किए ने रहि जाए...।

फेर दोसर तेसरकेँ पुछलक-

"अपन घरमे की-की देखै छेँ?"

तेसर जवाब देलक-

"सरस्वतीक फोटो भरल देखै छी मुदा लछमीक छुतियो ने..!"

फेर तेसर-चारिमकेँ पुछलक-

"तोँ की अपना घर देखै छेँ?"

चारिम जवाब देलक-

"लछमीक ढेरी देखै छी, सरस्वतीक छुतियो ने..!"

फेर चारिम पाँचमकेँ पुछलक-

"अपना घर की देखै छेँ?"

पाँचम जवाब देलक-

"मुहेँ-मुहेँ, काने-कान सुनै छी जे लक्ष्मी-सरस्वतीक बीच सदिकाल खट-पट होइए, तँए दुनूसँ हटले रही।"

पाँचम पुछलक पहिलकेँ-

"तूँ की देखलेँ?"

"सभ फूसि!"

दोसर मुरदा जकाँ खोंचारैत पुछलक-

"से केना?"

प्रश्न सुनि पहिल आगू-पाछू ताकए लगल जे बजैकाल तँ बजा गेल जे 'सभ फूसि', मुदा जेते सत अछि तइसँ की कम फूसि अछि? केते सत-फूसिक नाँगैर पकैड़ टहलब, तइसँ नीक ने जे खेले उसारि दिऐ। बाजल-

"औझुका उसरपन आ कौल्हुका समर्पण ई जे अपना घर की खगता छौ?"

पहिलक समर्पणक संग चारू बाजल-

"अपना घर की खगता छौ?"

पहिल बाजल-

“घर-अँगना उसारै जाइ-जो।”

हाँइ-हाँइ कऽ पाँचो अपन घर-अँगना ओहिना बना देलक जेना एलापर देखने छल। पाँचो टोल दिस विदा भेल। ओना छी पाँचो एके टोलक, मुदा पाँचोक घर फुट-फुट रहने आगू-पाछू भइये गेल अछि।

आँगनक मुँह लग ठाढ़ होइत पहिल बाजल-

“खुरपी लेमे की बेंट, हमरा तोरा काल्हिये भेँट।”

पहिलक जवाब ईहो चारू ओहिना देलक-

“खुरपी लेमेँ की बेंट, हमरा तोरा काल्हिये भेँट।”

❑

शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016

धोखा केतए भेल

तिला-सकराँतिक दिन, बेरुका समए। दहाएल गाम जेहने नवानक नवाबी आ तेहने तिला-सकराँतिक तिल-तिल आगू घुसकैत चलब, कैं झाड़ि देइते छइ। तेहने तिला-सकराँतिक बेरुका समए। आत्मानन्द असगरे अपना कोठरीमे बैसल अपन जिनगीकेँ निहारिये रहल छल कि मुहसँ फुटलै-

“धोखा केतए भेल?”

छह मास पूर्व आत्मानन्द दसम क्लाससँ एगारहममे आएल छल। आन-आन विषयक संग अर्थशास्त्रक विद्यार्थी सेहो आत्मानन्द। एगारहम क्लासमे प्रवेश करिते अपन विषयमे घुसिया लगल। होइते अहिना छै जे जे जइ विषयक अध्ययन करैत ओ ओही विषयक ने रसो चुसैत अछि, सएह आत्मानन्दकेँ सेहो भेल। ओना पैछला सालक बाढ़ि, आठ बीघाबला किसानक बेटा–आत्मानन्द–क मनमे सेहो बाढ़ि अनलक। अपन ऐगला जिनगीक सम्बन्धमे विचार करए लगल जे आगूक जिनगी केहेन बनाएब। तेकर कारण भेल जे एकाएक आत्मानन्दक मनमे उपकल जे परिवारमे बिआह करै जोगकर बहिन अछि, एकटा घरो लटकले अछि जे कखनो खसि सकैए। जेकर खगता बहिनक बिआहसँ पहिनहि हएत। तैसंग अपनो सोल्हैनी भार पितेकेँ देने छिऐन। दिन-राति पढ़ितो नहियेँ छी। जँ अहीमे सँ किछु समए निकालि अपन भार उठबैमे लगा लेब तँ एते बचत पिताकेँ हेबे करतैन। ..अपनो भार परिवारमे उठा लेब, तैयो तँ कम नइ भेल।

अपना दिस आत्मानन्दकेँ देखते नन्दनवनमे फूल-फुलाएल। फुलाएल ई जे जँ वुद्धदेव बिनु दोसरक मदैत नेने भगवान बनि गेला, एकलब्य धनुर्धर बनि गेला तखन अपने...। मनमे तूफान जकाँ आत्मानन्दकेँ उठि गेल। उठि गेल ई जे जइ परिवारमे बेटीक बिआह आ रहैक घर खसल रहत, ओइ परिवार-ले स्कूल-कौलेजक पढ़ाइ केते महत् रखत, एहेन स्थितिमे पिताकेँ ईहो दोख नइ देल जा सकै छैन जे ओ केतौ अपन कर्तव्यमे चुकला। ओ तँ अपन शक्ति भरि शक्ति लगा खेती करबे केलैन आ बाढ़िमे दहा गेल। परिवारक आमद दहा गेल, मुदा खरचा तँ बढ़बे करत तहूमे दाही-दुरकाल भेने आरो वस्तुक अभाव हएत जइसँ महगी सेहो बढ़बे करत।

ओना, आत्मानन्दकेँ आन विषयक अपेक्षा अर्थशास्त्रसँ बेसी दिलचस्पी रहै मुदा ओहू दिलचस्पीमे देशक कृषि बेवस्थासँ बेसी रहइ।

आत्मानन्द जखन अपन पैत्रिक सम्पैत–आठ बीघा जमीन–देखलक तखन ओकरा अर्थशास्त्री दृष्टिसँ आँकए लगल। आँकए ई लगल जे गामक जे पुरान ढर्ढ़ाक खेतीक अछि ओइमे जाबे पाछूसँ धक्का आ आगूसँ सिकैड़ पकैड़ नहि खींचब ताबे परिवार आ कि गाम खच्चासँ निकैल नहि सकैए। एक दिस उपज ले रसायनिक खादक परहेज, दोसर दिस मवेशी नहि।

अपनाकेँ सम्हार करैत आत्मानन्द स्वअर्जित सम्पैतक उपारजन करब नीक बुझि पत्र-पत्रिका, रेडियो आ किसान गोष्ठी इत्यादिक बीच अपन सम्बन्ध बढ़बए लगल। अन्तो-अन्त ई निर्णय केलक जे सालमे अपन-देही जेते खर्च अछि, ओते सालमे उपारजन करैक अछि। सम्पतैक रूपमे खेतक संग अपन दूटा हाथ-दूटा पएर अछिए।

ओना सालो भरिक खेती अनेको रंगक अछि मुदा ऐठाम दुइए रंगक चर्च करब। साल भरिक अन्नक फसल अछि धान-गहुम आ

खेरही। जइमे एकबेर रोपैन वा बाउग होइए, दोसर बेर कमठौन वा पटौनी आ तेसर बेर कटनी-दौनी, ऐ चक्रमे श्रमशक्ति माने काजक दिन कमि जाइए तहूमे विद्यार्थी जँ घन्टा-दू-घन्टा काटि अपन समय लगौत तइले तँ प्रतिदिन काज चाही। तइले दोसर रंगक खेती जे अछि- बाड़ी, फुलबाड़ी, फलबाड़ी, पनबाड़ी- सएह उपयुक्त अछि। संगे श्रमक संग उपारजनो बेसी अछि।

आत्मानन्दक मन उमकल। उमैकते नजैर आगू बढ़ल। आगू बढ़िते देखलक जे हमरोसँ कम उमेरक लोक होटलोमे नोकरी करैए आ गामो-घरमे गाए-महींसक चरवाहि करैए। किए करैए? जँए ओकर पेट जरै छै तँए ने करैए। आदमी रहितो हम ओकरासँ सुभ्यस्त छी। सुभ्यस्त ई जे ओकरा खेत-पथार नइ छै, हमरा अछि।

ओना उपारजनक दू रास्ता अछि, एक अछि अपन सम्पैतकेँ तेज गतिये संचालित करब आ दोसर अछि अपनासँ पाछूक विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ाएब। मुदा उपारजन लेल अपन स्वतंत्र काज आ अनकर मातहती काज–माने दोसर हाथक काजमे सेहो अकास-पतालक दूरी बनले अछि। माने ई जे अपन काज अपना सुविधानुसार, समयकेँ देखैत कऽ सकै छी मुदा अनकर हाथक से नइ होइए। जखन हमरा समए भेटत आ करए चाहब तखन जँ काज करौनिहार काज नइ दिअए, आ जखन ओ काज देत तखन जँ अपना समए नइ बँचए..! आत्मानन्दक मन थकथकाएल। बेसी काल थकथकाएल रहल नहि।

थकमकी हटिते आत्मानन्द विचार केलक- जाबे अपनापर खर्च आ अपना हाथक आमदकेँ एक सीमापर आनि नहि आगू बढ़ब, ताबे जिनगी बेठेकान बनल रहत। बेठेकान जिनगी तँ सदिकाल भयावह बनले रहैए, तँए जाबे ओकरा ठेकानपर आनि ठेकना नहि चलब ताबे जिनगी डोल-पात करिते रहत।

एगारहम क्लासक विद्यार्थी आत्मानन्द, किताबो-काँपी आ फीसो तँ हाइये स्कूलक ने भेल। तँए हजार रूपैआ महिनाक हिसाबसँ बारह हजारक सालक जिनगी बना आगू विचार करए लगल। आगू जहाँ तकलक कि भक-दे अपन किसानी परिवार आँखिक सोझमे पड़लै। अपन खेत-पथार अछिए। बारहे हजारक तँ सालक उपैत करब भेल। तरकारी खेतीक चक्र–कृषि महाविद्यालय–पूसाक पत्रिकामे निकलल छेलै जे आत्मानन्द पढ़ि चुकल छल।

ओना तरकारी खेती लेल खेत सेहो सभ रंग अछि। मौसमक अनुकूल बरसाती खेती नीचरस खेतमे नहि भऽ सकैए, तहिना गरमीक खेती ऊँचरस खेतमे महग अछि। तैसंग ईहो तँ समस्या ऐछे जे सभकेँ सभ रंग खेतो नहि छइ।

आँखि उठा हिया कऽ आत्मानन्द आगू तकलक तँ बुझि पड़लै अधिक नीचरस खेत–जइमे एकबेर खेती भऽ सकैए–ओहन खेत बेसी अछि आ जइमे दू बेर-तीन बेर खेती हएत ओ कम अछि। मुदा नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तरकारी खेती करैक विचार मनमे अबिते आत्मानन्द पितासँ विचार लेब आवश्यक बुझलक। पिताक आगू अपन प्रस्ताव रखैत बाजल-

“बाबू, परिवार टुटि रहल अछि तँए जँ नइ बँचाएब तँ टुटि कऽ तेते निच्चाँ चलि जाएत जे समयक गतिसँ पाछू पड़ि जाएब।”

बेटाक विचार सुनि मोहनानन्दक मन मोहित भऽ गेलैन। डुबैतकेँ तिनकाक सहारा। ऐठाम तँ ओहन पुत्र बाजि रहल अछि, जे अपनेटा नइ खनदानक खाम्ह टेकैक भार उठबए चाहैए। अखन चौदह बर्खक ढेरबा अछि मुदा साल-दू-सालक पछाइत वएह ने जवान हएत...।

मोहनानन्द बजला-

“बौआ, परिवारक जँ सभ अपन-अपन भार उठा लिअए तँ परिवारमे समस्ये की रहि जाएत। किसान परिवार छी, रौदी-दाही हेबे करत। रौदिये-दाही किए, रौदी-दाही तँ फसलेटा नोकसान करत, मुदा भूमकम आकि धारक कटाउ तँ खेतेकेँ चौपट कऽ देत, केतौ बाउलसँ भरि बलुआह बना देत आ केतौ माटि काटि पानिमे मिला देत।”

पिताक विचार सुनि आत्मानन्द निश्चय केलक जे सभ दिन दू घन्टा समए खेतीमे लगाएब।

दुर्गापूजाक पछाइत, तीन कट्ठा चौमास आत्मानन्दक जोत-कोर करै-जोकर भऽ गेल। ओना जोड़ा बरदबला परिवार आत्मानन्दक, मुदा बाढ़िक चपेटमे दुनू बरद बिका गेलइ। कोदारिसँ खेत तामि कऽ आत्मानन्द पनरह सए कोबी-गाछ रोपने छल। खेती नीक उमझल रहइ। अन्तिम समय जखन यूरिया खाद दइक रहै तखन समयक ठेकान नइ रहलै। रौतुका ओस नीक जकाँ सूखल नइ छेलइ। नमी खाद पकैड़ लेलक, जे रौद पौने जड़ि गेल, जइसँ कोबीक गाछ तेना प्रभावित भेल जे फलक आसे समाप्त भऽ गेलइ।

तिला सकराँतिक दिन, आत्मानन्दक मनमे उठलै- जँ खेती सुतरल रहैत तँ आइ आमदनीक दिन रहैत, मुदा..! अपन गल्ती दिस नजैर दौड़ैलक। मुहसँ निकलै-

“धोखा केतए भेल?”

❑

शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016

माघक चाह

जहिना समाजो आ परिवारोक पहिया एक्के गतिये नइ चलैए तहिना बलदेव कक्काक परिवारोक छैन। मुदा आन परिवारसँ भिन्नता बलदेव कक्काक परिवारमे ई छैन जे सात गोरेक परिवारमे सबहक अपन-अपन क्रिया-प्रक्रिया चाहे जे हौउ मुदा बलदेव कक्काक प्रति जे क्रिया-प्रक्रिया सबहक छैन ओ अलग छैन्हे।

अलग ई भेल जे परिवारक जेते गोरे छैथ, माने बलदेव काकासँ जुड़ल जिनकर जे सम्बन्धित जिनगी छैन, ओ कक्काक अनुकूल छैन। हलाँकि बलदेव काका अपन जिनगीक चौदह-पनरहअना काज-भार अपने हाथमे रखने छैथ तइसँ परिवारक दोसर सदस्यक बीचक काजो तेतबे कम अछि जे ओइ काजकेँ परिवारजन प्रमुख काज नहियेँ बुझैत, मुदा जएह बुझैत तइमे ओते सतरकी तँ रखबे करैत जे बलदेव काका हूसल काज देख बिगड़ैथ नहि। आ जँ परिवारजन एते मेहरमानी परिवारक अभिभावककेँ परिवारमे करैन तँ परिवारमे क्रोधक जगह केतए रहत।

अपन नियमानुकूल जिनगी बलदेव काका ओहिना नइ बनौने छैथ, जिनगीकेँ पकैड़ जमीनमे रोपिते जे गाछ जनमलैन ओइमे शिशुपन-सँ-शीशपन धरिक सेवा ओइ रूपे केलैन जे समयानुकूल छेलैन, जइसँ समए कहियो आगूमे रोड़ा नइ अँटकौलकैन। रोड़ा तँ ओतए बेसी अँटकैए जेतए जेते बेसी प्रतिकूल गति-विधि रहल। मुदा ऐठाम एकटा भ्रम उठि सकैए, समयानुकूल सभ परिवार वा सभ

समाजक गति विधि जहिना सभ रंग अछि माने लालो अछि, उजरो अछि, हरियरो आ कारियो अछि तहिना मनुखोक जिनगीमे तँ अछिए। ओही बीचमे ने लोक अपन हाथ-पएरक हिसाबसँ अपन जगह खतिया लइए जे हमरा बुते केते कएल हेतइ, आ परिवार वा समाजकेँ केते खगता छइ।

मध-मासक समए, सात बजे भिनसुरका समए। मध-मास भेल दू मौसमक बीचक जे चढ़ा-उतरीक समए होइए। दिन-रातिक रूपमे मस्तियो अबए लगैत आ मादकता सेहो बढ़बे करैत अछि। अपन नियमानुकूल जिनगी बना चललासँ एते तँ बलदेव काकाकेँ प्राप्त भइये गेल छैन, जे ने परिवारकेँ भार बुझै छैथ आ ने परिवार भार बुझैत छैन।

अपन जिनगीकेँ समयानुरूप केना चलौल जाए, माने बेवहारिक धरातलपर ठाढ़ होइत बढ़ैत भविस दिस केना बढ़ौल जाए ओ तँ निर्भर अछि विचारक कबजियाएल धारमे।

खाएर जे.., सात बजे भिनसुरका समए बलदेव कक्काक छैन जे ओ अपन भोजनोपासनाक उपायमे लगि जाइ छैथ तँए ओ समए किसानीक छिऐन। चाह पीब पान खा हँसुआ-खुरपी नेने बलदेव काका कतिका–माने मध-मासक–खेतीक आँड़िपर पहुँचला। पहुँचते हियासि कऽ देखलैन तँ खुरपीक काज आगूमे धब-दे खसलैन, अपन उपकैत जिनगीमे बलदेव काका हेलए लगला। तखने चारि सालक पोताकेँ नेने पुतोहु खेतमे पहुँच गेली।

हिचुकैत-कनैत बुधबाकेँ देख काका मन पाड़ए लगला जे एकरा कनैमे हमरो दोख तँ ने केतौ अछि। भेल ई जखन बलदेव काका चाह पीबै छैथ तखन पोतोकेँ, आइ दू सालसँ एक-घोंट, आध-घोंट चटबैत आबि रहल छैथ। आइ बुधबा चारि सालक भऽ गेल, मुदा आदतो तँ

आदत छी, जेहेन आदत पकैड़ लेत ओ जिनगी भरि नेंगरियबैत रहत। भलें अहूँ जँ अपन जिद्दपना पकैड़ ली तँ आदत बदलबो करै छइ।

जखन बलदेव काका चाह पीबै छला तखन बुधबा केम्हरो खेलैले चलि गेल छल, जे चाहक समैये बिसैर गेल। कक्को ऐ दुआरे गिलासमे चाह नइ रखलैन जे एक तँ ओहिना गिलासक तरी चाह भेल, माने गिलासक निचला, तैपर जँ दुइयो मिनट रहि जाएत तँ ओ चाह नहि, या तँ पानि भऽ जाएत वा चाहक झड़ भऽ जाएत।

तेतबे किए, जेते लग-पासक चुट्टी-माछी रहत ओहो सभ अपन जीवनदान करैले सेहो आबिए जाएत। तँए गिलासमे चाह राखबकेँ उचित नहि बुझि बलदेव काका चाह पीब गिलास धो रखि देलखिन। आ हँसुआ-खुरपी नेने खेत पहुँचला। तैबीच बुधना खेला कऽ आएल तँ ने बाबाकेँ देखलक आ ने गिलासमे चाह, ओही चाह-ले कानए लगल...।

बुधबाकेँ कनैत देख बुधबाक माए–बलदेव कक्काक पुतोहु, जे भानस करै छेली–मने-मन बलदेव काकाकेँ दोखी बुझि बुधबाकेँ नेने खेत पहुँच गेली। ओना, चालि-ढालिसँ सरोवरी बीस पीपड़ी छैथे, मुदा जहिना सभ परिवारमे सभ रंगक लोक रहैए तहिना बलदेवो कक्काक परिवारमे छैन्हे।

बलदेव काका लग कनैत बेटाकेँ रखि सरोवरी आँगन आबि भात चढ़ल बरतनकेँ दाबिसँ दू बेर चला दू चोट कानमे लगा कानक ऊपरमे रखि, आँच घुसका चुल्हि लग बैसली। बैसते मनमे उपकलैन बेटाक कानब।

..सरोवरी एक तरफा निर्णय कऽ लेली जे सोलह-सँ-बत्तीसअना दोखी बाबू छैथ। जँ एहेन आदत नइ लगौने रहितथिन तँ अखन बुधबा कनैत किए..!

कनैत बुधबाकेँ देख बलदेव काका खुरपी रखि हाथमे लगल ओस आ ओसाएल माटिकेँ दुनू हाथे मीड़ साफ केलैन। चिकनाएल दुनू हाथे बुधबाकेँ पकैड़ बलदेव काका वौंसैत बजला-

"ओइ राति, ओइ दिनक रातिकी भेल से बुझल छौ?"

एक तँ बलदेव कक्काक बात बुधबाकेँ गीत जकाँ कानमे नीक लगल, तैपर एकटा प्रश्नो छल। चाहक सुरतापर सँ बुधबाक मन बहैट गेल, जइसँ सोल्हैनी कानब तँ नइ बन्न भेल मुदा कनी कम तँ जरूर भेबे कएल।

कम होइत पोताक कानब देख बलदेव काका दोहरा कऽ बजला-

"बड़ीटा बड़ीटा राति ओइ दिन रहइ।"

ओना, बलदेव काका पोताकेँ पोल्हबैक भूमिकामे रहैथ तँए झूठ-सतक सीमा सरपट रहैन। मन गवाही दैन जे कनैत बच्चाकेँ चुप करै तक पोल्हबैक स्थिति भेल, तँए अखन चुप करब अछि। तोरिया गाए-महींस[2]केँ दुहैकाल जहिना मलकार हरियर-हरियर घास खुआ दुहऽ चाहैए, तहिना बलदेवो काका परियास करए लगला।

ओना, बेसीकाल पोता लगमे रहै छैन, तँए बच्चाक तरी-घटी सेहो सभटा बुझबे करै छैथ।

चुप होइत बुधबा बाजल-

"ओइ दिनक बड़का रातिमे की भेल?"

गमछाक खूटमे-सँ पानो आ पानक समानो–माने कथ, सुपारी, जर्दा–निकालि बलदेव काका पान लगबैक ओरियान करैत बजला-

"पहिने पान खा ले तखन कहबौ। गप की केतौ पड़ा जाएत।"

[2] बच्च मरल गाए-महींस

बुधबो मानि गेल जे एक नम्बर काज भेल पान खाएब, पछाइत दोसर हएत।

ओना, मने-मन बलदेव काका ईहो अँटकार लगबैत रहैथ जे कनैत-खिजैत बच्चाकेँ जाबे किछु लहटगर वौस आगू नइ औत ताबे कानबसँ समगम नइ हएत। तँए, ओहन वौसक खोज सेहो करए लगला आ पान लगाएबकेँ सेहो ढिलियबए लगला जे कनी समए आरो खपि जाएत।

बलदेव काका पहिने बुधबाकेँ पान देलखिन पछाइत अपने खेलैन। पान खा पानक समचाकेँ गमछाक खूटमे बान्हि आँड़िपर रखिते रहैथ कि बुधबा पुछि देलकैन-

"ओइ राति, ओइ दिनक रातिकी भेल?"

प्रश्नकेँ भरियबैत बलदेव काका बजला-

"कइ राति, कइ दिनक राति?"

बाबाक बात सुनि बुधबा भकचका गेल। भकचकाइक कारण भेलै जे दिनक ठेकान बुझले ने रहइ।

निच्चाँ-ऊपर बुधबाकेँ देख बलदेव काका नाकपर हाथ लैत बजला-

"हँ, हँ, मन पड़ल..!"

'हँ-हँ मन पड़ल' बाबाक मुहसँ खसिते बुधबा बाजल-

"हँ, हँ, ओहए..!"

बुधबाकेँ खुशी देख बलदेव काका मने-मन विचारए लगला जे जे प्रश्न अछि ओकर उत्तर बुधबा बुझत केना, अखन ओकर बुधिक ओकाइते की छइ। चारि बर्खक बच्चाक बुधि पानि-माटिक बीचक जे रूप अछि, सएह अछि। जल-जल, पल-पल, चल-चल, थल-थल।

मुदा गुण तँ दुनू विद्यमान अछिए। माने जिवनी-शक्ति जहिना माटिकेँ छै तहिना पानियोँकेँ छै, तखन तँ भेल जे सक्कतपन नइ आएल अछि।

सक्कतपन लग अबिते बलदेव कक्काक मन अपन घटित घटनापर पहुँच गेलैन। घटित् घटना ई जे गरमी मास रहौ कि जाड़क, कक्काक अपन रूटिंग छैन जे हिसाबसँ चलै छैथ, जहिना घर-बाहरक काज तहिना मन-बुधिक। माघक ओ राति जे सालक सभसँ नमहर राति छल। सभसँ नमहर ओ भेल जे क्षण-पलक हिसाबसँ एकेटा होइए। शीतलहरी मास दिन पहिनेसँ लाधल। झीसी-बरखा जकाँ पानि बनि पाला टप-टप खसैत। गाछपर सँ खसैत बून अवाजो करैत। राति नमहर भेने दिनो आ दिनक सीमो आगू दिस घुसकिये गेल छल, जइसँ काजक घड़ी बढ़ि गेल छेलैन। दू बजेसँ छह बजे भोरक समए भेल। घन्टा भरिपर चाहो-पान आ पाइनो पीबते छैथ जइसँ देहक शक्तिक संग मनक शक्ति सेहो क्रियाशील रहिते छैन। दू बजे चाह पीब, बाँकी चाह थर्मशमे रखि, जे गरमी मासमे अपन रूप अधिक काल तक बरकरार रखिते अछि। मुदा तीन बजे भोरक थर्मशक चाहक रूप जे जेठ मासक रहैए ओ ठंढसँ जकड़ल माघमे थोड़े रहत। तीन बजे भोरक चाह, मन गवाही देलकैन जे ऐ चाहकेँ तखने चाहक रूपमे पीब सकै छी, जखन एकरो चाह पुराएब। माने भेल जहिना ठंढपनक आक्रमण अछि तहिना ओकरा गर्मपनक सहारा देल जाए तँ ओ जरूर अपन रूप धेने रहत। ..एका-एक बलदेव काकाकेँ किछु मनमे जहिना आएल होनि तहिना छड़पैत बजला-

"की कहै छेलियौ?"

अखन तक बुधबा समगम भऽ चुकल छल। मुस्की दैत बाजल-

"अहूँ बाबा बड़ बिसराह छी।"

खुशीक मोड़पर बुधबाकेँ अबैत देख बाबा बजला-

“जखने मुँहक अदहा दाँत टुटि गेल तखने कि कोनो बात-विचार मनमे अँटकैए, लगले बिसैर जाइ छी।”

बाबाकेँ पाछू हटैत देख बुधबा बाजल-

“खुरपी दिअ, हमहूँ कमाएब।”

अपन हाथक काज बाधित होइत देख बलदेव काका बुधबाकेँ कोरामे लऽ खेतक चारू आड़ि घुमौलैन। चारू आड़ि घुमौला पछाइत हँसुआ उठा आड़िपर जे नमरल घास छल तेकरा काटए लगला। आगूमे ठाढ़ बुधबा खुरपी बिसैर गेल हाथक हँसुआ छीन आड़ि काटए लगल। माने हँसुआ रगड़ए लगल।

अनुकूल समए पेब बदलेव काका अपन खुरपीक काजमे जुटि गेला। मन पड़लैन माघक चाह।

❑

शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016

भँसियाएल बाल-बोध

आजुक बाल-बोधक–जे निर्विकार गुणक अछि–आगूक बाट की होइ, बाल-बोधेक प्रश्न नहि, परिवारक अभिभावक आ समाजक संग देशक सेहो छी। एक-दोसरमे सभ सटलो छी आ हटलो छी, तँए दुनू दृष्टिसँ देखैक खगता तँ भइये गेल अछि।

मिथिला दर्शन, जे कहियो विश्व-दर्शनक चोटीक शिखरपर शीर्षासन छल, जइसँ लाख विषमताक बाबजूदो मिथिलावासी शान्त-चित्त आ शान्त-सोभावकेँ धारण केने आबि रहल छैथ, ओइ धरतीपर एहेन रूप किए बनि गेल अछि जे भैयारीक बीच चलैन बनि गेल-‘भाए-भैयारी महींसिक सिंग, जखने जनमल तखने भिन्न।’ हँ, बात जँ भाए-बहिनक बीच रहैत तँ एक सीमा तक उचितो भेल। उचित ई भेल जे लैंगिक भेदक संग जीवन निर्वाहक स्थान सेहो बदैलते अछि। मुदा जैठाम भाए-भैयारीक बीच जँ एहेन विचार चलत तैठाम तँ किछु विचारणीय प्रश्न आगूमे एबे करत। विचारणीय ई जे जखन परिवारेमे विखण्डित विचार चलत तखन समाज आ राष्ट्र तँ दूर भेल।

जँ भाइ-भाइक बीच एहेन विचारक धार बहत तँ निसचित रूपे ओ समुदायिक जिनगीकेँ प्रभावित करबे करत। जखन सहोदर भाएमे विचारक दूरी बनत, तखन परिवारजन माने दादा-दादी, माता-पितासँ आगू बढ़ि भौजाइ-भावो होइत भातीज-भतीजी दिस बढ़बे करत।

प्रश्न अछि आइ धरि जे दू या तीन या चारि या ओहूसँ बेसी भैयारीक बीचक संयुक्त परिवार चलैत आबि रहल अछि, जइमे बेटा-

बेटीक जन्म होइत अछि। दहेजक हिसाब वा पढ़ै-लिखैक हिसाब जे बेटा-सेने रहैत अछि ओ बेटी-सेने थोड़े अछि। ऐमे समाजोक दोख कम नइ कहल जा सकैए। माने ई जे आजुक परिवेशमे तीस लाख रूपैआ खर्च करि कऽ बेटीकेँ डाक्टरीक शिक्षा दियौ आ पढ़ाइक पछाइत जखन ओ बिआह-दान करै-जोकर हएत तखन तीस लाख बिआहमे खर्च करू। जँ से नइ करब तँ समुचित जोड़ा लगा समुचित जिनगी नइ बना सकै छी? भलेँ बेटा बेर सभ सूदि-मुड़ि ऊपर किए ने भऽ जाए...।

हँ! एक परिस्थितिमे लाभक भऽ सकैए जे जँ परिवारमे बेटा-बेटीक संख्या बरबैर हुअए, मुदा से तँ निसचित नइ अछि। कोनो परिवारमे बेटाक बाढ़ि बेसी अछि, तँ कोनो परिवारमे बेटीक बाढ़ि नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। वौद्धिक विकास शिक्षा आ शिक्षण संस्थासँ प्राप्त होइए, तँए मूल विषय छी।

चारि बजेक समए। पता लागल जे लाल भाय दुखित पड़ि गेला अछि, तँए भेँट करए हुनका ऐठाम गेलौं। रौद तँ मरियाएले रहै मुदा तैयो लाल भाय दलानक आगूमे मोथीक विछानपर पतरकिये चद्दैर ओढ़ि पड़ल रहैथ। लगमे जाइते पुछलयैन-

“भाय, मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि?”

खनखनाइत लाल भाय बजला-

“ने जनम रोगी छी आ ने जनम रोग अछि, मौसमी झटका छी। कातिक-आसीन तँ ओहिना रोगाह मास छीहे।”

लाल भाइक सूर-मे-सूर मिलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ छीहे। कियो अपन चालि छोड़लक हेन जे कातिके अपन छोड़त।”

हमर बात सुनि लाल भाय की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन

जेना खनहन भेलैन तहिना बुझि पड़ल। देहक रोगकेँ पछाड़ैत लाल भाय उठि कऽ बैसैत बजला-

“नहि कोनो मारुख रोग नइ अछि, तखन तँ कनी सरदी-खाँसी भेने देह गरमाइए गेल अछि।”

हमरो हरल-ने-फुरल, लाल भायकेँ पुछि देलिऐन-

“काज करै दिस मन बढ़ैए की नहि?”

मुस्की दैत लाल भाय बजला-

“सएह ने अछि। तँए ने चद्दैर ओढ़ि मुइल-मुँह सन भेल छी। जँ से रहैत तँ की ऐ सरदी-खाँसीकेँ गुदानितिऐ। ओहुना तँ देहमे कफो ऐछे आ सुखलो खाँसी होइते अछि।”

निर्णय करैत बजलौं-

“तखन तँ भेल राजरोग?”

‘राजरोग’ सुनि लाल भाय उन्टा देलैन-

“से की?”

हमहूँ सरपट चालि धरैत बजलौं-

“राजरोग भेल जइमे खाइ-पीबैमे कोनो परहेज नहि, मुदा काजक बदला चद्दैर ओढ़ि रौद तापब।”

लाल भाइक मनमे कोन बातक कुवाथ भेलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“अँए हौ गौरी, दुनू भैयारी जे एकठाम बैस सुख-दुखक विचार करै छी ओ काज नइ भेल?”

लाल भाइक बातसँ बुझि पड़ल जे जे सोचि जिगेसा करए आएल छेलौं से बात नइ अछि। मौसमी रोग छिऐन, मासूमे चालिसँ नीक भऽ जेतैन। तही बीच लाल भौजी दुनू बेटाकेँ अगुएने हरिहर

क्षेत्रसँ आपस पहुँचली? सवारीक सुविधा आ एन.एच. बनने एते तँ सुविधा भइये गेल अछि जे जरो-जनानी आ धियो-पुताकेँ जँ देखै-सुनैक हेतइ तँ घुमि औत। आँगनमे लाल भौजी झोरा-झँटी खोलए लगली आ छोटका बेटा–जे सात सालक अछि आ प्राइवेट स्कूलमे फाइबमे पढ़ैए–बैगमे सँ प्लास्टिकक स्टील सेट बन्दूक साइजक खेलौना नेने दरबज्जापर पहुँचल। दरबज्जापर अबिते हमरो नजैर ओकरापर पड़ल आ लालो भाइक पड़लैन। तैबीच ओ बच्चा हाँइ-हाँइ तीन-चारि बेर गोली भरि-भरि अवाज करैत लाल भायकेँ कहलकैन-

"पापा, आब निशान लगबै छी!"

अपने तँ ई सोचि अपनाकेँ पाक-साफ केलौं जे आन परिवारमे आगू भऽ कऽ किछु बाजब उचित नहि, तहूमे जखन लालो भाय छैथे आ माइयेक संग कीनबो केने हएत, संगे अनबो केलक आ सोझेमे निकालि चलाइयो रहल अछि। ओना राय-विचारक प्रश्न तँ छीहे जे बच्चाक हाथमे पाँखिबला कलम सन्देश नहि, बन्दूक सन्देश अछि, तैठाम...। तँए ऊपर-निच्चाँ देखैत विचारैत रही। बच्चापर सँ नजैर हटा लाल भायपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल बोखार तेज भेल जा रहल छैन, किएक तँ देह-हाथ थरथराए लगल रहैन। मुदा बाजैथ किछु नहि। दुविधामे पड़ि गेलौं। दुविधा ई जे कोन बेमारीक आक्रमण बेसी भेल जा रहल छैन से तँ अपने ने जनैत हेता, ओ तँ मुँह खोलला पछाइते ने बुझब।

तैबीच लाल भाय चद्दैर सेरिया मुँह झाँपि सिरमापर ओंघरा गेला। ओंघरेलापर मनमे रंग-बिरंगक शंका उठए लगल। सरदियो-खाँसीसँ ने दम्मा-टी-बी होइए। बेमारी की केकरोसँ पुछि कऽ अबै छै, ओ तँ तरे-तर जहिना चाउरक कोठीमे मूस पसि जाइ छै, तहिना रोगो-वियाधि पैसैए। ..फेर भेल जे भऽ सकैए जे तरेतर मुँहक बोलतिये ने

अक्रान्त भऽ गेल होनि, जइसँ बकार नइ फुटैत होनि, तँए अगुरवारो पुछब अधला थोड़े हएत। बजलौं-

"भाय, बोखार तेज चढ़ि गेल?"

लाल भाय जेना अपन भविस देख रहल छला तहिना दुनू आँखिसँ सौनक बून झहरए लगल छेलैन, मन कलैप रहल छेलैन जे समाजमे जे हवा चलि रहल अछि, ओ समाजक बाल-बोधकेँ केमहर लऽ जाएत! दहो-बहो नोर चुबबैत लाल भाय बजला-

"बौआ, भरि दिनक जेतेक समए ई बच्चा स्कूलमे दऽ रहल अछि, तइ अनुपातमे तँ हमरा संगे नइ छै, सएह ने बुझि पेब रहल छी जे एना भेने केना हएत।"

तही बीच लाल भौजी हरिहर क्षेत्रक सनेस नेने पहुँच गेली। चद्दैर ओढ़ल देख लाल भायकेँ कहलकैन-

"रस्ताक झमारल छी हम आ मुँह-कान झाँपि सुतल छेलौं अहाँ?"

मुँहपर सँ चद्दैर हटबैत लाल भाय बिना किछु बजने देह-हाथकेँ सोझ करए लगला। उठि कऽ बैस गेला। लाल भाइक मनमे जेना अनोन-बिसनोन होइत रहैन तहिना बुझि पड़ल। संगे ईहो बुझि पड़ल जे जखन भौजीकेँ कोनो जवाब नहि भेटलैन, तखन सोझे भोज खाइले तँ नइ एलौं जे हरिहर क्षेत्रक परसादी खा चलि जाएब...।

फेर मनमे उठल- हरिहर क्षेत्र तँ ओ जगह छी जैठाम गराहक संग गजकेँ लड़ए पड़ै छइ। सबहक अपन जिनगी अछि तँए अपना-ले तँ अपने ने करब। जेते लोक आकि जीव-जन्तु अछि सभकेँ अपन-अपन दिन-दुनियाँ छै, अपन-अपन हाथ-पएर छै तखन तँ सभकेँ ने अपन-अपन जीबैक जोगार करए पड़त...। बजलौं-

"भौजी, मेलाक हरियरी नीक रहलै किने?"

ले बलैया! मुँह बिजकबैत भौजी बजली-

"मेलाक रोहैने खतम बुझि पड़ल। पनरह बर्ख पहिने जे गेल रही ओ मेला आ ऐ बेरक मेलामे अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ल।"

जिज्ञासा करैत पुछलयैन-

"से की?"

भौजी बजली-

"पैछला जे गंगाक लहैर उठल से छाती भरि पानि मेलाक जगहमे लगि गेलइ। खाधि-खुधिमे अखनो पानि छेलैहे। तेहेन दल-दल माटि छेलै जे पएर चपइ।"

बजलौं-

"माल-जाल, हाथी-घोड़ाक बजार केहेन छल?"

भौजी-

"बुझि पड़ल जे लगे-पासक वेपारी सभ छैथ जे भोरे आनि कऽ मेला लगबै छैथ आ साँझू पहर चलि जाइ छैथ।"

पुछलयैन-

"हाथी-घोड़ाक की स्थिति छेलइ?"

बजली-

"कहबे तँ केलौं जे लग-पासक वेपारीटा-क मेला छल। पचासोसँ निच्चेँ गाए, महींस आ घोड़ा मिला कऽ छेलइ। हाथीक छुतियो ने रहइ।"

बजलौं-

"से एना किए भेल?"

एक्की-दुगी भौजी नइ छैथ, लाल भाइक पत्नी छथिन। पढ़ल-

लिखल स्नातक छैथ। बजली-

"आब लोक चरिचकिया गाड़ीपर ओङैठ कऽ चलत आकि हाथीपर देह डोलबैत चलत!"

बजलौं-

"आन-आन बजार केहेन छेलइ?"

झपैट कऽ भौजी बजली-

"ओ सभ जे अबितै से ओतेक आन्हर अछि, जे अनेरे थाल-खीचमे आबि महामारीक शिकार होइतए।"

बजलौं-

"तखन तँ ओ सभ होशियारी केलक?"

भौजी बजली-

"ओ सभ कोनो कि नइ बुझलक जे इलाकाकेँ बाढ़ि बेसी तवाह केने छै, लेबाले-देबाले अछि, तखन अनेरे किए देह जतबै आ मच्छर कटबैले जाएब।"

लाल भाय बाजैथ किछु ने, मुदा मनमे तरेतर जेना कुही होइत रहैन तहिना बुझि पड़ल। मुदा के कुहि रहल छैन आ के कुहा रहल अछि, भरिसक तैपर सेहो नजैर गड़ि रहल छेलैन।

❑

शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016

माघक घूर

अखन अदहो अगहन नइ बीतल, दिसम्बरक तँ छुतियो ने भेल अछि, नवम्बर अन्तिम सीमापर जरूर पहुँच गेल अछि। मुदा शीतलहरीक कहर शुरू भऽ गेल। ओना बेरुका समए छल, माने दिनक बेरुका, मुदा सुर्ज नइ उगने भिनसरे जकाँ बुझि पड़इ।

चद्दैर ओढ़ि गणेशी काका दरबज्जापर बैसल अपन माघक घूरक हिसाब-बारी जोड़ि रहल छैथ। जोड़ि रहल छैथ जे ओना कातिकेसँ घूर करै छी, कातिके किए जखन माल-जाल पोसने छी तखन तँ बारहो मास करिते छी। जड़ैया घूर ने जाड़क मास होइए, जइसँ जाड़कें भगौल जाइए, मुदा मच्छरो भगबैले तँ घूरक खगता मालक थैरोमे होइते अछि।

खाएर जे अछि मुदा घूरो तँ घूर छी, मच्छर भगबैबला, जाड़ भगबैबला आ कनकनाइत ठाढ़कें भगबैबला इत्यादि, घूरोमे अन्तर तँ होइते अछि।

जाड़े देह सिहरैत रहए, तँए तमाकुल खाइक मन भेल। ओना, अपन चुनौटीक तमाकुल सठि गेल छल से जलखैये बेरसँ बुझल छल, मुदा रौदक आशामे दोकान नइ गेल छेलौं।

गणेशी कक्काक घर लगेमे छैन, बिनु मंगनौं वा कहनौं, जखने ओइठाम जाइ छी तखने पहिने तमाकुलेक आग्रह होइए। तँए बिनु मंगनौं तमाकुल भेटैक आशा अछिए।

गणेशी काका ऐठाम विदा भेलौं। मनमे खुशी रहबे करए जे

दोसरसँ बिनु मंगनौं कोनो उपयोगी वस्तु भेट जाए, तँ ओ उपकारे भेल। मुदा ऐठाम तँ उपकार नहि उचित छी। हमरो समए जाएत।

दरबज्जापर बैसल गणेशी काका आँखि मुनने चद्दैरसँ नाक तक झँपने किछु सोचि रहल छला। आँखि बन्न आ नाक झाँपल देख मनमे शंका उठल जे गणेशी काका भरिसक नीनाएल छैथ। बैसलो-बैसल तँ लोक एक झपकी लाइये लइए। मनमे भेल जे जखन नीनक आनन्दमे काका डुमल छैथ, तखन आनन्द भंग करब नीक नहि। ओना, अपनो मन तमाकुल लेल छिछियाइते रहए जे कखन मुँहमे औत। नबे-दस बजेसँ तमाकुल नइ खेने छेलौं। कहुना तँ अखन तीन बजैत हएत। मुदा से भेल नहि, पैरक अवाजसँ आकि बाहरी धमक बुझि गणेशी काका आँखि खोललैन। जगले छला। अपन माघक घूरक हिसाब जोड़ि रहल छला। ओना, गाममे बहुत गोरे एहेन छैथ जे श्रेष्ठजनक बीच सिर नइ लिबौन करै छैथ, मुदा अपना से नहि अछि। मेडिकलक विद्यार्थी जकाँ जँ दिनमे सैयो बेर आगू पड़ता तँ सैयो बेर सिर लिबैबते छी।

..नजैर पड़िते गणेशी काका बजला-

"की हाल बौआ?"

हमरो सुतरल। सुतरल ई जे एकटा हाल बेकती वा परिवारक होइए, दोसर प्राकृतिक होइए जे निच्चाँ-ऊपर एकबट्ट केने रहैए, तेहने समए अछि, तैबीच फुटौल केना जाएत? बजलौं-

"काका, जे गति अपन सएह ने अनको रहत।"

हमर बात सुनिते एकमुहरी गणेशी काका मानि बजला-

"हँ, ई तँ ठीके कहलह मुदा...।"

काकाकें खाली ऊपरके पीढ़ी नइ बुझै छिऐन, समयक समझदार सेहो बुझै छिऐन। तेकर कारणो अछि जे कोनो विचार-

विनिमय काका हूसऽ नइ दइ छैथ। जखन किछु बुझए चाहै छी आ काका लग बजै छी तँ ओ आगू-पाछूक चौमेड़ बान्हि बीचक स्थिति बुझबैत विचार जनु दइ छैथ। तँए मनमे शंका भेल जे अपनासँ ऊपरक कोनो विचार पेटमे छैन तँए अदहे कहि चुप भऽ गेला। पुछलयैन-

"से की काका?"

प्रशान्त चित्तसँ काका बजला-

"गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइए, तहूमे तेहेन समए भऽ गेल अछि जे लोक तमाकुल-चाह-पान करैत रहह आ गप-सप्पकें लाड़ैत-चाड़ैत रहह। मुदा गपो कि अदना-गोदना छी, एकरो सम्हार लेल पहिने अपनो सम्हरए पड़ै छइ।"

गणेशी कक्काक बात सुनि मन विससँ विसाइन भऽ गेल। विसाइन ई भेल जे जे बात बुझैले बजलौं से तर पड़ि गेल आ दोसर विस आबि मनकें घेर लेलक। मुदा जहिना सुनटा गिनती होइए, तहिना ने उनटो होइए। जइसँ छुछुनैरक बीख उतारल जाइए। पहिने पैछले बात बुझि लेब पछाइत ऐगला चर्च करब। मन थीर भेल। बजलौं-

"हँ, से तँ ठीके।"

हमरा गपक सह जेना काकाकें भेटलैन तहिना बजला-

"पहिने तमाकुल खाह, पछाइत गप-सप्प करब।"

जे तमाकुल मुँहमे गेने फुरफुरा कऽ उठैए, ओ तमाकुल मुहसँ बाहरो हाथोमे एने तँ करामात करिते अछि। मन अपनो तरपल, मुदा देहक खगता हौउ आकि मनक अनके जकाँ अपनो विचार उठल। बजलौं-

"काका, चुनौटी दिअ बढ़ियासँ बनबै छी।"

सएह भेल। हाथपर औंठाक मर्दन पबिते जेना मन खुरखुरए लगल। बजलौं-

"ऐ बेरक समए तँ देखै-जोकर भऽ गेल।"

अपन मन ने तमाकुलक पाछू छिछियाइत रहए, मुदा कक्काक मन तँ से नइ रहैन, बाजए लगला-

"बौआ, देखैसँ पहिने बुझऽ-सुझऽ पड़तह। समैयोक अपन इतिहास अछि। एक इतिहास अछि दिन, महिना, सालक आ दोसर अछि अनहोनीक।"

बिच्चेमे बजलौं-

"अनहोनी की भेल?"

हमर बात सुनि गणेशी कक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे प्रश्न-पर-प्रश्न उठल जाइए, समए अछि तमाकुले खाइ भरिक, किए तँ काज काजकें जहिना रोकैए तहिना प्रश्नो ने प्रश्नकें रोकैए। विचारकें समटैत काका बजला-

"जे कहियो काल होइए, वएह भेल अनहोनी।"

अपनो बुझि पड़ल जे काका संक्षेपमे अपन विचार सम्पन्न करए चाहै छैथ। मुदा बिच्चेमे बजा गेल-

"काका, बड़ जुलुम भेल!"

'जुलुम' सुनिते काका आँखि ठाढ़ करैत बजला-

"से की?"

बजलौं-

"फकीरबा भैया जे मुइला, तइ जरबैले जे बेवस्था हुअ लगल तइमे अनगौंआँ सभ आबि कऽ नाश कऽ देलकैन!"

काका बजला-

"की नाश केलकैन?"

"एकेटा आमक गाछ फकीरबा भैयाक परिवारमे छेलैन जेकरा काटि कऽ नाश कए देलकैन।"

काका बजला-

"एना किए भेल?"

बजलौं-

"काका, एकरा दुरविचारे काटब नइ कहबै, बाहरक कुटुम समाचार सुनि धड़फड़ाएल एलैन आ घरवारीकेँ पुछलकैन जे लकड़ी केतए अछि। घरवारी गाछ देखा देलकैन। गाछकेँ देखते घरवारीसँ कुड़हैर लऽ जा कऽ काटि देलक। तैबीच जरबैले समाजक लोक ऐ दुआरे नइ पहुँचल छला जे जानकारीमे छेलैन जे जिज्ञासु कुटुम सभकेँ अबैमे अखन देरी अछि। तैबीच एहेन गलती भऽ गेल।"

गणेशी काका-

"मुरदा जरौल केना गेल?"

तैबीच दू झाड़ैन, माने धान दौनक खोह जकाँ, तमाकुलमे दऽ देने छेलिऐ, तेसर पछुआएल छल मुदा लगिचाएले छल। हाँइ-हाँइ कऽ चून झाड़ि थोपड़ी देलौं। थोपड़ी देख गणेशियो काका तमाकुलक आशामे मुँह बन्न केने रहला आ अपन मन तँ पहिनहिसँ से चटपटाएल छल।

मुँहमे तमाकुल लइते बजलौं-

"काका, कोनो कि अपनेटा गाममे लोक मरै छैथ आ जरौल जाइ छैथ, ई तँ गाम-गामक लीला छी।"

थूक फेकैत गणेशी काका बजला-

"हँ, से तँ छीहे।"

गणेशी कक्काक विचारक सह पबिते बजलौं-

"जँ जइ गाममे जिनका छैन ओ कियो सरड़, चानन, घीसँ जरबै छैथ, आ जिनका नै छैन ओ ओहिना खढ़क ऊक मुँहमे लगा माटिमे गाड़ि दइ छैथ। वा धार-धूरमे फेंक दइ छैथ।"

मुड़ी डोलबैत गणेशी काका बजला-

"हँ, से तँ होइते अछि, जेकरा जे विभव रहल तइ हिसाबे काज करैए।"

मुँहमे तमाकुल फुला गेल छल, तँए बजैले मन लुसफुसाइते छल। बजलौं-

"काका, कियो काँच-सुखल लकड़ीसँ जरबै छैथ तँ कियो सोल्हैनी काँचे वा सुखलेसँ। मुदा अपना ऐठाम गाछी-बिरछी उपटने वा नइ रहने, मुरदा नइ जरौल जाइए सेहो तँ नहियेँ अछि। गोरहो-गोइठासँ तँ जरौल जाइते अछि।"

पैछला बातकेँ पकैड़ गणेशी काका बजला-

"तखन भेल की?"

बजलौं-

"भेल की, समए तँ देखते छिऐ जे कइ हिसाबक भऽ गेल अछि। तीन बजे मुरदा घाटपर पहुँचल। रौदक केतौ दरस नहि, तैपर सँ झीसी जकाँ पाला खसैत। लकड़ीसँ मुरदा जरबैमे तीन-चारि घन्टा लगिये जाइए। किएक तँ लकड़ी ने काटल अछि, मुदा ओकरा बिना चीरने-फारने थोड़े जरौल जाएत। चीरैत-फारैत अछिया सजबैत घन्टासँ बेसीए लगि जाएत। पछाइत ने संस्कार पड़ैत। संस्कार पड़ला पछाइत सवा पहर जरबैमे लगिते अछि।"

मुड़ी डोलबैत गणेशी काका बजला-

"हँ, से तँ सभ दिनसँ होइत आएल अछि। मुदा भेल की?"

बजलौं-

"बरियातियो सभ होशियारी केलैन। घरवारीकेँ कहलखिन जे एक गोरेक संग सभ नइ ने मरि जाएब। तीन-चारि घन्टा ठंढमे बितौला पछाइत पोखैरमे नहाएब, ई तँ जानि कऽ जान जोखिममे देब हएत किने। डेढ़ साए गोरहाक ओरियान भेल। लगले अछिया खुनि गोरहाक संग लहास सजा, संस्कार पड़ल। घन्टे भरिमे सभ काज समापन भऽ गेल।"

गणेशी काका मने-मन अँटकार लगौलैन जे जे लकड़ी कटि गेल ओ तँ फेंकैये जाएत तइसँ नीक ने ओकरा आनि अपन माघक घूरक ओरियान कऽ लेब।

दोसर दिन भोरे गणेशी काका जारैन टोहियबैत घाटपर पहुँचला। लहास छाउर भेल अछियामे, बगलमे लकड़ी पड़ल...। हियासि कऽ देख घरवारीकेँ आबि पुछलखिन-

"लकड़ी अनेरे फेंकब नीक नहि, तँए जँ ओकरा आनि कऽ भोज-काजमे लगा लेब ओ नीक हएत किने? आ नहि जँ फेंकब तँ हमहीं ओकरा लऽ जा कऽ घूरक ओरियान कऽ लेब?"

किछु छी तँ सम्पैत छी किने, केकरा ने लोभ होइए। घरवारी कहलकैन-

"अपने उठा कऽ लकड़ी लऽ आनब। तखन जँ अहाँ मुँह छोड़लौं तँ एक मासक घूरमे जेतेक खर्च हएत तेते लऽ लेब।"

घरवारीक बात सुनि गणेशी कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। ओना अपनो गाछ-बिरीछ छैन, मुदा जे जीवित छैन, ओ तँ भविसोक

लेल छैन्हे। मुदा जे कटि गेल ओ तँ पुन: ठाढ़ भऽ जीवित नइ हएत...।

आँगन आबि कुड़हैर, टेंगारी, नेने लकड़ी लग पहुँचला। टेंगारी-कुड़हैर हाथमे देख छह बर्खक पोता सेहो पाछू-पाछू दौड़ल गेलैन।

लकड़ी लग पहुँच टेंगारी-कुड़हैर राखि गणेशी काका पोताकेँ पहिने अछिया देखेलखिन।

अछिया देख पोता पुछलकैन-

"ई की छिऐ?"

बजला-

"फकीर भैया जे मरला से अहीमे जरि कऽ छाउर भेल छैथ। एहने रीत संसारक अछि।"

पोता पुछलकैन-

"सभकेँ अहिना होइ छै?"

गणेशी काका बजला-

"कहैले तँ सभकेँ अहिना होइ छै मुदा...।"

लगाड़ी पोता छैन्हे। बाबाक संग लगपन छइहे। तहूमे लगमे बेसी काल रहने गणेशी कक्काक नाड़ी सेहो पकड़नहि रहै छैन। नाड़ी पकड़ब भेल जिद्द रोपि अपन पक्षमे आनब। ओना, बाल-बोधक जिद्दकेँ गणेशी काका अवोध जिद्द बुझै छैथ, जेकरा खिच्चो कहले जा सकैए। ओना, ओइमे खच्चाक संभावना सेहो रहै छै, तँए नाड़ी पकड़बकेँ गणेशी काका सोल्हैनी अधला नहियेँ बुझै छैथ। किए तँ 'कहब' एक भेल, दोसर भेल 'सुनब' आ तेसर ने भेल 'करब', तँए तीनूमे अन्तरो अछिए। 'सुनब'सँ भारी 'कहब' भेल आ तहूसँ केते नमहर भारी करब होइते अछि। तँए पाशाकेँ आगू बढ़बैत गणेशी

काका कुड़हैर उठा लकड़ी फाड़ए लगला। अपन बात बिसैर पोतो टेंगरी उठा डारिपर पटकए लगल।

तही बीच गणेशी कक्काक पुतोहुकेँ कियो कहि देलकैन जे बेटा मरचरमे अछि।

सुनिते बीढ़नी जकाँ भनभनाइत पुतोहु लगमे पहुँच बेटाकेँ कोरामे उठा ससुरपर अकची-दोकची सेहो भनभनाइते आँगन दिस बढ़ली।

गणेशी कक्काक मनमे भेलैन जे झूठ-फूसमे तेहेन रगड़ी छैथ जे बच्चाकेँ अखन जान लेती।

..पाछू-पाछू सभ बात सुनैत कानमे ठेकी लगौने गणेशी काका पोता लग पहुँच मुँह खोलला-

"बच्चाकेँ किए जान लइपर तूलल छी। आँखिमे गेजर भेल अछि जे एते ठंढामे बच्चाकेँ नहाएब।"

ओना, पुतोहुक तामस अखनो धरि नहि कमल छेलैन, ओहिना छेलैन। मुदा तामस रोकैक उपायो तँ अछिए। ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे टस-मस होइबला नइ अछि। ओ तँ निर्भर करैत अछि जगहपर। खाएर जे से..। तैबीच उल्टा उत्तर दैत माने उनटबैत पुतोहु कहलकैन-

"ई जान लइ छेलखिन से बड़बढ़ियाँ आ हम बड़ अधला?"

गणेशी काका मने-मन पुतोहुकेँ बराबरीक बात सुनि क्षुब्ध भऽ गेला। मनमे उठलैन- लोकाचार की छी। कोन समाजमे केहेन लोकाचार निरमित होइए आ विलीन होइए, से थोड़े बुझै छैथ। कहनौंपर मानबे केते करती। मुदा जँ जवाबसँ नहि रोकब तँ बच्चाक जान लइये कऽ छोड़ती। बजला-

"बच्चाक सौंसे देहमे केतौ जान लेब देखा दिअ ते। मुदा अहाँ जे माथपर पानि ढारबै से अपन आँखि नइ देखैए। बड़ मन जरल अछि ते एक बून गंगाजल माथपर दए दियौ।"

गपो-सप्पक क्रम आ कलक चबुतरोक ठंढपन पुतोहुक मनकेँ जेना ठंढ बनबए लगलैन। बजली-

"गंगाजल घरमे नइ अछि।"

'अभाव' सुनिते गणेशी काकाकेँ भाव जगलैन। बजला-

"गंगाजलोक कमी अछि। कलक पानि की छिऐ। गंगो महरानीक पानि पीब लोक अपन धरम-करमसँ जीबैए आ कलोक पानि पीब तँ जीविते अछि। हाथसँ लकड़ी छुलक तँ ओतबे दूर ने छुआएब भेलै, तँए दुनू हाथ धोइ दियौ। हम जाइ छी- लकड़ी चीरैले। अपन बेटाकेँ पकैड़ कऽ घूर लग राखब। बड़ी-कालसँ ठंढमे वौआएल अछि।"

गणेशी कक्काक विचार सुनि पुतोहु पुताउ बनि गेलैन, तँए बजली किछु ने मुदा मन गवाही देलकैन जे बेटाधन छी, जँ अपने बेटी बनि नहि चलब तँ बेटा थोड़े बेटा बनि पौत?

❑

शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016

पाही पट्टी

ऐ सालक समए सुभ्यस्त होइतो गाममे सुभ्यस्तता नइ आएल। माने ई जे समै-समैपर बरखा भेने परोपट्टाक गाम सभमे धानक खेती नीक भेल। जहिना समैपर अवाद भेल तहिना ओकर बाढ़ियो भेल आ आब तँ सहजे फुटि कऽ धान लबि गेल, माने चौरभर भइये गेल अछि। कातिक मास, खेत-पथारक एहेन रूप बनि गेल अछि जे बुझि पड़ैत साक्षात् लक्ष्मी आबि गेल छैथ। मुदा से परोपट्टाक आन गाम सभमे। अही बीचमे मरलाही गाम सेहो अछि। मरलाही गाम नमहर अछि। असगरे गाम पंचायत सेहो छी। सभ जातिक लोकक बास सेहो अछिए।

मरलाही गामक खेतीक चुहचुही ऐ दुआरे नहि जे गाममे खेत-पथार ऐछे नहि वा जे ऐछो से ऊस्सरे-खासर अछि।

उस्सर-खासर ऐ दुआरे अछि जे गामक अस्सीसँ बेसी प्रतिशत वा ई कहियौ जे गामक बारह-सँ-चौदहअना जोतसीम जमीन ओहन लोकक छैन जे परिवारक हिसाबसँ कम्मे छैथ, आ जे छैथो ओ पढ़ि-लिखि कऽ नोकरी करए बाहर चलि गेला।

तँए अपन खेत रहितो खेती नइ करै छैथ। ने अपने खेती करै छैथ आ ने कियो बटाइ करै छैन। तेकर कारणो अछि। कारण ई अछि जे जिनकर सबहक खेत छिऐन ओ नीक-नीक नोकरियो करै छैथ आ नीक कमाइयो करै छैथ, तँए खेतक उपजाक खगतो नहियेँ बुझि पड़ै छैन।

परम्परासँ खेतीक उपजाक बँटवारा अदहा-अदही रहल। माने ई जे जिनकर खेत छिऐन, अदहा उपजा हुनकर हेतैन आ जे खेती करत तिनकर आधा हेतैन। आने गाम जकाँ मरलाहियो गामक पढ़ल-लिखल लोकक विचार अछिए। विचारक पोषक तत्त्व सेहो मजगूत ऐछे, तँए परम्पराकेँ तोड़ब पाप बुझै छैथ। बुझबाको चाही, बुझबाक ऐ दुआरे चाही जे पढ़ल-लिखल छैथ वएह सभ ने समाजक नियन्ता छैथ, हुनके सबहक बले ने गामो ठाढ़ अछि आ समाजो। मुदा गामक जे खेत विहीन लोक छैथ माने जिनका बास रहितो चास नहि छैन, तँए ओ सभ निहत्था छैथ। ओना निहत्था नै छैथ किएक तँ हाथ तँ छैन्हे, मुदा जे खेतक उपजाक आशासँ जीवन-यापन होइत, से नइ छैन। माने खेत नइ छैन। मुदा तँए मलिमुँह छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

ओहू सभ परिवारमे अपन लगन-मिहनतसँ नीक-नीक पढ़लो-लिखल छैथ आ नीक-नीक कुरसीपर बैस नीक-नीक कमाइयो करिते छैथ। जइसँ देखा-देखी परिवार चलिते छैन। मुदा ओहन परिवार कम अछि। बेसी परिवार ओहन अछि जे बोइने-बुत्ता करै छैथ आ गोटि-पँगरा नाँगैर पोसि गुजर करै छैथ आ किछु गोरे छोट-मोट उद्योग-धंधा सेहो करै छैथ। जइसँ सबहक आत्मशक्ति मजगूत छैन्हे। तेतबे नहि, सरकारक बनौल कानूनक अनुकूल सेहो छैथे। माने ई जे सौ किलो उपजमे तीस किलो खेतबला आ सत्तैर किलो उपजौनिहारकेँ हौउ। खेतबला आ बिनु खेतबलाक बीच अही मना-मनीसँ खेत परती बनल अछि, माने जोत-कोर बन्न अछि। तँए समए नीक रहितो मरलाही गामक दशा नीक नहियेँ अछि।

ओना ऐ सभसँ अलग जोतखियाइन काकीक छैन। जोतखियाइन काकीक माने जोतखी कक्काक पत्नी। जोतखी काका भूगर्भ-वेता छला, चालिसे बर्खक अवस्थामे मरि गेला। दूटा बेटो छैन

आ पूर्वजक देल पाँच बीघा खेतो छैन्हे, जइसँ जीवन-यापन नीक चलै छेन। पत्नी पढ़ल-लिखल नइ छथिन मुदा परिवारक घर-अँगनाक बेवहार माएसँ आ बाहरक बेवहार पतिक देख-रेखमे सिखलैन, जइसँ पक्का पत्नी तँ बनियेँ गेल छथिन, तँए 'जोतखियाइन' कहब अनुचित नहियेँ अछि। दुनू बेटो पढ़ि-लिखि तँ लेलखिन मुदा संस्कृत-विद्यालयक शिक्षा रहने, गाममे अँटावेश नइ भेलैन तँए दिल्ली जा कऽ दुनू मन्दिर पकैड़ लेला। नीक आमदनी हाथ लगलैन, जइसँ दिल्लीए-मे एकेठाम दुनू भाँइ अपन-अपन तीन मंजिला मकान सेहो बनाइये नेने छैथ।

जोतखीए काका जकाँ जोतखियाइन काकी सेहो रगड़ी छैथे। बेटा-पुतोहुक लाख कहलाक बादो, एक्केटा जिद्द धेने रहली जे जइ पतिक संग इज्जतक प्रेम भेल ओ जँ पहिने दुनियाँ छोड़ि देलैन, तिनका संग हम केना बिसवासघात करब, तँए हमहूँ अपन सारा[3] प्रेमी पतिक बगलेमे बनबाएब। जिद्द रोपि जोतखियाइन काकी अपन गाम-घर छोड़ए नहि चाहलैन। ओना, बेटा सभ कोनो वस्तुक अभाव गामोमे नहियेँ हुअ दइ छैन, जइसँ विचार आरो बेसी पवित्र भऽ गेल छैन। अपन जमीनो-जत्था आ अपनो सेवा-ले एक गोरेक, जेकर नाम दुखबा छिऐ, रखने छैथ। दुखबोक पाँच गोरेक परिवार जोतखियाइने काकीक परिवारक सीख-लीख धेने चलि रहल अछि।

जोतखियाइन काकीक छोटका बेटा अपन बेटाक मुड़न वैष्णो-देवीक स्थानमे कबुला केने छला। पहिल असीरवाद दादिये ने देथिन माने खोंछिमे केश रखथिन, तँए माएकेँ कश्मीरसँ दिल्लीक अपन तीन मंजिला कोठा देखा फुसला कऽ रखि लेलैन।

जखन जोतखियाइन काकीकेँ छह मास दिल्लीमे भऽ गेलैन,

---

[3] मृत्युक भेलापर जरौल गेल जमीनपर जे माटिक ढिमका बनौल जाइए

मन सेहो लागए लगलैन, तखन एक गोरे दिया दुखबाकेँ समाद देलखिन जे जहिना अपन घर-दुआर छह तहिना हमरो बुझिहक। ओकरो देख-भाल करैत रहिहह।

दुखबा ओइ पाँचो बीघाक मालिक बनि मरलाहिये गाममे अछि। जे अछि तँ असगरे मुदा अछि तँ मरलाहिये गाममे।

दिल्ली युनिवर्सिटीमे मरलाही गामक एकटा विद्यार्थी, जे बी.ए.मे पढ़ैए, नाओं छिऐ राधामोहन। पिता स्टील फैक्ट्रीमे नोकरी करै छइ। दुर्गा पूजासँ छठि पाबैन धरि रहैक विचारसँ राधामोहन गाम आएल। दुर्गा पूजामे तँ खूब मस्ती मारलक, मस्ती ई जे मरलाही गामक चारू-भागक गाममे दुर्गा पूजामे जहिना नाच-गानक कम्पेटिशन अछि तहिना पूजो आ सजावटोक बीच ऐछे, जइसँ मस्तीक जगह बनियेँ गेल अछि।

दसमीक परात अर्थशास्त्रक विद्यार्थी राधामोहन, भिनसुरका चाह पीब जखन आगू तकलक तँ बुझि पड़लै जे गामक जे मूल पूजी अछि वएह ने गामक आधार भेल, तँए अपना नजरिये जाबे गामकेँ नहि देख लेब ताबे गामकेँ नीक जकाँ जानियोँ तँ नहियेँ सकै छी। मास दिन-ले जखन गाम आएल छी तखन बहुत किछु तँ देखिये सकै छी। यएह सोचि राधामोहन अपने तरहक परिवारक किसुन लाल आ मोहन लालक संग गाम टहलब नीक बुझलक। दुनू गोरे राधामोहनकेँ भैया सेहो कहिते अछि आ टोलबैयाक सम्बन्ध सेहो छइहे। किसुन लाल हाइ स्कूलक विद्यार्थी आ मोहन लाल कौलेजक। ओना स्कूल-कौलेज रहितो विषयवार पढ़ाइ भेने विचारो प्रभावित भइये जाइ छइ। किसुन लाल साईंसक विद्यार्थी आ मोहन लाल कौमर्सक। जखन कि राधामोहन अर्थशास्त्र ऑनर्सक विद्यार्थी छी।

दुनू गोरेक संग राधामोहन गामक बाध दिस विदा भेल। गामक

वस्तु-जात देख राधामोहनक मनमे जिज्ञासा उठै जे ई केहेन सम्पैत अछि..? गामक रित हितमे केते अछि..? दिल्लीक प्रवास भेने अपनाकेँ बहरबैया बुझि राधामोहन प्रश्न उठबैत। मुदा मनोनुकूल उत्तर ने किसुन लालसँ भेटै आ ने मोहन लालसँ। तेकर मूल कारण रहै जहिना राधामोहन अनाड़ी तहिना किसुन लालो आ तहिना मोहन लालो। मुदा ऊपरी बात ईहो होइ जे तीनू तीन डारिक विद्यार्थी छी तँए नजैरमे अन्तर भेने प्रश्न उलझिये जाइ। रस्तापर उत्तर एबे ने करइ। तँए मजाके-मजाकमे राधामोहन सौंसे गाम टहैल जखन घुमतीकाल घर लग आएल तखन बाजल-

"शुभ लाल काका जीबै छैथ आकि मरि गेला।"

पनरह बर्ख पूर्व कौलेजक अर्थशास्त्र विभागक पदसँ शुभ लाल काका सेवा निवृत्ति भेल छला। ओना विचारवान रहितो समयक परिवेशमे परिवार छिड़ियाइए गेलैन मुदा संजोग नीक रहलैन जे एकटा बेटी विधवा छैन, जे अपन एक मात्र सन्तानक संग लगमे रहै छैन जइसँ जिनगी जीबैमे कोनो असोकर्ज नहियेँ होइ छैन। पेंशनो नीक भेटै छैन आ नातियो कौलेजमे पढ़िते छैन। जइसँ घर-सँ-बाहर धरिक जरूरत पूरा होइते छैन।

मोहन लाल बाजल-

"ओना शुभ लाल काका बहुत बुढ़ भऽ गेल छैथ, मुदा छैथ जीविते। दरबज्जापर सँ केतौ ने जाइ छैथ।"

शुभ लाल काकाकेँ जीवित सुनि राधामोहनक मन चनकल। चनकल ई जे पचहत्तैर बर्खक जीवन्त आ तइसँ पहिलुका सुनल-बुझल तँ शुभ लाल काका भेबे केला। तहूमे अर्थशास्त्री छैथ, जरूर हुनकासँ गामक अर्थ बेवस्थाक जानकारी भेटत। तँए जाबे गाममे छी ताबे हुनके लग किए ने किछु समए बिताबी जे गाम एलाक फल

पाएब।

साँझू पहर भेँट करैक विचार करैत राधामोहन बाजल-

"जहिना सौंसे गाम तीनू गोरे मिलि देखलौं तहिना तँ शुभ लाल काका सेहो ने गाम देखैत एला अछि। तँए तीनू गोरे सौंझुका प्रोग्राम शुभ लाल काका ऐठामक राखह।"

राधामोहनक संग घुमैमे किसुन लाल आ मोहन लालकेँ की भेटलै से तँ ओ दुनू जानए, मुदा दुनूक मन एते हर्खित जरूर भऽ गेल रहै जे संग छोड़ैक इच्छा नइ होइ। राधामोहनक बात सुनि दुनू गोरे संगे बाजल-

"बड़बढ़ियाँ।"

सूर्यास्त होइते तीनू गोरे–राधामोहन, किसुन लाल आ मोहन लाल–शुभ लाल काका ऐठाम पहुँचल। शुभ लाल कक्काक वृद्ध शरीर तँए दू मंजिलाक रहैक कोठरी छोड़ि पहिल मंजिलक निचले कोठरीमे रहै छैथ आ पलंग-चौकी छोड़ि निच्चेमे ओछाइन-बिछाइन सेहो रखने छैथ। ओना, तखन ओ दरबज्जाक ओसारपर बिछान बिछा बैसल रहैथ आ पत्नी सेहो लगेमे बैसल रहथिन।

..पहुँचते राधामोहन पएर छुबि प्रणाम करैत बाजल-

"प्रणाम चाचाजी।"

बिनु चिन्हनौं शुभ लाल काका 'नीके रहह' तँ कहि देलखिन मुदा मरियाएल आँखि ऊपर उठा चिन्हैक कोशिश करए लगला। ओना शुभ लाल कक्काक पत्नियोँ राधामोहनकेँ नइ चिन्ह पौलखिन। तैबीच शुभ लाल काका बजला-

"बौआ, आँखि मलीन भऽ गेल अछि, ओना कानो तहिना भऽ गेल अछि मुदा आँखिसँ बेसी नीक अछि। नीक जकाँ नइ चिन्ह

पौलियह?”

राधामोहन बाजल-

“काका, हम जुगेसरक बेटा छी।”

शुभ लाल काका-

“जे दिल्लीमे नोकरी करैए?”

“हँ! स्टील फैक्ट्रीक चिमनीमे काज करै छैथ।”

राधामोहनक बात सुनि शुभ लाल काका पुछलखिन-

“कए भाए-बहिन छह?”

राधामोहन-

“तीन भाए-बहिन छी। भाए छोट अछि, बहिनक बिआह-दुरागमन भऽ गेल अछि, सासुर बसैए, शिक्षिका छी।”

शुभ लाल कक्काक नजैर नारी शिक्षापर गेलैन। मने-मन गाम-शहरक तुलना करए लगला जे गामक जेते लड़की स्कूलमे पढ़ैए तइसँ बेसी प्रवासी परिवारक पढ़ैए। मुदा लगले मन गामक जेरक-जेर लड़कीकेँ साइकिलपर पढ़ैले जाइत देखल रहैन तँए मन उनैट गेलैन। उनैट ई गेलैन जे आब गामोक लड़की सभ स्कूल जा रहल अछि। मुदा लगले भेलैन जे जे टेकनीकल ज्ञान शहरक लड़कीकेँ भेटने सुविधा अछि ओ तँ गाममे नहियेँ अछि। तँए गिनतीमे भलेँ शहरे जकाँ गामो पुरि जाए, मुदा उच्चस्तरीय शिक्षा तँ शहरेक लड़कीकेँ अछि...।

शुभ लाल काका बजला-

“तूँ की करै छह?”

राधामोहन-

“जे.एन.यू.मे पढ़ै छी। अर्थशास्त्र आनर्स रखने छी।”

एक तँ अर्थशास्त्र विषय (माने शुभ लाल कक्काक) दोसर दिल्ली युनिवर्सिटीक विद्यार्थी गाममे पेब शुभ लाल कक्काक मन ओहिना कलैश गेलैन जहिना कोनो गाछमे नव कलशक आगमनसँ होइत।

..नातिकेँ सोर पाड़ि शुभ लाल काका कहलखिन-

“बौआ, पहिने पानि सभकेँ पिआबहुन। आ चाह बनबैले माएकेँ कहि एतै आबि कऽ तहूँ बैसह।”

नातिकेँ कहि शुभ लाल काका राधामोहनकेँ कहलखिन-

“बौआ, रामशरण शर्मा, पनिक्कर आ पुष्पेश पंत भाय जीबै छैथ आकि मरि गेला?”

राधामोहन-

“चाचा, ओ सभ मरैबला छैथ जे मरता। ओ तँ अमर छैथ अमर रहता।”

शुभ लाल कक्काक मन जुड़ा गेलैन। बजला-

“बौआ, केना कि अखन पढ़ाइ चलि रहल छह?”

राधामोहन-

“चाचा, दुर्गा पूजासँ छठि धरि-ले गाम आएल छी। अपने पाकल आम भेलिऐ, तँए चाहै छी जे जाबे गाममे छी ताबे अपनेसँ किछु गामक अर्थनीति बुझी।”

‘अर्थनीति’ सुनि शुभ लाल काका चौंकला। चौंकला ई जे अर्थशास्त्र विषय पढ़बैक दरमाहा लेलिऐ आ पेंशनो लइ छिऐ, मुदा अर्थनीति गामक की अछि, से थोड़े पढ़लौं। जिनगी भरि यएह ने पढ़बैत ऐलिऐ जे जखन जनसंख्याक वृद्धि होइए माने लोकक बाढ़ि होइ छै तखन हेजा-प्लेग सन बेमारी भगवान दइ छथिन आ जनसंख्या नियंत्रण करै छैथ...।

ओना, तरेतर शुभ लाल कक्काक मन कनी घबरा जरूर गेलैन मुदा अपनाकेँ संयमित करैत बजला-

“पहिने सभ कियो चाह पीब मनमे सरदी-गरमी एक रंग बना लएह पछाइत हृदयसँ गप-सप्प हेतइ। कमसँ कम एते तँ भेबे कएल जे मास दिन तूँ औरुदा बढ़ा देलह।”

चाह पीब राधामोहन बाजल-

“चाचा, गामक तँ बारह-चौदहअना जमीन खसले अछि जे उत्पादित वस्तु छी, तखन गाम केना उठि कऽ ठाढ़ भऽ दौड़त?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि शुभ लाल काका गुम भऽ गेला। तरेतर तामसो उठैत रहैन जे सभ किरदानी गामेक लोक करैए। भेँट करैले जखन लगमे औत तँ दुनू आँखि झाड़ि-झाड़ि कानि-कानि कहत जे गाम उजैर रहल अछि। गाम उजरत तँ समाज, संस्कृति, साहित्य सभ उजैर जाएत मुदा गामक सम्पैतक उन्नैत केना हएत, तैकाल आँखिक पानियेँ सुखि जाइ छइ..! बजला-

“बौआ, हम तँ पानक आदी छिअ, पान खेबह। जाबे हम पान लगबै छी ताबे तोहूँ गामक चौहद्दी बान्हब छोड़ि एक-एक समस्याकेँ बारीकीसँ देखह। अपना सभ एक समाजक छी, तँए हरेक समस्याकेँ पकैड़ ओइपर नीक-बेजाए विचार करह जे नीक रस्ता की हएत, ओ अपनबैक अछि जइसँ समाजक कल्याण आकि गामक उत्थान हएत।”

दिल्लीक पारखी विद्यार्थी राधामोहन, शुभ लाल कक्काक विचारकेँ परेख बाजल-

“गामक बारह-चौदहअना जमीन परता भेल जा रहल अछि, तखन गामक उत्थान केना हएत?”

पानक पीक फेकते शुभ लाल कक्काक मन फुला गेल छेलैन।

राधामोहनक प्रश्नक गर उनटबैत बजला-

“बौआ, ‘थाकल पाँव पलंग भेल भारी आब की लादब हौ वेपारी।’ मुदा तँए कि समाज नइ छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।”

मुड़ी डोलबैत राधामोहन बाजल-

“ई तँ अछिए।”

राधामोहनक उत्तर पेब शुभ लाल काकाकेँ जेना आगूक गर भेटलैन तहिना बजला-

“बौआ, गामक जिज्ञासा जगलह, ई तँ बहुत पैघ गुण भेल। जहिना सभ वस्तुक अपन-अपन नीक गुण होइ छै, तहिना मनुखक गुण समाज सेवा सेहो छी। तोंही कहह जे केना परती खेत उपजाऊ बनत?”

ओना, सोझ-साझ भाषामे शुभ लाल काका बाजल छला मुदा राधामोहन वौआ गेल। वौआ ई गेल जे परती खेतक माने ओ विशेष रूपमे लेलक। जइसँ मनमे ठहकए लगलै जे खाली जोत-कोरक दुआरे खेत परती अछि, तेतबे बात नहि। समाजक सभ कथुक यएह दशा अछि। मुँह बन्न केने मने-मन राधामोहनकेँ वौआइत देख मोहन लाल बिच्चेमे बाजल-

“चाचा, अपना गामक जेते पुरुख छैथ ओ तँ परदेशमे चाकरीसँ भीख तक माँगि जीवन बीता रहल छैथ, तखन गामक खेत परती रहत की नहि?”

ओना मोहन लालक प्रश्न सुनि शुभ लाल काका मुस्की मारए लगला मुदा जखन अपनापर नजैर उनटलैन तँ अपनो सहए देखला। माने जएह सीख-लीख बहरबैयाक सएह ने अपनो अछि...। तैबीच राधामोहन मुँह खोललक-

“मशीनक जुगमे जँ खेत परती रहल, तखन केतौ-ने-केतौ बँटबारामे गड़बड़ी छइ।”

राधामोहनक सुढ़ियाएल विचार सुनि अपन विचारकेँ सुढ़ियबैत शुभ लाल काका बजला-

“बौआ, पहिलुका समाज आ अखुनका समाजमे बहुत दूरी बनि गेल अछि।”

बिच्चेमे राधामोहन मुड़ी डोलबैत बाजल-

“हँ, से तँ बनियेँ गेल अछि!”

अपन विचारमे सह पबिते शुभ लाल काका बजला-

“पैछला समाजक नमहर इतिहास अछि, ओतेमे अखन जाएब नीक नहि, अखन एतबे बुझह जे पहिने पाही पट्टीक जमीनदार अनगौंआँ होइ छला आ केतौ-केतौ गौंओं, मुदा आब तँ... ।”

‘मुदा आब तँ’ कहि शुभ लाल काका जेना किछु मन पाड़ए लगला, तइ बिच्चेमे राधामोहन बाजल-

“हँ, से तँ बुझले अछि।”

‘बुझले अछि’ सुनि शुभ लाल कक्काक मन मानि गेलैन जे जखन पैछला इतिहासक धारा राधामोहनकेँ बुझल छै, तखन तँ आइक जे परिस्थिति बनि गेल अछि, ओइ बुझैमे असान जरूर हेतइ... । बजला-

“बौआ, जहिना मनुख अनन्त अछि। मुदा अखन ओतेमे नइ जा कऽ मात्र दूटा समस्याक सम्बन्धमे कहै छिअ।”

मुस्की दैत राधामोहन बाजल-

“अखन मास दिन गाममे रहबो अछि, तँए कोनो औगताइयो नहियेँ अछि। ओना जिनगीक एकोटा बात बुझब कम नइ भेल, तखन जँ अपने दूटा-क चर्च करब ई तँ आरो बेसी भेल।”

शुभ लाल काका बजला-

“आइक परिवेशमे गाममे जे जमीनबला छैथ, जमीन्दार छैथ, ओ सभ पढ़ि-लिख कऽ नीक-नीक नोकरी करए बाहर चलि गेला। गाममे खेत तँ रहि गेल मुदा खेती करैबला नइ रहला, तँए जमीनक ई दशा भऽ गेल अछि।”

राधामोहन बाजल-

“ओ सभ ने बाहर बसि गेला मुदा गामोमे तँ लोक अछिए। किए ने हुनका सभकेँ बँटाइ करैले जमीन ओ सभ दए दइ छथिन?”

मुस्की दैत शुभ लाल काका बजला-

“बौआ, अखनो ओहन विचार लोकक मनसँ मेटाएल कहाँ अछि। अखनो परम्पराकेँ आधार बना बाबा-दादाक विचारकेँ बँटवारा समाजपर थोपए चाहै छैथ, जे हुनका स्वीकार नइ छैन। अही बीचमे गामक खेत परता बनि गेल अछि।”

शुभ लाल कक्काक बात सुनि राधामोहनक मन जेना भरि गेल तहिना बाजल-

“चाचा, आइ एतबे रहऽ दियौ। काल्हि फेर आएब।”

❑

शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016

बीरांगना

पूस मासक अन्हरिया पखक दोसर दिन माने दुतिया-अन्हार। दिनक दू बजे रघुनाथ काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस आजुक घटनाक पूर्ण विवरण मने-मन समटैक विचार कऽ रहल छैथ। रंग-बिरंगक चर्च परिवारो आ गामोमे उड़िये रहल अछि, तैबीच सहीकेँ पकड़ब ओतेक असान नहियेँ अछि, मुदा असम्भवो अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओ तँ रस्ताक रस्सा पकैड़ बिटियौनहि हएत, तइले दोसराक संग संलग्न बेकतीसँ बुझब जरूरी अछिए।

अपन कानूनीक ऐगला बाट रघुनाथ काका सम्हारि चुकल छला, जइसँ भविसक तँ उपाय भऽ गेल छेलैन मुदा परिवारोक बीच तँ तोष-भरोस दैत असथिर तँ करबाके छेलैन। जइले परिवारजनसँ रायो-विचार करब आ अपन घटित घटनो सुनब तँ छेलैन्हे।

घटना एहेन विकराल भेल छल जे परिवारोजन आ टोलो-पड़ोसक लोक विचलित भइये गेल छला।

रघुनाथ कक्काक पत्नीक संग पोती–रीना कुमारी–ठमकैत ठहकैत पहुँचलैन। ठमकैत ऐ दुआरे जे परिवारक सभ बेथाएल, तँए केकर बेथा के सुनि निमरजन करत। मुदा परिवारक श्रेष्ठजन भेने ऐगला मुँहरीक विचार तँ रघुनाथे काका ने करता, तँए। ओना पोतीक काज देख रघुनाथ कक्काक मन बेहद खुशी छेलैन, मुदा किछु अछि तँ बाल-बोध अछि, ओकरा जँ मनोनुकूल विचार नइ देल जाएत, सेहो नीक नहियेँ। आँखि उठा रघुनाथ काका रीनापर देलैन। माघ मासक

अन्हरियाक तिरोदसीक भोरक चान जकाँ जे लाखो-लाख पाला-कुहेसक बीच अपन लालिमा बरकरार रखैए, तहिना रीना कुमारीक ललौन चेहरा दमकैत.., मुदा जहिना पोतीक चेहरा दमकैत रहैन तहिना पत्नीक मन हतास् भेल उड़ल बुझि पड़लैन। लगमे अबिते पत्नीकेँ कहलखिन-

“बैसू, जेना जे भेल सभ बात कहू।”

आगूक सोझमे सुदामा आ तिरछिया कऽ रीना आगूमे बैसलैन, सुदामा बजली-

“पोतीक तँ जान बँचि गेल, नइ तँ नाक-कान सभ कटि जइतए।”

ओना, रघुनाथ काकाकेँ भनक लगि गेल रहैन जे जखन आततायिक हुजुम चारू भागसँ घर-अँगना घेरए लगलैन तखन रीना कुमारी अपन जान बँचबए–जे पकैड़ ने लिअए–दोसर अँगना पहुँच गेल। जेतए नीक संरक्षण भेटलै, आ आततायिक हाथसँ जान बँचि गेलइ।

रघुनाथ काका बजला-

“भगवान केकरो अधला केलखिन हेँ जे रीनाक अधला करितथिन।”

‘भगवान’क नाओं सुनिते पत्नीक मनक बोझ जेना कमलैन तहिना मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते बजली-

“किछु छी तँ मनुखक बच्चा छी किने, बुधि-अकील तँ छइहे ने। अपन जान अपना बुधिये बँचा लेलक..!”

ओना, रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन जे पत्नीक ऐगला बात नहि सुनि पहिने पोतीक बात सुनब बेसी नीक हएत, मुदा लगले फेर भेलैन

जे ने पोतिये आकि पत्नीए केतौ जेती आ ने अपने केतौ जाइक तैयारीमे छी जे धड़फड़ी रहत। परिवारमे जे घटना भेल ओ तँ पोखैरक हिलकोरक पानि जकाँ धीरे-धीरे असथिर हएत। ओना, पोखैरक हिलकोरक पानिकेँ पानियेँ रोकि-रोकि असथिर करैए, मुदा मनक हिलकोर तँ विचारेसँ ने असथिर हएत, तँए पत्नीक विचार रोकब नीक नहि। तहूमे परिवारक घटना छी मनक संग छातियो दहलिते हेतैन जे मनक विलाप निकलला पछातिये असथिर हएब सम्भव भऽ सकैए। परिवारक घटनाक विचार करए जखन बैसल छी, तखन एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे पोतीक नजैर घटनाक सभ बिन्दुपर नहि अँटैक जघन्य दृश्यमे सटि गेल होइ, जइसँ छोट-छीन ओहन बिन्दु छुटि जाए, जे बिन्दु पत्नीक विचारसँ प्रगट भऽ जाए। तँए पत्नीक विचार सेहो अपन महत् रखिते अछि।

पत्नीक विचारसँ रीनाकेँ शान्ति आ शान्त्वना भेटबे करत। जेते शान्त्वना मनमे बसत तेते बेथा कमतै। जेते मनक बेथा कमतै तेते बुधि सर्ड़ास हेतइ। जखने बुधि सर्ड़ास हेतइ तखने विचारक विकार सेहो हटबे करतै। जइसँ मलिनता कमतै आ ललितमा बढ़तै...।

सह दैत रघुनाथ काका बजला-

"अहाँ सन दादीक पोती ने रीना छी, तोहूमे कौलेजमे पढ़ैए, आब कहिया बुधि-अकील हेतइ।"

अपन पोतीक बँचैत इज्जत आ अपन दायित्वक विचार सुदामा काकीक मनकेँ सकतबए लगलैन। मरुभूमिक मुइल धारमे जहिना एकाएक बाढ़ि आबि गेने मड़ाइन-सड़ाइन गन्ध नहि, कलियाएल-फुलियाएल सुगन्ध उठैए तहिना सुदामो काकीक आ रीनो कुमारीक मनमे उठए लगल।

सुदामा बजली-

"जहिना कुल-खनदानक इज्जत अखन धरि लहलहाइत आबि रहल अछि तेहने लहलही पोती रखि लेलक।"

दादीक बात सुनि रीनाक मन ओहिना जुड़ा गेल जहिना जुड़शीतलक नीर दादा-दादीक हाथे सिरपर चढ़ने जुड़ाइत अछि। अपन कएल कृत्तिपर रीना कुमारीक मन नाचए लगल। जइसँ मुहँक रूखिटा नहि, चेहराक रूखि सेहो दमकए लगलै। नजैर उठा दादीपर दैत, आगू बढ़ा बाबापर सेहो रीना देलक। प्रसन्न चित्त बाबाकेँ देख रीनाक मन सेहो प्रसन्नसँ प्रशान्त दिस बढ़ए लगल...।

तैबीच रघुनाथ काका पत्नी दिस देख बजला-

"जे सीख-लीख अहाँक अछि, सएह ने पोतियोक हएत।"

पतिक विचार सुनि सुदामा काकीक मन फुदफुदेलैन। फुदफुदाइते बजली-

"साठि बर्खक जिनगीमे जहिना अनको बहु-बेटीकेँ अपन बहु-बेटी बुझि झाँपैन दैत रहलौं अछि तहिना ने भगवानो हमरा देलैन।"

पत्नीक खुशी मन देख रघुनाथ काका टुसकियबैत बजला-

"भगवान केकरो बेपाट भेलखिन अछि जे हमरा हेता।"

रघुनाथ कक्काक बातमे सुदामा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा चेहराक रूखि मलिन हुअ लगलैन। पत्नीक चेहराक रूखिसँ रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन जे जहिना कियो पहाड़क टुगनीपर सँ कोनो कारणे ओंघराइत समुद्रमे डुमि जाइए तहिना भरिसक आइ अपनो परिवारमे होएत। मनक मोनिमे जहिना रघुनाथ काका उग-डुम करैत रहैथ तहिना सुदामा काकी सेहो हुअ लगली। उग-डुम करैत बजली-

"आइ जँ आततायिक हाथ रीना पड़ि गेल रहैत तँ अखन केतए

रहितए..?"

बजैत-बजैत सुदामा काकीक छाती चहकए लगलैन। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर बहए लगलैन। नोरो तँ नोर छी, एक जल स्वरूप असथिर नीर छी तँ दोसर जल प्लावित धार छी! सुदामा काकीक नोर जल-प्लावित धार जकाँ आगू बढ़लैन। दुनू गालपर बहैत नोरक धारकेँ जहिना रघुनाथ काका अपन धोतीक खूटसँ पोछलखिन तहिना रीना सेहो पोछलक, मुदा मन जिनगीक विशाल मोनिमे डुमए लगलै। डुमिते मन हुमरलै- जँ इज्जतखोर लूटेराक हाथ पड़ि गेल रहितौं तँ अखन केतए रहितौं..! हमर की गति होइत..! हे भगवान! अहीं हमर रक्षा केलौं जे ओहन बुधि ओइकाल जगेलौं जइसँ अपन रछिया अपने कऽ लेलौं..!

गप-सप्प आगू बढ़बै दुआरे रघुनाथ काका पत्नीकेँ कहलखिन-

"एक गिलास पानि नेने आउ। कण्ठ सुखि रहल अछि।"

जहिना रघुनाथ कक्काक मुहसँ 'एक गिलास पानि' खसलैन तहिना सुदामा काकी उठि कऽ पानि आनए आँगन गेली। तैबीच रीनाक भव्य रूप देख रघुनाथ कक्काक मन पाछू घुमलैन। पाछू घुमिते मनमे उठलैन, समयक गतिकेँ कियो रोकि सकैए। जे परिवेश बनल जा रहल अछि ओइ परिवेशमे लड़का-लड़कीक प्रेम-सम्बन्धकेँ कियो रोकि थोड़े सकैए? तइले समाजकेँ विचार करए पड़तै। जँ से नहि करत तँ समाजमे सदिकाल अशान्ति उठिते रहत, जइसँ अशान्ते-अशान्त होइत रहत।

आदमी लाठी-ठेंगाक संग पहुँच घरकेँ घेरि समांग सभकेँ मारलक। जहिना पोता घरसँ चुपचाप चलि गेल, तहिना तँ लड़कीबलाक लड़कियो निकैल गेल, ऐमे परिवारक की दोख छइ। कोन नजरिये लोक ऐ समस्याकेँ देखए चाहैए..? पोतीकेँ पुछलैन-

"बुच्ची, अखन अपने दुनू गोरे छी, कियो ने तेसर अछि आ ने तेसर परिवारेक अछि तँए झूठ-फूस नहि, की भेलह?"

कनैत मनक हँसैत विचार रीना कुमारीक मनमे जगि गेल। बाजए लगल-

"बाबा, हम कलपर छेलौं। उत्तरबरिया रस्तासँ लोक सभकेँ अबैत देखलिऐ। कलपरसँ दच्छिनमुहेँ जहिना विदा भेलौं कि बीचला रस्तासँ सेहो ओहिना लोक सभकेँ अबैत देखलिऐ, मनमे भेल जे हमरा पकैड़ लेत! दौड़ गेलौं। दौड़ कऽ दोसर अँगना पहुँच गेलौं। जखने दोसर अँगना गेलौं कि मनमे उठल जे जँ कहीं अँगने–जइ अँगनामे पहुँचल रही–केँ चारू महरसँ घेरि लिअए तैयो तँ आततायिक हाथ पड़िये जाएब। जखने इज्जतखोर-आततायिक हाथ पड़ब तखने हमरो इज्जत लूटेबे करत।"

पोतीक बात सुनि रघुनाथ कक्काक मन विचलित हुअ लगलैन। ओना, सभ कथुक बाबजूद रीनाकेँ कुशक कलेप नहि लागल छल, तँए मनमे कोनो अथिरता नहियेँ रहैन। मुदा घटनाक जे रूप-रंग भेल ओ तँ मनकेँ हिलाइये देने छेलैन। जहिना पोखैरक असथिर पानिमे किछु पड़ने पानि डोलाइमान भऽ जाइत तहिना हवो-विहाड़िक झोंकमे सेहो हेबे करैत अछि। सएह रघुनाथ काकाकेँ सेहो भेल रहैन।

तैबीच सुदामा काकी सेहो गिलासमे पानि नेने पहुँच गेली। पत्नीपर नजैर पड़िते रघुनाथ काका बजला-

"रीना तँ कुल-खनदानक नाक बँचा लेलक।"

रघुनाथ कक्काक बात सुनि सुदामा काकी विहुँसली। रघुनाथ काका पानि पीबिते रहैथ कि बिच्चेमे सुदामा काकी बजली-

"जइ अँगनाक पुरुखो आ महिलो अपन परिवारक इज्जत बुझि अपन दायित्वकेँ भार बुझि निमाहत, वएह परिवार ने पुरुखाह परिवार

बनत। आ जखने परिवार पुरुखाह बनत तखने ने जन-गणमे पुरुखपन औत आ पुरखाक इज्जत बनल रहत।”

पत्नीक बात सुनि रघुनाथ काका बजला-

“अखन अहाँ मुँह चुप रखू। रीनासँ आरो बात बुझए दिअ। तेकर पछाइत की भेल, रीना?”

रीना बाजल-

“एक तँ अँगनाक टाट-फरक टुटल, वेपर्द अँगना, तहूमे लूटिहाराक नजैर सेहो पड़ि चुकल छल। लगले हम ओइ अँगनासँ दौड़ कऽ तेसर अँगना चलि गेलौं। जइ अँगनामे नीक रक्षा कवच भेटल।”

रघुनाथ काका-

“की नीक रक्षा कवच?”

रीना-

“एक तँ अँगनामे आठ-दस गोरे रहइ, तैपर ईंटाक-घर सेहो। जाइते सभ हाँइ-हाँइ कऽ पकैड़ कोठरीमे लऽ जा बाहरक सभ केबाड़ बन्न कऽ देलक।”

रघुनाथ काका-

“इज्जतखोरक जे आक्रमण भेल, से नइ देखलहक?”

रीना-

“सभ किछु देखलिऐ।”

रघुनाथ काका-

“बन्न कोठरीसँ केना देखलह?”

रीना-

“बहराक ने दुनू फाटक बन्न भऽ गेल। मुदा भीतरक जे सीढ़ी

रहइ, जे ऊपर छतपर जाइ छै, ओ खुलले रहइ। ओहीपर सँ चढ़ि छतक जे छोटकी कोठरी छै, तइमे पहुँच खिड़की देने देखए लगलिऐ।”

रघुनाथ काका-

“की सभ देखलहक?”

रीना-

“देखलिऐ जे पहिने छोटका बौआकेँ (जे बारह-तेरह बर्खक अछि) पान-सात आदमी ओकरा पकैड़ घिसियेबो करै छै आ लाते-मुक्के मारबो करै छइ। छाती फाटि गेल। जखन भाइए मरि जाएत तखन हमर दशा की हएत।”

धोतीक खूटसँ आँखि पोछैत रघुनाथ काका बजला-

“आरो की सभ देखलहक?”

दुनू हाथसँ दुनू आँखि पोछैत रीना बाजल-

“मझिला बौआकेँ जखन आठ-दस गोरे केश पकैड़ कऽ घिसियबैत रहै तखन लक्ष्मीबाइ मन पड़ल, मुदा कइये की सकै छेलौं। छतपर ईंटो ने रहै जे जुमा-जुमा फेंकतौं आ लूटिहाराक कपार फोड़ितौं।”

विह्वल होइत रघुनाथ काका बजला-

“और की सभ देखलहक?”

रीना-

“पापाकेँ पनरह-बीस गोरे चारूभर सँ घेर मारैत रहइ। मिथिलेश काकाकेँ सेहो पनरह-बीस गोरे पकैड़ कऽ घिसियबैत खून करैले लऽ जाइत रहइ।”

जहिना रघुनाथ कक्काक मन तहिना सुदामा काकीक मन छहोँ-

छीत भऽ छिड़िया गेलैन। छिड़ियाइत मनकेँ समैट रघुनाथ काका बजला-

“जखने परिवारमे वीरत्वक आगमन हएत, जे कठिन लगनसँ होएत, तखने बीरांगनाक उद्भव हेबे करत। जखने बीरांगनाक उद्भव हएत, तखने ओ अपन इज्जत-आवरू बुझि अपन जिनगीक रक्षा करबे करत।”



शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

चहकल विचार

काल्हिये वरस्पैत काका हाइ स्कूलसँ सेवा निवृत्त भेला अछि। जिनगी भरिक नोकरीक भारसँ निवृत्त होइसँ पहिने मनमे खूब खुशी छेलैन जे बेटो-पुतोहु ठौर लगि कऽ जगरनाथेपुरीमे रहैए आ बेटियो सभ ठौरेपर अछि। जइ समैमे नोकरी शुरू केने रही तइ समैमे जेते मास दिन खटलापर दरमाहा भेटै छल तइसँ चारि गुणा बेसी (नव वेतनमान बनने) आब पेंशने भेटत। जहिना अखन धरिक जिनगीमे केकरो रोब-दाब नइ सहलौं तहिना भगवान आगूओ जिनगीक पार लगेबे करता।

हाइ स्कूलक शिक्षणमे जिनगीक पैंतीसम बर्ख बीता वरस्पैत काका सेवा निवृत्त भेल छला। नीतिशास्त्रक विद्यार्थीसँ जे जिनगी शुरू केलैन ओ साठि बर्खक जिनगीक सीमानपर पहुँचा देलकैन। अखन धरि जइ घर-अँगनामे रहै छला ओ अस्थायी रूपे, मुदा आब स्थायी रूपे रहता, तँए दुनू परानीक ऐगला जिनगीक पहिल काज यएह स्थायित्व आनब छेलैन।

तीन बजे भोरे नीन टुटिते वरस्पैत कक्काक मनमे एलैन जे अखन धरि दुनू परानीक बीच बिनु ठौर-ठेकानक जिनगी छल। कहियो गाए-महींस गनैक ड्यूटी करै छेलौं, तँ कहियो भोँटक बूथपर सवा किलो मिठाइ महावीरजी केँ कबुल, जाइ छेलौं। तहिना पत्नियोँक छेलैन। ओना बापक घरमे जीबैक सभ लूरि सीख नेने छेली। तेकर कारण छल जे पिता सदिकाल चरिया-चरिया कहैत रहै छेलैन जे अपन

जिनगीक काज हर मनुखकेँ चीनहक चाही। हाथ-पएर सभकेँ छइहे, जखने ओकरा ओइ काजकेँ पकड़ैक लूरि भऽ जेतै तखने ढलानपर ढलकैत गाड़ी जकाँ जिनगी असानीसँ चलए लगत।

ओना वरस्पैत कक्काक संग भेला पछाइत सुगिया काकी किसान परिवारक कन्याँसँ नोकरिहारा परिवारक कनियाँ बनि गेल छेली। तँए क्रियामे जहिना सभकेँ होइ छै तहिना सुगियो काकीकेँ भेले रहैन।

तीन बजे भोरे वरस्पैत काकाकेँ नीन टुटिते पत्नीकेँ जगबैक विचारसँ बजला-

“पैछला चालि-ढालि छोड़ू, एते दिन दोसरक हाथमे छेलौं तँए दोसर जिनगी छल, आइसँ स्वतंत्र भेलौं। तँए जिनगीक चालि-ढालि सेहो ने तोड़ए-जोड़ए पडत। तहूमे जखन हम केतौ आ अहाँ केतौ चिड़ै जकाँ छेलौं तखुनका आ आब एक्के घर-दुआरिमे दिन-राति मनुख जकाँ रहब, से तँ अपने ने विचार करैत चलब।”

ओना सुगिया काकीक नीन सेहो टुटले छेलैन, मुदा चुपचाप अपन बुढ़ाड़ीक जिनगीक हिसाब लगबै छेली जे आब केतबो सींग कटा नेरू बनब से पार लागत। तहूमे दुनू परानी एक उमेरिये छी तँए रोगो-बियाधि तँ ओहने ने धड़त।

मने-मन सुगिया काकी वौआइते छेली कि वरस्पैत कक्काक अवाज सुनली।

ओना वरस्पैत काका ओछाइन छोड़ि उठि गेल छला, तहूमे गाममे बिजली आबि गेने देहक पानिमे सेहो कनी-मनी करेन्ट आबिए गेल छेलैन। ओछाइनपर सुतले-सुतल सुगिया काका बजली-

“दिन-रातिक वसन्त वेलमे किए औनाइ छी?”

अपन मनक बाट पकैड़ वरस्पैत काका शेष जिनगीक दिशामे दिशा ताकए चाहै छला तँए पत्नीक बातकेँ नीक जकाँ अँगेज नइ

सकला। अपने बेथे बेथाएल बेकती जकाँ वरस्पैत काका समाजिक जिनगीमे पएर रोपए चाहै छला। तँए विचारसँ लऽ कऽ समाजक सम्बन्धक क्रिया धरि संलग्न करबाक छैन। नोकरिहारा जिनगी रहने एते तँ भइये गेल छेलैन जे गाममे नइ रहने छुतको केश आ सराधो-बिआहक भोज छुटि गेले छेलैन जइसँ समाजिक सम्बन्धमे सेहो कमी आबिये गेल छेलैन।

वरस्पैत काका बजला-

“औनाइ कहाँ छी, पौनाइ तकै छी। दुनू गोरेक बीचक जिनगीक बात अछि किने, तँए दुनू गोरे जँ विचारि नइ चलब तँ सदिकाल दुनू परानियोंमे खटपट होइते रहत।”

जिनगीक अलिसाएल (माने अठबजिया सुति उठनिहारि) देह, मुदा पतिक विचार तँ सेहो दोसर पाशापर छेलैन्हे। अँघस-मँघस करैत सुगिया काकी उठली। उठि तँ गेली मुदा मनमे होनि जे कनीकाल आरो ओछाइन धेनहि रहितौं...।

अपन ऐगला जिनगीक ओहन रूप वरस्पैत काका बनबए चाहै छला जेना समाजमे समाज बनि समाज रहैए। मुदा समाजो तँ समाज छी। सनातनी धारामे बहैत नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधलाकेँ अपन धारमे गलित-पचित करैत अनवरत बहैत आबि रहल अछि आ आगूओ बहैत रहत। भलेँ गदियाएल बेसी हुअए कि मटियाएल। मुदा वरस्पैत काका तँ नीतिशास्त्रक विद्यार्थी, विद्यार्थी जीवनसँ शिक्षक धरि रहला तँए मन बेसी ओम्हरे लटकल रहैन। ओना ई बात वरस्पैत काकाकेँ बुझल छैन जे नीति, रीति, गीत, मीत आ हित समए आ स्थानक अनुकूल चलैए। जँ से नइ चलैत तँ गीत गीते छी जे नीके लगैए मुदा समए-स्थानक भेद भेने किए कोइलीक स्वर कौआक भऽ जाइ छइ?

ओछाइनपर पड़ल सुगिया काकीक मन अग-दिगमे पड़ल छेलैन। जँ उठै छी तँ अपन सुखक नीन जाएत आ जँ नइ उठै छी तँ पतिक पतिपना जाएत। तहूमे काल्हिये सेवा निवृत्ति भेला अछि, लगले कहता जे जाबे कमाइ छेलौं माने नोकरी करै छेलौं आ हाथमे हरियरका कड़कड़ौआ नोट दइ छेलिऐन ताबे कमासूत पति छेलिऐन आ सेवा-निवृत्त होइते बोल-कहल भऽ गेली!

सामंजस करैत सुगिया काकी बजली-

“अखन ऐ अधरतियामे केतए जाएब! आउ, अही ओछाइनपर बैस जिनगीक सूत्रधार जकाँ अपनो दुनू गोरे सुतियाउ।”

ओना पत्नीक जे आग्रह छेलैन से वरस्पैत काका नइ बुझि पेला। तेकर कारण भेलैन जे पत्नीक पहिल शब्द जे ‘अधरतिया’ छेलैन, तेहीक वेद-भेद करैमे ओझरा गेल छला। जइसँ ओछाइन तक अबैत-अबैत धियाने हटि गेलैन।

वरस्पैत काकाकेँ मनमे उठल छेलैन ‘अधरतिया’ की भेल? यएह ने भेल जे जँ छह बजे सुर्यास्त होइए आ दोसर दिन छह बजे सुर्योदय हएत, तेकर बीचला सीमान बाहर बजे राति भेल। बाहर बजे रातिक पछाइत ने राति छोट होइत जाएत जइसँ अधरतिया बनत। अखन तँ रातिये राति ने राति चलत। मुदा भोरक उदय आ रातिक अस्त सेहो तँ एकटा सीमाने भेल किने। तैबीच जखन राति खटिया कऽ आधापर औत तखनो ने अधरतिया औत..?

मनक ओझराएल विचारकेँ सोझरबैत वरस्पैत काका बजला-

“बड़बढ़ियाँ कहलौं। अहूँ उठि कऽ बैसू आ हमहूँ बैसै छी।”

नइ चाहितो सुगिया काकी उठि कऽ बैसैत बजली-

“अहाँ सिरमा दिस बैसब आकि गोरथारी दिस?”

पौरुकी जकाँ जे तीन बजे भोरे घुटैक-घुटैक अपन मेदिनकेँ जगबैए आकि मेदिने घुटैक-घुटैक मेदकेँ जगबैए से तँ पौरुकीए जानए, मुदा वरस्पैत कक्काक मन अपन ऐगला जिनगीक सूत्रपात करैमे ओझराएल रहैन।

बजला-

“दुनू परानीक बीच जेहने सिर तेहने गोर, तइले अनेरे किए बातकेँ बतंगर बनबै छी।”

बजैक क्रममे वरस्पैत काका बाजि तँ गेला, मुदा लगले मन पाछू घुमि छछाड़ी काटए लगलैन जे जेहने दुनियाँक रीति-प्रीत अछि तेहने तँ बेरीतो आ बेप्रीतो अछिए। किए कियो केकरो दस थापर मारि मनकेँ शान्ति दइए? जखन कि सभ बुझै छी जे विचारक मिलानसँ शान्ति अबैए, तहिना ने प्रेमी-प्रेमिकाक बीच प्रेम सेहो शान्ति दइए...।

अपन विचारमे वरस्पैत काका डुमल रहैथ तँए मुहोँ बन्न रहैन आ ओछानिक कातमे ठाढ़ो रहैथ।

पतिकेँ चुपचाप ठाढ़ देख सुगिया काकीक मनमे शंका भेलैन जे भरिसक मने-मन मन्हुआ ने तँ रहल छैथ। पति-पत्नीक बीच जँ पति मन्हुआ कऽ महुरा जाथि सेहो पत्नीक लेल उचित नहियेँ भेल। तखन तँ ई भेल जे पतिक अनुकूल पत्नी नइ छैथ वा पतिकेँ अनुकूल बनबैक कला पत्नीकेँ नइ छैन। अपनाकेँ पाछू दिस घुसकबैत सुगिया काकी बजली-

“एकटा बात बुझलिऐ?”

जिज्ञासा करैत वरस्पैत काका बजला-

“की?”

मुस्की दैत सुगिया काकी बजली-

“स्वतंत्र जिनगीक पहिल राति दुनू परानीक छी?”

‘स्वतंत्र जिनगी’ सुनिते वरस्पैत कक्काक मनमे गंगा-लहरिक ओ मौज जे जमुना धार होइत बहैए, भेटलैन। मुस्कान भरैत वरस्पैत काका बजला-

“सहए ने कहए चाहै छी!”

कहि वरस्पैत काका पत्नी लगसँ सहटैत अपन ओछाइन दिस बढ़ला। ओछाइन लग अबिते औनाइत मनमे उठलैन जे जँ कियो जिनगीक सुत्रधारमे संगी होएत तँ जरूर जिनगीक दिशा निरंतर संग होएत। मुदा घरक जखन पत्नियोँ सएह छैथ तँ पड़ोसी आकि बहरबैया अखन भेटबे किए करता। ओहू वेचारा पड़ोसीक मनमे हेबे करतैन किने जे काल्हिये वरस्पैत गुरुजियाइसँ सेवा निवृत्त भेला अछि, धएल-उसारल लऽ कऽ एबे कएल हेता, जँ पेशावो करैकाल ओमहर ताकब तँ दुनू परानीकेँ मनमे हेबे करतैन जे रतिचर छी। जँ दुनू परानीक बीचक गप-सप्प रहैत तँ गोनू झाक चोरो पकड़ब होइत। मुदा सेहो नहियेँ अछि।

ओछाइनिक कातमे ठाढ़ भेल वरस्पैत काका कुशेश्वर स्थान जकाँ हेरा गेला। माने ई जे जैठाम एक नइ अनेक धारक मिलान होइए। धारक पेट भलेँ हटलो-हटल किए ने होइ मुदा बाढ़िमे उफान एलापर सभ सभमे मिलिये जाइए। तँए कुशेश्वर स्थानक भवलोक तँ अगम अछिए। ओना, चण्डेश्वर स्थानमे सेहो सुपेन धार अछि, मुदा एक तँ जुति-भाँतिमे ओछ आ दोसर समूह नहि, असगरुआ अछि। तँए अपन ताले-मात्रा केते देखा सकैए। बड़ करत तँ धरतीसँ सटल ट्यूबेलकेँ डुमौत, मुदा पानियोँ पीबकेँ नहियेँ रोकि सकैए। धरतीसँ भरि छाती ऊपर उठा चबुतरा बना लोक पानिक जोगार कइये लेत आ चापाकलक पानि पीबे करत। मुदा कुशेश्वर स्थानमे धारक पानि

बेराएब ओते असान अछि जे कोसी-सँ-कमला धरि आ करेहसँ तिलजुगा धरिक धारक पानिक संग मिलि हेलबो करैए आ समुद्री बाट पकैड़ चलबो करैए...।

कछमछ करैत वरस्पैत काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन जे की केने की हएत। अखन धरि किताबक ने कीड़ा बनि चटलौं मुदा समाजोक बीच तँ कीड़ा अछिए। ओकरा केना पकैड़ पएब..?

अपन बीतल समय माने दुनू परानीक साठि बर्ख तँ वरस्पैत काकाकेँ आधा-छिधा मनो पड़ैन मुदा आगूक जे मृत्यु धरिक शेष जिनगी अछि, से बुझिए-मे ने अबैन। बुझबो धिया-पुताक धूरा-माटिक खेलो नहियेँ छी। ओना किताबी बोध भेने आगू-पाछू दुनूक नक्शा मन पड़ैन मुदा नक्शाक नक्शा केना बनत, जाबे नक्शा नै बनत ताबे नक्काशी केना आबि पौत? ऐठाम आबि वरस्पैत कक्काक मन घुरिया जाइन। तँए ने पुन: ओछाइनपर पड़ला आ ने आन दोसरसँ गपे-सप्प कऽ सकला।

किरिणक लालिमा अकासमे पसरल। वरस्पैत काका बुझि गेला जे आब पौह फाटि रहल अछि, दिनक आगमन लगिचा गेल...।

वरस्पैत काका पत्नी लग जा बजला-

“आब की कोनो नोकरीक जिनगी रहल जे आठ बजे तक ओछाइने धेने रहब। जाबे हम मुँह-कानमे पानि लइ छी ताबे अहूँ चाह बनाउ।”

ओना, सुगिया काकीकेँ सेहो चाह पीबैक इच्छा जगैत रहैन मुदा कोढ़िया लेल जहिना गंगा दूर अछि तहिना सुगियो काकीकेँ रहैन। तैयो वेचारी पतिक बातकेँ आदेश बुझि चाह बनबए उठली।

चाह बनल। दुनू परानी चाह पीविते रहैथ कि पड़ोसीक एकटा दस-बारह बर्खक कन्याँ रस्ते-रस्ते दौड़लो जाइत आ बजबो करैत-

“सुमित्रा बहिन सीमा कातमे बैसल छथिन।”

ने ओ लड़की वरस्पैत काकाकेँ आकि सुगिया काकीकेँ किछु कहलकैन आ ने इहए दुनू गोरे किछु पुछलखिन।

लड़कीक मनमे भेल जे भऽ सकैए जे जखन गामेमे बीआ-वान भेल अछि तखन माए-बापक कानमे केतौ नहि गेल होनि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

सुमित्रा वरस्पैत कक्काक बेटी। मुदा बेटीक रूपमे अखन तक वरस्पैत काका सीमा कातमे बैसल सुमित्रापर विचार नइ केने छला। तँए मनमे भेलैन- गामे छी, केतेको लोकक नाओं सुमित्रा हएत।

दोसर, ईहो भेलैन जे बेटी-जातिक लेल ने नैहर-सासुर अबै-जाइक विधि-विधान अछि, तइसँ हटल सेहो अछिए, तँए अखन तक दुनू परानीक मनमे ई नइ उठल छेलैन जे हमरे बेटी सुमित्रा छी।

ओना अखन धरि सुगिया काकी उड़न्ती सुनने छेली, तँए उड़न्तीकेँ घरनी रूपक भाँजमे छली। मनमे एहेन विचारो केना जगितैन जे एकटा प्रशासनिक अफसरक परिवारमे–माने वरस्पैत कक्काक ओ बेटी प्रशासनिक अफसरक पत्नी छथिन–एना हएत। तँए एहेन विचार मनमे अबै ने दैन। एबो किए करितैन, जे जिला-जवारक भार उठा चलैबला अछि ओ परिवारमे लुल्हो-नाँगर केना भऽ सकैए। तही बीच अलोधनी काकी जे सुगिया काकीसँ उमेरदार छथिन, आबि कऽ सुगिया काकी लग बजली-

“कनियाँ, छोटकी बेटी आबि कहलक जे ‘वरस्पैत कक्काक सुमित्रा बेटी सासुरसँ अधरतियेमे निकैल माए-बाप ऐठाम आबि गेली.!”

तैबीच टोलक दस-बारहटा अबोध-सँ-सबोध धरिक लड़की आँगन पहुँच गेली। आँगनक सीमामे सभकेँ प्रवेश करिते सुगिया

काकीक नजैर पड़लैन। तैबीच सुमित्रा रस्तेसँ ठोह पाड़ि कनैत आबि रहल छेली।

ओना गाम-घरमे कननिहारो कम नहियेँ अछि, कियो दुखे आ कियो सुखे मुदा कनैत तँ सभ अछिए। तँए कियो अनका कानबपर किए धियान देत। अहीं कहू जे ‘कन्याँदान’ सन समाजक कृति, दान-दहेज बेर माने बेटीक बिआह काल सभ डिरिआइ छी, मुदा छुच्छे डिरियेनौं तँ नहियेँ हएत। पढ़ल-लिखलसँ बिनु पढ़ल-लिखल धरिक लोक, किए ने बुझि पेब रहल छैथ जे परिवार-समाजक संस्कारसँ जुड़ल प्रमुख समस्या अछि, जैपर परिवार-समाजक नीब ठाढ़ अछि?

जहिना बाघक आँखिपर आँखि पड़ने बघजर लगि जाइए तहिना सुगिया काकीकेँ सुमित्रापर पड़िते भेलैन। बघजर लगिते सुगिया काकी अचेत भऽ खसि पड़ली। खसला पछाइतो मनमे बेर-बेर उठैत रहैन जे ई की भेल.! एना किए भेल..?

ओना, ई सुगियो काकी आ वरस्पैतो काकाकेँ बुझल छेलैन जे दस बर्ख पूर्व जमाए दोसर बिआह कऽ नेने छला, जे अन्तर्जातीय छल।

जहिना कानक गुज्जी निकालै-काल गोटे बेर रूइया कानेमे अँटैक जाइए आ कटकी निकैल जाइए, आ तखन वएह रूइया केते भारी कानकेँ लगै छै, से भुक्तभोगिये ने जनै छैथ मुदा रूइया सन हल्लुक वौस रहितो, एते भारी कानमे केना लगैए जे ठेकी जकाँ सुनबे बन्न कए दइए तहिना अँगनाक दृश्य भऽ गेल।, जे बच्चा-सँ-सियान आ चेतन-सँ-बुढ़ धरिसँ भरिया गेल छल। जेते मुँह तेते बोल...।

वरस्पैत काकाकेँ सुमित्रा बेटी लग पहुँचैक साहस नहि भेलैन जे किछु पुछितथिन। ओसारक खाम्ह लगा ओंगैठ कऽ बैस अपन जिनगीकेँ निहारए लगला। भूल केतए भेल आ चूक केतए भेल? जा

भूल-चूक नइ भेल ता एहेन दृश्य उपस्थित किए भऽ रहल अछि।

ओना वरस्पैत कक्काक मन समस्याक हिसाबे भरियाएल नहियेँ रहैन, तेकर कारण ई जे मनो तँ मन छी, अधमनीसँ डेढ़ मनी धरि होइत अछि...। ओहन मन ने बेसी भरिया जाइए जे समस्याक भारीपनकेँ बेसी देखैत हुअए, मुदा जे ओइ भारीपन के देखबे ने करत, ओ ओकर भारीपन बुझिए केना पाबि सकैए। वरस्पैत कक्काक जिनगीमे ओहन परिस्थितिये ने बनल जे ओइ गहराइक तह तक पहुँच पेबतैथ।

खाम्हमे ओंगठल वरस्पैत कक्काक नजैर सुमित्रापर गेलैन। पैंतीस बर्ख पूर्व सुमित्राक जन्म दोसर सन्तानक रूपमे भेल। ओना गाम-गामक अपन-अपन समाज चलिये आबि रहल अछि। कोनो गामक समाजमे कोनो जातिक वाहुल्य अछि तँ कोनोमे कोनो जातिक, जइ समाजक माने जइ जातिक वरस्पैत काका छैथ, ओ अल्पसंख्यक जातिक समाज अछि। एक-दू घर दसटा गाममे गनि-गूथि कऽ अछि। समाजक सम्बन्धक एकटा कारण ईहो ऐछे जे जेतेक दूरमे बेटा-बेटीक बिआह-दान होइए ओतेकक बीच समाजिक सम्बन्धक एक रूप-रंग सेहो बनियेँ जाइए। तँए सनातनी धारामे अबैत समाज टुट-नफा होइतो बहिये रहल अछि।

जइ समाजक वरस्पैत काका छैथ, ओइ समाजमे दस बर्खक कन्याँ होइते बिआहक योग्य मानल जा रहल अछि। समुचित पद्धतिक अनुकूल लड़का-लड़कीक उमेरक हिसाबमे सेहो एकरूपता हएब जरूरी अछिए। जँ से नइ हएत तँ विधवाक बाढ़ि जोर पकड़बे करत। ओना विधवाक बाढ़ि जोर पकड़नहि अछि तेकर कारण आन-आन, अछि।

तेरह बर्खक सुमित्राक बिआह सत्तरह बर्खक दीनबन्धुक संग

भेल छेलैन। ओना कौलेजमे पढ़ैत दीनबन्धुक मनमे तत्खनात् बिआह करैक विचार नइ रहैन, मुदा देखो-देखी आ समाजक चलैनक अनुकूल सेहो दीनबन्धु विरोध नइ कऽ सकल।

बिआहक तीन सालक पछाइत दुरागमन भेलैन, तइ बिच्चेमे दीनबन्धु नोकरी लेल प्रतियोगिताक परीक्षाक तैयारी सेहो पूरा कऽ लेलैन। परीक्षामे नीक रिजल्ट भेलैन, प्रशासनिक अफसरक बाट प्रशस्त भेलैन।

दुरागमनक पछाइत सुमित्रा सासुर एली। एक तँ किसान परिवार, दोसर पाछूसँ अबैत परम्पराक बीच सुमित्रा अपन जिनगी बितबए लगली।

ओना दीनबन्धुक प्रेमक अँकुर विलासनीक संग ट्रेनिंगे समैमे अँकुर गेल रहैन। मुदा ओ प्रेम, संगी-साथीक रूपक छेलैन। ट्रेनिंग केला पछाइत एक्के जिलामे दीनबन्धुओ आ विलासनियोँ पदस्थापित भेलैथ। पदस्थापित भेला पछाइत दुनूक बीच संगीक रूप छल। दुनूक जातियो दू अछि। अखन धरिक अबैत विचारमे जातिक दूरी मनमे बनले छेलैन।

ओना जइ जातिक दीनबन्धु छैथ, ओइ जातिमे एकसँ बेसियो बिआह करैक चलैन जकाँ बनियेँ गेल अछि। माने ई जे जेते गाममे दीनबन्धुक जाति छैन, प्राय: सभ गाममे एकाध गोरे एहेन छैथे जे दू-तीन-चारि-पाँच बिआह केनहि छैथ। ओना परम्परानुकूल एक-पुरुखकेँ एक नारीक संग बिआहक चलैन अदौसँ आबि रहल अछि, मुदा पुरुखक लेल एकसँ बेसी बिआह करब एक्की-दुक्की अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तइसँ भिन्न विलासनी जातिक अछि। विरले एहेन अछि जे एकसँ बेसी बिआह केने छैथ। ओना, परिवार चलैक लेल केतौ-केतौ

एकसँ बेसी बिआहक खगतो अछिए। जेना पहिल पत्नी माने बिआही कनियाँ जँ कोनो कारणे निसन्ताने मरि गेली, वा बाँझपन छैन वा कोनो एहेन रोगसँ ग्रसित छैथ, जइसँ जिनगीक भरोस उठि रहल अछि। एहने-एहने कारणे विलासनीक जातिमे विरले एकसँ बेसी बिआह होइत अछि।

नव परिवेशमे जातिक सम्बन्धमे किछु ढील-ढीली, छुटपन आबिये गेल अछि। गामो-समाज तँ गाम-समाज छी, प्रेमक सेहो अपन आँखि होइते अछि। ओना आँखियो तँ आँखि छी, जे केतौ छिछड़पन अछि तँ केतौ गढ़पन सेहो अछि। छिछड़पन भेल उमेरक उमंगमे बहब आ गढ़गर भेल गुण-विशेषक आकर्षण।

जहिना दीनबन्धु बी.ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र विषयसँ केने छैथ तहिना विलासनी सेहो अर्थशास्त्रेसँ बी.ए. ऑनर्स छैथ। विषयो विषयक तँ अपन छाप पड़िते अछि। एक रंग हाइयो स्कूल वा कौलेजोमे रहितो विषयवार-प्रभाव नइ पड़ैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना भाषाक रूपमे साहित्य सेहो दुनू गोरे कौलेज तक पढ़ने, मुदा भारतीय साहित्यक अपेक्षा अंगरेजी साहित्य बेसी। ओना अंगरेजी साहित्य पढ़ैक पाछू दुनूक मनसा यएह रहैन जे प्रशासनिक परीक्षा पास करब। ओना अर्थशास्त्रक प्रभाव दुनूक मनकेँ बेसी पकड़ने रहैन। जइ दुआरे प्रतियोगिता परीक्षामे पूर्णरूपेण अर्थशास्त्रो रखनहि रहैथ।

गनले-गूथल प्रशासनिक अफसर जिलामे अछिए। तहूमे जे लगक रहता हुनकेसँ ने भेँटो-घाँट आ गपो-सप्प हएत। ओना, सरकारी सेवामे काजोक सम्बन्ध बनियेँ जाइए। सएह सभ कारण दीनबन्धुओ आ विलासनियोँक बीच भेबे कएल।

आजुक परिवेशमे देशक बहुतो जगह एहेन ऐछे जइमे

प्रशासनिक सेवाक रूपे बदलल जा रहल अछि आ वेपारीक रूप बढ़ल जा रहल अछि। साधारणो अफसरक लेल करोड़क खेल चलिये रहल अछि।

नव पीढ़ीक उदीयमान शक्ति जे अनेको विषयक अध्ययन कऽ रहल अछि, ओकर इतिहास देख रहल अछि। तैठाम मनुखेक इतिहास छुटि जाए, सेहो तँ सम्भव नहियेँ अछि। विकास प्रक्रियामे आजुक परिवेशक इतिहास की कहि रहल अछि, ओ प्रशासनिके अफसर नइ बुझैथ तँ दोसर बुझिये के सकैए?

दीबन्धुओ आ विलासनियोँ एक-उमेरिया घोड़ा जकाँ सरपट चालिमे दौड़ए लगलैथ। ओना दीनबन्धुक बिआह आ दुरागमन दुनू भऽ गेल छेलैन, मुदा किसान परिवार आ नोकरिहारा परिवारक बीचक जे खाधि सभ अछि, ओइ खाधिमे एकटा ईहो तँ ऐछे जे जँ पच्चीस बर्खक बेटा-पुतोहु अपन घर बसौता आकि माता-पिताक घरवास करता? प्रश्न तँ अछिए। खाएर जे अछि, मुदा दीनबन्धु अखन तक परिवारक संग माने पत्नीक संग नइ रहला।

ओना विलासनियोँक उम्र चढ़ि कऽ डम्हा गेल छेलैन मुदा छेली अविवाहित। प्रश्न एहेन उठि गेल जे कन्याँ-जोकर बरे ने भेटैए। सरकारियो शासन कमजोरे अछि जे गनि-गनि ओकरा जोड़ा लगबै ने अबै छइ।

अपन रंगीन भविस देख दुनू बिआह कऽ लेलैन। ओना जातीय संस्कार दीनबन्धुक सोल्हैनी नइ मेटाएल छेलैन मुदा घोड़ा हौउ कि घोड़ी, लगाम तँ लगौले जाइए। तइ सीमामे दीनबन्धु छिछैल जाइ छला। जइसँ लगाम विलासनियेँक हाथमे रहलैन। तहूसँ जबरदस दीनबन्धुक मनकेँ ई दबने रहैन जे जइ वादाक संग विलासनीक संगी बनल छी तइ वादाक अनुकूल तँ सुमित्राकेँ बिनु पतिक सासुरे बसए

पड़तैन..! खाएर.., भेबो सएह कएल।

मुदा समाजो तँ समाज छी। दीनबन्धुक पिता–सोनाइ–कें समाज सलाह देलकैन जे अखन अपनो दुनू परानी हट्टा-कट्ठा छीहे मुदा नारीक तँ ई उम्र नारीत्व प्राप्त करक छिऐन। तँए अपने पुतोहुकें बेटाक डेरा पहुँचा दियौन।

एक तँ जुआनीक लहैर, तैपर कुरसीक धाह दीनबन्धुकें रहबे करैन, पत्नीक संग पिताकें सेहो देखलैन।

ओना अखन तक दीनबन्धु विलासनी लग ई चोरौने रहला जे सुमित्राक संग विवाहित छी। तँए चोटाएल गहुमन साँप जकाँ आँत ममोड़ि चुप भऽ गेला।

एक नारीक जिनगीकें देख विलासनी ससुरकें कहलैन-

“जखन अपन लोक छैथ तखन किए ने रहती?”

ओना विलासनीक विचार सोझगर छेलैन, मुदा मनमे रहैन अपनाकें चुल्हि-चौकाक कारिखसँ बँचाएब।

सोनाइक नजैर दीनबन्धुपर पड़िते विलासनीपर चलि जाइन। नजैर जाइते मनमे खौंझ उठि जानि, अपन परिवारक ई गति। एक तँ समरथाइयोमे कियो केकरो भार नइ लिअ चाहैए, तैठाम तँ हम पचास टपि गेल छी।

जिनगीक टुटैत धारमे सोनाइक टुटैत विचार भँसिया रहल छेलैन। अन्हार, दुनियाँक चारूकात अन्हार, की यएह छी मनुखक जिनगी..?

जिनगीक पछाड़मे पछड़ैत सोनाइ विलासनीकें कहलखिन-

“परिवारक रत्न पैदा करैवाली सुमित्रा छैथ, नोकरनियोँ बनि जँ रहती तैयो अपन परिवारक सुख हेबे करतैन।”

धीरे-धीरे लोकक भीड़ कमए लगल। जेना-जेना लोकक भीड़ कमल तेना-तेना सुगिया काकीक मन सेहो हल्लुक हुअ लगलैन। अन्तो-अन्त टोलबैयासँ आँगन खाली भेल। खाली होइते सुमित्रा वरस्पैत काका लग पहुँच, पएर पकैड़ कानैत बजली-

“पिताजी, हमर नारीत्व नइ भेटत?”

वरस्पैत कक्काक दुनू आँखिसँ अन्हार रातिक वरिसैत वादल जकाँ नोरक टघार चलिते रहलैन। मुदा उपाइए की? अपन दोख मेटबैत वरस्पैत काका बजला-

“हमर कोन दोख।”

बाजैक क्रममे वरस्पैत काका बाजि गेला। मुदा लगले मन रोकैत कहलकैन-

“तखन दोख केकर?”

जिनगी भरि वरस्पैत काका नीतिशास्त्रक विद्यार्थी, शिक्षक रहला मुदा समाज जे घृणित अनीतिमे बहि रहल अछि, ओकराकें सम्हारत। मुदा मनुख एक रहितो विचारो आ बेवहारोमे हटल-हटल अछिए। वरस्पैत काका विद्यालयमे शिक्षण वृत्तिसँ जुड़ल रहला तँए समाजक रीति-नीतिसँ हटल नइ रहला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जहिना हवामे कखनो-कखनो झोंक अबैए तहिना वरस्पैत कक्काक मनमे रहि-रहि कऽ झोंक उठैत रहैन, मुदा अपना लग अबैत-अबैत झोंकक झोंकी झूकि जाइन। फेर झोंकाएल मनक नजैर पड़लैन- समाजक दर्पण अपन साहित्यपर। यएह दर्पण साहित्य छी? अही साहित्यसँ सबहक हित हएत?

मुदा अपना लग अबैत-अबैत वरस्पैत कक्काक अपने मन दुतकारि दैन जे समाजक सन्तान रहनौं समाजसँ दूर रहलौं, जँ समाजक संग रहितौं तँ केतौ-ने-केतौ हमरो जगह तँ रहबे करैत।

समाजक बुधिजीवी श्रेणीक रहितो हम केतए छी?

नीक जकाँ वरस्पैत कक्काक मन थीरो ने भेल छेलैन कि दोसर उमकी चढ़लैन। उमकी चढ़िते मुँह फुटलैन-

“समाजेक सन्तान ने हमहूँ छी आ हमरो ने समाज छी, तैठाम हमरा सन लोकक विचारक अँटावेशो तँ समाजे ने करत?”

वरस्पैत कक्काक आगूमे ठाढ़ पैंतीस बर्खक नि:संन्तान बेटी अपन जिनगी देख रहल अछि। मने-मन वरस्पैत काकाकें कूहि होइ छेलैन, मुदा के कूहि रहल अछि आ के कुहा रहल अछि से वरस्पैत कक्काक मनमे एबे ने करैन।

अनमनस्यक भेल वरस्पैत काकाकें देख सुमित्रा टोकलकैन-

“बाबूजी, पिता तँ अहीं छी किने! अपन बेथा केकरा कहब?”

ओना वरस्पैत काका बजैमे पीछराह सभ दिन रहला, तँए बजैक क्रममे कहियो नहि चुकला। तहूमे बेथाएल-सोगाएल पैंतीस बर्खक ओहन बेटी जे नारीत्वसँ हारि रहल छैन, संग-संग जिनगीक पछाड़ सेहो छैन्हे। बेटी छी से विधाताक डायरीमे सेहो अंकित अछि, मनुखक जीवनक सार्थकता सेवासँ होइ छै, माए-बापक सेवासँ पैघ धर्म ओहन नारीक लेल नहि अछि जे पतिव्रतसँ वंचित हुअए।

वरस्पैत कक्काक भाव-विचार देख-सुनि सुमित्राक मन जेना पुलकित भेल। पुलकित होइते पुलैक कऽ बजली-

“पिताजी..?”

‘पिताजी’ सुनि वरस्पैत कक्काक मन चौंकलैन। बजला-

“बेटी, चरेवेति-चरेवेति वेदवाक्य अछि। जे जिनगी चलायमान रहल वएह जिनगी जिनगी छी। जाबे जीब ताबे तोरा बिसरबह नहि।”

सुमित्रा जइ मने बाजल होथि, मुदा वरस्पैत कक्काक मनमे

भेलैन जे बड़का धसनाक तरमे पड़ि गेलौं। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे कोनो सन्ताप मनुखकें जीते जिनगी होइ छै, तँए कोनो सन्तापसँ तखने बँचि सकै छी जखन ओइ सन्तापितकें ता-जिनगी पकड़ने रही जा जिनगी रहए। समयक हवा कखनो आगूओ दिस झोंकैत आ कखनो पाछूओ दिस, जइसँ ओकर गति-विधिमे उतार-चढ़ाव अबिते अछि। मुदा मनुख तँ मनुख छी। हवा-बिहाड़िकें अनुकूलो बना सकैए आ ओकरा मोड़ियो सकैए। मुदा प्रश्न तँ सामूहिक छी। सामूहिक समस्याक समाधान तँ समूहे ने कए सकैए। जँ ओकरा बेकतीगत रूपमे कएलो जाएत तँ ओ समूहक बीच हेराएले रहत। जँ से नहि रहैत तँ की हमरा सिर जे बरिसल अछि ओ दोसराक सिर नहि बरिसत, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

विह्वल होइत वरस्पैत काका सुमित्राकें पुछलखिन-

“बुच्ची, सत-सत कहह जे जिनगीक सुखसँ वंचित छह आकि जिनगीक सुख भेट रहल छह?”

पिताक प्रश्नसँ सुमित्रा तिलमिला गेली। तिलमिला ई गेली जे जिनगीक सुख की? जहिना गाछो-बिरीछ आ लत्तियो-फत्तीमे एके गाछमे हजारो मुड़ी रहैए, सभ मुड़ीकें अपन-अपन खगता छै, जइसँ ओ लहटगर बनि बढ़बो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए। तहिना ने मनुखोक जिनगी अछि। ओना कहैले मनुखकें एकेटा मुड़ी होइ छै मुदा से नहि। जिनगीक बढ़ैत क्रममे हजारो-लाखो मुड़ीक सृजन होइ छै आ ओकर भरण-पोषनक पाछू लोक हाल-बेहाल रहैए...।

पिताकें की उत्तर सुमित्रा देती, से स्पष्ट ने भऽ रहल छैन।

तैबीच सुगिया काकी सेहो आँखिक नोर आँचरसँ पोछैत वरस्पैत काका लग पहुँचली।

माएपर नजैर पड़िते सुमित्राक नजैर निच्चाँ उतैर अपन

मातृत्वपर गेलैन। मुदा समाजो तँ समाज छी। मर्यादा अमर्यादाक विचार करैबला।

लड़खड़ाइत-लटपटाइत सुमित्राक मुहसँ निकलल-

“बाबूजी, नैहर-सासुरमे किछु अन्तर तँ अछिए?”

सुमित्राक बात सुनिते वरस्पैत काका सहमला। सहैमते मनमे उठलैन, बेकती-बेकती मिललासँ समाज बनबो करैए आ हटलासँ टुटबो करैए, जेहेन समाज निरमित हएत तेहने ने ओकर आचार-विचार आ बेवहारो बनत। मुदा से बनाएब ओतेक असान कहाँ अछि? जैठाम प्रतिदिन विकृति मनुखक निर्माण होइए तैठाम सुशिष्ट समाज केना बनि पौत? ओना बोली-चालीक क्रममे वास्तविक जिनगी किए ने सटल हुअए मुदा बेवहारिक रूपमे हजारो कोस हटल नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मन-वचन-कर्मक एक सूत्रवाक्य किए ने हुअए मुदा तीनूक दूरी अकासो-पतालसँ बेसी हटल अछिए।

अकास-पतालक बीच वौआइत वरस्पैत कक्काक मन अँटैक गेलैन। अँटैकते मन कलशलैन। कलैशते बेटी सुमित्रापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते बुझि पड़लैन जे यमुना धार जकाँ जमुनियाँ नोर बेटीक नयनसँ निकैल पितासँ किछु याचना करए आएल अछि। मन पघिल गेलैन। पघिलते फुटलैन-

“जहिना हम मनुख छी, तहिना ने सुमित्रो अछि। सबहक अपन-अपन जिनगी आ अपन-अपन जिनगीक लीलाक संग विचारो-विवेक अछि, तैठाम बलउमकी बलबा सेहो नीक नहियेँ अछि, मुदा प्रश्नो तँ जिनगियेक छी। जँ मनुखकेँ जिनगीए नहि तखन ओ पशुवत छोड़ि ऐछे की?”

वरस्पैत कक्काक मन जे अखन तकक जिनगीमे घोड़-दौड़ रूपे चलै छेलैन ओ एकाएक ठमैक गेलैन। ठमैकते बुझि पड़लैन जे मुरदा

जकाँ अस्सी मन पानि शरीरमे आ नबे मन जारैन शरीरपर लदि गेल अछि। मुदा उपाइये की अछि?

ठमकल मनसँ ठीठैक कऽ विचार निकललैन-

“मनुख-मनुखक सहयोगी तँ भइये सकैए। मुदा जेतबे धरि अपन सीमा अछि तेतबे धरि ने नाचत। हमहीं सुमित्राक पिता छिऐ, जँ हमरे हाथ-पएर टुटि जाएत तँ सुमित्रे की हमर देहक दुख छीन सकैए? ओ तँ अपने ने भोगए पड़त? अखन आँखि तकै छी तँए सन्ताप बुझि पड़ैए, आ जँ आँखि बन्न रहैत तखन देखबे की करितिऐ?”

मुदा लगले वरस्पैत कक्काक मनमे ईहो उठलैन जे जँ बेटीक दर्द बाप नइ बुझै आ बापक दर्द बेटी नइ बुझै तखन दुनूमे सामंजसे केना भऽ सकैए? रहल अपन कर्तव्य से तँ काजेसँ देखल जाएत। ओकर क्षेत्र तँ खाली विचारे धरि नइ अछि। ओ तँ बेवहारमे सेहो अछिए।

..भटकैत विचारक बोनमे वरस्पैत काका अँटकैत बजला-

“बेटी, जहिना अखन धरिक जिनगी घर-सँ-बाहर बीतल मुदा तैयो परिवारक सेवा करैत रहलौं, तहिना आगूओ ताधैर करैत रहब जाधैर तोरा सन जिनगी समाजमे बेटीकेँ भेटैत रहत।”

बजैक क्रममे वरस्पैत काका एकसूरे बाजि गेला मुदा बजला पछाइत जखन पाछू उनैट तकलखिन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना अपने बिनु सींग-नाँगैरक छी तहिना तँ समाजो अछि। केकरा कहबै के सुनत? लोको तँ लोके छी। बेटाक बिआहमे राजा बनि जाइए आ बेटीक बिआहमे भीखमंगा जहिना बनि जाइए तहिना ने केतौ जातिक समाज तँ केतौ गामक समाज सेहो बनिते अछि।

बेथासँ बेथित पतिक मुँह देख सुगिया काकी सामंजसमे बजली-

“जइ सोगे सोगाएल छी आकि जइ बेथे बेथाएल छी ओ ने

कोनो सोग छी आ ने बेथा। जाबे आँखि तकै छी ताबे आँखिक सोझमे सुमित्रो रहत। जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे पहिने के आँखि मूनब।”

पत्नीक विचार सुनि वरस्पैत कक्काक मन कनी खनियेलैन। खनियाइते मनमे सुमित्रा सन बेटीक पौराणिक कथा सभ नाचए लगलैन- पतिक सेवा, नारी-धर्मक वृतान्त छी तैठाम जँ सुमित्राक जान बकैस देलैन, ई तँ ओइसँ बहुत नीक भेल!

बेटीक बात सुनि वरस्पैत कक्काक मनमे जेना कनी हूबा जगलैन, जेतेक हूबा जगलैन तेतेक मनसूबा सेहो जगलैन। पत्नीकेँ कहलैन-

“बेटी, कखन घर छोड़ि निकलल हएत कखन नहि, तँए पहिने चाह पिआउ। पछाइत खाइ-पीबैक ओरियान करब।”

सुगिया काकी बजली-

“सुमित्रा घरक बेटी छी आकि पाहुन जे अपने ओरियान करब? ओकर घर छिऐ, लिअ अपन घर। खाइ-पीबैले देत तँ देत, नइ देत तँ नइ देत!”

माइक विचार सुनि सुमित्रा बिहुँसए लगली। मुदा बजली किछु ने।



शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017

विदाइ-दैछना

मास दिनक ग्रह टलला पछाइत सिंहेश्वर काका नमहर साँस छोड़लैन। मासो भरि दिसम्बर सिंहेश्वर कक्काक मनकेँ दिक्-शूल जकाँ चुभैत रहल छेलैन।

2017 इस्वीक पहिल शुक्र दिन। सात बजे साँझमे दैनंदिनक क्रियासँ निवृत्त भऽ सिंहेश्वर काका दरबज्जापर बैस चाह पीबैक विचार करै छला कि चरिपहिया गाड़ीसँ पाँचटा सिपाहीक संग पोतो आ पोत-पुतोहुओ आबि गोड़ लगलकैन। मास दिनक जे शूल मनमे रहैन ओ बगूरक मुड़ियाएल काँट जकाँ लज-लज हुअ लगलैन। मुदा लगले मनक सभ विचारकेँ मनुखक स्वतंत्र जिनगीक विचार तेना तोपि देलकैन जे सभ विचारक टाँग-सँ-मुड़ी तक झँपा गेल। झँपाइते बन्दूकधारी सिपाहीपर नजैर पड़लैन।

सिपाहीपर नजैर जाइते इतिहासक रज-रजबारपर छिछलैत जनकपुरक सीता-स्वयंवरपर जा कऽ अँटैक गेलैन। काजक बढ़बाढ़ि देख पोताकेँ कहलखिन-

“जा आँगन जा।”

जहिना पोताकेँ कहलखिन तहिना दुनू परानी आँगन दिस बढ़ल। पाँचो सिपाहीकेँ बैसबैत सिंहेश्वर काका बजला-

“अहाँ सभ ठाढ़ किए छी, दरबज्जापर जखन पहुँच गेलौं, तखन सेवा करब तँ हमर कर्तव्य-धर्म बनैए किने। बाजू की सेवा कएल जाए?”

ओना आँगनमे सिंहेश्वर काका लेल चाह बनि गेल छेलैन। लोकक अबैक ढवाहि सेहो लगि चुकल छल, मुदा अपनो मनमे तँ होइते छेलैन जे तेहेन हुलि-मालि आँगनमे भऽ रहल अछि जे चाहो पीब मोसकिल। मुदा सुतरलैन। सुतरलैन ई जे एकटा सिपाही बजला-

“खुशीसँ जहिना एलौं तहिना ने खुशीसँ जेबो करब।”

सिंहेश्वर काका सिपाहीक बातक माने जे बुझने होथि, मुदा चाह पीबैक गर अपन जरूर देखलैन। बजला-

“अहाँ सभ पहिने किछु खाउ, पछाइत चाह पीब। हमर चाह बनि गेल अछि, ओकरा अनेरे पानि किए बनाएब।”

उम्र देख कऽ आकि की, दोसर सिपाही बजला-

“बाबाकेँ चाह पीबए दियौन, अपना सभ पहिने मुँह मीठाएब, पछाइत नमकीन खा चाह पीब।”

ओना सिंहेश्वर कक्काक कान ‘बाबा’ सुनि ठाढ़ भऽ गेलैन। कान ठाढ़ होइते ओइ सिपाही दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना पोता अछि तइसँ कनियेँ बेसी उमेरक सिपाहियो हएत। अपन बात सुतारैत काका बजला-

“लोकनियाँमे के सभ छेलौं?”

तैबीच दू किलो मिठाइ आ आधा किलो नमकीन चौक परक दोकानसँ आबि गेल। पाँचो सिपाही पाँचो दिससँ घोदिया कऽ बैस खाए लगला। अफरजात सामान, माने आधा किलोक हिसाबसँ, तँए खेबोमे निचेनी एबे करत। सामान रहने भोजो-काजमे अहिना निचेनी अबै छै आ लोक सोहर-सँ-समदौन धरि सुनि भोजनक विसरजन करिते अछि।

चरिजनियाँ चौकीपर बिछान रहबे करइ। मिठाइयोक आ

बिकानेरी भुजियोक झोरा खोलल गेल। चारि किस्मक मिठाइ। आधा किलो रसगुल्ला, आधा किलो लड्डू, आधा किलो अमीरती आ आधा किलो पेड़ा। तहिना मसुरीक भुजियामे चीनियाँ बदाम सेहो देल। ओना, सभ किछु अलग-अलग देख एकटा सिपाहीक मनमे भेलैन जे बराबर करि कऽ पाँचो वौस बाँटि ली। मुदा मनमे ईहो उठलैन जे हम ने दू गोरे दुब्बर-पातर छी मुदा तीन गोरे तँ नम्हरो-छरगर आ मोटाएलो बेसी छैथे, तैठाम एकरंग बाँटब नीक थोड़े हएत।

मने-मन जे एकटा सिपाही मिठाइक अंकार लगबैत रहथिन से दोसर बुझि गेला, तँए हुनकर आँखि तरेतर गुम्हरए लगलैन-

“बेबकूफ कहीं के, एतबो अकील नइ भेलह हेन जे जँ एके रंग घरक नीब लेब आ भीतघरो आ टटघरो बनाएब तँ बेसी जगह टटघरेमे होइ छइ।”

गुम्हरैत मनसँ फुफकार तँ उठलैन मुदा बजला किछु नहि। ओना, सिंहेश्वर काकाकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक शरीर बनबैक बात नइ बुझि रहल अछि तँए एहेन बुधि-विचार छइ। जँ से बुझैत जे जे शरीर मेहनतसँ बनैए ओ भोजनसँ बनल शरीरसँ विपरीत रूपे बनैए। माने ई जे मेहनतक अनुकूल भोजन भेलापर जे शरीर बनैए ओ बेसी सक्कत, बेसी सुन्दर आ बेसी कारगरो होइते अछि।

ओना सिंहेश्वर काका चौकीक बगलमे कुरसीपर बैसल छला, मुदा खेबा-काल सबहक मुहोँ आ वस्तुओ दिस देखैथ जे पाँचो सिपाही पाँच मुलुकक छैथ आकि एक मुलुकक..?

पाँचोक खेनाइक ढंग पाँच रंगक। एक गोरे पहिने अमीरती उठेलैन, तँ दोसर लड्डू। तहिना तेसर रसगुल्ला उठौलैन तँ चारिम पेड़ा। मुदा पाँचम पँचमनियाँ बनि पहिने भुजीए उठौलैन।

पँचमनियाँ भेल जे चारूकेँ मिठाइक पछाइत भुजिया भेटत आ

हमरा भुजियाक पछाइत मिठाइ। भाय, ई तँ अपन-अपन मनक विचार छी, जएह फूरए सएह करू...।

सिंहेश्वर काका एकटा सिपाहीकेँ बिटियाबए चाहलैन। बिटियबैक पाछू विचार रहैन जे ओ पहिने अमीरती उठा खाएब शुरू केने छला जे अप्पन मुलुकक बेवहार छी! मैथिल परम्परामे जखन मिठाइक भोज शुरू भेल तखन जिलेबीसँ शुरू भेल। जिलेबीक अगुआइन अमीरती भेली। ओइ सिपाहीकेँ अँखियबैत सिंहेश्वर काका फुटा कऽ पुछलखिन-

“बाउ, केतए घर छी?”

अपनाकेँ बर्दीमे देख सिपाही भोजपुरीमे अपन गामक नाओं बजला।

ऐसँ आगू बढ़ि सिंहेश्वर काका दोसर सिपाहीकेँ–जे पहिने लड्डू उठौने छला–तिनका पुछलखिन-

“बाउ, कोन किलास तक पढ़ने छी?”

ओ अपन छपड़िया बोलीमे, आधा भोजपुरीकेँ काटि आधा अपन मिला बजला-

“बी.एस-सी.।”

‘बी.एस-सी’ सुनि सिंहेश्वर काकाकेँ छगुन्ता लगलैन जे की हमर देशक ओहन स्थिति बनि गेल अछि, जे बी.एस-सी. विज्ञान क्षेत्र छोड़ि बन्दूकधारी बनैथ..!

छगुन्तामे पड़ल सिंहेश्वर कक्काक मुहसँ निकललैन-

“बाह! तखन तँ अपन मनोनुकूल काज करै छी!”

ओना, ओ सिपाही सिपाहीक रूआबमे रहबे करैथ। तैपर जेहने धरगर मोछ रखने तेहने छकट्टी दाढ़ियो रहबे करैन। मुदा ऊपरेसँ

धरगर रहैथ, भीतरसँ नहि। भीतरसँ मोमबत छला। अपन मजबूरी देखबैत ओ सिपाही बजला-

“बाबा, मन तँ छल जे बड़का शायर बनि विशाल मंचपर अपन शायरी सुनैबतौं, मुदा परिवार-ले बिआहो ने करब छल।”

सिपाहीक बात सुनि सिंहेश्वर काका भकचका गेला जे शायरकेँ की अपन परिवार नइ होइ छै? तखन एना किए बजला..?

सिंहेश्वर कक्काक भकचकीसँ ओइ सिपाहीकेँ बुझि पड़लैन जे बाबा भरिसक बाबाधाम पहुँच गेला। मुस्की दैत सिपाही बजला-

“बाबा, हमरा इलाकामे नीक कनियाँ ओही बरकेँ टेबैए जे सिपाहीक नोकरी करैए।”

मुस्की दैत सिंहेश्वर काका बजला-

“ई तँ बढ़ियाँ अछि किने?”

आरो खोंइचा छोड़बैत सिपाही कहलकैन-

“बाबा, ई नइ कहलौं जे अपन सिपाहीगीरी आकि अनकर।”

ताबत आधासँ बेसी भोजन सिपाही सभ कऽ नेने छला। सिंहेश्वर काका बजला-

“बौआ, अहाँ सभ जुआन-जहान छी, भार अहीं सभपर ने गाम-घरसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक अछि। तँए नीक-अधलाकेँ बेरबैत सेवा करू।”

चारू सिपाहीक जे शीर्ष छला ओ जिज्ञासु रूपमे आँखि उठा सिंहेश्वर काका दिस देलैन। ओ बुझि गेला जे उलझनक जड़ि जड़ियबए चाहि रहला अछि।

तैबीच मुँह छोहैन करैत सिंहेश्वर काका बजला-

“पहिने निचेनसँ भोजन करू, चाह पीब, पान खाएब पछाइत

दस मिनट सत्संग हेतइ।"

सिंहेश्वर कक्काक मिलैत भावकेँ देखैत शीर्ष सिपाही मुँह खोलि बजला-

"मुहसँ ने भोजन करै छी, कान तँ खालीए अछि किने।"

पियासल पक्षी सदृश सिपाहीक रूप देख सिंहेश्वर काका बजला-

"पचास बर्ख पूर्व, फुलपरासक लकसेना गाममे चारि जाति– धानुक, कियोट, कुरमी आ अमातक बीच खाएब-पीबसँ लऽ कऽ बिआह-दान सेहो हएत–सर्वसम्मतिसँ विचार भेल। काज रूपमे आगू बढ़ल, केतेको कुटुमैती एक-दोसरमे होइत आबियो रहल अछि। ओना अलग-अलग चलबक चलैन बेसी अछि। ओही बीचक प्रेम-प्रसंगक उलझन छी, जेकरा समाजक लोक आरो उलझा रहला अछि।"

मुड़ी डोला स्वीकारैत ओ शीर्ष सिपाही बजला-

"हमरा सबहक नोकरी कोनो नोकरी छी, जहिना बत्तीस दाँतक बीच जीह रहैए तहिना अछि।"

ओना सिपाहीक मनक किछु ओहन बात जे बिनु बजनौं सिंहेश्वर काका अन्दाजसँ बुझि गेला, मुदा सभठाम सभ बात बजैक उपयुक्त जगहो ने होइ छै, तँए अपन विचारकेँ दोसर दिस मोड़ैत सिंहेश्वर काका बजला-

"अपना ऐठामक जे बलबा अछि ओ प्रेमसँ जुड़ल अछि, जेकरा लोक बुझहै ने चाहि रहल अछि।"

सिंहेश्वर कक्काक फेकैत वाणक संग शीर्ष सिपाहीक नजैर सेहो ओहिना पछुअबैत बढ़लैन। तैबीच अपनाकेँ पछुआइत देख दोसर नम्बरक जे सिपाही छला ओ बजला-

"बाबा, दुनियाँक किछु थाहे ने अछि।"

सिपाहीक बात सुनि सिंहेश्वर कक्काक मनमे भेलैन जे एहेन समझदार-सिपाही रहितो एना किए बाजि रहल अछि..?

मुदा जहिना चुल्हिमे खोंरनीसँ आगि खोरल जाइए तहिना सिपाहीक विचारकेँ बुझैले सिंहेश्वर काका खोंरनी चलौलैन-

"से की?"

सिपाही बजला-

"जइ प्रेमसँ सभ विजय पाबए चाहै छैथ, तही प्रेमक लटपटीमे लोक अपनो जान आ परिवारो-समाजक जान लइते अछि।"

सिपाहीक विचार सुनि सिंहेश्वर काका ठमकला। मुदा शीर्ष सिपाही जे छला ओ विचारक विषयसँ विषयान्तर होइत देख तरे-तर ओइ सिपाहीपर नजैर गुरेड़लैन। तैसंग लागल तेसरो-चारिम सिपाही मुँह बन्न रखैक इशारा केलकैन।

बदलैत वातावरण देख सिंहेश्वर काका बजला-

"जइ लड़कीक संग प्रेम भेल ओकर पृष्ठभूमि की अछि?"

सिंहेश्वर कक्काक बात सुनि हाँइ-हाँइ कऽ शीर्ष सिपाही भोजन अन्त करैत पानि पीब आगूक चाहक आशामे अपनाकेँ साकांच कऽ लेलैन।

तैबीच चाह सेहो आबि गेल, पाँचो सिपाही एक-दू घोंट चाह संगे पीब लेलैन। बनैत वातावरण देख सिंहेश्वर काका बजला-

"जइ लड़कीक संग लड़का चोरा कऽ घरसँ निकलल, ओ ओहन साहस केना कऽ लेलक! ओना, समाजमे एहेन घटना पहिल छी सेहो बात नहियेँ अछि। साएसँ ऊपर एहेन घटनाक इतिहास गामक रहल अछि। अनेको रूपमे निपटानो भेल आ अगराहियो तँ लगबे कएल। जैठाम एक्के प्रश्नक जवाबक अनेक रूप अछि तैठाम समाजिक नियम

की भेल? मुदा समाजो तँ एहेन अछि जे रंग-बिरंगक चालि बेवहारमे सभ राइ-छित्ती भेल अछि। मुदा जे अछि सभ नीके अछि, रहबोक तँ अही समाजमे ने अछि।"

शीर्ष सिपाही बजला-

"आगूक की अछि?"

सिंहेश्वर काका बजला-

"दुनू परिवारक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध सेहो अछिए। खाएब-पीब सभ किछु अछिए। बच्चेसँ लड़की जखन पढ़ैले कोंचिग जाइ छल तँ घरेटा नइ देखै छल घर-अँगनाक खेनाइ-पीनाइ सेहो देखै छल। तेतबे नहि, संगे हब-गब सभ करै छल, आ से कोनो आइए नहि, केता बर्खसँ। जखन लड़की कौलेजमे नाओं लिखौलक, तहिया लड़का बी.ए. ऑनर्सक विद्यार्थी छल। कौलेजक ऑफिसक जे काज लड़कीकेँ होइ छल, दुनू संगे जा-जा करै छल।"

विचारमे मोड़ दैत पहिल सिपाही बजला-

"समाजमे जे जातीय रूप अछि तइमे..?"

सुढ़ियाइत सिपाहीक विचारकेँ सिंहेश्वर काका लपैक कऽ पकड़ैत बजला-

"एक तँ ओहुना दुनू लड़का-लड़कीक बीच जातिक जे सम्बन्ध अछि ओ एकरंगाहे अछि। माने ई जे श्रेणीवद्ध जातिक सम्बन्धक जे एकरूपता अछि तइमे दुनूक बीच लगपन अछिए।"

सिंहेश्वर कक्काक विचार सुनि शीर्ष सिपाहीकेँ औरो जिज्ञासा जगलैन। मुदा अपन जवाबदेही माने पदक भार खुलि कऽ बजै ने दैन। तेकर कारण छल। जेना अखन धरिक जे गामक माहौल बनि चुकल छेलै, ओ विपरीत दिशामे छल, जइमे हुनको हाथ छेलैन्हे। मुदा

घटना तँ आब अन्तिम पड़ावपर पहुँच गेल अछि, तँए बीतल समयक जे नीक कि अधला क्रिया भेल, ओहूमे बदलाव अनले जा सकैए। ओना, मने-मन हुनका[4] ग्लानि भइये रहल छेलैन, मुदा ग्लानियो तँ ग्लानि छी। सभ रंगक विचारमे सभ रंगक ग्लानि सेहो होइते अछि। जइसँ किछु ग्लानि हल्लुक बनि हवामे उड़ि जाइए आ किछु ग्लानि जिनगीक सिख सेहो बनिते अछि। खाएर.., मुँह खोलि तँ शीर्ष सिपाही किछु नहि बजला मुदा मनमे ई उठिते रहैन जे घटना-समस्याक जड़िसँ अन्त धरिक सभ बात बुझी।

सिपाहीक मुँहक रुखिसँ सिंहेश्वर काका अन्दाज केलैन जे आरो बात बुझए चाहि रहला अछि।

तैबीच पाँचो गोरे चाह पीब, पान मुँहमे लऽ नेने छला। ओना, सिंहेश्वर काका चाहमे संग नइ पुरने रहथिन, मुदा मुँहक पान सठि गेने, पानक संगी बनियेँ गेला।

पान-जरदा खा पहिल पीत फेकैत सिंहेश्वर काका बजला-

"बाउ, एक तँ जाड़क मास छी, तैपर शीतलहरी जकाँ सेहो अछिए, जइसँ कनकनी किछु बेसी बुझिए पड़ैए। हम तँ अहीठाम रहब, मुदा अहाँ सभकेँ डेरा पहुँचैत-पहुँचैत डेढ़-दू घन्टा आरो लगत। गपे छी, गप जँ पसरत तँ केते समए लागत तेकर ठेकान नहि। तँए...।"

दोसर नम्बरक जे सिपाही छला ओ सिंहेश्वर कक्काक विचारक रसमे तेना रसा रहल छला जे जेना बुझि पड़ैन जे सौंसे दुनियाँ समटा कऽ अहीठाम आबि गेल अछि। ओना आरो चारू गोरे जे रहैथ ओहो सभ मने-मन यएह गर लगबैथ जे दू घन्टाक जाड़केँ के कहए जे चारियो घन्टाक कोनो गम नहियेँ अछि। ओना शीर्ष सिपाही अपन

[4] शीर्ष सिपाहीकेँ

जिनगीक क्रियाक अनुभव महसूस करिते रहैथ। तैबीच दोसर नम्बरक सिपाही बजला-

"बाबा, ओना अखन हम सभ ड्यूटियेमे छी, जखन डेरा पहुँच जाएब तखन ड्यूटीक विश्राम हएत। अपने कनी, सोझरा कऽ कम समैमे अपन विचार रखियौ।"

सिपाहीक प्रश्न सुनि सिंहेश्वर काका सहैम गेला। सहैम ई गेला जे प्रश्न एक रहितो रस्ता तँ अनेक अछि, भलेँ ओ गंगासागर लग पहुँचैत-पहुँचैत सभ धार गंगेमे मिलि अपनाकेँ गंगाजल कहैत समुद्रमे किए ने मिलैत हुअए...।

सिंहेश्वर काका बजला-

"आइ धरिक जे मनुखक इतिहास रहल ओ मूल भेल। अही मूलमे सँ अनेको विचार पनैप-पनैप अनेक नाओं धरा आगू बढ़ल अछि।"

जेना सिपाहीकेँ ई इतिहास बुझले रहैन तहिना जोरसँ मुड़ी डोलबैत बजला-

"हँ, ई तँ अछिए।"

सिपाहीक सिर डोलैत देख सिंहेश्वर काकाकेँ अपन विचारमे मजगूतीक एहसास भेलैन। बजला-

"आइक जे परिस्थिति अपना ऐठाम बनि गेल अछि, ओ संक्रमणक स्थितिमे अछि, ओना संक्रमणक स्थिति दुनियाँ भरिमे अछि। केतौ सोझ केतौ टेँढ़, केतौ उनटा, केतौ सुनटा, केतौ नीकसँ अधला दिस बढ़ैत, तँ केतौ अधलासँ नीक दिस, केतौ अधलोसँ अधला दिस, तँ केतौ नीकोसँ नीक दिस, यएह स्थिति अछि।"

शीर्ष सिपाही गंभीर होइत गेला मुदा दोसर नम्बरक सिपाही

वाह-वाही करैत कखनो मुस्कियेबो करैथ आ कखनो मुँह खोलि हँसबो करैथ।

एकाएक जेना चुप्पी पसैर गेल। एक दिस चुप्पी पसरल, दोसर दिस समयक कनकनीक संग रतियेबो करइ। जहिना भोजमे अन्तिम विन्यास बाँकी रहितो भोजखौककेँ ने उठैत बनैत आ ने पबैत बनैत। किएक तँ पेट भरिये गेल रहै छैन मुदा बितरित विन्यास[5] बाँकी रहने जहिना किछु करितो किछु नइ बनैत तहिना भऽ गेल।

ओना शीर्ष जे छला ओ गंभीर भऽ गेल छला तँए हुनकर मन बढ़ैत रातियो आ कनकनियोँसँ हटि गेल छेलैन, तहिना दोसर नम्बरक जे सिपाही छला, हुनको गति तेनाहे सन भऽ गेल छेलैन। मुदा बाँकी सिपाहीमे किछु कछमछी आबिए गेल रहैन। ओ चाहे विषयक गंभीरतामे प्रवेश नहि केने भेल होनि वा अपन ड्यूटीकेँ समैपर निपटबैक विचार जगि गेल होइन। पहिल नम्बरक जे सिपाही छला ओ सिंहेश्वर काकाकेँ चरियबैत कहलखिन-

"नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।"

सिपाहीक बात सुनि सिंहेश्वर काकाकेँ अपन विचार नइ बुझैक शैलीपर नजैर गेलैन। मुदा लगले मनमे उपैक गेलैन जे अनभुआर जगह सोझ पड़ने, एहनो होइते अछि। जँ कहीं सएह भेल होइन।

..समयक संग विचारकेँ सम्हारैत सिंहेश्वर काका बजला-

"भऽ सकैए जे अहाँकेँ बुझैमे नइ आएल हुअए। एकरा दोसर रूपे एना कहि सकै छी। दुनियाँमे जेते बुधि-विवेकधारी मनुख अछि, समयक संग ओकर सन्तरण होइते छइ। चाहे ओ जेमहर हुअए।"

ओना सिंहेश्वर कक्काक विचार ओ सिपाहियो नीक जकाँ नहियेँ

[5] पान-सुपारी इत्यादि

बुझि पेलैन मुदा दोसर नम्बरक सिपाही कहलकैन-

"काल्हि भोरमे ऐ विषयपर अपना सभ विचार-विमर्श करैत एक विचार बना लेब।"

ओना शीर्ष सिपाही जे छला ओ समोहमे पड़ि गेला। समोहमे ई पड़ला जे एहेन परिवारक संग जेहेन बेवहार हेबा चाही तइमे कमी भेल। मुदा जे भेल आब तँ उसरन-बिसरनक समय आबिये गेल अछि, तँए आबो किछु सम्हारि लेब नीके हएत।

चौकीपर सँ पाँचो गोरे उठि ठाढ़ भेला। पाँचो सिपाहीकेँ ठाढ़ होइते सिंहेश्वर काका बेटाकेँ कहलैन-

"हिनका सबहक विदाइ-दैछना हेतैन, अरियाति दहुन।"

कहि सिंहेश्वर काका अपनो उठि कऽ ठाढ़ भेला।

ओना, 'विदाइ-दैछना' सुनि दोसर नम्बरक सिपाही बुझलैन जे भोजन-दैछना भेटत। मुदा शीर्ष जे छला हुनका मनमे अपन कर्तव्य ठहकलैन। अबैक जे सरकारी बेवस्था भेल छल, ओकर खर्च तँ घरवारिये सिर ने पड़त..!

आगू-आगू सिंहेश्वर काका बढ़बो केला आ मने-मन अँटकारो लगबै छला जे कोट-कचहरीक लफड़ा छी, ऐठाम तँ सलामीसँ काज शुरू होइए आ भोजन-दैछना पबैत-पबैत बिसरजन होइते अछि।

❑

शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017

बीरांगना-2

जे जिनगीकेँ दाव चढ़बै छै
वएह जिनगी पबै छइ।
जे जिनगीक जान गमाबै छै
वएह जिनगी कनै छइ।

पूस मासक अन्हरिया पखक पंचमी। आइ तेसर दिन छी, रघुनाथ कक्काक परिवारमे जे बड़का आफत आएल छेलैन ओ धीरे-धीरे थीर होइत रहैन। ओना दुनू बेटाक माथक पट्टी नइ खुजल छेलैन, दवाइ-दारू सेहो चलिते छेलैन। गामक वातावरणक गर्मी सेहो गरमाएल रहबे करइ, मुदा से दुनू दिससँ। गरमाइक अपन-अपन कारण दुनू पक्षक छेलैहे। एक पक्षक कारण छल प्रशासनिक सहयोग आ दोसर पक्षक कारण छल जे जखन दुइये भाँइ एते दुश्मनकेँ अड़ा कऽ भगा देलिऐ तखन तँ गाम-समाज हमरो छी किने। तहूमे समाजक सहयोग एहेन जे आइये बदान दऽ फरिछा लेब। तइसँ दुनू भाँइक देहक चोट सेहो कमि जाइ।

समाजमे आश्चर्य पसरिये गेल छल जे जेना ओ सभ सूमा बान्हि आक्रमण केलक तेना जँ कनियोँ इशारा समाजकेँ भेटैत तँ ओइठाम कता लाश खसैत तेकर ठेकान नहि! ओना, रंग-रंगक प्रश्न सभ उठिये रहल छल। केतौ उठैत-

"जइ परिवारमे एहेन घटना भेल ओइ परिवारक संग अन्याय भेल..!"

केतौ उठैत-

“जहिना लड़का घरसँ चोरा कऽ भागि गेल तहिना ने लड़कियो भागल, जेकरा कियो ने देखलक। तखन लड़काबलाक की दोख छै जे एना गामक जवाबदेहो लोक आ टोलोक लोक शेतनपन्नी केलक?”

पुलिस प्रशासन चुप्पी सधने जे जेना गाममे किछु भेबे ने कएल।

ओना, रघुनाथ कक्काक मन सोल्हैनी तँ नहि मुदा दसअना थीर जरूर भऽ गेल रहैन। थीर होइक कारण रहैन जे दोसरे दिन, जइ दिन घरसँ लड़का-लड़की पड़ाएल तेकर दोसरे दिन पटना अदालतमे कानूनी बिआह दुनू कऽ लेलक। जे जनतब रघुनाथ काकाकेँ भऽ गेल छेलैन।

लड़का-लड़कीक खोजमे पचासोसँ ऊपर लोक लगि गेल छल। जहिना गामक स्थिति तहिना शहर-बजारक स्थिति सेहो बनियेँ गेल अछि। माने ई जे जहिना गाम-गाममे दस-बीससँ लऽ कऽ पचीस-पचास कुटुमैती अछि, तहिना शहरो-बजार बनियेँ गेल अछि। सभ गामक लोक सभ शहरमे अछिए। नव लड़का-लड़कीक जोड़ा कोनो डेरा वा कोनो गाम पहुँचत तँ ओ चर्चाक विषय बनियेँ जाएत। मोबाइलिक जुग छीहे, क्षणे-पलमे सौंसे दुनियाँक जानकारी भेटिये जाइए। जइसँ विषम स्थिति बनियेँ गेल अछि।

सभसँ बेसी दुखद बात अछि जे कचहरीक खर्चो दुनू उधारिये रखलक। ने खाइले एकोटा पाइ संगमे छै आ ने रहैक ओरियानो कऽ सकैए। तहूसँ विकट स्थिति अछि जे शीतलहरीक समय, भरि देह कपड़ो ने छइ।

जाधैर कचहरीक काज भेल ताधैर तँ दुनू उत्साहित रहबे करए, तँए एक्के उझूकमे काज सम्हारि लेलक। ओना जे खतरा आगूमे ठाढ़

छेलै तैपर दुनूमे सँ एकोकेँ नजैर नइ पड़इ। मनमे सिर्फ अपन ठौर पकड़ैक चिन्ता रहइ।

खतरा ई रहै जे जखने दुनू पकड़ाएत तखने लड़कीकेँ अलग कऽ प्रेम सम्बन्धकेँ अपहरणक रूपमे बदैल लड़काक जिनगीकेँ बरबाद कऽ देब। वाह रे स्वतंत्र देशक प्रशासनक सोच। यएह छी बेकतीगत स्वतंत्रता आ ओइ स्वतंत्रताक प्रशासनिक रक्षा..!

दिनक चारि बजे दुनू गोरे माने लड़का-लड़की, कचहरीक काजसँ निवृत्त भऽ सड़कपर आबि ठाढ़ भऽ गेल। की करत, केतए जाएत? पचासो बेर लड़काक मोबाइलमे घन्टी भेल मुदा एकोबेर उठौलक नहि। उठेबो केना करैत, जखने उठबैत तँ तखने जान जोखिममे पड़िये जइतै।

ओना, लड़का गामक एक बेकतीक संग गप-सप्प करैत रहै, मुदा दुनू एतेक सुरक्षित रहै जे तेसर कियो ने बुझि पबैत। जइ बेकतीक संग सम्पर्क रहै ओहो पटने अदालतसँ बिआह केने छल। ओहो कौलेजमे पढ़िते अछि। तँए दुनूक बीच माने ओहू लड़का आ जे घरसँ पड़ा बिआह केलक, बरबैर गप-सप्प होइते छल। जइसँ गामक वातावरणक सभ जानकारी होइते छेलइ।

एक तँ ओहिना दुनू लड़का-लड़की घरसँ चोरा कऽ पड़ाएल छल, चोरे जकाँ डरा सेहो गेले छल। मुदा दुनूक जिनगी ओइठाम आबि अँटैक गेल छल जेतए पहाड़-समुद्र एकठाम रहैए। जँ जान बँचत तँ पहाड़पर चढ़ब नइ तँ जिनगी पानिमे जाएत, समुद्रमे डुमत..!

ओना रघुनाथ कक्काक समांग सचरगर छैन्हे, तँए जेते भार[6] अपनापर मनमे पड़क चाहिऐन तेते तँ नइ रहैन मुदा परिवारक शीर्ष हेबाक कारणे दवाब नइ रहैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

[6] दवाब

दरबज्जापर बैसल रघुनाथ काका परिवारक विषयमे सोचैत रहैथ। बेकतीगते क्षति हएत तेतबे नइ अछि। पोता तँ जहलमे सड़बे करत जे तैसंग दोसरो-तेसरो समांग सड़त। आर्थिक क्षति की हएत आ केते हएत, कहनाइ कठिन अछिए।

सोग-पीड़ाक सघन वनमे जहिना कियो जीवन-मृत्युक बीच झूलैत तहिना रघुनाथ काका झूलि रहल छला। साइयो किलो-मीटरपर दुनू–लड़का-लड़की–अछि। जाबे तक बिआह नइ भेल छेलै ताबे तक भलेँ लड़कीक संग परिवारिक सम्बन्ध नहि छल, मुदा आब तँ ओ पुतोहु भेली। जइसँ बेटीबलाक अपेक्षा अपन सम्बन्ध बेसी भइये गेल अछि।

रघुनाथ काकाकेँ ने आगूक कोनो सुरक्षित बाट भेटैन आ ने पाछू हटने काज चलितैन। संजोग बनल, बेटा आबि कहलकैन-

“अनेरे अहाँ चिन्ता नइ करू, सभ गर हम लगा लेब।”

ओना सचरगर समांग रहने रघुनाथ काकाकेँ बिसवास तँ भेबे केलैन मुदा कोन गर लागत से तँ कहबे ने केने रहैन तँए मनमे ईहो होइते रहैन जे जँ गड़े कुगर भऽ गेल, तखन केना जान बँचतै? अपना उकिते जँ लड़का-लड़की केतौ आन शहर-बजार दिस कोनो गड़े पहुँचत आ ओइठामसँ जे भेद खुजि जाएत तखन तँ आरो बड़का फेरा लगि जाएत। आन-राज्यक पुलिस-प्रशासनक हाथ पड़ि जाएत।

फेर होनि जे जँ गामो दिस औत तँ एते दूरी तँइ करब कठिन अछिए। चारू दिस लोक भेद लगबैले छिड़ियाएल अछिए..!

देहमे तँ कम्पन्न रघुनाथ काकाकेँ नहि रहैन मुदा मनमे तँ रहबे करैन। तहीकाल बेटा कहलकैन-

“आब चिन्ताक कोनो बात नइ रहल। कानूनी प्रक्रियासँ सभ काज समटा जाएत।”

‘कानूनी प्रक्रियासँ सभ काज समटा जाएत’ सुनि रघुनाथ काकाकेँ मनथम्हन भेलैन। मनथम्हन होइते जिज्ञासा बढ़लैन। पुछलखिन-

“बौआ, केना कानूनी प्रक्रियासँ सभ काज समटा जाएत?”

बेटा कहलकैन-

“ओकील सभ भार लऽ लेलैन।”

“की सभ भार लेलैन?”

“दुनूकेँ घर तक पहुँचबैक भार लऽ लेलैन।”

ओना, बेटाक बात सुनि रघुनाथ काकाकेँ मनथम्हन भेलैन जरूर मुदा क्षणिक। लगले मनमे उठि गेलैन जे जखन पुलिस प्रशासन विपरीत अछि तखन घरपर एला पछाइत बँचा कऽ केना रखि सकै छी! तहूमे जाबत स्थानीय अदालतमे लड़कीक व्यान दर्ज नहि भेल अछि, ताबत तँ ओ[7] किछु कए सकैए। आगिकेँ पानि आ पानिकेँ आगि बनाइये सकैए..!

रातिक नअ बजैत, माने चतुदर्शीक राति। पोता आ पोत-पुतोहुओ ओकीलक संग घर पहुँच गेल। ओकीलक संग पोतो आ पोत-पुतोहुओकेँ देख क्षणिक खुशी रघुनाथ कक्काक ठोरपर एलैन मुदा दिन-मासक के कहए जे रातियो भरि अपनाकेँ सुरक्षित बँचा राखब असाध अछिए...।

अपना कलेजापर पाथर रखि रघुनाथ काका ओकीलकेँ विदा करैत कहलखिन-

“दिन-राति कान ठाढ़ केने रहब।”

परसू लड़का-लड़की घरसँ भागल, काल्हि बिआह केला

[7] पुलिस प्रशासन

पछाइत घर आबि (पहुँच) गेल, मुदा असथिरसँ रहि केना सकैए, ई समस्या अछिए।

घटनाक तेसर दिन माने लड़का-लड़कीकेँ घरसँ पड़ेला पछातिक आठम दिन, गामक आततायीक भारी आक्रमण रघुनाथ कक्काक परिवारपर भेलैन। ओइ आक्रमणक तेसर दिन, बेरुका समैमे रघुनाथ काका दरबज्जापर बैस पाछू उनैट तकला तँ मन कहलकैन जे जेहेन चोट खेने अछि, ओकरेसँ भाँज लगि सकैए...।

मनमे अबिते रघुनाथ काका पत्नीकेँ शोर पाड़ि बजला-

"रीनाकेँ संग केने आउ?"

ओना जेठक रौदसँ जड़ैत धरती, जँ बादलक कृतसँ ओहन बर्खा पबैए, जे जरैत मनक कोन कथा जे चद्दैर जकाँ ऊपरोसँ बीछा जाइए, तहिना रघुनाथ कक्काक विचारमे सेहो रहबे करैन। तैसंग सभकेँ अपन-अपन मन, अपन-अपन बुधि आ अपन-अपन विचार मनमे उठिते छेलैन। कियो 'भौजी' पौलक तँए खुशी, तँ कियो 'बेटाक संग पुतोहु' पौलक तँए खुशी। ओना परिवारेक किछु एहनो नहियेँ छला जे माइरिक चोटसँ ओछाइन नइ धेने छला आकि माथमे पट्टी नइ बन्हने छला, सेहो तँ छेलैन्हे।

ओना सुदामा काकी चाह बना रघुनाथ काकाकेँ दैयेक विचार कऽ रहल छेली, मुदा तैबीच पतिक बात सुनि सुदामा काकी कनी थकमकेली। थकमकेली ई जे रीनाकेँ संग नेने आबए कहि रहला अछि, रीना की कोनो सोझामे अछि ओ तँ केतौ फुदकैत हएत। मुदा लगले भेलैन अनेरे पएर रोकि ठाढ़ भेल छी, जे काज अगुआएल अछि पहिने वएह ने करब। बड़ हएत तँ जाइते पुछि देता जे रीना कहाँ अछि। तँ कहबैन जे सभ काज एक्के बेर करब। पहिने चाह पीबू, ताबे हमहूँ रीनाकेँ तकने अबै छी...।

समगम मन बनौने सुदामा काकी रघुनाथ काका लग चाह नेने पहुँचली।

पत्नीक हाथमे चाह देख रघुनाथ काका किछु बजला नहि। अपन क्रिया-सूत्र मिलबए लगला। जखन शोर पाड़ि कहलयैन तखन ओ चाह बनबै छेली। तँए चूल्हि लगक आगि छोड़ि उठबो उचित नहियेँ होइत। चाहो उधिया कऽ फेका सकै छल। आगू क्रिया देख सोचलैन, अपनो चाह पीती, पछाइत गिलास-केतली धोती, तेकर बादे ने रीनाकेँ ताकए जेती। जँ आँखिक सोझमे रहितैन तँ रस्ते-रस्ते ओ काज कए सकै छेली। मुदा से तँ नइ छेलैन, तँए नइ भेलैन।

गिलासक चाहकेँ भफाइत देख रघुनाथ कक्काक मनमे जगलैन, अनेरे मनमे चिन्ता बसौने छी, अनेरे पुलिस प्रशासनसँ अपनाकेँ नुकबए चाहै छी। जैठाम दुनू बिआह केलक, माने रजिष्ट्री बिआह, तैठाम की टिकट-पेपरक टैक्स तँ सरकारकेँ देनहि हएत, तैसंग की न्यायालय बिना किछु पुछनहि बिआहक रजिष्ट्री केलक।

तैबीच रीनाक संग सुदामा काकी पहुँचली। ओना दुनू गोरे चौकीक निच्चाँमे ठाढ़े रहली। दुनूकेँ चौकीपर बैसैले रघुनाथ काका ऐ दुआरे कहलखिन जे असथिरसँ किछु बात रीनाकेँ पुछबाक छेलैन। देशक भविस छी। तेतबे नहि, देश-समाज आ परिवारक संग अपन जिनगीक भविस सेहो छी, तँए जे परिवार असथिरसँ चलि अबै छल, ओइ परिवारमे एहेन भयावह घटना भेल, तइ परिवारक बाल मन–रीना–पर की प्रभाव पड़ल ओ तँ विचारे-विमर्शसँ ने बुझब सम्भव अछि।

ओना, जइ दिन रघुनाथ कक्काक परिवारमे घटना भेलैन तइ दिनसँ परिवार-जनक बीच विचारो-विमर्श बढ़बे केलैन...।

टोह लैत रघुनाथ काका पत्नीकेँ अगुअबैत बजला-

"रीनाकेँ डर-तर ते ने बेसी होइ छइ?"

रीनाक चर्च छोड़ि सुदामा काकी अपने बात बाजए लगली-

"जेना हमरो डर होइ छल जे की हएत की नहि, से आब नइ होइए।"

दादीक बात सुनि रीना मने-मन किछु मन पाड़ए लगल। जेना बहुत किछु बिसैर गेल हुअए। बिसरैक कारण भेल छेलै जे रीना ओहन दौड़सँ नहि दौड़ल छल जे मन रखैबला रहितै, किएक तँ आँखिक सोझमे जे देखलक ओइ अपेक्षा अपन बीतल दौड़ साधारण छेलइ। ओना होइतो अहिना छै जे चाहे ओ पूर्ण जिनगीक हुअए वा जिनगीक बीच कोनो घटना विशेष हुअए, ओकर सर्वांग मन राखब जरूरियो नहियेँ होइ छइ। ओना किछु क्रिया एहनो होइते अछि जेकरा चाहियो कऽ बिसैर नइ सकै छी, मुदा ओ अछि दैनिक जीवनसँ सटल सूत्र। जइ आधारपर जिनगी ठाढ़ रहैए। रीनाक संग दोसर ईहो बात छल, ई छल जे जे जिनगीमे बेसीकाल अबैए ओ तँ बिसराइयो जाइते अछि। जिनगीक पहिल ओहन घटना छल, जेकर कल्पनो ने रीना केने छल जे एकाएक घटित भेल।

आगूमे पत्नियोँ आ पोतियोकेँ देखैत रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन, जिनगीक क्रिया किछु एहेन अछि जेकरा लोक प्रगट करैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जेकरा बुझितो लोक अप्रगट करैक कोशिश करैए। जेकरा 'झाँपन देब' कहि सकै छी। मुदा जिनगी तँ दू-धारक (दू धाराक) बीचो-बीच चलैए तैठाम एक धाराकेँ बुझब-जानब आ दोसरकेँ झाँपन-तोपन देब ओहो तँ अपूर्णे ने कहौत...।

असमंजसमे पड़ल रघुनाथ कक्काक मन हुमरलैन। हुमरलैन ई जे परिवारजन जेते विषयवार जानकारी राखत ओ ओते नीक भेल। तँए घरक (परिवारक) शीर्षपर रहने निच्चाँक सभकेँ (पैछला पीढ़ी) ऊपर

धरिक (कमसँ कम अपना धरिक) बात जना देब बेसी नीक हएत। पहिने रघुनाथ काका सुदामा काकीपर नजैर दौड़ौलैन तँ मातृत्वक उच्च कोटि देखलैन, लगले नजैर आगू बढ़बैत रीनापर देलखिन। परसुका घटनाक आधासँ बेसी बात जेना रीना बिसैर गेल हुअए तहिना बुझि पड़लैन। बिसरबो सोभाविक छल। कोनो फलक गाछ रोपनिहार जखन फल पबए लगैए तखन शुरूक बात (माने केना रोपलौं, केना ताम-कोर केलौं, केना पटौनी केलौं इत्यादि) किए मन राखत। आब ओकर औचित्ये की रहल। तँए ओकर औचित्ये समाप्त भऽ गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा आब ओकर औचित्य अछि। माने ई जे वर्तमानमे की करब अछि।

रघुनाथ काका रीनाकेँ पुछलखिन-

"बुच्ची, ओइ दिन माने परसुका घटना दिन तूँ दौड़ कऽ पड़ा गेलह तँए ने, अगर जँ रस्तेमे घेरा कऽ पकड़ा जइतह तखन?"

कौलेजमे पढ़ैत पनरह बर्खक रीनाकेँ शब्द भेदी वाण जकाँ जना हृदयमे लगलै। हृदयमे लगिते मन दलमलित भऽ गेलइ। मनकेँ दलमलाइते रीनाक होशक संग जोश जगलै। जेना-जेना जोश जगैत गेलै तेना-तेना आगिमे तपैत सोना जकाँ विचारक रंग सेहो बदलए लगलै। बाजल-

"बाबा, अपनो मन कहैए जे जखन निहत्था छेलौं, तखनो तँ हाथमे मुट्ठी छेलए-हे, जँ चारू-भरसँ आतताइ घेर लैत तैयो तँ दूटा हाथ आ दूटा पएर रहबे करए, कृष्णजीक सुदर्शन चक्र बनि केतेकेँ नाको-आँखि आ केतेकेँ छातियो तोड़ि कऽ खसा दैतिऐ।"

रीनाक बात सुनि रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन-

"यएह छी परिवारजनक सहयोग, मुदा विचारकेँ बिखण्डित भेने परिवार परिवार कहाँ रहि जाइए।"

दोहरा कऽ रघुनाथ काका पुछलखिन-

“बुच्ची, ओते लोकक बीच एहेन साहस केना कए सकितह। देखिये कऽ थरथरा जइतह।”

मुस्की मारैत रीना बाजल-

“बाबा, साहस तँ मनक वेग छी, ओ तँ दुनियाँकेँ देखैक नजैरक उपज छी। जेकरा अपन इज्जत-आवरू मनमे बसैत रहत। ओ डरबुक भइये ने सकैए। जाबे घटमे प्राण रहैत, ताबे पाछू केना हटि जैतिऐ। जिनगीमे जँ प्रण नहि तँ ओ प्राणे की आ जिनगीए की?”

रघुनाथ काका-

“मुदा..?”

हँसैत रीना बाजल-

“मुदा-तुदा किछु ने!

अपन जिनगी, अपन हाथ

अपने संगी अपने साथ।”



शब्द संख्या : 1992, तिथि : 29 जनवरी 2017

परिचय-

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह।○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-81-936422-2-1